अथकीलदास औरअग्रदासचरित्रं । झूलनाछंद ।
संतजन चरनपर धरणिधर सीसनिज वदनमवर
विमल अवचरित ललिता । कीलअरु अग्र जग म
निन नाभाकथन करत दुख हरन भव किलख
दलता । हरन भ्रमभीत मोह मदन संसय सकल
करन मंगल अमलबुद्धि वलता । भक्ति वैराग वर
ज्ञानध्यानादिलो प्रेमपद चरन हरि वस्व पलता
रोडाछंद । कृसदास मनि नाथ जुगल सिष से



८
भ.
१

वकहीना। कीलदास अरु दास अग्र गुण ज्ञानम
हीना। भक्तजते इ जेष्ठ जोगरत कील सुशीला।
जोके मानस विदत भक्ति इंद्रापति लीला। मथुराग
री निवास विपुल निज राखि रसाला। निसिदिन
करहि सुमरण कलभय हरण कृपाला। एक
काल न्टप मानसिंह तिन दरसन आवा। विगत
हंगभक्त संगअंग अनुराग वढावा। आयभवन मुनि
नाथ माथमहि नेमत नायो। वैठो सासन पाय वदन।

१

बहु बिनय सुनायो। मुनिमुख देखि मयंक भूप
दृग कुमुद बिकासो। करत परस्पर ज्ञान मान
दैन्नाम बिनासो। नव जोरत नभ बोर नयन ति
ज चतुरथ जामै। भने भूपसों बचन मरम कछु
मुनि मृदु थामै। सुनत मरम जुत बचन भनत
नेम्रत नरराई। दीन उबारन दीन हरन उरवदी
नसहाई। इह प्रभु गिरा कदाच दीन कछु ना
हिन बूझो। जोक हणा करि प्रकट भनहु निज

बिसमय दायक मरम मोर उर पर्यो न सूझा

८६
भं०
२

किं करजानी। तोकानन कछु करहुँ नाथ मख मंजुलवानी। मुनिनायक सोति विनय वदनन्द पजवन वखाना। हरषन लागे कथन करन प्रभुकृपानिधाना। गूर्जरदेसन देसमोर इकभ क्त प्रवीना। देवसमीर प्रसिद्ध नाम श्रुति सभट नवीना। करम वचन मन कायभक्त भगवान नरेसा। भामरन परिहरि आज राज धनसंतति देसा। सरघर गवन्यो जानवैठिवर रुचिरविमा

२

ना। मोरे दरसन लागि बाढ़ नभ पंथ सुजाना। ना
सु विलोकत रहा भूप मम भक्त पयारा। निज की
रति मन जास कीन हरण जग सारा। सुनि मति
वचन नरेस गुपत निज दूत पठाये। समाचार
सब लेत बेग छितपति पैं आये। मुनिनायक क
र वचन सत्य जब भूपति जाना। अति विसमय
बस कीन मनहिं मन दंड प्रणामा। यद्यपि इह
मुनिनाथ जान किय कपट भुआलू। तद्यपि को

८ भ० ३

3

प नवीन संत प्रभु सदा कृपालु। तदनंतर मुनि
नाथ आन निज चरित सुहावा। चाहत नृपक
हुं हरगन दीन दुख हरन दिखावा। उठि गवने
निजभवन बोलि नृपनिकट बिठायो। तहि दे
खत निजमाल खोलि मंजूषनिपायो। भई कछु
क जवबेर भूप सनगिरा प्रकासी। मोल्याव हु
नरनाथ वेग सज करन निकासी ।१। टीका
अब नाभादास संत जनोके चरनो पर सीस

३

नायकर कीलदास और अग्रदास मुनियोंका वंश
संदर निरमल चरित्र जोहै सो कथन करतेहैं कै
साभी चरित्रहै कि पाप कलेश भ्रम भय कामक्रो
ध मोहमद इत्यादि संसय विकारों केनास करने
वाला और भक्ती वैराग निरमल बुद्धीके सहित
ज्ञानध्यान और हरिभगवानके चरन कमलों
की प्रीतीके देनेवालाहै हरिदास नामकरके
मुनी नायकजोथे तिनके ज्ञानध्यानकी विधी

८
भ०
४

और सरव गुणप्रवीन कीलदास और अग्रदास इहदो शिष्य प्रधान होतेभये तिनमैसे जेष्ट अर्थात वडे महा जोगीजन और शील स्वभाववालेकी लदासजीथे सो कैसेकि इंद्रापतीजो लक्ष्मीकेस्वामी विस्नू भगवानहै तिनकी संपूर्ण लीलाजिन के हृदय मै प्रकाश मान होयरहीथी वेबहुपानि धान वहुत करके अपना मथुरापुरीमे निवास राखकर रात्रीदिन बहुसपरमात्माका ही भजने

और समरते रहतेथे एक समय राजामानसिंह जो
तिनका शिष्यथा सो अभिमानसे रहित सेवक
समाजके सहित अंग अंग प्रेम करके हर्षितभ
याहुआ तिनके दरसनको चलाआया नव दीन
भावसें चरनोपर सीसनाय कर और तिनकी आ
ज्ञापायकर मुखसे अनेक प्रकारकी विनती क
रकरके बैठगया तहांमुनी नायककी चंद्रमा
वत मुखकी शोभा देखकर राजाके नेत्रजोहैं

८७
भ०
५

सो कुमुद अर्थात न्हापेके फूलों समान प्रफुल्लित भयेहूये दरसनकरते करते त्रपत नहीं होते हैं इसप्रकार परस्पर ज्ञान चरचा और वारता आलाप करते करते तीनपहर दिन वतीत हो जातेभया जबचौथा पहर आया तबमुनिमथान आकाशाकी वोर हष्टी जोडकर और मारवसेकु छभेदके सहित कटाक्ष के वचन उचारण। कर कर राजाको सुनावते भये ॥

५

नव प्रजापाल स्तुन करके हाथजोड़ कर दीनवाणी
से विनती करनेलगा किहे दीन तारन हे दीन दु
खनिवारन हे दीनसहायक प्रभु इह कदाचि क
रके गुरु आपकी वाणीजोहै सोदीनको कुछहू
फनहींपड़ी और नाइह अवरनके देनेवाला गू
ढ़भेद मेरेको कुछ समझ पड़ाहै अवजो कृपाक
रके आपने चरनोका सेवकजानकर मेरेको स
पष्ट और प्रकट करके कथन करिये तोमेआ

ए के मुखसें इस अद्भुत वारताको श्रवण करलेंगे
गा इसप्रकार राजाके मुखसे विनती के वचन सु
नकर कृपानिधान मुनिनायक जोहैं सो हरषसे
प्रसन्नहोय करके कथन करने लगे कहतेहैं कि
हे पृथीपाल गूर्जरदेसविषें एक समीरदेव नाम
करके राजा मेरा परम प्रवीन सेवक और महासू
रवीर धरम धीरजकाधाम मनवचन कायाकर
के भगवानका दृढभक्त जोथा सो आज राजसु

माज धनधाम स्त्री पुत्रसे उदासीन होयकर शरीर
को त्यागकरके सुंदर विमान पर बैठा हूआ स्वर्ग
लोगको चला जाताथा सो मेरादरसन करनेके
लिये आकाश मारगमै स्थित होयगया मै राजन
तिस अपने प्यारे भक्तको देखरहाथा कैसाभी भ
क्त है कि जिसने अपनी सुंदर कीर्ती और सुजससे
है सो संपूर्ण जगत मै विसतार्ण करदियाहै ऐसे
मुनीका वचन सुनकर अचरजके वशभया हूआ

राजा गुपतहीं तहां अपने दूत भेज देता भया सो समा
चार सब लेकर और आय करके राजाको तैसाही
सब वृत्तांत सुनाय देत भये तब मुनीनायक का व
चन राजाने सत्य जो जाना तो अचरज के वश भया
हूआ मनही मनमें बारबार दंड प्रणाम करने
लगा यद्यपि राजाका इह कपट अर्थात दूतोंका गु
प्त भेजना मुनिनायक त्रिकालज्ञने भलीप्रका
र सब जानलिया तद्यपि संत उदार सदैव दयाकी

निधी होतेहैं हृदय मै कुछ भी कोप नहीं करतेभ
ये तिसतें उपरांत दीनोके दुखहरकरने वाले मु
नि प्रधान जोहैं सो राजाको अपना और अद्भुत
चरित्र दिखावनेकी इच्छाकरतेभये नव आसनसे
उठकर और भीतर भवनमै जाय करतहां राजा
को बुलाय करके अपने पास विठाय लिया फिर
तिसके देखतेहूये अपनीमाला गलेसे उतारकर
एक संहरवडीके वीच डालदेई जबकुछ थोडीसी

८
भं०
८

8

वेरहोगाई तब राजाको कहने लगे किहे प्रजाना
थ तमारे देखते जोमाला मैने मंजूख मे डाली
थ तिसको अपने हाथ से तुम निकालकर
ईहां मेरे पास ले आवो ।१। रोलाछंदः । मुनिसास
सन नृप पाय पतिलु मंजूख उठायो । स्यामभयंक
र भुजग हगन तब भंकरतनपायो । भयवस पट
मंजूखदेत नृप चकितबखाना । दीननाथ नहिं
माल ब्याल मनुकाल समाना । तबउठरत मंजूख

८

ह्याय मुनि माल दिखायो। भूपचकित नकि चरित
चरन नंमत सिरनायो। असवङ्कार नरेस उ
रग सज देखत नाहो। तजि संशय भ्रम लाग क
रन प्रसन्नति नरनाहो। सोरठा। मुनिप्रभाव ह
गदेखि। अतिअगाध महिमाकछु। जायन अट
श्रुत लेखि। परेो दंडवत चरनपर। सादिरली
न उठाय। गुरु कृपाल अति प्रीति जुत। तवप्र
णाम करि राय गयो भवन आयस लियो। ५

८६ भ. ९

टीका। तब मुनिनाथकी आज्ञापायकर राजाजा
यकरके मालालेनेकेलिये संदूखका पडदा
जोउठावताभया तोक्यादेखताहै कि तिसके
बीच एक बडा भयंकर कालासर्प बैठाहुआ
फुंकारे मारताहै इसप्रकार देखकर भयकेवश
अचरजभयाहुआ राजानेसंदूखकोबंद करक
र आयकरके मुनिनायकको कहनेलगा किहेनाथ
नहांमालातोनहींहै परंतुएककालके समान कालास

रप वैठाहुआ फंकारे मारताहै तव राजाका कथन
सुनकर मुनिनायक उठे और आवनेही संदूख
मै हाथ डालकर मालाकीमालाही निकालकर
दिखाय देतेभये तवराजा देखकर अचरज कोप्रा
पत होय करके दीनभावसे चरनोपर सीसनाव
ताभया इसप्रकार मुनियोंविखें प्रधान कौलदास
जीने राजाको तहां वहुतवार कवी माला कवी स
रपका चमतकार जोहै सोदिखाया ऐसेमुनीकी

८१ भ० १०

अगाध महिमा और प्रभाव देख करके राजा सुखमे
अनेक प्रकारकी असतुती करकर दंडके समान
चरनोपर गिरपडा गुरुजीने बडी प्रीती सनमानसे चरनो
परसे उठायलिया तब आनंदमे मगण भया हूआ राजा
गुरुजीकी आज्ञा पायकर वारवार प्रणाम करके सव
सेवक समाजके सहित अपने घरको चलाजाताभ
या ।२। इतिश्रीभक्तविनोद ग्रंथे भगवद् भक्ती महा
त्मेंभाषाटीकायां कीलदास चरित वरणंनाम सर्गः

मीहांसिंह कृत

१०

अथ अग्रदास चरितं । सोरठा । सुनहु संत समुदाई ।
अवसै अदभुत आनवर । कथा ललित मन भाई । कर
हुं कथन सादर वदन । रोला छंद । कीलदास मुनि अ
नुज भक्त भगवान उजागर । अग्रदास जहिं नाम धा
म विद्या गुण सागर । महिमा इमन प्रभाव परम अच
रज उरदायन । सो करहूं कछु वदन संत सब सुनमु
ख गायन । अवसर एक नरेस मान हरि सोउ सु
हावा । लिये निकर भत संग करन दरसन तिन

८८ भ॰ १

आवा। छाडेभरत मनिहार भूप भीतर चलिआये। त
हिअवसर मनि वहिर भवन वाटिक मथछाये।
पेरेपुष्प दल सुशाक करत मार्जन निजपानी। इत
आसन निज भवन भूपदेखे मनिज्ञानी। तवसन
मुखधरि भेट वंदिपद विनयउचारी। मैसेवक प्र
भुचरन हरन दुखदीन उवारी। लखिसेवक निज
प्रवलसखि मनिकुसल सवाही। नृपकरकुसल कृ
पाल आज दरसन प्रभुकाही। करत परस्पर

११

ज्ञानभगति जगजाम विहीना। नवबाटिक नजिला
ग भवन मुनि भीतर पावा। शेकलियो न्टपभ्रतन
भवन नहिं आवनदीना। मान्यापक नविविध यदपि
मुनि भाषणकीना। कहुनाभा नव मोर करन गुरु
लमरनलागे। मैतिन गतिलखि आव ठाढ जहं
जन अनुरागे। नरननिवारत भ्रतन रिसकि कछु
वचन उचारे। तबबोले गुरुधाल मान अपंन ह
मारे। नानमदा सामान नमहु इनकर अपराध

मा

१८
भ०
२

होतनित्य संतोषसीलरत संन्वतिसाथ।अमकहि
आयेभवन नाथन्हपचरनन परयो। तवअचर
जमन हरन चरित डुतमति वरुकरयो। राज्ये
सनसुख आन रूप आसन मनिजोई। तहिआव
त डुतभयो लपत कौतक जनसोई।१। टीका।
नाभादासजी कहतेहैं किहे सवसंत मेंहतो अवमें
और वडीअदभुत सुखकेदेनेवाली सुंदरगाथा
जोहै सो सनमानपूर्वक कछु यथामती गायन

२

करताहूं आपध्यान देकर श्रवण करिये कीलदा
सजीका छोटाभाई भगवानकावडा उजागरभक्त
विद्याकाधाम गुणोंका समद्र अग्रदास नामक
रके प्रसिद्धहोताभया कैसाभीमहात्मा किजिस
की अगाधमहिमा और अचरज प्रभावको मै
आपके आगे गायनकरताहूं एकसमय सोईमा
नसिंहराजा अपना सेवक समाज सब साथले
कर तिनके दरसन करने को चलाआया तव

२८ भ॰ ३

आवतेही मुनीके द्वारेपर अपने नौकर चाकरसब
स्थित करके आप अकेलाही भीतरचलागया ति
स समय मुनि अग्रदासजी जोथे सो घरके बाहर अ
पनेहाथकी रचीहूई सुंदर वाटिका अर्थात फूल
फलोंकीवाड़ी मैविराजेहूथे तहां कुछसखे पुष्प
झड़े परेहूयेथे तिनको प्रीती पूर्वक झाड़ूसे निवा
रण कररहे थे और इहां आयकरके स्नान ध्यानकी
निधी मुनिनायकको राजा घरके भीतर अपनेआ

३

सनपर विराजेहुये देखताभया नवतिनके आगे
भेटा धरकर और चरनोपर प्रणाम कर कर हाथ
जोड़करके दीनवाणीसे विनती करनेलगा किहे
दीन दुखहारी हेदीन हितकारी प्रभुमै आपकेच
रनोकासे कहूं और मनवचन कायाकरके आप
काही हूंफदासहूं इसप्रकार राजाकीविनती सुन
कर और आपना अचल सेवक जानकर वडीदया
की दृष्टीसें सब स्त्रीपुत्र परिवारके सहित धनधाम

८८
भं०
४

और राजकाजकी कुसल पूछने लगे तव राजाहा
थ जोड़कर कहनेलगा किहे कृपानिधान मैं आ
ज आपका दरसन करके सर्व कुसलको प्रापत
भयाहूं प्रभूइह आनंदके देनेवाला आपकादरस
नजोहे सोई सर्व कुसलोंकामूलहे ऐसे वारतालाप
लाप औरज्ञान चरचा करने करते दोपहर सूरज
आयगया तव वाटिका अर्थात वाड़ीके वीचजोउ
अदास मुनीगये हुयेथे सो भीतर भवन को ।

४

आवनेलगे जब द्वारपर आये तबराजाके सेवकों ने
कोई औरही जानकर रोकलिये भीतरनहीं आवने
दिये मुनीने यद्यपि वहुतही कहा तद्यपि तिनोने
एकनहींमाना नाभादासकहतेहैं किहे संतो तब
गुरुजीने हृदयमें मेरा स्मरणकिया मैंतिनकी ग
तीको जानकरके जहांद्वारेपर कृपानिधान स्थित
भये हुयेथे तहांतत्कालही चलाआया और राजा
के सेवकोंको मैंने कुछ कोपकेवचनोंसे निवार

८८
भ०
५

एकरके पीछेकेहटाय दिया नव दयाके वशहोय
कर गुरुजी कहनेलगे किहेपुत्र इनकोमत झुक
कहो औार इनपरक्षमाकरो हमकोमान अपमान
दोनोसमानहैं संतजोहैं सो सदाशील संतोष औ
र शांती क्षमाकी मूरती होतेहैं इनकोचित्तमे कि
सीप्रकारका क्षोभ करना उचित नहींहै ऐसे कथ
न करकर गुरु कृपाल भीतर भवनमै चलेआये
नवतिनका आवते देखकर राजाउठकरके चरनो

५

पर प्रणाम करता भया तिससमय गुरूजी महारा
ज श्रीसामनके हरनेवाला अद्भुत कौतक करने
भये किवेजो आपना दूसराखूप धारकर राजाकेस
नमुख आसनपर विराजमान भये हूयेथे सोराजा
के प्रणाम करते करते तरत लुपतहो जाते भये। २
छंद। तव विसमत चित भनत भूप मम कानन ला
गी। सोगवने गुरुकहां अवहिं आसन निजत्यागी।
मैदेखत जगरूप नाथमति अचरजमान्यो। तवमै

दद
भ.
६

न्रपमन वदन हरन भ्रम वचन वखान्यो। नवभक्ती वशभूप वहुरि कावजनिज जानी। धरेनाथ ज्जग हु पञ्जमासख्य करन डावदीननहानी। आयआपजवना ध रूप निज आन डरायो। सुनत भूपभा मौनसक्त वि मानस विसमायो। नवमै भाख्यो वदन सुनऊ नागर नरनाई। संतप्रभाव अगाध नहिंन कछु प्र चरजभाई। इनकर महिमानेन नेत मखवेद वखानी कौनतुछ मति मनुज मरम कस सक ।

६

हिंसजानी। सुनन भूप मम बचन मचित भ्रम हृदय हुलासो। जगकर जोरत वदन नच वहु विनय प्रकासो। तमहैदीन दयाल भतन वहु अनुचित कीना। तवप्रसन्न मनभने वदन मुनि नाथ प्रवीना। स्वामीसासन भूप सदा पालन भत धरमा। मैप्रसन नहींकीन तिनहुं कछु अनुचित करमा दोहा। मुनिनायक कर वचन सुनि हरषो भूप महान। धन्य धन्य लागो भनन वदन विमल

जशगान। करि असतुति अस विविध विधिवंदे
चरन मुनिनाथ। लै आसिष गवने भवन भक्त
समाज सब साथ॥ असइह चरित पुनीत मै अग्र
कील मुनि गाव। जासु सुनत संतन विमल हुलस
भक्ति उरछाव॥२॥ टीका। नाभादास कहते हैं कि
इसकौतक को देखकर बडे अचरज के वश भ
याहुआ राजा आयकरके मेरे कानमे कहनेलगा
किवे गुरु जो आसनपर विराजे हुयेथे सोकहां ग

येहैसंत मै गुरुजीके दोरूप देखकर बडे अचरज
को प्रापत होय गयाहूं तब मैने भ्रम संदेहके हर
नेवाले वचनसे कहा किहेराजन तेरेआवनेके स
मय गुरुजी घरके वाहर वाटिकामै विराजेहूये
तहांसे रूकेपडेहूये पुष्पपत्रोंको निवारण करने
केलिये अपने कारजमै लगे हूयेथे जवतुमकोघ
रमै आवनेदेखा तोतुमारीभक्तीके वशभयेहूये दो
नोंके डरखहरनेवाले तरत अपना हसरामायक

८८
भं०
८

रूप धारकर हमारे सनमुख आसन पर विराजमा
नहोयगये अब जो आपकूं पालिध्यान वादिकासे उ
रकोआये तोराजन तेरेचरनो लागते लागते अप
नोवेमायक रूपजोथा सोलपनकरलेतेभये इस
प्रकार मेरा कथन सुनकरके राजासंकोचसे मौ
नओरबडे अचरजकोप्रापत होयगया तबमैनेक
हा किराजन महापुरषोंका प्रभाव ओर महिमाअ
गाधहोतीहै इसमें कुछ अचरजनहीं संतमहिमा

को वेद भी कथन नहीं कर सकता मानुष्य तुच्छ बुद्धी
वाला इसके जानने को कैसे सामर्थ होय सकता है
ऐसे मेरा वचन सुनकर राजा भ्रम से नहूस होयक
र आनंद को प्रापत होय गया और हाथ जोड़ कर
दीन वाणी सें गुरू जी के आगे विनती करने लगा
कि हे दीनदयाल मेरे सेवकों ने वड़ा अनुचित किया
जो कृपानिधान को द्वार पर रोक लिया तोने इहस
व मेरा ही अपराध है नाथ आपने चरनों का सेवक

जानकर दयाकरके क्षमाकरिये ऐसे राजाकी वि
नती सुनकर मनीप्रसन्न होयकर कहनेलगे कि
राजन स्वामीकी आज्ञापालनी इहसदाही सेवकों
का धरमचला आयाहै मैंतेरे पर प्रसन्नहूं तिनका
कोई अपराधनहीं है तबमुनि नायकका वचन
सुनकर परमहरषको प्रापतभयाहूआ राजाध
ना धन्य कहताहूआ तिनका निरमल सुजस औ
र प्रसनतीजोहै सोअनेक प्रकारसे गायनकरता

भया तिसतें उपरांत वार वार चरनोपर सीस नाय

कर और सभकासीसा पायकर अपने सवसेव

क समाजके सहित विदाहोयकर घरकोचलाग

या है संतो इसप्रकार इहकीलदास और अगद

सजीका सुंदर चरित्रजोहै सोमैने गायन किया

है इसको जोकोई श्रद्धा पूर्वक श्रवणकरेगा

तिसके हृदयमै कृस्नभगवानकी भक्ती अव

श्य हढहोजावेगी ।२। इतिश्रीभक्त विनोद ।

८८ भ. १०

ग्रंथे भगवद भक्ति महात्मे सिद्धांसिंह कृत भाषा
टीकायां अग्रदास चरित वरणं नाम सरगः

अथत्रिपुरदास चरित्रं ।दोहा। जन्हिसेवत नर स्वग
मनर नरहिं अगाम संसार। जिमि आश्रय जलजा
न जन जात जलथहूं पार। चौपाई। सोअसभक्ति
महानम चाहू। करहूं कथन अब मानसहाहू ।
पूरबविदत भक्तभा चारज। करन प्रविरत सेव
हाआरज। तिनकर तने सुभ्र अभिरामा। इंद्रय
जीत निगुण गुणधामा। महाभागवत लोग
उजागर। विद्यावेद धरम श्रुति नागर। जासवि

८९
भ॰ १

दनकलिकालमझारा।कौन प्रकट द्वापर संसारा
सोभविठ्ठल अस नाम सुजाना। मनवच करम भक्त
भगवाना। पावनदेस कुल गुणगेहा। भयो सु
निरनदार परिग्रेहा। सपत पुत्र नौकर उपजाये
जिनकहं करहुं प्रकट अवगाये। दोहा। श्रीमत
गोकलनाथ्य कल बालकुल घनस्याम। गिरधर
श्रीगोपाल जदुनाथ्य नगुण अभिराम।१। टीका
नाभादासजी कहतेहैं किहे संतो जिसके सेवन

करनेसें मानुष्य इस महांकठिन संसारको सहजे

हींतरकर ऐसे पार होजाताहै कि जैसे जहाजके

आश्रय समुद्रको तरजाना सहजहोताहै सो ऐ

सा भक्तीका सुंदर महात्मजोहै सोआपके आगे

गायन करताहूं सर्वजोआर्थ अर्थात वडीस्रष्ट संप्र

दाके प्रचलित करनेवाले वल्लभाचार्ज जीभये

हैं तिनके पुत्र परम चतुर इंद्रयजीत गुणोंकेधा

म और वेद विद्याके जानने वाले परम और धीर

४९
भ०
२

नकी तिथी महां भक्त विठ्ठल नामकरके उजागर हो
ते भये कैसेभी सामर्थ किजिनोने कलिकालवि
षे प्रकट द्वापरका प्रभावजो है सो दिखायदिया
और मनवचन कायाकरके कृस्नभगवानके भक्त
थे सो कृस्न परमातमाकी आज्ञाकोंही पायकर
ग्रहस्थधर्मजोहै तिसकोधारण करतेभये तबतिनके
घरमै सातपुत्र उतपन्नहूये अबतिनके भिन्न भिन्न नाम
जोहैं सोकथन करताहूं प्रथम श्रीमतजी और गोकलनाथजी

वालकृस्न घनस्याम गिरधर श्रीगोविंद जज्ञनाथ
इह सातो ह्वीं भगवानके भक्त होतेभये ।।१।। चौपाई
तव वैस्नव उत्तम समुदाई । वाहुजनक ग्रन्स्यास
नमाई । पृथक पृथक तिननिज अस्थाना । मनभा
वन विरचे सनमाना । वज्रनाथ भगवान सुहाई
राखि ललित मूरति सुखदाई । पूजन करहिं प्रेम
सरसाने । निज निज हृदय भक्ति मदमाने । दोहा ।
गिरधर गोविंददेव श्रीनाथ चतुर भजसेव । श्रीम

नवैस्नव देव मुनि वंसिदेव हरिदेव। मूरतिसपन प्र
सिद्ध इह भिन्न भिन्न धरिनाम। कौनआचार प्रवलि
त जग छवि वैस्नव अभिराम॥२॥ टीका। नवतन
वैस्नव उत्तमोंने पिताकी सुंदर आज्ञापाय कर अ
पने भिन्न भिन्न बडे मनोहर अस्थान वनायलि
ये और वज्रनाथ भगवानकी सुंदर साना मूर्ती
वनवायकर विधिअनुसार सनमानसे आपनेभ
वनमै स्थापित करलेनेभये और तिनके गिरधर

देव गोविंददेव श्रीनाथचतुरभुज श्रीमनतवैसव
देव वंसीदेव हरीदेव ऐसे भिन्न भिन्न नामराख
कर वडीप्रीती भक्तीसे भजन सेवन करनेलगे इ
सप्रकार तिनोने अपने भजनके प्रभावसे संसा
रमे सुंदर वैस्नव धरम और आचारजोहै सो प्रच
लित करदिया।२। चौपाई। अवलोंविदत धरणि
तलनामा। सेवत भक्त जनन प्रदकामा। नहिवि
हुलकर एक सुजाना। हरिविसिषरहेो भक्त भग

८९
भ.
४

वाना। नामकथा अद्भुत सुखदाई। सोअब करहुं
प्रकट कछु गाई। पश्चिमदेस ललितपुरि काहू ॥
नाथद्वार संज्ञा असताहू। तहांवसहिं वैस्नव समुदा
ई। प्रीतिभक्ति भगवत सरसाई। सोश्रीनाथदेवजो
गाये। तहांस्थापित भक्त सहाये। भक्तिमुक्ति प्रद
दीनउधारी। दीनदोष दुखत्रास निवारी। श्रीमत
त्रिपुरदास इकनामा। सेवकभूप भक्त भगवाना।
गुणप्रवीन कलकाघयजानी। निरत संत सेवनदिनरानी

नेश्रीनाथहिं भक्तिवढाई। वसनमहल वरषप्रति
लाई। समय समयकर देतसुहावा। असप्रकार
कछुकालबिहावा। विपुलउदार त्रिपुरव्रतधारू
भयोअंत निरधन संसारू। सोनिजसमति वाराषि
ककरनी। चिंतालीन खनन नखपरनी। देवउ
पाय करहुं अवकाशा। सोसामर्थ नहिंन कछुरा
हा। असचिंतन करि यतन अधीरा। कछुसामा
नवन्यो जसबीरा। आयभवन श्रीनाथहिं दीन्हा

८९ भ० ५

रोदन करत कथन अस कीना। इह स्थूल पट नाश्यन जोगू। निदरहिं देखि सकल महि लोगू। तव आये हरि भवन पुजारी। तिस्थूल पट हगान निहारी। कहत कवन इह कीन ढिठाई। प्रभुहिं दीन असवैल उढाई। यह सो उतारि उसन पट आना। प्रभु हिं उढाय दीन मनमाना। अतितव वोर निसि सीन अपासो। केवल विघन लोग उरमासो। तव भगवान निज शजिक काहीं। भाषो वचन स्वपन निसि माहीं। दोहा। अ

५

निश्चारन मै सीत वस थर थर कंपहुं गात । नवप
टतें सनिक नमहि भयो नृपति कछु रात ।१। टीका
सोऐसे विठ्ठलजी अब लगभी पृथ्वी तलपर प्रसि
द्धहैं और सेवन करनेसे अपने सेवकोंके मनोरथ
सफलकरने वालेहैं तिनकाएक शिष्यभगवान
का दृढभक्त और सर्व गुणप्रवीन होताभया अ
वतिसकी सुंदरगाथा जोहै सो कछु संक्षेप करके
कथन करताहूं पश्चिमदेसविषे एक द्वारानाम्यना

मकरके पुरीहोतीभई तहां भगवानकी प्रीतीभक्ती
वाले वैस्नवजन जोहैं सोनिवास करतेथे और ऊप
रजो भक्ती मुक्तीके देनेवाले दीनदुखहारी श्रीना
थदेवजी कथन कियेगयेहैं सोभक्तहितकारी भ
गवान जिसपुरीमें स्थापितथे तहां श्रीमत त्रिपुर
दास नामकरके कायथजाती बडाभक्तीमान और
गुणप्रवीन संतोकी सेवामें प्रीतीवाला राजाका
सेवकथा जिसने इहब्रतधारन किया कि नित्यवर्ष

6

वरष प्रती समय समय के वडे संदर कोमल ओर म
हीन वस्त्रमोहें सो भक्ती प्रीतीसे लायकरके श्री
नाथ भगवान को पहिरावता ओर ओढावताथा
इसप्रकार श्रीनाथभगवानकी भक्ती ओर संतसे
वा करते तिसको कुछकाल बतीत होयगया तब
वे अतसे करके उदारथोथा अंतकोसमय पायक
र निरधन होयगया ओर वरष जो निकट आय
गया तोआपने नियमको समरण करके चिंतामे

वी

लीनभयाहूआ नरवैसे पृथ्वीको खनने अथीत खोद

नेलगा और कहनेलगा किहे देव अवमै कौन

यतन करूं वेपिकली सामर्थतो अवनहीरही ओ

मैसोच करकर यतनसे जैसा कुछ सामानहो व

स्त्ववनपत्र निसदिनपर भवन मै आय करके भ

गवान श्रीनाथजीके ऊपर चढायदेना भया औ

र दीनभयाहूआ रोदन करकर कहनेलगा कि

हे दीनयाल मेरे आधीन नहीहै मैजानता हूं कि

इह वस्त्र असल कृपानिधान आपके लायक न
हींहै इसमैं सबलोग देखकरके मेरेको हासी
हीकरेंगे और प्रभूमेरा निरादरहीं होवेगा ऐसे
कथन कर कर विदुरजोहै सोचलाआया इतने
मे तहां भवनमै पुजारी आयगया और भगवान
के ऊपर वे स्थूलवस्त्र देखकर कहनेलगा कि
इह किसने ऐसी ढीठाई कीहै जोभगवानके
ऊपर इहमहां मोटेसूत्रका पतलासा वस्त्र उढा

८९
भ०
८

8

यदियाहै इसप्रकार उच्चारण कर कर देवस्त्र उतार
डाला और कोमल गरम वस्त्र जो था सो श्रीनाथजी
के ऊपर उढायदिया नवरात्रीको कक्करकोरके
पड़नेसे अत्यंतसीतजोपड़ा तो तिसकेमारे पुरके
सबलोग थरथर कांपनेलगे तिससमय श्रीना
थभगवान पुजारीको स्वपनेमै कहने लगे किहे
इजिकमै परमसीतके वशडखी भयाहूआ शरी
रकरके थर थर कांपरहाहूं तेरेदियेहूयेइसवस्त्रसेमेरे

शरीरको त्रिपती नहीं होती और नामेवासीत निवा
रणहोताहै ।३। चौपाई । त्रिपुर चैलमोरे मनभावा
नहितें लेहुं त्रिपति सुखपावा । अबते देहु सकु
च तजि सोई । मोरेदीन भक्तपट जोई । हजिक दे
खि स्वपन इहिभाती । सोचित रहो भीतवसराती
उदय अरुण हरिभवन सिधारी । सोआपन पट
लीन उतारी । त्रिपुर चैलकल दीन उढायो ।
अदभुत देखि परम विसमायो । अहोदेवसम

भक्तसनेहू। तीनलोक लखिपरहिं नकेहू। असक
हि विदुरदासकर नाना। संजनभक्ति कीन मन
माना। सकललोग सुनि अँभुत चाहू। लगे प्रसं
सन विविधप्रकाहू। दोहा। हरिजन हरिकीकृपा
तें परिहरि विषय विकाहू। लेहिं सुभक्ति प्रसादतें
निजअभिमत फलचाहू।४। टीका। इहविदुरकेव
चनोहैं सोई मेरे मनको भावतेहैं और मेतिनतें
वडी विपती और सबको प्रापत होयजानाहूं हेप्र

निक नं अब ने संकोचको त्याग कर मेरेको सोई वस्त्र
देकि जो मेरे प्यारे भक्त विदुर ने दिया हुआ है नव पुजा
री इस प्रकार के स्वपने को देखकर् रात्री भर भय
के वश भया हुआ सोच करता रहा और जब प्रात
काल भया तब भगवान के भवन मे आयकर सो
अपना वस्त्र तुरत उतार लिया और विदुर का दिया
हूँ वस्त्र जो था सो दीनबंधु पर सनमान से उढाय
दिया और इस अदभुत को देखकर अचरज के

आ

८९ भ. १०

वश भयाहुआ कहनेलगा कि अहो भगवान कृपा
निधानके समान दीनहितकारी। और दीनपाल
तीन लोकमै कोई देख नहीपड़ताहै ऐसे कथन
करकर फिर जाय करके त्रिपुरदासका भक्तीश्री
तीसे वड़आदर सतकार किया तव परके सवलो
ग इस अदभुत को सुन करके त्रिपुरदासकी अने
क शलाघा वड़ाई करनेलगे देखिये हरीके भक्तजो
हैं सो हरीकी कृपातें सवविषय विकारोंकोत्याग

१०

कर भक्तीके प्रसादतें आपने मनवांछित फलको
सहजे ही प्रापत करलेतेहैं ।४। इतिश्री भक्तविनो
द ग्रंथे भगवद्भक्ति महात्मे मिहांसिंहकृत
भाषाटीकायां त्रिपुरदास चरित वरणनं नाम
सरगाः ॥

अथ कृस्नदासचरित्रं। दोहा। मोहविनासन करन

स्वव हृदय हरन उरताई। भक्ति महातम ग्यान अ

व करहूं प्रकट कछुगाई। चौपाई। कृस्नदास इक

नाम अकामा। मथुरावसहिं भक्त अभिरामा। कृ

स्नभजन सेवन रतिजामा। हृदय नवलनित भ

क्ति विकासा। जेप्रियवस्तु होहिंनिजगेहू। प्रभुक

हं करहिं समरपणतेहू। समयएक वृंदावनचा

हू। चल्यो करन दरसन मनहाहू। नव मारग पं

९. भ. १

उव छुरि आई। तहँ नवल हृगदेखि सुहाई। कुटिल
का कलविर चनचारू। सो असलेन मोल अनथाहू
करि सनान सरिता मनभावा। हरिहिं रुचिर नै
वेद लगावा। ताहि समय इनकजननाना। लाय
भोग मधुरा मनमाना। आयवहिर कलटेन क
वारा। वहुरि जायजव भवन निहारा। सो कुटिल
का भगवनथाहू। देखि लाग सव करन विचाहू
जानितिनहिं चिंताकुलभारी। दीनस्वपन निसि

भक्तउवारी। तवचिंताकस मानसकीना। रहामोर प्रि
यभक्तप्रवीना। कुसलदास असनाम सुहावा। तासुभ
क्ति संजुत मोहिं लावा। इहनैवेद मधुर सुखदाई। भ
यो स्वलपन आजमैपाई। देखि स्वपन अस सुजकथै
ना। भयेमुदित उत फुल्लत नैना। दूसर दिवस कुस
लजन आये। भवन देव नेवन सिरनाये। नव सुजिक
सुकन असलागे। कहितें आय भक्त बडभागे। कहो
कवन थल हरिहिं सुहावा। कानैवेद भक्त तवलावा॥

नवबोल्यो हरिभक्त प्रवीना। मैकुंडिलका कालि न
हीना। पांडव पुर नैवेद लगावा। पाछेआप सेख
कछुपावा। टीका। सुनिश्रृजक जन सकल अस अ
ति प्रसन्न सुखपाय। भनेस्वपन निज सुनत नव भ
क्त सुष्ट हरषाय ।।१।। टीका। अब मोह भ्रम और हृ
दयकी दुरमतीके नास करने वाला वडा सुखदायक
भक्तीका और महात्मजोहै सो कथन करताहूं कृस्न
दास नामकरके मथुरामे एकभक्त होता भया।

सोकैसा कि कामनासे रहित कृष्णभगवानके भजन
स्मरण और रंजनसे वनमे वडीभक्ती प्रीतीवाला जो
प्यारी वस्तु अपनेघरमै देखना सोभगवानके अरप
ण करदेताथा एक समय भक्तप्रवीन घरको त्याग
कर श्रीवृंदावनके मनोहर दरसन करनेकोचलप
डा तवमारगमे पांडवपुरी अर्थात दिल्लीविषे कि
सी हलवाईके हाटपर सुंदरवनीहुई। कुंडिका अ
र्थात जलेबी देखकर और मोल लेकर सरनाजो

पू

ल

९.
भ.
३

नदीहै तिसके जलविषे स्नानकरके तिन जलेवि
योंका भगवान को नैवेद लगायकर पीछे भक्त व
नधारी आप पायलेताभया तिसीसमय मथुरामें
सजकोंने भगवानको नैवेद लगाया और भवन
के कवाड़देकर वाहर चले आये फिरथोडीदेरके
पीछे भीतरजायकर जोदेखनेलगे तोक्यादेखते
हैं कि कृपानिधानके प्रसादके थालमें जलेवीपड़ी
हुईहैं इस अदभुत को देखकर सब अचरजकेवश

३

शहोयगये ग्रोर परस्पर विचार करने लगपड़े श्रे
से तिनको चिंताकेवश ग्राकुल देखकर भगवा
न रात्रीको स्वपने मे कहनेलगे किभाई तुमचिंता
क्यों करतेहो एक कृस्नदास नामकरके मेराप
रम चतुर प्यारा भक्त है तिसने प्रेमभक्तीसे इह
मधुर ग्रोर स्वादायक नैवेद मेरेकोलगाया सोमै
पाय करके ग्राजविपत्तीको प्रापत होयगयाहूं
इसप्रकार ग्रपने ग्रपने घरमै स्वपन देखकर

सखिक जो हैं सो परम हरष को प्रापत भये हमरे दि
न जब कृस्नदासजी भगवानके भवन मै आये औ
र दीन भावसे प्रणाम किया तब सखिक पूछने
लगे कि हे वडभागी तुमकहां से आये और कौन
अस्थान पर भगवानको तुमकैसा नैवेद लगा
या था ऐसे सखिकोंका कथन सुनकर भक्तप्रवी
न कहनेलगे कि भाई मैने काल पांडवपुरमै भ
गवान कृपानिधानको जलेबियों का नैवेदलगा

भक्त॰

याथा तिनका शेषजो कुछपीछे बचा सोमैं आपपा
यलियाथा तव प्रजिकसुन करके हृदयमैंवडा ह
रष और सुख मानकर अपना स्वपनेका वृतांत
जोथा सोसब सुनायदेनेमये भक्तप्रधान सुनक
रके परम आनंद से अपने भागोंकी वडाई कर
नेलगे ॥१॥ चौपाई। इहप्रभाव मंजुल मनभावा।
मैकछु भक्ति सुस जनगावा। एकदिवस हरि
भक्त प्रवीना। दिल्लीनगर गवन निजकीना। दे

१९
भ०
५

खीनहां मनोहरकोई। वेषणानृत्यगीन रनहोई। भा
षत श्रीमत कुंजविहारी। जोइह भवन भाम सभ
चारी। गावनिकरहिं कल नृत्य अलापन। नोमहि
लोग करहिं कस गाधन। अस कहि जाय निकट
वधुचारी। भक्तनेम मुखगिरा उचारी। जोमद अेत
वमोद उमंगा। करहु गवन मथुरा मुहि संगा। नो
प्रभु रसिक सिरोमणिमोरे। देखहिं नृत्य गीनक
लनोरे। मन वांछित फल होहिं नमारा ॥

५

अस प्रकार जब भक्त उचारा। निसर्ई कार करत चलि
आई। मथुरा देखि लोग समुदाई। निरखन लाग वद
न कहि नाना। भक्त सब कछु हृदय न आना। भाष
न तासु भक्त प्रियजी के। सबै होहु अलं कृत नीके
करहु देव सनमान मनभायन। निरतत नवलगी
न गुणगायन। भक्तन देश लेत अनुरागी। अद
भुत करत नृत्य कललागी। दोहा। सब कर देख
न वार वधु निरतत भवन गुपाल। गायन मति

भ०

रति प्रेम अति भई नरत्न वसकाल। असअदभुतन कि लोगसव लगे प्रसंसन तास। प्रभुसन मुख अति प्रेमवस तजे प्राण निजजास। हरलदास अ सभक्त वर करि उद्धार वधुवारि। लागे विचरन अभय मही हरलचरन उरधारि। ४। टीका। इस प्रकार हरलदासका इहां सुंदर प्रभाव और भक्ती जो है सो मैंने कुछ गायन की है एकदिन सो भक्त प्रवीन दिल्ली नगरविखे जो चले आये

६

तो तहां एक वेस्या वडी रूपवंत और नृत्यगायनमें पर
मचतुर जो थी तिसको देखते भये फिर मनमें कहने
लगे कि जो कदाचित इह मनोहर वेस्या श्रीमतकुंज
विहारीजीके भवनमें चलकर अपने नृत्यगायन
से दीनानाथ को रिझावे तो मेरे को लोग कै सा धन्य
कहेंगे ऐसे विचारकर तिस वेस्याके पास जायक
र नम्रवाणीसें कहने लगे कि हे सुशीले जो तूं
कदाचित आनंदसें मेरे साथ मथुरापुरीको चलें

और तहां आपनी चतुराईसें सुंदर नृत्यगायनजोहै
सोकरैं तोहितकारनी तेरे ऐसे नृत्यगायनको स
रे रसिकसिरोमणी अर्थात रसकोंविषे प्रधान
भगवान प्रीतीपूर्वक अवश्यसुनेंगे औरतूं आप
नेमनवांछित फलको प्रापतकरैंगी ऐसेजबभक्तप्रवी
नकूलदासजीने कहातबवेस्या आनंदसे स्वईकारकरके
तिनकेसाथही मथुरामैंचली आवतीभई ऐसेवेस्याके
सहित भक्तरूपको देखकर नगरकेलोग सबनानावरवा

करकर निंदा करनेलगे परंतु कृस्नदासजीने हृद
यमे कुछ नहींराखा तिसवेस्याको कहनेलगे कि
हे सुशीले हेगुणप्रवीने अवतु अपना नखसिख
संगार करके भगवानके भवनमे सनमुखजाय
कर प्रेमभक्तीसे सुंदर न्रत्य गायन जोहै सोकर
औरकृपानिधानको रिफा ऐसे भक्तकी आज्ञापा
यकर वेस्या अपना सब संगार करके भगवान
के आगे जायकर अनेक हाव भावोंसे न्रत्यगायन

जोहै सोकरने लगी तब सबके देखते प्रेमभक्तीसे
गोपालजीके भवन मै गायन करती सोवेस्यात
वनही प्राणोंको त्याग देतीभई ऐसेतिसका अ
द्भुत कौतुक देखकर सबलोग अचरजको
प्रापत होयगये और कहनेलगे किअहो इह
वेस्या धन्यहै देखो जिसने प्रेमभक्ती मै लीन
होयकर गायन करती करतीने भगवानके स
नमुख शरीरको त्यागदियाहै इस प्रकार ह

९.
भ.
५५

रदास भक्त जो हैं सो संसार मैं तिस वेस्या का उद्धा
र करके आप सूल परमात्मा के चरन कमलों को
हृदय मै धार कर अभय होय करके पृथवी तल
पर विचरते भये ।२। इति श्री भक्त विनोद ग्रंथे भ
गवद भक्ति महातमे भाषा टीकायां सूरदास
चरित वरणन नाम सरगः ॥

मिहांसिंहकृत

अथसुरसरीचरितं। दोहा। अब सुदभुत मंजुल
विमल भक्ति महातमग्यान। करहुं कथन मानस
हरन नरन श्रवणसुखदान। चौपाई। रामानंद
ग्यान सिषएहा। सुरसरि नाम विदत जगतेहा
कमलपदारविंद रतिजासा। विषयविरक्त भक्त गु
णरासा। सुनवित पतनि मीनहितत्यागी। अति
थिसंत सेवन अनुरागी। बसहिं ववित्कदेस निस
कामा। एकदिवं कानन अभिरामा। होतविरक्त
स

मदन सरिसबिरोधाई । गावतसोक्कल भजननहिन सोई ।
चलीसंग पति ब्रतासहाई । सभगाजीये नासस
खदाई । जातश्ररण्य रुचिर थिरहोये । परम सील
निधिदंपतिदोये । प्रातउठत सरसरि मनभाई ।
करिसनान हरिध्यान लगाई । तियफल मूलबि
पुन कछुलाई । प्रथमहरिहिं नैवेदलगाई । अति
थिसंत जे कानन आवहिं । तिनहिं जिमाय सेष
कछुपावहिं । असप्रकार प्रियभक्ति अभेवा । क

रहिं संतपतिका ननसेवा। एकदिवस संध्याज
वहोई। अतिथि भेषधरि उरमतिकोई। संदरि
देखिरूप मनभावा। हरन उष्ट तहिकाननआ
वा। संतजानि सरस्वरि असमेवा। कीननतासज
त भक्ति अभेवा। दोहा। तव दंपति ज्रत कपटि
सठ सोय सदन निसिकाहिं। वीत्योजामनि अ
रथ जवकुटिल गुनत मनमाहिं। सरसरि वय
हिन उदित चित उत फिरतउलाय। करत गता
रत

८४
भ०
२

गत नाम अस भक्त सुख जगिआय ।८। टीका

श्रव और बड़ा निरमल सुंदर कानोको सुख

देनेवाला भक्तोंका मनोहर महानम जो है

सोकथन करताहूं इहभी रामानंदजीकाशि

ष्य सुरसुरी नाम करके जगतमे प्रसिद्ध औ

र कृष्णभगवानके चरनोकी प्रीतीवाला वि

षयोंसे विरक्त और गुणोंकी निधी भगवा

नका भक्त होताभया धनपुत्र स्त्री मीत संब

२

थियोंका हित त्यागकर अतिथि साध ब्राह्मणोंकी सेवा
भक्तीमै लीन रहताथा सदैव निसकाम और इकांत
स्थान मै निवास करनेवालाथा सो एकदिन घरके
स्वर्व और कुटंबको त्यागकर विरक्त भयाहुआ ह
रिभजनके नमित्त वणके मारग को चल पडताभ
या नव तिसकी पतिव्रता और धरमसीलकी निथी
स्त्रीजोथी सोभी साथही चलपडतीभई इसप्रकार
भगवानकी भक्तीवाले दोनो स्त्री भरता तहांवॅविखे

८४
भ॰
२

कोई सुंदर स्थान देखकर निवासकरनेलगे नव
सरस्वती भक्तजोहै सो प्रातःकाल उठना ओर सौच
स्नान करकर फिर आसन पर आयकर भगवा
नके भजन स्मरण ओर ध्यानमे जुडजाता ओर
स्त्रीजोहै सो वणसे कछु कंदमूल फल ल्यायक
रके प्रथम भक्ती सनमानसे भगवानको नैवेद्य ल
गावती ओर फिर तहां वणविखे कोई अतिथी संत
भक्तजो आयजाते तो प्रीतीभावसें तिनको जिमा

यकर पीछे कुछ शेषजोरहना सो आपपायलेती

थेसेवे वडभागन वणविखें भक्तीप्रीतीसे नित्यप

ती और संतमहात्मा की सेवा करती रहतीथी ए

कदिन संध्याके समय कोई कपटी दुष्टजन आ

तिथी संतका भेषधार कर स्त्रीकारूप देखकर

के मोहितभया हुआ हरलैजानेकेलिये तिनके

घरमै वणविखें आय प्राप्तभया तव साधुजा

नकर हरसरीभक्तने वडी प्रीती भक्तीसे तिसका

वहुतहीं सेवन सतकार किया फिर जव भली प्र
काररात होयगई तव स्त्रीके सहित सुरसरी
और वे कपटीसंत तहां घरमे अपने अपने वि
स्त्रां पर सोयरहे जव आधीरात वतीत होयगई
तव पापकीखानी कपटी संतजोथा सोउठकर सुर
सरीकेवधकरने अर्थातमारनेको त्यारहोकर्के इधरउ
धरडोलनेलगापड़ा ऐसेतिसके वरनका शाहट सुनक
र सुरसरीभक्तभी जागउठे और चैतन्न होयगये।१

चौपाई। लगे स्रमण करन भगवाना। अथमकु

टिल मानस निजजाना। इहतो उब्बो संत अव

जागी। असवि चारि उर दुष्ट अभागी। दहिरी

द्वार वहिर निकसाना। पापीहतन पाप वलवा

ना। अकस्मात झटकिहर कराला। देत झपट

तोकर जनुकाला। लेतगयो कानन मध्याना।

तहां विदारि उदर जफपाना। गयो अगाय अ

मरव नहिपाई। हृदय भक्त चिंता इतछाई। भई

८४
मं॰
२

वैर अनिथी तजिहारा। गयो वहिर जाम निसंध्या
रा। अवलोनिज आसन नहिं आवा। काह भयो
कछु जानि न पावा। देखन लग्यो सोच वस ताम्र
करहुं दैव अब कवन अजासा। अस कहि विपु
ल वैर लग जोयो। वहुरि आय आसन निज सो
यो। प्रात जाय जव कानन चीना। कपटी पसो
व्याघ्र वध कीना। जान्यो पतिन दुष्ट सठ कोई।
हन्यो विपुन पंचानन जोई। अवलो ईहां निकट

ममगेहू। माहो मृग कानन नहिं केहू। अति
विचित्र करमन गतिन्यारी। मनुज असुर सुरस
कहिं नटारी। जोकेवस संसार अपारा। सुख
दुख करत जीव सईकारा। असप्रकार इह चरित
सुहावा। मैसंदीपन बदन कछु गावा। दोहा। भ
क्त श्रेष्ठ जग सुरसरी मज्जनपतनि प्रवीन। रहे
करत कानन भजन कमल चरन रतिलीन ।२
टीका। नव [illegible] भगवानका समर्ण जोहै सोक

८४ रने लगपडे तिस अधम कपटीने जानलियाकि
भ. इह संततो जागपडाहै ऐसे विचारकर झफपा
६ पकी खानी द्वारकी दलीजके बाहर निकल
गया पापीके मारने का पाप महांवलीहै तहां
अकस्मातही एकवडाविकराल अर्थात भयंक
र सिंह निकलकर और तरत झपट मारकर
तिसको उठाय करके वणके बीचलेगया औ
र तहां नखों से उसका पेट फाडकर फिरमांस

६

खोयकर अन्याय करके गाढे बणको चलागया
तब इहांभक्तप्रधानके हृदय मे बडासोच और चिं
ता उतपन्नभई किदेखो अतिथी संतजोहै सो ऐसी
अंधेरीरातविखें द्वारसे बाहर निकलकर गयाहू
आहै तिसको बहुतबेर होयगई अबलग फिरकर
के आसन परनहीं आया क्याभया कुछ जाननहीं
पडताहै दैव अबमै कौन यतनकरूं ऐसी अंधे
रीरात और गहिवरबण इसमै तोकुछ बसन

८४
भ·
८

ह्री चलताहै ऐसे सोच विचार कर कर वहुतवेर लग तिसको देखो अंतको आय कर अपने विस्तर पर सोय रहा जव प्रातःकाल होने वणविखे जा यकर देखा तो वे कपटी शिंहका मारा हूआ उदरशासे चीथडे हूआ पडाहै तव भक्तरुषने जानलिया इहकोई दुष्टपापी जनहै कि जिसको वणविखें ऐसी उदरदशासें सिंहने मारकर खायलियाहै देखो इस पापीके विना अवलंमेरे आश्रमके निकट

किसीबालके सगने कोई जीवनहीं मारा है इहकर

मोकीगती अतसे करके वचित्र और न्यारीहै मानु

ष्यदेवता असुर इसको कोई भी टारनहीं सकताहै

इसकर्मजालके वशहोयकर जीव संसार मे अने

कही उख सुख जोहैं तिनको धारन करताहै इस

प्रकार इह चरित्र मैने संक्षेप करके कुछगायन

करदियाहै सरसरी भक्तजोहैं सो अपनी धर्म

पतनी अर्थात स्त्रीकेसहित बणविखे वासकर

८४ म० ८

तेहूये रात्रीदिन नित्य श्रीभगवानके चरनक मलोंकी प्रीतीमै ग्रौर तिनके भजन स्मरणमै ही लीनरहते भये ।२।इतिश्रीभक्त विनोदग्रंथे भक्ति महात्नमै भाषाटीकायां दूसरी चरित वरणनं नाम सरगाः ॥

मोहोसिंहकृत

अथपदम हरीचरितं। दोहा मोदभरन संशयह
रन राम चरन रतिदान। करहुं यथामति कथन
कल भक्ति महानम आन। चौपाई। जन कवीर
कर ज्ञान निधाना। पदमनाम सिष परम सुजा
ना। रामनाम पावन जगजोई। रटत निरंतर रति
जन्म खेसोई। पतित अजामिल जास प्रसाहू। त
रे अनेक आन जगसाधू। गुरुमुख सुनत महा
नमतेहा। कीन्यो हृदय तास दृढ एहा। रामना

८९ भ॰ १

मपावन संसारा। जीवन विदन उद्धारन हारा। अ
सउर गनन पदम बडभागी। रामसरोज चरन अ
नुरागी। करतनिवास नगर सस्थिरिया। अति
थी संतनिरन परचरिया। गुरूसेवन तनपर मति
धीरा। अवसर एकदेव सरितीरा। रुचिअभिम
रुदेव्र वरजोई। आवातहां वनक थनिकोई। गल
नराजरु जड्डखत सरीरा। मरणेहेत देव सति
तीरा। प्रसनर वांधि ग्रीव निज भारी ॥

हूउनलगेपो गंगवरखारी। तासु विलोकि पदम स्र
सकरनी। सकुन गिरा मधुर मखवरनी। तात
कलेश कवन प्रतित्यागा। अवगत वरणमर
णकत लागा। सुनि अस गिरा पदम हितसानी
बोल्यो वनक नंम्र मखवानी। देखहु भक्त सु
ष्ट ममकाया। नख सिख प्रवल राज रुजछाया
जानिदोष निज आवत बीडा। सहिन सकहूं
दारुण उरवपीडा। भतवांधव सजन हितकारी

९६
भं॰
२

आवत निकट नपाति नविचारी। असकलेशाजिय जानिअपारा। भाउयुगद मरणजलधारा। आन यतन विन मरण सुजाना। मैनढुखित निज मा नस जाना। दोहा। नामकथन सुनि पदम असप्र ति दायाव सहोय। कहिस करहु सईकार नव मो र कथन अव जोय। होतगलत हज राजजग ... स लभ वछरव सावपाय। निजवांध वजन भनत ज न वसहु सदन सभजाय।१। टीका। अव आनंदके

२

सहित श्रीरघुनाथ जीके चरन कमलोंकी प्रीती
के देनेवाला और संशयभ्रम इत्यादि कलेशों
के हरने वाला भक्तीका और अदभत महातम
जोहै सोकथन करताहूं कबीरदासजीका प
कचेला ग्यान विचार की निधी और परम प्रवीन
पदम नामकरके उजागर होताभया और सरब
जगतको पवित्र करनेवाला राम नामजोहै ति
सके रटने मैहीं रात्रीदिन लीनरहताथा कैसा

८९
भ०
१

भी राम नाम कि जिसके प्रसादसें अजामिल आ
दि पापीजोथे सोतरगये अरु औरभी संसारमै
के नयोंका उद्धार होयगया ऐसे राम नाम की
महिमा और प्रभाव गुरुके मुखसे श्रवण कर
कर जिस परम भक्तने हृदयमै एही निश्चय
करलिया कि जगतमै जीवोंके उद्धार करनेको
केवल एक राम नाम हीं सामर्थहै ऐसे विचार
कर परम जोहै सो राम चंद्र भगवानके चरनो

३

१

काहीं आधार राख लेताभया और शिवपुरी जो
कासीहै तिसमे निवास करके अतिथी साधब्रस
ण की सेवा भक्ती करनेलगा और अपने गुरूजी
कीसेवा मे भी लीन रहताथा एक अभिमुक्तदे
त्रमे गंगाजीके किनारे पर एककोई धनी वैसजो
था सोकुष्टरोगका ग्रसाहूआ परमदुखी मरणे
की अभिलाषा करके तहांआय प्रापत होताभ
या तब वे अपने गलेमे वडेभारी वोझवाला पा

८८
भ.
४

षाणा बांधकर गंगाजीके जलविषे डूबकर मर
नेलगा तब पदमभक्तजोहै सो ऐसेतिसका क
रम देखकर वडीमधुरवाणीसे पूछनेलगा कि
हेभाई तूंधीरजका त्यागेहुये ऐसाकलेश सहार
कर जलके बीच अवगत डूबकर क्यों मरणे ल
गाहैं इसप्रकार पदमकीवडीहितकी भीगीहुई वा
णीसुनकर वैसजोहै सोवडे नंम्र और दीन वचनों
से कहनेलगा किहे संतभक्त आप देखिये मेरी।

४

कायाकी दशा किसिरसें पाउंतक इस महांभव
ल राजरुज अर्थात कुष्टरोगने ग्रसलियाहै औ
र परम कलेशाको देखकर लज्जाकामारा इस
घोर दुखकी पीडाको सहार नहीं सकताहूं
अबमेरे सेवक और बांधव सज्जन हितकारीजो
हैं सो पतितक्या पापीजानके मेरे निकट नहीं
आवतेहैं ऐसी परमहानी और कलेशाको वि
चारकर हेसंत मै जलविखे डूबकर मरणेल

कर

८६
भ॰
५

5

गाहूं इसमरणेके विनामेरे इसघोरकलेशकेनि
वर्णहोनेका और कोई यतन सूफ नहीं पडा इ
सप्रकार जिसका कथनसुनकर दयाकेवशभ
येहूये पदमभक्त कहने लगे किहेभाई वैस
जो कदाचित तूं मेरे वचनको गृहणकरलेवे
तो भगवान की कृपासे तूं इस महांराज रोगसे
सहजेंहीं छूटकर और शरीरसे निरमल कंचिन
के समान साखी होयकरके अपने सबवांधव।

और सेवक समाजके सहित आनंद पूर्वक जाय करके घरमें निवास कर ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ सुनत पदम ग्रस कथन सुहावा । वनक नैन चरनन सिरना वा । विनय कीन करि रुदन अथोरा । कहियेदीन याल हितमोरा । भक्तसृष्ट नवगिरा उचारी । तव मणि करन देव सविचारी । मज्जत करहु वदनउ खहारन । रामवार मुखराम उचारन । तहि प्रभा व तव विकृत देहा । होहिं विमल कंचिन वतपहा

९८ मु॰ ६

मुनिअस वनक वचन हितकारी। मनकर गहित देव सुविचारी। अति प्रसन्न मानस अनुरागा। मज्जन करन भक्ति जुत लागा। करि सनान वहुदोख निवारण। नदपक्ष्या पतित भवतारण। तीनवार जव राम उचारा। सोप्रभाव हग प्रकट निहारा। उपजे नवल चरन कर चाहू। अदभुत देखि वनक मन हाहू। भक्त विकार राजरुजहोई। वहुकर सकल दोखउरखहोई। भक्तपदम पद पदमन जाई ॥

६

बार बार नेमवत सिर नाई। करत विनंति भक्ति मन
लीना। जो उपकार नाथ तव कीना। महि तें सरहिं
देव कस सेवा। असप्रकार करि विनय अभेवा।
पद वर गवन भवन निज कीना। देखि लोग अच
रज मन लीना। भक्त पदम पद वंदत रागे। निज
निज वदन प्रसंसन लागे। असप्रकार इह चरित
सुहावा। मैं संतपत पदम हरि गावा। पावा राम
परम पद पावन। नामप्रसाद जास मन भावन।

दोहा। तांतेलोक प्रलोक कलनाम अमिय रससा
र। जहिपीवत म्रत जीवजन पतितनहोत उद्धार। २

टीका। इसप्रकार पदमभक्तका सुंदर कथन सुन
कर वैस दीन भावसे चरनोपर सीसधरदेताभया
श्रौर वडे विलापसे रुदनकरकर विनती करने
लगा किहेदीनदयाल अवजिसप्रकार मेराभला
होताहै सोई उपाय कथन करिये तवदयाकेवश
भयेहूये भक्तप्रधान कहनेलगे किभाई तूमरा

करणकापर गंगाजीके सर्वकलेशोंके हरनेवाले
जलविषें स्नानकर और फिर तीनवार मुखसें
परमपवित्र रामनामजोहै सोउचारणकर तिसके
प्रभावसे इसतेरा विगडाहूआ शरीर कंचनके
समान शुद्ध और निरमल होजावेगा ऐसेभक्त
सुषका वडाहितकारी वचन सुनकर अपने सेव
कका हाथपकडकर श्रीगंगामाईके किनारेपर
चलाआया तहांप्रेमभक्तीसे प्रसन्नचितहोयकर

सर्वदोषोंके निवारणेवाला स्नानजोहै सोकरताभ
या तिसतें उपरांत जगतमें पापीजनोंको तारने वा
ला तीनवार रामनामभी उच्चारणकिया तवतो रा
मनामका प्रकट ऐसाप्रभाव देखा किजिसकेद्वा
रापांडु तरतंही नये उपज आवतेभये और शरीर
भी सवकंचिनवत प्रकटहोयगया ऐसेतव महा
राजरोगसे छूटकर शरीरके इलदोषसे नहूनहो
यगया तववहा अद्भुत और अनंत प्रभावजान

कर पदमभक्तजीके चरनोपर वारवार प्रणामक
रके हाथजोड़कर वडेदीनभावसे विनतीवडाई
करनेलगा किहे कृपानिधान संतभगवान इ
हजो आपनेमेरेपर उपकारकिया और संसार
मे मानो नयाजनमदियाहै सोमुझमे उपकार
कावदला कौन सेवासे और कैसेदेसकूंगा इ
सप्रकार भक्तजीसे विनयप्रार्थना करक
र विदायलेकरके स्वस्थचित और निरदोष भ

८९
भ०

याहूआ पाउं पयादा अपने घरको चलाआया
नवलोगजोथे सो इस अदभुत कौतककोदेख
कर अचरजको प्रापत भयेहूये भक्तप्रधान प
दमजीके चरनोको वंदना कर कर अपने आप
ने मुखसे अनेक प्रकारकी शलाघा और बडाई
करतेभये इसप्रकार एह चरित्रजोहै सोमैने संक्षेप
करकै कुछगायनकर दियाहै देखिये पदमदासभक्तकी
महिमा किजिसनेनामके प्रसादसे भगवानका ।

५९
भ॰
वि॰

परमपदजोहै सोसहजेहीं प्रापतकरलिया तोते
हैसंतो लोक परलोकमैं इहअम्रत रसनामही
सारवसतहै किजिसके पानकरने अर्थात पी
वनेसें मरेहूये सरीर जीवते होजातेहैं और
पापी जनोंका जगतमें उधारहोय जाताहै ॥ २
इतिश्री भक्त विनोद ग्रंथे भगवदभक्ती महा
तमें भाषाटीकायां पदमहरी चरित वरणनं
नाम सप्तमः ॥

सिहोसिंहकृत

९

अथ नरहरी चरितं । दोहा । करहूं कथन अब चरित
मै आन ललित मनभाव । जास स्रवत स्रुति हुलस
पदपद्म भक्ति दृढ़ छाव । चौपाई । परानंद करसि
ष अभिरामा । नरहरि विदत जास जगनामा । वि
षे विकार मार मदत्यागी । संतन हुलस चरन अन
रागी । विरचि कुटीर वहिर कलग्रामा । भगवन भज
न निरत निसकामा । अतिथि संत वैसव दृग देखी
संज्ञत भक्ति प्रीति अवसेखी । तिनकर यथा उचि

८४
भ॰
१

न बन आई। मन बच करम करहिं सिवकाई। अस
प्रकार कछुकाल बिनासा। हमरत ह्रस्य हरनभ
व पासा। एक दिवस बैसव समुदाये। व्याख्यान सं
कसदन नहिंआये। तिनकहं देखि विपुल सुख
माने। लागेपागदिन पाक बिरचाने। नवइंधन ग
न सदन निहारा। बेगभक्त वर विभुन सिधारा।
निसिअवसर पायो कछु नाहीं। करिविचार नि
ज मानस माहीं। रहीअरण्य ग्राम सवसेवी। जाग

तरूपति नामकदेवी। तासभवन जीरण वनछावा
करिप्रणाम अस भक्त अलावा। अवतो जनहिंतो
र जगदेवा। सरबप्रकार चदन अबलेवा। असक
हि सधाक काठ नहिभवना। भक्तलेन आश्रम
निजगवना। विरचिपाककल संतनजिमाये। करि
प्रणाम पुनि कीन विदाये। आशुवहोरि शोषक
छुपाई। भयोनिरत निशसखदाई। दोहा। सप
नेकीन प्रबोधतहि मात परमहितमान। अवतें

८४
भ०
२

भक्तप्रधान नव मनहि प्रसन्न मनजान। जाहु न बंध न लेन नव विश्रन भवन ममनेहू। इह आवहिं विनयतन नित भक्त प्रवर नवगेहू॥१॥ टीका। अवआगे और बडा सुंदर मनभावन चरित्रजो है सोगायन करता हूं किजिसके श्रवण करनेसें कृस्नभगवानके चरन कमलोंमे प्रीतीभक्ती उतपन्न होय जाती है परानंदजीका एकशिष्य कृस्नभगवानकी भक्तीवाला और काम क्रोध मोह मद इत्यादि।

विषय विकारोंसेरहित नरहरी नामकरके जग
तमै प्रसिद्ध होताभया सो अतिथि वैस्नव संतभ
क्तको देखकर मनवचन कायाकरकै नित्यप्रीती
भक्तीसे सेवतारहताथा ऐसे तिसको स्वप
रमात्माके भजन स्मरण और साधसंतोकी से
वा करतेको कुछ काल वतीत होयगया तब
एक दिन कोई वैस्नव संतजोथे सो विचरते वि
चरते सांझके समय तिसकेघरमै चलेआये।

८४
भ०
२

मोतिनको भूखे जाकर बडे प्रेम उत्साहसे जबतिन
केलिये भोजन बनावनेको तयार भया तब क्यादेखे
ताहै कि घरमै कुछ लकडी ही नहीं है इस अकाजको
देखकर धावताहूआ ततकाल वणको चलागया
राजीकासमय जोथा तहांतिसको लकडी प्राप्तन
हीभई तब मनमै विचार करके तिसग्रामकी जा
ग्रत रूपनी नाम करके वणविषै अधिष्ठाता दे
वीजोथी तहां तिसकावड्डत पुराना माभवनथा ति

२

सभवानीके आगे प्रणाम कर्के दीनवाणीसे कहने
लगा किहे जगदंबे अवतोमेरे को सर्व प्रकार क
रके तेरेही चरनोका आश्रय भरोसाहै ऐसे विन
तीकरकर और भगवतीके भवनका सकाकाठ
लेकर तरत घरमे चलाआया और स्त्रीतीसवीसे
भोजन वर्नयकर वडे सन मानसे संतोकोजि
माय कर वारवार प्रणाम करके आनंदसे वि
दाय कर देताभया तिनका वचाहूआ कछसे

ष भोजन जोश्या सो आपपायकर फिर आयकर सु
खसे बिसतर पर सोयरहा तबवे ग्रामकी आ
धिष्टाता भवानी जोश्यी सो सपनेमे प्रबोध करक
र कहने लगी किहे भक्तप्रबीन तं मेरेको प्रसन्न
जानकर अबनैं आगे ईहां बणविखे लकडी लेने
को मत आवियो मै आपने कौनकसें नित तहां
तेरे घरमैही भोजन करनेके लिये लकडी पहुं
चायदिया करहूंगी ।२। स्वपन बिलोकि प्रातजब
चौपाई

जागा। भक्त सदन निज देखन लागा। पहोंच्य
जर अवरज मनह्लाहू। ईंधन सधाकगरव इक
भाहू। भगवति स्वपन सत्य सब जाना। अस्तप
कार कछु दिवस सताना। ताहांरहाघान इक
साधू। तास मरम असजानि अगाधू। भाषतर
ह करुणा सबमाई। विप्रनदेवि निज जनन स
हाई। मैहूं करव अस यतन सुहावा। लेऊं अभि
ष्ट रुचिर निजपावा। असविचारि वन भवन

८५
भ॰
५

भवानी। गयो अधम मूरष अगखानी। बांधिस शाक इंधन इकभारू। गवन्योलेत सीस निजथारू। भाजव वह्निर भवन गतवीज्ञ। उठ्यो सीस नहि दारुणपीड़। लग्योमरण मन विकल मलीना। भगवति दिसकि स्वपन निसिदीना। जढकसकीन करम नवपहू। अव परिवार सहित नवगेहू। जानहुउहनहसवहोई। देविकथन सुनिउरमतिसोई। कंपतविनयकरतगातदीना। मैअपराध मा[illegible]त नवकीना।

५

जन प्रभाव कछु जानिन पाया। सो अब तुमहु ज
नि करिहाया। भगवति विनय सुनत अस तासा
दयायुक्त मुख वचन प्रकासा। कबहुं कि कर
हु कथन तव मोरा। तो अपराध तुमहुं जन तो
रा। प्रात दिवस नित कानन जाई। सुशाक वो
फ ईंधन तव ल्याई। नरहरि सदन भक्ति उत
शरी। जाहु भवन निज बहुरि सिधारी। तेउ स
देखि स्वपन निसि माहीं। भय वस गयो प्रात

८५ सु. ६

वनकाहीं। तहांजाय इथन गहिभारा। त्यागयसद
न समनरु हरिअगारा। दोहा। असप्रकार भगवति
वचन जबकीन्ह्यो फुरनास। भयोतीव्र ततक्षण
सकल शीस सलन हिनास। २। टीका। तवरात्री
के समय सपन देखकर भक्त प्रधान जोहै सोप्रा
तःकाल होनेजागा और घरमै देखनेलगा तव
क्या देखताहै कि अंङ्गणके बीच एकसूकी लक
डियोंका बांधाहूआ भारपड़ाहै तिसकोदेख कर

६

भगावतीका स्वपन सव सत्यजाना इस प्रकार ज
व कुछदिन वतीतहोयगये तवतिसके निकट
एक और साधू वास करताथा सोइस प्रदम्नको
तको देखकर कहनेलगा कि इह तो दीनोकी स
हायता करनेवाली वणदेवीकी सव कृपाहै उचि
तहै कि मैभी तैसाही यतन और करमकरूं ति
सनें अपनेमन वांछित फलको पायलेउं ऐसे
विचार कर महामूढ और अधम पापकीखानी

क

८५
भ॰
८

वणविखें भगवतीके भवनमैं चलागया तहांसे
सूखी लकड़ियोंकाभार बांधकर और सीसपर
उठायकरके चलपड़ा तोजबवे निरलँ, देवीके भ
वनसे बाहर निकल आया तब तुरत तिसके
सिरविखें ऐसी कठिनपीड़ा उतपन्न होयगई कि
जिसके कलेशसे प्रथम व्याकुल और मलीन
मन मानो मरणे पर्यंत होयगया ऐसे तिसको
उखीभये हूयेको रात्रीके समय भगवती सपने

ज्ञा

८

मै कहनेलगी कि अरे मूढ मंद तैने इहकौनक
र्म कियाहै जोमेरे भवनकी लकडी सवतोड त्या
उकर लेगयाहैं अवजहि तूं सत्य करके जानजो
मै घरवारके सहित तेरेसव परिवारका नासक
रदेउंगी इसप्रकारभवानीका कथन सुनकर
सो मंदभयसे कंपायमानभयाहुआ हाथ जोडक
र विनती करनेलगाकिहेमाता मैने तेराबडा
भारी अपराध कियाहै जोमहामूढ अपनी ज

न

ष्णाके वशहोयकर तेरेप्रभावकोजान नहींस
का सो तुमेरेको अज्ञान मतीहीनजानकर क्षमा
कर इसप्रकार तिसकी विनती सुनकर जगदं
बे प्रसन्नहोयकर कहनेलगी कि हेजन जो तूं
अब मेरी आज्ञाको सीस परधारन करेगा तोमैते
रे अपराध को क्षमाकर देऊंगी सोमेरी आज्ञा
कौनहै कि आजतें लेकर तूं नित्यवणविखेंजा
यकर और सखी लडियोंका भावनायकर नर

हरीजो भगवानका दृढ़भक्त है तिसके घरमै छोड
आयाकर ऐसे स्वपनको देखकर भयके वसभया
हुआ सो असाधु प्राताकाल उठतेहीं वनको चला
गया और तहांसे खवीलकड़ियोंका एकभारी
भार विनायकर सीसपर उठायकरके नरहरीके
घरमै डालजाताभया इसप्रकार जवतिसने भगव
तीके वचनको पाला और सत्यकिया तवतिसीस
मय तिसके सीसका सूलजोथा सो तुरत मिटजा

ताभया और वडे आनंद सवको प्रापतहोयगया।

चौपाई। नवतें भक्त सदन सवदाई। लषोकरन ई

थनसिवकाई। भक्तरुष संसर्ग प्रसाहू। भयोसुभ

क्तज्ञानरतसाषू। प्रस इहचरित ललितमनहाहू।

भक्ति प्रभाव कथन निरथाहू। मैसंतपन कीनक

छुगायन। हरिसरोज चरन रतिदायन। दोहा॥

भक्तुरष कहं जगत मथ नहिं प्रसाथ कछुजान

भगवन भक्ति प्रसादतें सकलसुलभ सवठौन। ३।

टीका। नवते नित्यवे साधु भक्त उत्तम नरहरीके घ
रमे लकड़ियोंकी सिवकाई जोहै सो वड़ाहित औ
र सन्मानकर करनेलगा नवभक्त प्रधान की
संगतीके प्रभावसे वे असाधु ज्ञानध्यानके सहित
वड़ासब साधुभक्त हो जाताभया इसप्रकार इ
ह हंसभगवानके चरन कमलोंकी प्रीतीके दे
नेवालामनोहर चरित्र और भक्तीका प्रभाव
जोहै सो मैने कछु संक्षेप करके कथन करादि

८५ याहै देखिये भक्त उरष को संसार मे कछुभीग्र
भ. साधनहीहै भगवानकी भक्तीके प्रसादतें सब
१० सहज सुगम ग्रौर सुखदायकहीं है ।१। इति
10
श्री भक्त विनोद ग्रंथे भगवदभक्ति महातमे
मिहांसिंहकृत भाषाटीकायां नरहरी चरित
वरणनं नाम सरगः ॥ ॥

१०

अथ स्वरसता नंदचरितं। दोहा। मोद भरन संसय
हरन भक्ति महातम ग्यान। करहुं कथन संपत
कछु हंसचरन रतिदान। रामानंद कर हविर
सिव विदन सरसरानंद। जास मधुप मन लभ
न पद पदम कमल सुखकंद। जास मधप मन
लभत पद पदम कमल सुखकंद। चौपाई। बिर
न विवेक ग्यान निधनागर। करत अटन तीर
थ गुण सागर। सिषन सहित परिवारन होई।

न

अवाजगन नाथ पुरिसोई। तहांनिवासकछुँदिन
कीना। करिप्रणाम हरिभवन प्रवीना। बहुविक
रतप्रस्थान सुहावा। देखत नगर विप्रनमनभा
वा। अससं कलप लीन उरठाना। ग्रुव नाथपुर
करहुं पयाना। तबमारग इकबनक सुजाना।
विक्रय करत वटक पकवाना। तिनकहं देखिभु
जंग वरकाहा। इहक सवनक पदारथ गाहा। महे
भाग इहि जानन काही। उपजी रुची मोर मनमाहीं

पद्म

भ०

१

क

जानि बनक अति मृदु खत नासा। कीन्हो बदन बचन
परिहासा। इह प्रसाद पावन मन भावा। जगतनाथ
भगवान सुहावा। जो तुमार इछ्या मन मानी। तो इह
लेहु रुचिर सुभ जानी। अस कहि बनक बटक कइ
कर दीना। भक्त सहित सादिर गहि लीना। तिन कह दे
खि एक सिष आना। लीन बटक उर हरषि महाना।
गुरुवर द्रिष्टि बचावत रागा। बदन फेरि जब पाव
न लागा। तासु बिलोकि बटक अस पावत। भने

८३ भ० २

वदन गुरु वचन रसावत। इह प्रसाद पावन भ गवाना। नवकत पाव प्रथम मतिहाना। प्रव नम हो ह्रसपच गतपांती। गुरु कर कोप क्रूर इहिभांती। देखत नम्र निकर सिषग्राना। बोले वदन जक्ष जगपाना। नमहिं देखि पावत इन पावा। कसह कृपाल अपराध लगावा। नव गुरु भने रिसकि मन माहीं। जानत नमहूं मरम क छु नाहीं। महाप्रसाद जानि भगवाना। पावाह

२

महूं भक्ति मनमाना। इन रसना रसजानि अभा
वा। अधम मंद लालच मतिपावा। दोहा। सुन
त सिषन ज्ञत लोग सब भगत भक्त गुणगेहू
हमरे निश्चय होवकस सत्य कथन तवएहू। १
टीका। अब और हृदय मै आनंदके भरनेवाला
और संशय शोकके हरने वाला भक्तीका महा
तम कि जिसके श्रवण करने से कृस्न भगवान
के चरनकमलों मै प्रीती उपजती है सो कृस्न सं

3

होयकरके गायन करताहूं रामानंदजीका सुंदर
शिष्य एक सुरसुरानंद नामकरके उजागर होता
भया सोकैसा कि जिसका भ्रमररूपी मन नित्यही
हंसपरमात्माके चरन कमलोंका लोभीभया
रहताथा। और परमचतुर वैराग विवेक के
सहित मानो ज्ञान ध्यान की निधीथा एकसमय
सोगुणोंका समूह अपना सिष्यसमाज सबसा
थलियेहूये तीर्थोंका अटन भ्रमन करताहूआ

२

जगन्नाथ पुरीमे आयप्रापत हूआ तहां कुछक
दिन निवास करके फिर भगवानके भवन मै दं
डप्रणाम करकर कही और दिसाको प्रस्थानक
र देताभया तब बडे मनोहर वण और नगरोंको
देखने और विचरहूये हृदय मे इह अभिलाषाक
रीकि अब शिवपुरी जो कासीहै तिसका दरसन
करिये असे विचार कर चलते चलते मारगमै
एक वेस जो देखा तो वे बटक जो बडे हैं तिनकाप

ते

कवान वनाय करवेचरहाहैं तवतिनको देखकर
भक्तरूप पूछने लगे कि वैसभाई इह कौन पदा
रथहै हेवडभागी इसके छकवेको मेरे चित्तमे व
डीरुची अभिलाषा उतपन्न भईहै ऐसे सुनकर
और वैसने तिसको मूरख जानकर मखेस मस
कावतेहूये हासीकरके कहा कि हेसाधू इहपर
म पवित्र श्रीजगननाथ स्वामीका नैवेद प्रसादहै
जोतुमारी कुछ इछा रुचीहै तो । ।

इसको बड़ा सुंदर और शुभजानकर लेलेवो इस
प्रकार कथन करकर वैसने एकवटक जो ब
ड़ाहै सो देदिया और भक्तप्रधानने बड़ी रुची सन
मानसे लेलिया ऐसे तिनको देखकर एकशि
ष्यजोथा सोतिसने भी तैसेंही एकबड़ा लेलिया
और गुरुजी की दृष्टी बचायकर मुखफेर करके
जब तिसको पावनेलगा तब अंतरजामी गुरु
जी तिसको देखकर बड़ेकोपसे कहनेलगे।

८२ भ ५

कि अरे उइह नीच इह ते ने भगवान का नैवेद प्रसा
द कों पायलिया है जावो मंद अव तुम हमारी पं
क्तीसें वाहिर होवो इस प्रकार गुरुजी का महा क
ठिन कोप देखकर के और सिष जो थे सो नम्र ग
तीसे हाथ जोड कर कहने लगे कि हे कृपानिधान
इसने तो आपका पावने देखकर इह प्रसाद पाया
है अव प्रभू इस दीन पर इतना भारी कोप कों कि
या है इह तो ऐसे कोप के लायक नहीं था नव ग

५

हजी रोखके वचनोंसे कहनेलगे कि हो जननम
इस भेदको नहीं जानते हमनेतो इह भगवा
न का महा प्रसाद जानकर वडीप्रीती भक्ती और
सनमानसे पाया और इस अधमने लालचमती
से जिहवाकारस जानकर निरादर पूर्वक पा
याहै ऐसे भक्त सत्यमका कथन सुनकर शिष्यों
के सहित सबलोग जोथे सो कहनेलगे कि हे
भक्त प्रधान हमको इस तुमारे कथनका निश्च

८२
मं.
६

याकिसप्रकारहो ऐश्रो वहमइसको कैसे समझाने
चौपाई। जबलोगन असवदन बखाना। बोलेत
बसभक्त भगवाना। अबहिंहोव निश्चय तमका
हीं। धरहु तनक धीरज उरमाहीं। असकहि सिष
हिं वदन समझाई। आउकोन नहि वमन कराई।
निकस्यो वटिक वमनसिषद्वाहू। गुरुमुखनिक
स तबलसिदलबाहू। लोकविलोकि चरित विस
माये। साधसाधु सबवदन अलाये। तवगुरुभने

१

६

बचन सुनावहु। इह प्रसाद हवि हचिर प्रभाऊ।
इहि निज हृदय आन मति पावा। सो प्रतत्त नव
सुनमुख आवा। तां ते भये पतिन गतवेला। अव
न उचित इहि पंकति मेला। सुनि थर थरी हो हिंज
बखाना। नवकराय भाखिन सुनमाना। जानिसु
उकल पावन देहू। लेहुं मेलि निज पंकति एहू।
लोग सुनत मानस बिसमाने। सकल परस्पर
बचन अलाने। होत सत्य निश्चय हफ जाहां। कान

८१ भ ८

हिंहोत सफलफ़रताहां। भनत लोग अस निज निजधाये। भक्तप्रवर कासीपुर आये। विधिजुत प्राश्चित सिषहिं कराई। लीनकबिर निजपांति मिलाई। दोहा। असप्रकार इह चरित लखभक्त खर सगानंद। मैकीन्यो निजवदन कछु कथन कट नभवफंद। करिनिश्चय दृढ भक्तवर ऊख भक्तिपरहोय। नसो लगम वारद विकट भव सहश्र पदगोय।२। टीका। जब इसप्रकार लोगों

८

ने कथनकिया तबभगवानके भक्त स्वरूपानंद
जी कहनेलगे किभाई तुमको अबी निश्चय होग
जाताहै एकक्षण प्रमाण धीरजकरो ऐसे कहि
कर और शिष्यको समझायकर आपभी वमन
अर्थात् उलटीकरी और शिष्यको भी करवाई
तबशिष्यकी उलटीके द्वारा ज्योंकात्यों वटिक
जोवड़ाहै सोनिकलपड़ा और गुरूजीके मुखसे
तुलसीदल निकलताभया इस अद्भुत कौतुक

८२
भं०
८

कोदेखकर सबलोग अवरजको प्रापतभयेहूये सा
धू साधू शबदको उचारन करने लगजातेभये त
ब गुरुजी बडेसुखदायक बचनोसे कहनेलगे
किभाई मैनेजोतिस बटिक अर्थात बडेको भग
वानके पवित्र प्रसादकी रुचीसे पायाथा सोतुमा
रे सनमुख प्रकट होयगयाहै तांतेइह दोषकेसहि
त मर्यादासे बाहिर होयगया अब इसका पंक्तीमे
मिलाना उचितनही है जबलगशिवपुरीमे नहीं

८

जाते नवलगाइहनहीं मिलसकना तहांजायकरवि
धीविधानके सहित शाश्चिन करवायकर फिरइस
के शरीरको शुद्धजानकर अपनी पंक्तीमें मिला
यलेवैंगे इसप्रकार लोग सुन करके वडे अचर
जके वस होयगये और परस्पर कहनेलगे कि
भाई जहांसत्य करके निश्चय दृढ होताहै तहां
कौन सी वातहै जो सफल और सिद्धनहीं होजा
ती ऐसे कथन कर कर लोग सव अपने अपने

भ. ९

चलेगये और भक्त प्रधान शिष्य समाजके सहि
त आनंदसे कासी पुरीमे आयगये तहां विधी
अनुसार प्रायश्चित जोहै सो करवायकर अपने
निस शिष्यको पंक्तीमे मिलायलिया इसप्रकार
इह संसारका फंदनकाटनेवाला चरित्रजोहै सो
मैने कछ गायन करदियाहै देखो भक्त सरसता
नंदजी भक्तीके प्रसाद दृढ निश्चय करके इससंसा
र समद्रको गोचरनके समान सहजेही तर कर

९

८२
भ.
१

पार हो जाते भये ।२। इति श्री भक्तविनोद ग्रंथे
भगवद्भक्ति महात्मे मिह्नासिंहकृत भाषा
टीकायां स्वरसरा नंद चरित वरणं नाम
सरगः ॥

१

अथ सुखयानंदचरितं । दोहा । जासु सुनत विद
रत दुरत अरु आनंद सरसात । सो अस भक्ति प्रभा
व भव करहुं कथन अवदात । ससिकल सदृश
वदन सुख चदन दोष दुखकाय । सज्जन कुम
द अलीन मन विकसन विमल वनाय । चौपाई
रामानंद कर विदत सुहेला । सुंयानंद नाम अस
चेला । भक्त सुष गुण सकल परायण । इति संगी
त निपुण पद गायन । नित संसक्त संत सिव काई

घ

८२
भ०
१

विषय विरक्त भक्त जड़ताई। प्रीतिरूप रत नीरधयाञा। श्रीपति भक्ति हवीर वरपाञा। विहरत विहन लेत कर वीना। कलचरित गायन मनलीना। सो प्रस सुनत मधुर स्वरधारी। खगम्रग सकल म हत वनचारी। इतउतचारि वीरतनहि आये। लिहन करत हग नीर वहाये। वेलि प्रसून विटप वनपाता। इकटक जनहुं प्रीति रसराता। आनजीव जंत जितदेखे। ठाढ़ मन हुं चित्रवनलेखे। प्रस प्र

कार नित काननजाई। कृस्नचरित्र विमल सुखदाई

करि अलाप सब विविधप्रकारा। अभय करतजी

व न संसारा। समय एक मथुरा पुरिआवा। तहां

विलोकि ललित मनभावा। राधाभवन भवन सु

खलाजा। हरित संत महंत समाजा। प्रेम पयोधिम

गण मतिधीरा। सुमरत कृस्न हरनजनपीरा। वंदि

त संत कंज कल पादन। लग्यो मधुर वर बेन

निनादन। कृस्न चरित पद गायन रागा। भक्तप्र

८२
भ०
२

धान करन कललागा। वैसव स्रनन सारसंगीता। कृस्नचरित पदविमल पुनीता। सादिर प्रीति भक्ति जतरागे। वंदित विविध प्रसंसन लागे। दोहा। भक्त स्रष्ट हगदेखि प्रभ संतन सीलसुभाय। वैठोस वि आसन धरन नम्र चरन सिरनाय। ।१। टीका। अव जिसके श्रवण करनेसें पापोंकानास होयकर हृदयमें आनंद फैलजाताहै सो प्रेमाभक्ती का सुंदर प्रभाव जोहै सो मै कथन करताहूं कैसाभी

२

प्रभावहै कि दिन दिन चंद्रमाकी कलाके समान
सखको अधिक करके दोष कलेशों की ह्नानी दे
नेवाला और कुमदकली अर्थात्कूपकी कलियों
के समान सज्जन जनोके मनजोहैं तिनको प्रफुल
त करने वालाहै कहतेहैं कि रामानंदजीका वडा
सुंदर उजागर सखया नंद नामकरके एकचेला
होताभया सो कैसा कि भक्त उत्तम सर्व गुणोंकी
निधी और संगीतके ललित पद गायन करनेमे

८२
भा.
३

परमप्रवीन संतोंकी सेवा भक्तीवाला विषयोंसेविर
क्त और नंदनंदन भगवानका भक्त बडाशांती स्वरू
प तीर्थयात्राकी श्रद्धावाला मानो भगवान की भ
क्तीका एकपात्रथा सो प्रेममे उनमत्त भया हूआ हा
थमैवीना धारन करके नित्य वनविखे विचरता औ
र मधुर मधुर स्वरसे भगवानके चरित्रोंके ललित
पदजोहैं सो गायन करता रहताथा ऐसेतिसकी
बडीमधुर और रसकी भरीहूई स्वरको ॥

३

त्न करके वर्णके संपूर्ण खगमृग और जीवजंतुजो
थे सो सब मोहित होयगये इनउन तिसकी चारोवो
र आय करके जिह्वासे चाटते और प्रेमकेवशभ
येहुये नेत्रोंसे नीर वहायचले जातेहैं वर्णकेवेली
वृक्ष पुष्प पत्र इत्यादि जोथे सोभी शांती रसमें मग
ए भयेहुये इकटक होय करके स्थितहोयगये
उपरांत और अनेक जीव जंतुजोथे सो सब मानो
चित्रके समान चत्रही होयकर अचल होयगये

८२
भ.
४

इसप्रकार भक्त सुखेयानंदजी नित्य वणाविरेंजा
यकर हृस्स भगवानके वडेनिरमल और सुखदा
यक चरित्रजोहैं सो वडीकोमल रसीली स्वरसे आ
लापन कर कर संसारके जीवोंको अभय और स
फल करते रहतेथे एकसमय भक्तप्रधान हृस्स
प्रमानमाके गुणगण गावते और विचरते हुये
मथुरा पुरीमेंचले आये तांहांदेवताउंके भवनोंको
भी लज्जा देनेवाला श्रीराधकेजीका भवनजोहै सो

४

देखते भये कैसाभी भवन कि संत समाज करके
परिपूर्ण भयाहुआ शोभादेताथा कृष्णपरमात्मा
को स्मरकर और संतभक्तोंके चरनोको वंदना
कर कर वीनाको कांधेपर धर करके वडी मधु
र स्वर और कोमलवाजसे रागतानको आलाप
न करने लग जातेभये और फिर तैसेही रसीली
और मधुर प्यारी स्वरसें कृष्णभगवानके चरित्रों
के मनोहरपदनोहैं सो मुखसें गायनकरनेल

८२
भ०
५

गे तवतिनके मखसें मानो संगीतके सार और भग
वानके अगाध चरित्रोंके ललितपद सुनकरके स
व वैस्नव गदगद प्रसन्न होयगये और भक्तप्रथा
नके चरनों पर वारवार प्रणाम कर कर नाना
प्रकार शलाघा वडाई जोहै सोकरनेलगे कि अ
हो भक्तउत्तम तुमधन्यहो किजिनोने ईहां आप
ने चरनधारकर आज संसारमे हमको सफल
करदियाहै तब इस प्रकार संतोंका सीलसुभा

५

व और हित प्रीति देख कर सखयानंदजी सबको
सीसनाय कर और वंदनाकर कर फिर पृथवी
पर आसन लगाय करके बैठ जाते भये ।१। चौपा
ई। तब वै सब संतन मृदुवानी। विनय प्रेम अस
वदन बखानी। सनहो भक्त सिरोमणिनागर।
जब भगवान तरणभवसागर। कृस्नदेव हारन
दुखदीना। द्वारावती गवन निजकीना। पाछेगो
पि सकल विलपाती। कीनविरहं गायन जहिभां

सो

नी। आजँसुभक्त सब सुखदाई। हमहिं वदन निज
देहु सुनाई। भक्तप्रवर संतन हि विदेखी। करि प्र
णाम जत हरष वसेखी। राधाकृष्ण चरन जलजा
रन। हृदय सुमरि निज विघन निवारन। गोपिन
विप्रयोग भगवाना। कीन वदन गायन जिमि ना
ना। सो मन हरन ललितँ पावन। लागे भक्त मधुर
स्वर गावन। सुनत लोग कहणारँ पागे। हाहाक
रन करन सब लागे। केऊ धरणि मुरछित प्रगला

ये। केऊ विऊ वन इकटक छाये। केऊ निरन निरखे
द अधीरा। विकल वहाय प्रेमदृगनीरा। गवनेतो
रि गृहस्य प्रतिवंधा। भयेसि वलि विपट निसंधे
दा। गैयन खानपान तजिदीना। वनस विकलस
वहाय वही ना॥ दोहा। श्रीराधाकर भवन मध
मृउ मूरति कल जोय। सोऊ लागि रोदन करन
कंपि करन दृगतोय। टीका। तव वैस्नव संतजोध्ये
सोवडी वनीन अर्थात विनती कीभरी हुई वाणीसें

८२ भ. ८

करनेलगे किहे प्रवीनहे भक्तसिरोमणी जव संसा
र समुद्रके तारनेवाले और दीन जनोके उरवनिवा
रनेवाले कृस्नपरमात्मा मथुराको त्यागकर द्वारि
काको चलेगयेहैं तव पीछे गोपीसमाजने जिस
प्रकार भगवानका विरह विलाप गायन कियाहै
सोआज अपने मुखसे हमको सपष्ट करके सव
सुनायदीजिये इसप्रकार संतोंका कथन सुनक
र और तिनकी श्रद्धाहचीदेखकर भक्तप्रधान प्रणा

८

मकरके गद गद प्रसन्न होयगये तिसतें उपरां
त फिर सर्वविघ्नोंके निवारने वाले श्रीराधा
कृस्नके चरन कमलोंको हृदयमे स्मर कर
के भगवान ओर गोपियोंका जिस प्रकार वि
रहं विषादभयाथा सोवडे मनोहर ओर ललि
त पदोंमे मधुर मधुर स्वरसे भक्तोप्रीती पूर्वक
गायन करकर सबको रिफावनेलगे तब प्रेमसे
अद्भुत गायनको सुनकर वेस्नव संतोके म

८२ भ० ८

हित सब लोग कहणा रसविषे भीगे हुये हाहा कार कर कर रुदन करने लगजाते भये केते आकुल और मूर्छा होय कर पृथवी पर गिर पडे केते एकटक दृष्टी जोडे हुये चित्रके समान स्थिर होय गये केते धीरजको त्यागकर और वैरा गी चित होय कर प्रेम नीर जो है सो नेत्रों में बहाय चले जाते हैं केते गृहस्थका बंधन तोड़ कर निरमोह और विर कत होय गये वेली वृक्ष भी सब अचल गती को प्राप्त होजाते भये

८

गौओंने खानपान सब त्यागादिया और तिनके ब
छरी बछरे भी दूध पीनेसे नहत्त होयगये तहां
श्रीराधाजीके भवनमे वडी स्हह मनोहर मूरती
जोथी सोभी प्रेम करके व्याकुल और कंपायमान
भई हुई रोदन करकर नेत्रोंसे जलका प्रवाह व
हायचली जाती है । २ । चौपाई । अस अदभुत अव
रज अवसरवो । जीवजंत अवचल सव देखो । ह
खया नंद भक्त भगवाना । भयोनहत्त करन क

८२
भू. ५

लगाना। ज्ञानगाथ कछु वदन अलाई। मुरछि
तविकल लोक समुदाई। सावधान करि लीनउठा
ये। मायामुहत लोग विसमाये। दर्शन सोहमए
तिनकाहीं। विपुलवेर पाछिलमन माहीं। उरविचा
रि गायन सुखरागे। करिप्रणाम अस भाषणलागे
धन्य धन्य तव भक्ति प्रवीना। जदुपति चरन भक्ति
दृढलीना। सकललोक जनसंत समाजू। तवज
सविरहं कथन करिआजू। कौनसनाथ भक्त स

५

वकाहीं। तवसमान उरलभ जगमाही। भयेतेहा
हिं लोक हितकारी। गायन रसिक भक्त व्रतधारी
श्रुमसप्रसंसहि मुख विविधप्रकारा। करत परस्पर वि
नय ज्हारा। निजनिज चले सदन सुखपाये। भक्त
सट हृंदावनछाये। तहांनिवास कछुक दिनकी
ना। लेनवहोरि ललिनकरवीना। कृस्न चरित गु
णगण सुखगाते। तीरथञ्जनक भक्ति मदमाते
अटन करत मथुरा पुरि आये। निवसत तहां कृ

८२ भ० ९
10

स्तगुणगाये। जानिजविर निज निवलशरीरा। ए
कदिवस रविनंदनि तीरा। हृस्त चरित्र विमलप
दगायत। करत भक्त हरिभक्ति परायन। कौत
कतजत हविर निजकाये। हृस्त लोक कहं भक्त
सिधाये। दोहा। देखहु भक्ति प्रभाव इह भक्त हृस्त
गुणगाय। मुनिजोगी जन अगम जग लीन सु
गम गतिपाय। २। टीका। प्रेमवश अदभुत श्रौर
आचर्ज कौतुक देख कर कि जीवजंतु सब अचल

आनदवनहोयगयेहैं भगवानके भक्त सबखयानं
दजी तरत गायन करनेसे तहत होयगये तब
और भांतकीचरचा और कथा वारता आलापन
कर कर मूरछा करके व्याकुलभये हूये लो
गजोथे सोसावंन करके सबउठायलिये प्रेमसमा
याके मोहितभये हूये लोगोंको वेकुछभी
समर्णनहींरहा तब वहूत वेरके पीछे तिस
गायनके प्रेम सबको हृदयमे विचारकरती

धा

८२
भ०
॥

नभावसे प्रणाम करके कहने लगे किहे भक्त
प्रवीन धन्यहो तुम धन्यहो और धन्य तुमारीज
दुनंदन भगवानके चरनकमल मे दृढभक्ती
है देखोकि जिस प्रकार आज तुमने इहभग
वान और गोपियोंका विरहं विजोग कथनगा
यन कर कर लोगोंके सहित सब संत समाजको
सनाथ और सफलकियाहै ऐसे हमरा कोन
सामर्थहोय सकताहै तोते भक्त प्रधान ।

॥

तुम जगतमे दुर्लभहो तुमारे समान उपकार
कीनिधी और गायन रसक भक्तव्रतधारी नाको
ई पीछेभया और नाआगे होंगा इसप्रकार अने
कशलाघा बडाई और परस्पर विनती प्रणाम क
रकर सुखपूर्वक सब लोग अपने घरोंको चले
गये और भक्तश्रेष्ठ सुखेयानंदजी श्रीवृंदावनमे
विराजतेभये तहांकुछक दिन निवास करकेफे
रहाथमैवीना लेकर कृस्नभगवानके पवित्र

य

८२
भ०
१२

गुणगाणजोहैं सो गावतेहूये भक्तीके मदमैमत्त
होयकर अनेक तीरथोमै भ्रमते भ्रमते मथु
रा पुरीमै आय प्रापतभये तहांकृष्ण परमात्मा
कोभजते हूये निवास करनेलगे तव समय पा
यकर अपने शरीरको सिथल और निर्वलजा
न करके एकदिन जमनाजीके किनारेपरचले
आये तहां भक्तीमै लीनभयेहूये कौतकसें श
रीरकोत्यागकर ब्रह्मलोकको चलेजातेभये।

13

८२
भ॰
१३

नाभादास कहतेहैं कि हे संतो इहदेविषे भक्ती
का अदभुत प्रभाव किक्लसभगवानके गुण
गण गावते हूये भक्तसखिया नंदमनी जोगी
जनोको बडी डरलभ और अगम गतीजोहै
सो भक्तीके प्रसादतें सुगम सहजेहीं प्रापत
करलेतेभये ।१३। इतिश्रीभक्त विनोदग्रंथे भग
वदभक्ति महातमे मिहासिंहकृत भाषाटीका
यां सखियानंद चरित वरणन नाम सर्गः

१३

अथ सयन चरितं । दोहा । श्रवण सुखद मानस
मदन हरन विवध तापसूल । भक्ति महातम क
थन कल करहुं सकल सुखमूल । हरिपदपं
कज भक्ति दृढ करन तरन संसार । नामन उ
रमति उरत उर विदरन विषय विकार । चौपा
ई । विदत बंदेल खंड जेदेसा । तहांवसहिं इक ह
विरनरेसा । राजाराम नाम अस तासा । तहि इ
क रच्यो ललित थल वासा । बांधव गाढ असना

प॰ मे॰ १

म सुहावा। रम्मय धवल धाम मनभावा। लसत
कलस कल कंचिन हारा। जडित चारु मणिवि
च अगारा। भोरहिं उदित होत जब भाना। जगम
गात छविदेत महाना। वापि तडाग कूप चहुंओरा
उपवन द्रुमन दरस चितचोरा। वाटिक सुमन ल
लित अमराई। मधुप सकुन स्वर मधुर सुहाई।
आपभूप विद्या गुणसागर। दायादान धरम म
ति नागर। देव यजन पर पर हितपाला। विष

य विकार मार मदजाला। एक पतनि रत धीरज
धामा। वीर प्रधान कुसल संग्रामा। तास एक भृत
नापितकोई। तैलाभ्यंग करम परसोई। प्रीतिपात्र
छितपत अभिरामा। सयन नाम सेवक गुणधा
मा। दोहा। इत उत देखत संत किन छितपत वि
त दत जोय। रतिरत करत विभक्त मत तास दिव
स नित सोय।। टीका। अब और कानोको सुख
और मनको आनंद देनेवाला और तीन प्रकार

८१
भ॰
२

केताप म्लको नास करने वाला सरव सुखोंका मू
ल भक्तीका संदर महात्मजोहै सो कथन करताहूं
कैसाभी महातमहै कि दोष डरमतीके सहित स
व विषय विकारोंको नास करके हरिभगवान
के चरनकमलों की भक्तीके दृढकरनेवाला और
संसार समुद्रके तारने वालाहै बुंदेलखंड नामादे
सजो वडा प्रसिद्ध और उजागरहै तहां राजारामनाम
करके एक प्रजापाल अर्थात राजाहोताभया जिसने

वडीप्रीतीसे एक वड़ा सुंदर वास अस्थान जो है
सोवनवाया और वांधव गढ़ तिसका नाम रा
खा सो अतसे रमणीक और तैसे ही मनको भा
वते वडे ऊचे धवलधाम कि जिनके द्वारोंपर म
नोहर कंचनके कलस शोभादेतेहैं और शिला
मणियों करके जड़ित भयाहूआ सब अंङण तै
सेही दिवालोंकी मनोहरताई किजव प्राताका
लके समय सूरज भगवान उदय होता तवचा

८१
भ०
३

रो वोरसे जगमग जगमग मणियांजोहैं सोवमक
ने लगजातीं और भी चारोंवोर् वावली तलाउ औ
र हुये जलसे परिपूर्ण भये हुये छवी देतेहैं उपव
नजोवाग और् ग्रामोंकी अमराई तिन हदोंका सुं
दर सनमानो चित्तको चुरायलेनाहै तैसेहीं मनोह
र वाटिका अर्थात वगीची जिनके वीच भांत भांतके
फूल और नाना प्रकारके पंछीवडी मधुर स्वरसेवो
लते और भ्रमरे गुंजार करते शोभा पावतेहैं आपरा

८२

नाविद्या और गुणेंका समद्र दयादान, सनमान औ
र धरम विचार मै परम प्रवीन भगवानके भजनसे
वनमै परायण परहितके पालने वाला और का
म क्रोध मोहमद इत्यादि विकारों से वरजित एक
नारीव्रत धीरजकाधाम और वीर प्रधान रणविवे
जयकी सामर्थ वालाथा तिस राजाका नाईजाती
एकसेवक वजीचनराई से नित्य तैलकी मरदँक न
रने वालाथा और प्रजापाल की प्रीतीका माना

८१
भ०
४

पाइथा अर्थात तिसको राजा अपनावश प्यारा सेव
क जानते और सनेह करतेथे तिसका नाम सधन
होता भया सो ऐसा धरमी और गुण प्रवीनथा कि
जहां कहीं संत साध अतिथी ब्राह्मणको देखता
तो राजाका दियाहूआ धन जो घरमें होता सो स
व भगवानके नमित्त साध संतो का बांट देताथा
रात्रीदिन सदैव तिसका एही धर्मथा ।१। चौपाई।
कीर्तन कथा चरित भगवाना। मंजन भक्ति स्नान

४

नसनमाना। कुसम चरन दृढ प्रीति सुहाई। करत सं
त सजन सिवकाई। वेतन विगत वपन कचकरना
श्रोत जनन करमर दनचरना। अंगुद वरतन गुरु
जनसेवा। करत सयन इत्यादि अभेवा। एकदिव
स जव प्रात सुहाई। कितपत भवन करन सिव
काई। चल्योजात मारग नवदेखे। लख्यत ठाढ्सं
त सुभभेखे। करि प्रणाम नमत तिनकाहीं। ला
वा ललित सदन निजमाहीं। कायकरम मनभक्ति

८। भ० ५

अभेवा। लागयो करन संत सभ सेवा। सो सिव काई
भूप बिसरानी। संतत संत चरन रतिमानी। अस
नहि करत संत सिव काई। आयो छाय मउ दिनरा
ई। राजाराम प्रात इत जागे। आह्निक किरत करन
निज लागे। तैलाभ्यंग समय जब आवा। सयन रू
प धरि रुचिर सुहावा। जानि भक्त स्वामिन सिव
काई। कोप हर्षि कछु करहिं न राई। मायक रू
चम सयन सुहेला। लेत ललित सौगंधिक तेला।

५

सादिर भक्तिभाव जनआई। लागकरन मरदन ह
खदाई। तादिन देखिनास चतराई। भयोप्रसन्न
मोद बसराई। दोहा। करनहार कौनक सकल
करिछिन पति सिवकाई। भयेलपन इत सदन
निज सयन संत सखदाई। कियेबिसरजन भक्ति
जन भोजन भवन जिमाई। भयोभीत वस सम
रि उर निजस्वामिन सिवकाई।२। टीका। औरभी
कीर्तन कथा और भगवानके गुण चरित्र जोहैं

ह। भ। ६

सोप्रीती भक्तीसें भली प्रकार श्रवण करता औ
र कृष्णभगवानके चरन कमलों की प्रीतीवाला
भयाहूआ नित्य संत भक्तोंकी सेवा में ही मग
न रहताथा जोकिसीका दोष अर्थात छिद्र ढू
नभीकरताथा जो वे तन मजूरी कुछ नहीं ले
ता और थकेहूये संतभक्त अथवाकिसी महाज
नको देखता तोप्रीती भक्तीसे मरदन चापी
करनेलगजाता और वटणे आदि सो गंधिक।

इच्छवनाय कर जाय करके मनमानसें उत्तम लो
गोंको मल आवताथा एकदिन प्रातःकाल होते
ही राजाकी सिवकाई करनेको जो चला तो मारग
मै तिसको भूखे ठाढ़े हूये संतमहात्मा देखपडे त
वतिनको दीनभावसें प्रणाम करके वडेमन मा
नसें घरमै लेआया और मन वचन काया करके
तिनकी सेवा भक्ती जोहै सो करनेलगा ऐसे संत
सेवा मै लीनभया सयन राजाकी सिवाईको हृदय

८१
भ०
७

सें विसारदेताभया तब संतोकी सेवा करतेहुये ति
सको स्वरज मध्यान मै क्षायन होयगया और ईहां
प्रातःकालहीं राजाराम जो जागे तोअपना नित्य
का सब कर्मजोहै सो करनेलगे और जब तेलम
र्दनका समय आया तब भक्तकी स्वामी सेवा
को विचारकर किराजा कोपहूंछी नाकर उठलर
तहीं सयनकारूप धारकर भगवान कृपानिधानतरां व
लेआये और मायकसयनभेषधारी प्रभूवडासंदर सुगंधीवालातेल

लेकर जायकरके राजाको बडी सुखदायक को म
ल मरदन जोहै सो करने लगपड़े तिस दिन राजाति
सकी चतराई के सहित बडी सुखदायक सेवा दे
खकर हृदयमें अत्यंतही प्रसन्न होयगये तब क
रन हार भगवान अपने अदभुत कौतुकसे राजा
की सिवकाई करके तरत नहांही लुपत होयगये
हैं सयनभी संतोंको भक्ती भावसे भोजन जिमा
यकर और भली प्रकार सब सिवकाई कर कर स

नमानसे विदाय करदेताभया तिसतें उपरांत अप
ने राजास्वामी की सिवकाईका स्मर्ण करके भय
से आकुल होयकर कहनेलगा किहे देव अबमे
कौन उपाय करूंगा ।२। चौपाई। तैलाभ्यंग आजन
हिंकीना। अस उर गनन सोचमनलीना। करहिं
अवश्य कोपनर राऊ। देव करहुं अब कवन उ
पाऊ। अस विचारि चिंताकुलहोई। सकुचिन ग
यो द्वार नृपसोई। भयवस रह्यो दहिर थिरसयना

बोलि नसकत बदन कछुबयना। तबम्हन आन दे
खि मनमारे। नाहबदन असगिरा उचारे। आजन
जाहु भवन कसराई। कवन सोच तोरे उरभाई। बो
लो बदन सयन जन साधू। मोहितें भयो आज अ
पराधू। निजसदैव स्वामिन सिवकाई। भयोनआ
ज उपस्थितभाई। तातेजाहुं नउरपत आगे। जोतम
कबहुं दयारस पागे। करि बतराई युक्तियुत आ
पन। न्रपपें जाय मोर विज्ञापन। करहु भात प्रभ

८१
भ॰
५

कोप निवरनी। सहज हिं शांति मोद मनभरनी। अस
म्तन स्नत सयन करवानी। त्वपें जाय युक्षपगा
पानी। दोहा। भनेदास तव सयन थिर उरपत ठाढे
द्वार। कृपा अपेक्षत नाथ तव निज अपराध वि
चार।३। टीका। इस प्रकार चिंताशोच मे लीन भया
हुआ सयन कहता है कि आज मैने अपने स्वामीके
अंगोंमे तैलकी मरदन नहीं की इसतें सो अवश्य
मेरे पर कोप करैंगे हे भगवान अब कौन यतनसे

५

वन्नं गादेखिये मेरी कैसी दशाहोतीहै ऐसे विचार
कर चिंताकेवश भयाहूआ वडे संकोचसे राजाके
द्वारपर चलाआया। और भयसें कांपताहूआ द्वा
रके वाहरवहीं स्थित होयरहा मवसे कछु वोल
नहीं सकताहै तव राजाके और सेवक तिसको
मनमोवहूये देखकर कहने लगे किहे भाई तू
आज प्रजापालके निकट क्यों नहीं जाताहैं तेरे
को कौन सोचने घेराहूआहै ऐसेतिनका कथन

८।
भ॰
१०

सुनकर परम साधुजन सयन जो है सो कहने लगा कि भाई आज मेरेतें वड़ा अपराध होयगया है मै आज स्वामी की नित्य की सिवकाई से चूकरहा हूं अर्थात आज मेरे से तैलकी मरदन जो है सो नहीं होय इस की हसीतें भयभीत भया हूआ आगे नहीं जाय सकता हूं अव जो कदाचित तुम दया करके अपनी चतुराई और युक्ती से जाय कर प्रजापाल के आगे मेरी ऐसी विनती और प्रार्थना करो कि ।

१०

जिसतें तिनके हृदयका कोप सहजेहीं शांतीहोजा
वे और मेरेको कृपा दृष्टीसें अपराधकी क्षमा भी
करें इस प्रकार सेवकजोहैं सो सयन की वाणी
सुनकर तुरत राजाके पास जायकर हाथजोड
करके विनती करनेलगे किहेनाथ आपकेच
रनोका दास सयनजोहै सो प्रभूतुमारे भयसें
संकोचके वशभया हूआ द्वारेपर स्थितहोयर
हाहै और कुछ अपना अपराध विचार कर

८९
भ०
॥

दीनदयाल की कृपा हृषीके पावने का अभिलाषी
है।३। चौपाई। तासु हेतु जस आयसु होई। कहिये
दीनदयाल अब सोई। भूप सुनत मानस बिसमाई। भ
योवदन अस वचन अलाई। सो करि गयो पान सु
खदाई। तैलभंग रुचिर सिवकाई। हम नगुनत
ताकर अपराधु। सयन सुसील सरल चितसाधु।उ
पजी कवन तासु उरभांती। मैनहि करहुं वेग अब
भांती। अभय देहुं सवि सेवकजानी। ल्यावहु जाय

म

सपदि गहिपानी। अस सासन नरनायक पाये। ता
सुलेत सनस्याव भ्रतआये। देखित भन्यो सदित छि
नराई। जननव आज सकल सिवकाई। हितज्ञतजथा
उचित करिमोरी। कीन गवन निज भवन बहोरी
अव केस उपजि भांति उरतोरे। बोल्यो सयन ज
गलकर जोरे। मैजव आज प्रात प्रभजागा। स्वामि
सदन नव आवन लागा। दृष्यत देखि संतमग
नेहू। गवन्योलेत नाथ निजगेहू। तिनकर कर

८९
भ.
१२

त सदन सिवकाई। आजनम को दास प्रभु आई। या
तैं मानि त्रास उर भारा। रह्योठाढ सेवक थिर द्वारा।
असकहि भूप परम बिसमाना। आन भक्तन सन
वचन बखाना। देखा नमहं सयन जन आवा। भ
क्तन वदन तव वचन अलावा। देखो महाराज हम ए
हा। तैलाभ्यंग करत प्रभु देहा। अब इहि कथन स
नत हम काहीं। भयो नाथ विसमय मन माहीं।
रह निश्चय हरिभक्त सुजाना। अस विचार सब

१२

लोगनदाना। बोल्यो नम्रवचन नरराई। अवतैंस
यन सुपथ सिवकाई। तव नकरहु विनुभगवन
सेवा। सेवहु अतिथि संत द्विजदेवा। मैतोरेदेहौं
इकग्रामा। जहितें सरहिं सकल तवकामा। दी
न्हा। मोरे सनमत्व सयन अव गुरु समान थिर
होय। रहहु सदा अनुकूलतव वंस धरम नि
जखोय।४। टीका। अव तिसके नमित्त जैसी
आज्ञाहो सो कृपानिधान कहि दीजिये तवराजा

८१
भ०
१३

सुनकर अचरजको प्राप्त होयगयाया और कहने ल
गा कि भाई देखो प्रातसमय अपनी तैल मरदनआ
दि सुखदायक सिवकाई जो है सो भली प्रकार स
व कर गयाहै मैं तो तिसका कुछ अपराध नहीं दि
खताहूं सयनवश सुशील और सरलचित साधू
है तिसके हृदयमे इह कौन भ्रम उतपन्न होय
गयाहै मैं अबी तिसकी शांती करहूंगा और अप
ना सुहृद सेवक जानकर तिसको अभयदान दे

१३

डंगा जावे सयन को मेरे पास शीघ्र लेआवो ३

से राजा की आज्ञा पायकर सेवक नर तहीं जायक

र तिसको राजा के सनमुख ले आये नव राजा दे

खकरके कहने लगा कि हे सयन तू तो हित चि

तसे यथायोग्य मेरी सब सेवकाई करके फिर

अपने घर को चला गया था अब तेरे हृदय मे

इह कैसा भ्रम संदेह उतपन्न होय गया है त

व राजा को प्रसन्न जानकर सयन हाथ जोड़क

८।
भ॰
१४

रहीन वाणीसे कहनेलगा किहे कृपानिधान मैंज
व आज प्रातःकाल उठकर हमारी सेवा करनेको
घरसे निकलकर चलपड़ा तव मारगमें संतमहा
त्मा भूखिजो देखे सोसहार नहीसका तरतनिनको
साथ लेकर और लौटकरके फिरघरमेंही चला
आया तहांतिन की सेवाभक्ती करते करते प्रभूमे
रेको आपकी सिवकाई जोथी सोविसर गई और
समय वतीन होयगया अपनी टहिल सेवापर

१४

आयनहींसका इसीतें दीन घालमैं चिंतमैं भयमा
न कर द्वारपरहीं स्थितरहा सनमुख आवनेको
सामर्थ नहींभया ऐसे सयनका वचन सुनकर
राजापरम अचरजको प्राप्तहोयगया और अ
पने हमरे सब सेवकोंको कहनेलगा किभाई
आज सयन जो मेरीसेवा करने को आयाथा सोतो
तुम सबने भी देखाहोगा तब सेवक जन कह
नेलगे कि हांपृथीनाथ हमने देखाथा आपको

८१
भ०
१४

प्रीती भक्तीसे भलीप्रकार तैलकी मरदन कररहा
था परंतु अवजो इसके मुखसे कथन सुनाहै तो
नाथ हमभी वडे अचरज को प्रापतहोय गयेहैं
इहतो निश्चयकरके भगवानका वडाहदृ और
चतुर भक्तहै जवइस प्रकार सव लोगोंने सयन
की शलाघा वडाई गायन करी तव राजा प्रसन्न
भयाहुआ कहनेलगा किहे भाई सयन भक्त
ने आजतें लेकर अतिथी संत ब्रह्मकी सेवा और

१७

भगवानके भजन स्मर्णके विना और किसी मात्र

प्रकी सेवा नहीं करना भक्त मै तेरेको एक सुंदर ग्रा

मजो है सो देदेता हूं तिससे तेरा सब काज सिद्ध हो

जायकरेगा और प्यारे तूं अपने वंसका धर्म सव

त्यागकर सदा प्रसन्न चित होयकर के गुरु के

समान मेरे पासही निवास कियाकर।४। चौपाई

भूपवचन सुनि सपन सुहावा। करि प्रणाम निज

सदन सिधावा। नवतें प्रीति भक्ति जुत रागा। अ

८१ भ॰ ९९

16

थिक संत उज सेवनलागा। कृसमभजन ततपरदि

नराती। विजत मोहमद मदन अराती। संज्ञतन्द

पति लोक समुदाई। तास भक्ति हठ देखिसहाई

कृसमसरोज चरन रतिमानी। भये सुभक्त हवि

रसव ज्ञानी। अस इह चरित यथा मतिमोरी। व

रणन कौन वदन कछुथोरी। दोहा। अमर यं

भु महेश विमल कृस भक्ति सुखदाई। तेनर ध

न्य सुधन्य जग उरत हरन जिनपाई। ५। टीका।

९९

तब राजाका बडाहित प्रीतीवाला वचन सुनक
रके सयन जोहैं प्रणाम करके आनंदसे घरको
चलागया तबतें बडी प्रीतीभक्ती वालाभयाहूआ
दिनदिन अधिकतें अधिकही संतभक्तों की
टहिलसेवा करनेलगा और काम क्रोध मद
मोह इत्यादि विषयोंकों जीतकर रात्रीदिन हरि
भगवानके भजन सुमरणमै लीनहो जाताभया
तबराजाके सहित सब लोग तिसकोवडी ह

मे

म वेयन्न पुरषहें किजिन्होने इहपापोंके हरने
वाली भगवानकी भक्ती प्रापत की ओर जगत
मै अपना जन्म सफल करलियाहै ।५। इतिश्री
भक्त विनोदग्रंथे भगवद भक्ती महातमे मिहां
सिंहकृत भाषाटीकायां सपन चरित वरणनं
नाम सर्गः ॥

अथधन्नाभक्तचरितं दोहा अब सुनहौ मनमान सु
न आन सुखद सुभगाथ नाम सुनत उपजत बि
मल हृदय भक्ति जडनाथ । चौपाई मथुरा प्रांत
रुचिर इकयामा तहां अमीरवंस अभिरामा । साधु
सरलचित सील सुभाऊ । धन्ना नाम भनत सबका
हू । मात पिता सुत तिय जुत सोई । धेनु चरावन
ततपर होई । प्रात जात उठि कानन मांही । आव
त सदन काल निसि कांही । अस प्रकार गैयन रत

तासा । करत गवन वन समय बितासा । एक दिवस
अनथी इजकाहू । रुचि सनान सज्जन थलताहू । हे
रत भ्रमत द्वार नहि आवा । तहां विलोकि रुचिर म
न भावा । गोशाला पावन प्रियजीके । देत ललित
उपलेपन नीके । रुचि समाज सज्जन सब ल्याई ।
विप्र भक्तिजन रुचिर सजाई । बैठो सज्जन हृदय प्र
सन्ना । तोला आय मदन निज धन्ना । शालिग्राम रु
चिर मनभावा । सज्जन देखि गोप हरषावा । उपजी

हृदय रुचिर रुचिनामा । मोर भाग कबहोहि प्रका
सा । जो मैं इहि महेश मन भायन । करहु देव प्र
जन कल गायन । तब इज करि पूजन भगवाना
लागेयो करन जबहि प्रस्थाना । धन्ना जोरि जुगल
निज पानी । बोल्यो वदन मधुर मृदुवानी । विप्र
रूप मोपैं करिदाया । शिला एक कलभक्त सहा
या । मोरे देहु दास निज जानी । तब इज्ज भन्यो
सुनत अस वानी । तुमहिं न उचित करन अस मे

भ. मं. १

वा। विश्वंभर पूजन प्रभुदेवा। दोहा यद्यपि
कीन्ह्यो बार बहु उज्वर वारन नाम। तद्यपि मि
टत नसौ भयो तब हृविश्र करिहास। गहितग
रव श्रमतर तरत नाम करन थरिदीन। इहठाक
र पूजन उचित हम कहं भक्तप्रवीन १ टीका ना
भादास कहतेहैं कि हे संतो अब और बडी शुभ
और सुखदायक गाथाजोहै सो मनमानसे ध्यान
देकर श्रवण करिये कैसीभी गाथाहै कि जिसके

श्रवण करनेहीं जदुनंदन भगवानकी पवित्र और
निर्मलभक्ती हृदयमें तुरत उपजआवतीहै मथुरा
के परे एक सुंदर ग्राम जोथा तहां आभीर अर्थात्
गोप वंस विषे सरलसील और साधु स्वभाव वाला
एक यज्ञा नाम करके लोगोंमें प्रसिद्ध होता भया
सो माता पिता स्त्री पुत्र इत्यादि कुटंबके सहित ।
अपने घरमें सुख पूर्वक निवास कर कर नित्य गौ
वनकी सेवकाईमें लीन रहताथा प्रातःकाल उठ

८· म· ३

करके वन विषे चला जाता और गौवनको भलीप्र॰
कार चरायकर फिर सांझको स्नाव पूर्वक घरमें च
लाआवता ऐसे तिसको नित्य वनमें जाते और गै
यनको चराते चराते कछु समय वतीत होयगया
तब एकदिन कोई अतिथी ब्रह्मण पवित्र सनान॰
और पूजनका स्थान खोजता और भ्रमता हुआ ति
सके द्वारपर आय प्रापत भया सो तहां जलके स॰ तिसने
हित सुंदर गौवनका स्थान देख कर और पवित्र॰

जानकर प्रथम स्नान किया तिसके उपरांत दे
दर लेपन देकर और पूजाका समाज सब सजाय
कर प्रीती भक्तीसे बैठ करके पूजन करने लगा
पड़ा इतनेमें यशा भी गौओंको चराय कर घरमें
आय गया तब आगे सुंदर मनको भावता शालि
ग्राम भगवानका पूजन होता देखकर गोपजोहै
सो परम हरषको प्राप्त हुवा और बड़ी अभिला
षा लगीवाला होयकर कहने लगा कि मेरे भा॰

प॰ मे॰ ४

य कब उदय होवैं जो मैं भी इसप्रकार शालिग्राम भगवानका पवित्र पूजन और सेवन जोहै सो क हे तब वे ब्राह्मण भगवान कृपानिधानका पवित्र पूजन कर कर जब चलनेको तयार भया तब धत्रा हाथ जोडकर बडी दीनवाणीसे विनती करने लगा कि हे द्विजप्रधान अब दयाकरके अपने चरनोंका सेवक जानकर भक्तसहायक भगवानकी एक प वित्र शिला मेरेकोभी दानकरो ऐसे धत्रेका वचन

सुनकर इजड़जन्म कहने लगे कि भाई इसप्रकार
भगवानके पूजन करनेका तुमको अधिकार नहीं
है इसको ब्राह्मणकाही धर्म है श्रेसे यद्यपि ब्राह्मण
ने तिसको वार वारही निवारण किया तद्यपि सोन
ही मिटता भया अंतको तिस ब्राह्मणने हाथीसे एक
भारासा पत्थर लेकर श्रौर यज्ञाके हाथ देकर समु
झाय दिया कि तू इसका पूजन सेवन किया कर इ
ह ठाकर पूजन करनेके लायकहै १ चौपाई होन

पं. मं. ५

5

रुचिर निश्चय दृढ़ जाके। कानह्मेत ज्र मेरहति ताके।
साधु सरल कपट गत धन्या। तहि निज इष्ट देव जि
यमन्या। करि प्रणाम नयनन उरलाई। पटल पेटि
इन सीस उठाई। बहुरि विप्रवत धावन ग्रीवा। करत
पद्मद्य प्रेम मत्र पीवा। चल्यो चरन हित कानन गैया
उर उनमाद भक्ति भाव छैया। कांधे कमरि करन।
कल मोटी। बांधे वासि वसन जग गोटी। श्रम विचा
र मानस निज ठाना। करि स्तव भजन भगवाना।

प्रभुहि रुचिर नैवेद लगाई । पाछे लेइ शेष कछुखा
ई । अस विचारि सरिता तट गयऊ । करि सनान
पावन तन भयऊ । बीनत पुष्प द्रोण धरि लीने ।
बैठ्यो सथल अमल सुभचीने । राखि चरण हरि शि
ला सुहाई । करि सप्रीति पूजन मनलाई । सो सो॰
जन बांधित पटवासा । मनभाव राखि भक्ति व्रत
नासा । करत करन कल वसन अछादिन । लाग
हृदय भगवान अरायन । भनत दास तव त्रिभुवन

ध॰ भं॰ ५

6

साँई । विधि विधान कछु जानत नाहीं । शाक प्र
क कछु भोजन वामा । पावहु देव हरण भव त्रा॰
सा । अस कहि एक मुहूरत पाछे । सहित खोलि
नयन निज आछे । जब देखो नैवेद सुहावा । कृपा
नाथ कछु नाहिन पावा । तब धन्ना उरकीन विचा
रा । हरवा विप्र दधि दुग्ध अहारा । भक्तपाल तब॰
नाहिन पावा । जोरि जुगल कर विनय सुनावा ।
तुमसेहो आज हुक निजदासा । कालि करहु प्रभु भ॰

चिर अजामा । दधि दूध सरस भोग विरचाई । कर
कं कृपाल नवेदन ल्याई । दोहा आज लखत हूं था
त विठल तव प्रभु कृपा निधान । तोते अब हूई
कार इहि करहु भक्त पद मान २ टीका जहां भ
ली प्रकार निश्चय दृढ होजाताहै तहां जगतमें
क्या नही सिद्ध होता सो साधू सरलचित्त औरनि
मकपट धन्ना तिस ब्राह्मणके दिये हूये पाषाणको
अपना इष्टदेव मान लेता भया । और बारबार बेद

प. भ. ८

ना कर कर हृदय और नेत्रोंसे लगाय कर वस्त्रमें ल
पेटकर सीसपर चढाय लेता भया तिसतें उपरांत ।
फिर श्रेष्ठ भक्तके समान ठाकुरको गलेमें धार
ण करके मानो प्रेमके अमृतको पान किये हूये भ
क्तीके स्वभाव और उत्साहमें मगन यह्वा जो है सो कां
धेपे कंमल हाथमें सोटी और वस्त्रमें बांधे हूये बा
सी दो रोटी गौअनको चरानेके लिये वणको चला
आवता भया तहां आय कर हृदयमें विचार करने

लगा कि प्रथम भगवानका पूजन करूं और फिरदी
नानाथका नैवेद लगाऊं तिसते पीछे जो कछु बचे
गा सो संतोषमें बैठकर आप पायलेऊं इस प्रकार ।
विचारकर नदीके किनारे चला गया तहां स्नानक
रके शरीरको पवित्र किया फिर वणमे पुष्प पत्र ले
कर सुंदर होनेमे घर कर एक पवित्र और सुभ स्थ
स्थान देख कर तहां बैठगया तब एक पत्रके ऊपर
भगवानकी शिलाको स्थापित करके प्रीती भक्ती

प॰
भ॰
प

8

से पूजन किया तिसतें उपरांत वस्त्रमें बांधा हुआ वा
सा भोजन जोथा सो खोलकर और प्रेम भक्तीसे भ॰
गवानके आगे राख कर वस्त्रका पड्दा करके दीन
बंधूका आराधन और ध्यान कर कर कहने लगा ।
कि हे तीनलोकके नायक हे भक्तसहायक भगवान
मैं दीनदास महामूढ और अजान तुमारा सेवकना
थ शास्त्रके धर्म आचार और विधि विधानको कुछन
ही जानताहूं इह साग रोटीका कुछ वासा भोजन

जोहै सो आपके आगे नवेदन करताहूं हे संसारका
भय हर करनेवाले प्रभु अब दयाकरके इसको ।
पाइये ऐसे विनती प्रार्थना करकर एक मुहूरत
के पीछे जब नेत्र खोलकर देखने लगा तब नैवे
द जोहै सो वैसका वैसाही आगे धरा हूआहै कृपा
सिंधूने कछु भी नही पाया तब धन्ना विचारकर ।
ने लगा कि इह जो हय दहीके बिना खाखा भोजन
नहै इसलिये दीनबंधूने नही पाया तब हाथ जोड

कर कोमल वाणीसे कहने लगा कि हे भक्तपाल
आज दया करके इस दासका अपराध क्षमा करो
काल प्रभु मैं भलीप्रकार यतन करलेऊंगा बडे
सुंदर मधुर दधी और दूधके सहित भोजन लाय
कर आपके आगे नवेदन करूंगा आज भूखे और
प्यासे प्रभु तुम व्याकुल होयरहेहो तांते कुसमय
जानकर इस भोजनको कृपा करके पाय लीजिये
२ चौपाई असकहि कीन बहुरि सनमानी । विधि

वत वमन अक्ष्मादित पानी। कक्कककेवर पाख्रिल

जब देखा। परण पाक परिसरण लेखा। तब मे

दिगय भनत मनमाहीं। मोहि ते भयो रीति ज्ञत

नाही। हवि मनान पूजन भगवाना। अस विचा

रि उर भक्त सुजाना। जाय विमल वर वारि अना

वा। मतका तिलक भाल कल लावा। सुमर

त भक्त वत्स भगवाना। देत ललित लेपन मन

माना। करि पूजन मंजुत अनुरागू। सो नैवेद य

पं. मं. ९

वि प्रभु प्राशू । विधिवत वमन प्रक्षादिन कीना । मू
दे नयन ध्यान हरि लीना । वारवार सुख विनय उ
चारी । मोर सपथ तोहि भक्त उवारी । जो नैवेद मो
र इह हावा । श्रवन पाइ भवहारन हावा । असक
हि जवहि पठिल हग टारे । तव प्रभु भक्त पैज रख
वारे । दियेतास उजवे पाषाना । प्रकटे हरन मद
न छवि नाना । अरुण चरण जल जारन लाजा
उर विसाल वनमाल विराजा । नखछवि हृदय

भक्त जन मेडा । मानहुं जटत इंड दमखेडा । भाल
विशाल लसत कल खोरा । कच अलि अवलि वि
वक चित चोरा । पुंडरीक लोचन अरुन्यारे । भुज
आजान खलन मदहारे । तुंडकीर नासिक अवांकी
रट कलकांति कुंद कलिधांकी । मंजुल अधर विं
व दर ग्रीवा । अस सुखमानि धान सुखसीवा । ला
ग करन भोजन जल पाना । धरि गोपाल रूप भग
वाना । धन्ना देखि ललित छवि सोई । रह्यो मगन ।

प०
भ०
११

वारद सुदहोई । अहो सुभाग आज जग पही । अखिं
ल लोकपति मनभाव जेही । करत भक्ति वमक्त भोज
न होवे । दीनानाथ प्रेमकर श्रुवे । रहो शेष प्रभु भो
जन जोई । पायो नाम प्रीतिजुत सोई । दोहा नवतें
कृपान केत नित दीनबंधु भगवान । जन मन प्रेजुत
गात वन वहेखात पकवान ३ टीका ऐसे विनती क
रकर फिर तैसेही वस्त्रका पड़दा करके नेत्र मूंदक
र ध्यान करने लगा थोर काल कवेरके पीछे जब ने

त्र खोलकर देखने लगा तब पत्रके ऊपर भोजन ।
ज्योंका त्यों राखा हुआ पाया कृपानिधानने कछु न
ही खाया फिर हृदयमें बडा सोच और संदेह करक
र कहताहै कि अहो मैने रीतीके अनुसार सनान ।
करकर भगवान कृपानिधानका पूजन सेवन नही
कियाहै इसीतें दीन हितकारी प्रभु भोजन नही पा
वतेहैं ऐसे विचारकर यज्ञा भक्तने जाय करके निर
मल जलविखे सनान किया और माथेमें विभूतीका

प० भा० १२

तिलकदिया फिर भगवानको सुमरताहुआ मंदरले
पनेहकरके भक्ती प्रीतीसे बैठकर भगवानका पूजन
करताभया तिसतें उपरांत सो नैवेद आगे राखकर
और वस्त्रका पडदा कर कर नेत्र मूंदकर ध्यानमें ली
न होय करके विनती करने लगा कि हे संसारकाभ
य हर करने वाले हे भक्तपाल भगवान जो कदावि
त अब मेरा इह दियाहूआ खावो खावो भोजन नापा०
वो तो प्रभू तमको मेरीही सौगंद हो नाथ मेरेको अ०

पना दास जानकर कृपा करो और इस भोजनको पा
यलेवो इस प्रकार विनती करके जब नेत्रोंको खो
लकरदेखा तब भक्तोंकी पैज राखनेवाले और को
ट कामदेवकी छवीको लज्जादेनेवाले भगवान कृ
पानिधान तिस ब्राह्मणके दिये हुये पाषाणतें कैसे
अदभुत ध्यानसे प्रकट होजाते भये कि कमलके स
मान चरनोंकी लालीमय सुंदर शोभा और विशा
ल हृदयपर तुलसीकीमाला भक्तजनोंके हृदयको

प० भं० ६५

उत्साह देनेवाली तिन चरणोंके नखोंकी कैसी शोभा
कि मानो दसोंही अंगुलियोंके अग्रभागमें दस खंड होय
करके चंद्रमा जडित भयाहुआहै तैसेही विशाल मस्त
कपर सजाहुआ चंदनका तिलक भ्रमरयोंके समाज
को लज्जा देनेवाले श्यामकेश मुनीजनोंके मनको ह
रनेवाली चिबुक अर्थात ठोडी कमलों वत लाली क
रके युक्त नेत्रोंकी मनोहरताई इष्टोंका मद हरकर
नेवाली लंबी भुजें शुकजो तोताहै तिसके समान ना

सिका तैसेही वाकी भृकुटी अर्थात् टेढीभोंहें चंबे
लीकी कली और न्हायेके फूलके समान दांतोंकी
उज्जलताई बिंब जो कन्दूरी फलहै तिसको लज्जा
देनेवाले लाललाल होष्ठ और संखवत ग्रीवा अर्थात्
गला ऐसे गोपालरूप धार कर शोभाकीनिधी औ
र सुखकी अवधी भगवान मनमुख प्रसन्न होय
कर भोजन जल खान पान करने लगपडे तब ध-
न्यजोहै सो भगवानकी ऐसी छविको देखकर मा

प० भ० १४

तो आनंदके समुद्रमें मगण होयजातामया देखि
ये आज इसके पुरणभागयहैं कि अनंतलोकके पती
भगवान जिसके मनशुखे बैठकर भक्तीके वसभ
येहुये खावा खावा भोजन जोहै सो पायरहेहैं तोते
भाई सत्यहै सत्यहै भगवान कृपानिधान केवल
प्रेमकेही भूखेहैं देखिये तहां भीलनीके वेर सुदा
माके चावल और बिदुरका साग इह सब दीनबं
धु सदैव प्रेमके वशहीं पावते चलेआयेहैं प्रभुकी

परमपरा एही रीती चली आई है कि जहां निसकप
टप्रेमदेखा दीनानाथ तुरत तहांहीं रीझगये जब
कृपासिंधु भोजन पायचुके तब तिनतें जो कछुपी
छे शेष बचा सो प्रीतीपूर्वक धन्ना पायकर संतोष
में मगन होय गया तबतें भक्तीके वश भये हुये
कृपाके समुद्र और भक्तहितकारी भगवान अपने
दासकेसाथ नित्यही वनविषे गौवें चराते और ।
जैसा कैसा तिसका दिया हुआ भोजन वडी रुची

प॰
भ॰
१४

श्रीनीमे प्रसन्न होयकर खोवैते पावैते रहे ३ चौपा
ई गोप करम श्रम करत कृपाला । बीत्यो विपुन
फिरत कछुकाला । गवन करत तब इजवरतेहा ।
आवा प्रमत भक्त शुभगेहा । यत्रा जानि विप्रवर
सोई । सादिर परम हरष वसहोई । कीन नम्र स
ष्टांग प्रणामा । भाखो वदन वचन अभिरामा ।
इजवर तमके धन्य संसारा । मोपे कीन इमत उ
पकारा । इह साक्षातदेव मोहिदीना । मानके कृत्यकृ

न्य जगकीना। प्रभुवर दीनदयाल अभिरामा। मो
हि मन करत विघ्न सब कामा। इह हमार डग
अतलत दाया। जात न एक वदन कछु गाया।
विप्र सुनत मानस विसमाना। सुनहु गोपसुव
वचन बखाना। जोकरि सपथ करहु सईकारा।
तौ निज तात मनोरथ सारा। तोहि मन करहु
कथन हित जानी। बोल्यो गोपसुनत असवानी।
मोरे विप्र सपथशत तोरे। गुरु समान तव स्वामि

प॰
भं॰
५६

16

न मोरे। जमन देश कहणा निथहोई। मैथरि सीस करहु प्रभुमोई। तव बोल्यो द्विज हर्ष उमंगा। भक्त विष्णु भगवन तव संगा। भोजन करत दिवस। निसि आई। तव देहो मोरे दरसाई। श्रीगोपाल ललित मनभाई। मुहि लागत मुद्रा सुखदाई। दोहा तवधन्ना द्विजँवरकहुं भन्यो शान तव काहिं। दरस करावहु एहि निज दीननाथ प्रभु पाहिं। ४। टीका इस प्रकार गोप करम करते करते कृपानि

२

धानको वनविखे कछु काल वतीत होयगया
तब समय पाय करके सोई ब्रह्मण कि जिसने
वे पाषाण हियाथा ममता ममता नहो मक्तके
घरमें आय प्रापत भया जिसको देखकर और प
हिचानकर धन्ना हरषके वश होय कर दीनभा
वसे सष्टांग प्रणामजोहै सो करताभया और
फिर मधुरवाणीसे कहने लगा कि हेब्रह्मण त्
संसारमें धन्यहैं कि जिसने मेरे पर ऐसा उपका

र किया जो इह साक्षात् भगवान मेरेको दिये और
जगमें कृतार्थ रूप करदियाहै आजमें तेरे प्रसादसे
सरब प्रकारकरके सफल होयगयाहूं क्यों कि दी
नानाथ भगवान बन बिबि मेरे साथ सब कामका
ज करते रहतेहैं और सर्वदा मेरे सहायक बने रह
तेहैं हेइसलिए इह तेरी अनंत दया और उपकारमें प
कडबेमें कैसे गायन करसकताहूं तब इसलिए ह
न करके अचरजको प्राप्त होय गया और कहने

लगा कि हे प्यारे जो कदाचित तू शपथ अर्थात स
गंध करके मेरे वचनको मानलेवै तो मैं अपना म
नोरथ जो है सो तेरे आगे कथन करता हूं तब गो
प प्रसन्न होय करके कहने लगा कि हे ब्राह्मण
मेरेको तेरी सौगंद होवे और तू मेरे गृहस्वामी
के समान है जैसी तेरी आज्ञा होगी मैं सीसपर धा
रन करके सब पूर्ण करूंगा हे ब्राह्मण तू संकोच
को त्याग कर कहो ऐसे धन्नेका वचन सुनकर ब्रा

प.
म.
८

लिए कहने लगा कि हे भक्त भक्तपालक भगवान कृपानिधान जो हैं सो तेरे साथ वनविषे नित्य गौओं चरावते और भोजन पावते रहते हैं तोते हे दयाकर के मेरे को तिनका दरसन करायदे क्यों कि श्री गोपालजी की मनोहर अङ्ग जो है सो मेरे को अतसे कर के प्यारी लगती और मन को भावती है तब धन्ना कहता भया कि हे द्विजप्रधान मैं प्रातःकाल भगवान भक्तवत्सदान के पकड़कर तेरे को लेचलूंगा।

औरदीनबंधुका सुंदर दरसन कराय देऊंगा ४ चौ

पाई अस कहि भ्रातविप्रन बडभागा। चल्यो चर

न गेयन अनुरागा। विधिवत यथा रुचिर कृतकी

ना। प्रकटे कृस्न हरनदुख दीना। कीन्यो विन

य करन सवसेवा। दीनानाथ मोर गुरुदेवा। व

व सरूप लागित छवि मारा। घाल हरगनभरि

देखन हारा। दीजै जोनदेस प्रभुमोरे। करहुं देव

तव मनभाव तोरे। गोप वेश धृत भक्त उधारी।

प. भं. ५१

सनत बदन असगिरा उचारी। लोगन मन जनि म
रम वखाना। करहु प्रकट तब भक्त सजाना। नि
ज अभिष्ट सज्जन फरजानी। रहहु मौन अब मन
ड नवानी। देखत विश दरस नित सोई। शालिग्रा
म रूप मम जोई। तब धन्ना अस विनय उचारी। मैं
कृपाल दीनन हितकारी। गुरु मनकीन शपथ
गहि बाहो। होहि दरस तहि सरनर नाहो। जोन
करहु फर भगवान सोई। भंजत वचन भवहु गुरु

द्रोही। तोते आस भक्तजन गंजन। गुरुहिं देउ दरसन मन रंजन। होहिं न तर भगवन मम मरना। अस प्रकार जब गोप उचरना। भक्तवत्सल भगवान कृपाला। भने वदन तब वचन रसाला। कालि दिवस दरसन उजकाहीं। होहिं भक्त संशय कछु नाहीं। भजनसमय साधिर कछुहरी। देखहिं दरस मोर उजहरी। गोप भक्त सुनि भगवन वानी। आवा सदन सांक सुख मानी। गुरु सन सकल सु-

द० भा० पू०

गीत सुनायो। अरन वड नव गान अलायो। गुरुहिं अबोधि वदन बहुबारा। लेतभये निज विघ्रन सिधारा। लगयो करन पूजन मख्थाना। प्रकटे नव गुपाल भगवाना। दोहा वारुनीर धर नीलमणि नील केज तनस्याम। द्विज हगदेखे हरन छवि मदन। कोटि अभिराम। ५ टीका ऐसे कथन करकर बड भागी यज्ञ जोहै सो प्रातःकाल गौअनके चरानेको वनविखे चलागया तहां विधीके अनुसार अपना।

20

नित्यकृतजोहै सो करने लगा। तब दीनोंके दुःखदू
र करनेवाले हृस परमात्मा आय करके तुरत प्र
कट होजातेभये यत्नेने सब सेवाकरकर फिर हाथ
जोड करके विनय प्रार्थना करी कि हे दीनानाथ
मेरा गृह जोहै सो आपके कोटि कामदेवकी छवी
को हरनेवालेरूपका नेत्र भरकर दरसन पायाथा
हतोहै जो दीनबंधुकी आज्ञापाऊं तो मनसुख ले
आऊं इसप्रकार भक्तकी विनती सुनकर गोपवे

प॰
भ॰
३१

सधारी भगवान कहने लगे कि हे भक्त मत किसी॰
के साथ इह भेद प्रकट करना अपना मनोर्थ सफ॰
ल जानकर मौन रहो इह ब्राह्मण जो है सो मेरे शा॰
लिग्राम रूपका नित्यही दरसन करता रहता है त
व धन्ना दीन वाणीमे कहने लगा कि हे कृपानिधान
मैं इसके साथ बोह पकडकर झगडकर आया हूं
कि तमको अवश्य भगवानका दरसन कराय देवे॰
गा हे भक्तहितकारी जो अब कदाचित इह वारता

नही बनेगी तो मेरा वचन भंग होजायगा और ज
गतमें गुरुद्रोही कहाऊंगा तो ते हे भक्तभयहारी
अब कृपाकरके गुरुजीको अवश्य दरसन दीजिये
नहीतो अशमें प्राणोंको त्यागदेऊंगा ऐसे तिसका
दृढवचन सुनकर भक्तसनेही भगवान प्रसन्न ।
होयकर कहने लगे कि हे भक्त तेरे वचनके अनु
सार कलकेदिन तिसको अवश्य मेरा दरसन होय
गा इसमें कुछ संशय नहीहै एजनके समय वे ।

प्र॰
भ॰
२२

श्रीलक्ष्मण कछु हरीपर स्थित होयकर मेरा दरसन जोहै सो नेत्रभरकर भलीप्रकार देखलेवे जब गोपभक्तने भगवान कृपानिधानके मुखसे इसप्रकार वचनसुना तब हरषमें प्रफुल्लितभया हुआ सांझको अपने घरमें चलाआया और गृहकेसाथ सब वृतांत सुनायदेतामया जब प्रातःकालके समय कूकट बोलनेलगे तब गृहको भलीप्रकार समझाय सिखाय कर आप आगेही गोधनको लेकर वणविषे चला॰

22

आया जब मध्यान समय भया तब भक्ती प्रीतीसें भ
गवानका पूजन सेवन करने लगा इतनेमें दीनबं
धू अपने नियमके अनुसार नहो तरनही प्रकट हो
यगये तब नीले बादरके समान बडे गंभीर नीलम
णीवत मनोहर आभावाले और नीले कमलके सद
श कोमल ऐसे कोटि कामदेवकी छवीको हरने
वाले भगवानका दरसनजोहै सो ब्राह्मण नेत्रभरका
र देखताभया ॥ चौपाई यद्यपि अस सरूप उजहेसो ।

प॰ मे॰ प्र॰

तद्यपि नाम मोह मति देख्यो। भ्रमत विप्रन भ्रम बाल कन्हाना। पैसहूप उजदें ज्ञजडाना। लागेरहे एकटक नयना। भ्रमवस कहि न सकत कछु बैना। बाल रूप तब भक्त उवारे। करत पाक निजधाम सिधारे। तब यन्ना निजगृह मन वरना। देखे तमझे भक्तम न हरना। विप्र सुनत भ्रम चकित उचारा। एकुक मल हग स्याम तमारा। मैं केवल बालक नियजाना। गोप भक्त तव वचन वखाना। इष्टदेव मोरे।

२३

वि

प्रभुपहु। दीन विप्र अत्तर तबजेहु। मम अवपाल

कृत भोजन जोई। पावत दीननाथ प्रभु सोई। पा

छे अरथ शेष हरिकेरा। होत अहार विप्रसो मेरा।

उज अस सुनत विकल पछताया। अहो प्रबल जा

दवपति माया। वेच्यो मोहि बाल छुत हूपा। लख्यो

नदेव अस्तर सर श्रूपा। दोहा सुत धन्ना तव धन्य

जग जाहि अस त्रिभुवन नाथ। येउ चरात भोजन

करत फिरत विश्वन लगि साथ १ टीका तो यद्यपि

द॰
भ॰
२४

बलरामने ऐसा महरूपभी नेत्र भरकरदेखा और सुंदर
छवीको देखकर मोहितभी होयरहा नेत्र इकटक॰
ही लगेरहे कछू कहि नही सकता तथापि तिसकी
बुद्धीको मोहने जो घेरलिया भगवानको वनविखे
भ्रमताहूआ एक बालकही जानताभया तब भ॰
क्तोंकी रक्षाकरनेवाले बालरूपभगवान भोजन
पायकर अपने परमधामको चलेगये इतनेमें य
त्रा आयकर अपने गृहको कहने लगा कि हेगृह

जो तुमने तैसेसे भक्तोंके चित्तको चुराय लेनेवाले
मेरे प्रभू देखलियेहैं तब गुरू कहने लगा कि हो
यज्ञा तेरे कमलोंवत नेत्रोंकी शोभावाले स्यामरू
पप्रभुजोहैं सो यहीहैं मैं तो केवल वालरूपही ।
जाने और पहिचानेहैं ऐसे गुरूके श्रवसे वचन
सुनकर गोपभक्त कहने लगा कि हेउजप्रधान
तुमने जो दयाकरके मेरेको पाषाण दियाहै सो
ई साक्षात मेरे इष्टदेव प्रभूहैं और मेरा अरपण कि

या हुआ भोजन जो होताहै सोई दीनबंधु कृपाकर
के नित्य पावतेहैं तिनतें पीछे जोकछु बचरहता
है सो आनंदपूर्वक मैं पायलेताहूं तब ईक्षणह
न करके हृदयमें बडा पछताया और कहने ल
गा कि अहो भगवानकीबडी अगाध मायाहै बा
लकरूप धारकरके मेरेको मोहन करलिया अ
र्थात् छललियाहै मैं सब असुरोंके स्वामीको पहि
चान नही सकाहूं हे धन्य व्रज तू जगतमें धन्यहैं

कि जिसकेसाथ इह तीनभवनकेनायक भगवान
नित्य वनविषे गौआं चरावते और भोजन पावते
रहतेहैं ६ चौपाई आजभाग जग उदय हमारे ।
जो अस धरनि धेनु रखवारे । मुनि जोगिनकीने
हठनाना । आवत ध्यानन कृपानिधाना । सो दु
रलभ अस भक्त सहैया । धारत गोप रूप सुखदेया ।
मनसुख तोर सुलभ सुखदाते । फिरत विपिन न
व धेनु चराते । हमहुं सकल सुकृति कर मूला ।

८० भ० ५९

अस गुपाल जापै अनुकूला। गुहि अमन्न निय जानि अभेवा। अवतै नात संत इज मेवा। करहु सुवदहु दव हिन जानी। असकहि विसहहु अवेवानी। आसिषदेत हरष डरछाये। चले भवन निजहोत विदाये। गोपभक्त नवतैं मनलाई। लागा करन संत सिवकाई। आवत देवि अनाथि इजकाहू। सजन प्रीति भक्ति जन नाहू। दोहा अस प्रकार सेवन सदन अनाथि संत इजकाहिं। निकसिगयो कछु काल नहिं

कमल चरन रतिमाहिं ७ टीका आज संसारमें तेरेब
डे उदय अर्थात् जागे हूये भागहैं देखो कि जो भ॰
क्तसहायक और गौ ब्रह्मण पृथवी देवताओंकी र॰
क्षा करनेवाले भगवान मुनी जोगी जनोंको दुरल
भहैं अर्थात् अनेक यतन और हठ करनेतें तिनको
ध्यानमात्रभी नहीं आवतेहैं सो ऐसे दुरगम भग॰
वान गोपबालकका रूप धारकर सुगम और स
हजेही सनमुख प्रसन्नहोयकर वनविखे तेरी गौ

द॰
भ॰
२१
27

सो बरते रहतेहैं ताते भाई आज जगतमें तेंही मर व श्रेष्ठोंका मूलहैं कि जिसपर ऐसे गोपालभगवा न अनुकूल अर्थात प्रसन्नहैं हे प्यारे अब तू मेरेको परमआनंद जानकर अबतें बडा हितमानकर नि त्य संत भक्तोंकी सेवामेंही लीनरहाकर ऐसे क थन करकर और बारबार आसीसा देकर ब्रह्मण भक्तजोहै सो विदाय होयकर हरषपूर्वक अपने घरको चला जाताभया और ईहो गोपभक्तभी ति॰

स ब्राह्मणके उपदेशको पायकर संत महात्माकी
सेवा भक्ती जोहै सो दिन दिन अधिकसे अधिक-
ही करने लगा अतिथि संत भक्तका आये हुये दे
खकर प्रणाम करके बडी प्रीतीसे पूजन सेवन
और आदर सतकार करता इस प्रकार घरमें अति
थी साध ब्राह्मणोंकी सेवा करते करते और हस्य
परमात्माका भजते भजते कछुकाल वतीतहोय
गया ॥ चौपाई एकदिवस तहि भक्ति सुहावा ।

प.
भ.
२८

भयो महातम मानस भावा। सेत्रबीज बोपन हित तासा। पठयो जनक उरप्रीति हुलासा। लखत देवि संत मगमाहीं। भन्यो देहु भोजन कछु कांहीं। असकहि जात नगर बडभागा। सो गोधूम बीज अनुरागा। भूनि अनल कल चर वणकीना। सितामिलाय मोद मन लीना। मोदिक बांधि संत जित ठाढे। लाबा भक्ति प्रेम उर बाढे। करिर श्री तिन्हत दीन जिमाई। सो प्रसन्न मन वैस्नव पाई।

78

श्रामिष्टेन गवन मग कीना। जनक ग्राम बस
भक्त प्रवीना। स्रष्टक मदन भूम गहि लीनी। जा
यक्षेत्र निज वापन कीनी। कार्शिक ग्रान नि
कटनहिवासी। लागे देखि करन सब हासी। ज
बधन्ना ग्रावा निज गेहा। लोगन जाय जनकस
ननेहा। सो हत्तांत सब दीन सुनाई। जनक सु
नत सुत लीन बुलाई। भाखो तात करम कस
कीना। सुतका बीज क्षेत्र निज दीना। भयो न

होहिं सुवन संसारा। भक्तसहाइ तव वदन उचारा।
इह सब सुखा भनत पित तोही। कपटी करत
कूट सठ मोही। सुनत जनक बालक निज बा-
नी। वारन भयो मौन उर ठानी। दोहा। समय
पाय नहि हृदु जन दिवस एक निज हेत। जाय
विलोक्यो स्वगन निज हरहरां छविदेत। ८ टीका
तब एक दिन धन्नाकी भक्तीका बडा अदभुत म
हातम और कौतुक होता भया सो कैसा कि ए

त

कदिन पिताने बडे हरख उत्साहसें तिसको खेत्र
मे बीजबोनेके वास्ते भेजदिया तब मारगमें ।
कहीं संत महात्मा भूखे प्यासे जो बैठे हुये देखे
तो भक्तीमानभयाहुआ तिनको कहने लगा ।
कि महाराज मैं आपको ल्याय करके भोजन ।
जिमावताहूं ऐसे संतोंको धीरज देकर आप फि
रकरके नगरविखे चला आया और वे गोधूम
अर्थात् कनककाबीज जोथा तिसको अग्नीके सा

प्र. भ. उ.

30

घ भाठमें भुनायकर श्रोर मिष्टान मिलायकर खंड
र चबीना करके लड्डूजोहैं सो बांटलेताभया फिर
जहां संत महात्मा बैठेहुयेथे तहां ल्यायकर भक्ती
सनमानसे तिनको जिमाय देताभया सो आनंदपू
र्वक पायकर बारबार आसीसादेतेहुये अपने मा
रगको चलेगये तब ईहां पिताका भय मानकर
यज्ञजोहै सो तिसबीजके बदले हुहोंके ककेरकी
माटी लेकर श्रोर जायकर कृष्ण कृष्ण रटताहुआ।

अपने क्षेत्रमें बीजदेताभया ऐसे तिसका कर्तव्य
देखकरके और सामीपके करसानलोगजोथे सो
अपने अपने सब हांसी करनेलगे और फिर घरमें
आयकर इह वृत्तांत तिसके पिताकेसाथ सब सु
नायदेतेभये तब तिस वृद्धने इह प्रसंग सुनकर
तुरत अपने पुत्र धन्नाको निकट बुलायकर कह
ने लगा कि हेपुत्र इह तेने कौन करमाकिया जो
अपनेक्षेत्रमें बीजके बदले माटी बोय देईहै पुत्र

पं॰ मं॰ ३१

31

इह वारता तो ना कबी आगे हूई और नाहोयगी ते
ने जगतमें अनहोनीही वार्ता करीहै तब यज्ञा कह
ने लगा कि हेपिता इन दुष्टलोगोंका कहना कान
मत करिये कपटी महांमंदजोहैं सो हथाही झूठ
बोलतेहैं और मेरे साथ अधम हासी करतेहैं ऐसे
पुत्रकी वाणी सुनकर वृद्ध जोहै सो नम्रत्यहोयक
र मौन होय रहा तब समय पायकर एकदिन वृ
द्ध अपने खेत्रके देखनेको जो चलागया तो ज़ाय

करके क्या देखताहै कि वे सेत्र जिसविषे यत्नेने
माटीका बीज बोयाथा हरहरात होयकर बडी
सुंदर शोभाजोहै सो देरहाहै ६ चौपाई विसमय
विवस सवन मन कहयौ । लोक विलोकि चकि
त चित भययौ । निज सामीपनतें अधिकाई । द
सगुणदेखि रुचिर मनभाई । अतिप्रसन्न पितु भ
वन सिधारा । असप्रकार इह चरित अपारा । गो
पभक्त करत्ने सुखद सुहावा । मैं सेवतपन बदन

८

ए. मं. ३३

कछु गावा । इनहीं संत भक्तजन काहीं । नहिं अ
साध कछु संसृति माहीं । असविचारि सब नरक
विसारी । लीजै हरि भक्ति उरधारी । दोहा भक्ति
कलपद्रुम विदित जग जो आश्रित नहि होय । पा
वत हरि प्रसादतें मन वांछित फल सोय ४ टीका
तब यत्रेके वृद्ध पिताने हृदयमें बडा अचरजमान
कर और सामीपके लोगोंमें अपनी सेतीको दरश
ण अधिकजानकर इह वृत्तांत जोहै सो सबको ।

सुनायदिया और फिर हरष पूर्वक अपने घरमें
चला आया ऐसे अद्भुतको सुणकर और देखकर लोगभी सब अचरजको प्राप्त होयगये नाभा
दासकहतेहैं कि हेसंतो इस प्रकार गोपभक्तकी
भक्तीका अपार चरित्र जोहै सो मैने संक्षेपकर
के गायकरदियाहै देखिये भक्तजनोको संसार
में कछुभी असाध्य नहीहै सब सुगमहै ऐसे वि
चारकर तोते कृष्णभक्तीकोही आधार करना चा

भ॰ ८॰ २२

33

हिये इहभक्तीजोहै सो संसारमें कलपवृक्षके समा
नहै इसके आश्रय जो कोई होताहै तिसके भग
वानकी कृपासे सबहृदयके मनोर्थ सफल होते
हैं ९ । इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथे भगवद्भक्ती माहा॰
त्मे कविमिहांसिंहकृतभाषाटीकायां धन्नाचरित
वरणनेनाम सर्गः ८ ॥

अथपीपाचरितं। दोहा। अवअदभन संदर सुखदभ
क्तिमहातमअगान। पीपाउपकर कथन कलकरहुं
भक्तिवरदान। चौपाई। दिल्लीदिसाउत्तमनरनाहू। ना
गरनामग्रामइकचाहू। तहांनरिंदधरमरतवीरा।
पीपानामविदतमतिधीरा। भगवतिसेवकपरम
प्रवीना। मनवचकर्मभक्तिहढलीना। देविभजन
सुजनअनुरागा। संततनिरतभूपवडभागा। देव
नरीतिपरमपरपहु। जेजनभजहिंकामजततेहु

७४
म.
१

ताकर अर्थ रुचिर संसारा। सफलकरत कछुलाहिं
नवारा। अहनिसकाम भजत नरजेहू। जोगिजनन
दुरलभ गतितेहू। देहिं दैवनिजमन अनुकूला।
सोपीपान्तप सुकृतिमूला। भगवतिभक्ति निरत
निसकामा। असजग जननि देखिअभिरामा। तो
केदीन ललितजतरागा। ज्ञानध्यानकल विमल
विरागा। छितपतपाय अमल पदसोई। गेहगृह
स्यवंधनछुतहोई। जानि अनिमराज सुतदारा।

लागकरनअसहृदयविचारा। नहिकसरमानाथजन
जाना। होहिंहगन दरसन सुखदाता। असगुनिदेवि
जननिजगकाहीं। लागसुभगं भूपमनमाहीं। तव
संततिभय हरनभवानी। भक्तमनोरथ निजउरजा
नी। धरिस्वरूप नहिमात सुहावा। भन्योवचन सप
ने मनभावा। सुनहुसत्य तव भूपसुजाना। उरल
भटरस विस्व भगवाना। पैतमारहद्ध भक्तिनिहा
री। हरिस्वरूप सदृश व्रतधारी। होतनदृष्टि गोचर

२९
भ.
२

चिनचोरा। करहिं सफल सब अभिमत तोरा। अस प्रकार निसि स्वपन विलोका। उठो प्रात भूपति गत शोका। दोहा। करि सनान निज नित्य कृत भगवनिष्ट जनसाज। मंडप रंग उमंग युत राजन राज विराज ९ टीका अब ग्रौरव अदभुत और सुंदर सुखके देनेवाला पीपा राजाकी भक्तीका महात्म जो है सो कथन करता हुं दिल्लीके उत्तर दिसाकी ओर एक नागर नामकर के वडा मनोहर ग्राम होताभया तहां धरम धीरज

भक्तीकेसहित

और समतीमें प्रवीन महा सूरवीर पीपानामकर
के राजा होताभया सो मन वचन काया करके
श्रीदेवीजीका वडाभक्तीमान दृढ सेवकहोयक
र रात्रीदिननित्य भवानीकेही भजन स्मरण औ
र पूजनमेंलीन रहताथा देवताउंको संसारमे
सदासेहरीतीचली आईहै किजोकोई तिनकोका
मनाके सहितभजताहै तोवेसंसारमे तिसके दृढ
यकी सबकामनाका पूरणकरतेहैं और जोकोई

५९
भ०
२

निसकामहोयकर तिनकी आराधना करताहै
तिसको तैसेहीं मनोजोगीजनोको दुरलभगती
जोहै सोदेतेहैं ऐसेपीपानरेसजोहै सोभगवती
की निसकामभक्तीमे निरंतरकरकेलीनथ्या तव
भवानीतिसको निसकाम भक्तीके सहितदेखक
र प्रसन्नहोयकरके संदरज्ञानध्यान और निरम
लविवेक वैरागजोहै सोदेतीभई ऐसे परमार्थ
पदकोपायकर पीपा गृहस्थके वंधनकोतोडक

२

रथनधाम राजस्त्रीपुत्र इत्यादिसव सुखको अनित्य
जानकरके हृदयमे विचारकरनेलगा कि अब
लक्ष्मीकेनाथ जगतपालक भगवानका मेरेको
नेत्रोंकेसुखदेनेवाला दिव्यदरसनजोहै सो कैसे
वै प्राप्तहो इसप्रकारचिंतन करकर जगत जननी
भवानीका हृदयमे स्मरणकरनेलगा नवसंसा
रकाभय हरकरनेवाली महामाई भगवतीआ
पनेभक्तके मनोरथको जानकर जिसकीमाता

५५
भ०
४

कारूप धारकर स्वपनेमै प्रबोधकरनेलगी अर्थी
त समझावनेलगी किहेराजन तुमेरावचन सत्य
करके श्रवणकर किकलीकालविषें जगतमैभ
गवानका दरसनहोना बडादुरलभहै परंतु तुमा
री दृढभक्ती देखकरके हेवनधारी भगवानकेम
नोहर रूपसमानही तुमारेनेत्रोंके सनमुखहोय
कर तेरीमनवांछितकामनाको सफलकरेगा औ
रे रात्रीके समय स्वपनदेष कर[illegible]गो कालहोने ४

राजाउठा और स्वपनका समरण करके शोकसे
नहृत्त होयकर परम आनंदको प्रापतहोयगया
तव स्नानकरके अपना सवनित्यकरमजोहै
सोकिया फिर भक्ती सनमानसे भगवतीका
पूजनकरकर आनंदसे राजसंघासनपरजाय
कर विराजमान होयगया ।।१।। चौपाई । नहि
अवसरत्पसभासहाये । रामानंद सेवकासि
षध्याये । जिनकहृंदे विभूपहृरषाना । कहिमरउ

७९
भ॰
५

वचन कीन सनमाना। विमल दिव्य भोजन ववन वाई। सानुकूल नरनाथ जिमाई। भाष्यो वहुरि जुगल कर जोरी। सुनहु विनय संत जन मोरी। रामानंद विदन गुरुदेवा। तिनकर चरन कमल कल सेवा। संत जोग मोरे कछु होई। करहु उपाय कथन वस सोई। जहि विधि लेहुं ललित उपदेसू। होहुं पार संसार नेदेसू। सिषय सहित तनकथन नरराऊ। वोले वदन वचन सुखदाऊ। धन्य भाग नीरेन

रताई। जोंकरहृदयसमतिश्रसश्राई। सहजसल
भइरलभकछुनाहीं। चलहुवेगसमसियपरश्रमा
हीं। दीनदयालगुरुदेवसुहावा। तोहिउपदेसकर
हिंमनभावा। करिकछुदिवसवहुरिसिवकाई।
लेहुश्रभिषुकविरनिजपाई। राजुसुनतमानस
सुखमाना। वोलेवचनजनकजगपाना। श्रवतो
रह्योदिवसकछुथोरा। होवसिचलनप्रानप्रभ
मोरा। श्रसकहिहिनिनहिंदेतधनदाना। कियेवि

दायन्रपतिसनमाना। बोलिम्रानतनिज सचिवस्तजाना।
कीनहतोत कथन कळुध्राना। सचिवध्राज निसिदि
रिसनमोरा। भयोस्वपन भारत म्रतिदोरा। भूधरम
बलहारगहिदीना। तामनिवरएण यतन म्रसकीना।
कासीजायकरहूं कळुदाना। बोलिनिपुणपंडित
विहाना। म्रसकहिभात हरषउरछाये। भूपगवन
करिसिवपुरिम्राये। संज्ञनभत समाज मनिहारा
कियोधराणिधरसीसनहारा। गरुपेंजायसिषन तत

५९ मं० ६

६

काला। कीनऋगमन कथन नरपाला। दोहा। नव
रामानंद सनत अस सिषन सिखावनदीन। मोपेंला
वन उचितनहि राजविडू गतचीन।२। टीका। नवति
स समय राजाकीसभाविषें रामानंदजीके शिष्य
आयप्रापतभये तिनकोदेखकर राजावडाप्रसन्न
हुआ और विनतीप्रणाम कर कर अनेकप्रकारका
आदिर सतकार किया और सुंदरदिव्य भोजन व
नवायकर आनंदपूर्वक प्रीतीभक्तीसे जिमाये फिर

३९ भं. ८

हाथजोडकर कोमलवाणीसें विनती करनेलगा किहे संतो मेरे हृदयमें गुरुरामानंदजीके चरनक मलोंके सेवनकरनेकी प्रीतीरुची उपजीहै सोतम कृपा करके मेरेको उपाय कथन करो किजिसतेंमें तिनकी शरणकोप्रापतहोऊं और कृपानिधानका सुंदरउपदेशलेकर इससंसारसमुद्रसे पारउतरजा ऊं ऐसे पीपाराजाका कथन सुनकर शिष्यजो थे सो प्रसन्न होयकर वडी सुखदाक ॥

८

वाणीसेकहनेलगे किहेराजन तंधन्यहैं और धन्य

तेरे नागेहुयेभागहैं जिसके हृदयमे ऐसी सवेह्य

यक समतीने आपकरके प्रवेशकियाहै इहनोवहु

तसगम और सहजहै कुछभीइरलनहींहै शिव

पुरीजोकासीहै तिसको चलेचलो दीनहितकारी

और उपकारकी निधीगुरु क्रपालजोहैं सोराजनते

रेको सुंदर उपदेशकरके क्रतार्थ करदेवेंगे तहां

कुछदिन पर्यंत तिनके चरनोकी सेवाकरकर अप

५९
भं॰
८ म

नेमनवांछित फलकोपायले नवराजासनकर प
रसखको प्रापतभया और हाथजोडकर कहनेल
गा किहेसंतो अबतोदिन कुछथोडारह्याहै मेरेच
लन अवश्यप्रानाकालहींहोगा इसप्रकार उचार
कर राजा तिनसंतों कोधनदानदे कर बडे आ
दर सनमानसे विदायकर देताभया ईह्रां प्रानाका
लहोते राजाअपनेमंत्रीको बुलायकर कपटसे कु
छ औरहीं वात बनाय कर कहने लगा ।

८

किहे मंत्री आजरात्रीके समय स्वपनमैमेरा परवत
केसाथ बडाभारीयुद्धभयाहै तहांप्रबलभूधर अर्था
त परवतने मेरेकोजीतलिया और भलीप्रकारदीन
बलहीनकरदिया इसतें मै तिसके निवारण औ
र शांतीकेलिये इहयतन विचाराहै किकासीमे जा
यकर और विद्वान पंडितब्राह्मणोंको बुलायकर
सनमानसे कुछदानपुन्नदेनाहूं ऐसेकथन क
रकर प्रातःकालहोने राजाआनंदपूर्वक घरसे

७९ भ. ५५

चलपडा और मारगको निहन्य कर कर कासीपुरी
विषें आयप्राप्तभया तव अपने सव सेवकोंके स
माज सहित गुरुरामानंदजीके द्वारेपर आयकर पृ
थवीपर माथाधरकर दीनभावसें प्रणामकिया
ऐसेराजाको आवता देखकर शिष्योंने तुरतजाय
कर गुरुजीकेपास सववृत्तांत सुनायदिया किमहा
राजपीपानरेस अपने सव सेवकसमाजके सहित
प्रभुतमारे दरसन परसनको आयाहै और कृपानि

थानके चरनोंका सेवकवनावहनाहै तव गुरु
रामानंदजी सुनकरके शिष्योंको कहनेलगे
किराजाको मेरेपास राजविद्वसेरहित जानके
रूपावनायोग्यहै ऐसेराजसमाजके सहितरूपा
वना उचितनहीं है।२। चौपाई। जोआवहितजि
मानवडाई। रूपावहुतासुतानतवजाई। कहहु
मोर प्रति आयसपहा। जोइहरूप वहिर ममेग
हा।तामधदेहवपुष निजशरी। जवपरिहें तव

६९
भ०
१०

लेहुनिवारी। गुरुहूपालसासनसिषपाई। नृपमनकीन कथन सब आई। भूपमहनतमान सहरषावा। निरभय परन क्षप जब पावा। सिषनलीन धरि नरत निवारी। ल्पायसंगगुरु मरण सिधारी। रामानंद हरस सब दाया। जबनर नाथ हगान निज पाया॥ त्राहि त्राहि मरब सिथल शरीरा। परेसालकट इव चरन अधीरा॥ ॥

१०

10

गरुक्रपाल सेवक हरुजानी। हरषिउठायली
न निजपानी। विधिवतकीन ललितउपदेसु।
राममंत्रउदहरनकलेसु। दोहा। कीनसिखोषम
वदनगुनिक्रसभजनहवदाई। जायसदनति
जकरहु जनतविप्रसंतनसिवकाई।३। टीका।
फिरकहतेहैं किजोमानवडाई को त्यागकर
आवे तोशिषतमजायकरके लेग्रावो परंतु
तिसकोप्रथमइहकहो किगरुजीकी आज्ञाहै

इसद्वारपरकूप अर्थात् खूआ जोहै इसविखें तुम
कूदपडो हे शिष्य जबवे सत्यकरके तिसमैगिरने
लगेगा तोतत्मयतनसे तुरतनिकारलेना औरफि
र मेरेपासलेआवना इसप्रकारगुरूजीकी आज्ञा
पायकर शिष्यजोहैं सो ततकालपीपानरेसके
पासचलेआये और गुरूजीकाकथन तिसकोसु
नायदेतेभये तबराजासुनकर परमसुखको
प्रापतहूआ तुरतनिरभयहोयकरके कूप अर्थी

तावृयेमैगिरनेकोह्रदपडा शिष्योंने तत्कालधाय
कर पकडलिया और सनमानसे साथलेकरके गु
रुजीकीशरणको चलेआये तबपीपाने परमसुख
दायक गुरुरामानंदजीका दरसन नेत्रभरकरपा
या तब मनमेंं आल्हिआल्हिकरुनाहूआ अधीर और
सिथलसरीर होयकर दंडकेसमान चरनोपरगिर
पडा गुरुजीनेदेखकर और दृढसेवकजानकर द
याकरके तुरतचरनोपरसें उठायलिया और प्रसन्न

७४ म. ८८

होयकर विधीकेअनुसार संदर रामसंत्रजोहै सो का
नोमे सुनायदिया और शिक्षाभीदेई कि पुत्र घरमैजा
यकर संतब्राह्मणोंकी सेवाभक्तीके सहित रात्रीदिन
सुख सुखदायक ह्रामभजन और ह्रामसुमर्णमै
हीं लीनरहो ।३। चौपाई । अस उपदेश भूपजवपा
वा । करिप्रणाम गुरु चरन सुहावा । जुगकर
जोरि नम्र अनुरागा । वदन विनंति करन अ
सलागा । जोसोहिदास चरन निजकीना ॥

८८

नोग्रसविनय करत प्रभुदीना। धारिवरन नवदी
नसनेहू। करहुमोरपावन चलिगेहू। गुरुवर
सुनतकीन सुईकारा। नवनरेसनिजसदनसि
धारा। संजतभनतन भवन निजआई। भयेभज
न ततपरंछुराई। अनथिसंत ऊनसेवनलागा।
भक्तिप्रवीन भूपवडभागा। सुनकहदेतराजसु
खरूरी। करिविभक्त संतन धनभूरी। आपुवने।
वैसवमतिधीरा। लागेपाकरन भजनरघुवीरा।

७९
भ॰
१२

परलोगगन अस देखि बखाना। भाविदलपत भूपहमजाना। अस प्रकार संवत सरनासा। करनभजन भगवानविनासा। एकदिवसलिखिपातिपठाई। गुरुकहंपरमहरषवसराई। नवकरववन सप्रभकीजै। निजजनजानि सुजसमोहिदीजै धाविललित पदपदम सुहावन। करहुकृपालसदनजनपावन। दोहा। गुरुवाचित जन पत्रिकामन अनंदसरसाय। संजतशिषगणगवनकरिभवनभक्तिजन्माय १२

स

टीका॥ इसप्रकार गुरुजीका उपदेश पायकर राजा
चरनोपर प्रणामकरके हाथजोडकर विनतीकर
नेलगा किहे कृपानिधान जोदयाकरके मेरेको
अपने चरनोकासेवककियाहै तोमेरी अवइह
प्रार्थनाहै किजैसे प्रभुनमभेरेको सफलकियाहै
तैसेदयासे चरनधारकर औरचलकर मेरेइमदी
नके घरकोभी पवित्रकरिये औसेपीपाकी विनय
प्रार्थना सुनकर कृपाकेवशभयेहुये गुरुजीसर्व

५९
भ·
१२

कारकरलेनेभये किहेराजन हमतेरे घरमे ग्र
वशचलेंगे नवगुरूजीका वचन सुनकरहरष
मैमगणभयाहूआ पीणाबारबारप्रणाम करकेय
पने घरकोचलाआया तहां सबसेवक समाज
के सहित घरमे स्थितहोयकर भगवान कृपा
निधानके भजन सुमरण मे सावधान होयग
या नवभक्तीमे लीनहोयकर अनथी संत ब्रह्म
णोंको सेवनाहूआ राज समाज पुत्रको देकर

13

और कंचनमवाभूषण वस्त्र इत्यादि धन सब संतम
ोंको बांटकर आपकेवल रघुनाथजीके चरनो
काहीं आधाररावलेताभया तब नगरकेलोग
तिसकीदशा देखकर कहनेलगे कि अहोहमने
जानलिया राजातोविक्षिप्त अर्थात बाउलाहोय
गयाहै इसप्रकार भगवानका भजन स्मरण कर
तेकरते राजाको जब एकवरष वतीत होयगया
तब एकदिन प्रसन्नचित होयकर गुरु रामानंद

जीकोपातीलिखनाभया किहेहृपानिथान अवद
याकरके सो अपनावचन समरण करिये औरमेरे
कोजगतमें सजसका पाग्रवनाइये प्रभू अपने चरन
कमलधारकर मेरे इसघरकोपवित्र करिये ऐसे
जबअपनेदास पीपाकीलिखीहूई पाती गुरुजीनेवा
ची तबहरषसे प्रफुल्लितभयेहूये रामानंदस्वामी शि
ष्योंकासमाजसाथलियेहूये ततकाल अपनेप्यारेभक्तके
घरकोचलेआये ।४। चौपई। आगालजाय भूप सनमाना

१४

अथअंतर भक्तिरूपवर्णनं। दोहा। अवधीजउनंदन
नलन चरनकरन दृढ़प्रीत। भक्तिमहातम ग्यान
कछु करउंकथन सुभरीति। चौपाई। रामभजन
ननपर गुणखाना। भयोभूपइकभक्तमहाना। क
रतजापमानसिनिनसोई। वाकसभक्तलखहिंस
बकोई। अंत्रभक्त तहिनामउजागर। ताकरपतनि
रुचिर मतिनागर। भक्तिमानपतिदेवनरागी।
सोनिजकरन सोवनियलागी। इहकसमोरप्राण

७५
भ०
१

पतिलाभी । क्रोधवसि भक्ति निरत नित सकामी । देवज्ञ
जनसंतन सिवकाई । करहिं आचर्ण कोन विधराई
लागीकरन याग दिनरतेहू । भक्ति प्रवीन स्रमति
गुणगेहू । अस प्रकार कहु दिवस बिहाये । नवइ
क समय भवन कहि नराये । दिवस प्रथम कैसे नमव
लयये । निद्रा निरत नलवन नृपभयये । आकस्मा
नन्व वदन भआला । कह्यो रामसिय मखवर र
साला । सहित वै मखवर सनन अस सोई । ब्रह्मा

न

नंदमगण मनुहोई। धनग्राभर्नवसनवहुभांती।
लगीविभगनकरं महमाती। होनभवन मंगल
सभलागे। तेस्वनिश्रवण चोवनरपनागे। प्रकृत
प्रियहिं कवनउतसाहा। मंगलहेमभवननवका
हा। कांकेभघोसवन सखकारी। करहुकयन
नववेगपयारी। रामीसुननवचनयनरागी। त्वप
सन भनन प्रकट प्रमलागी। दोहा। नाउपञो
सतमोरगृह नासुतवांधवकाहु। सनहुप्राणप

५५
भं०
२

2

तिसदन असहेतललित उतसाह। मैअवलगाप
ति वदन तव रवनिसिसहितसभाय। नाहिनक
वहुंसक्योंहूतो रामनामसुखदाय। यातेंनाहिअसं
नपति नास्तिकधरम निधान। अवलोंनिजजन्ह
जानिवश जाननरहीअजान। यद्यपिकवि उपदे
सकहं रहीहोतवहुवार। नयपिरहतहती सक्कु
च पतिगुरुस्वामिविचार। इहविंतापावक प्रवल
दहतहुतीउरमोर। आनरूपनसियरामरवसुत

२

नवदनपतिनोर। महिमअनंदउपजो महांभई सफल मनकाम। जानोपतिउरवसत प्रभभक्त सुखदसि धाम। यातेंमैमशिवसनधन दीनइजन वहदान मंगललजितमहानमद कीनमदन पतिप्राण तमहिंउचितअव कृपानत अतयिसंतनलिविहार दैदैनिजकरदानधन करहु सुभगसतकार।१॥

टीका। अवजइनंदन महाराजके चरन कमलों मे प्रीतीके हद्धकरनेवाला भक्तीका औार वडा

५५
भ.
२

3

सुंदरमहातममेजोहै सो कथनकरताहूं कहतेहैं कि
रामके सुमर्ण और रटनकरनेमे प्रवीन एककोई
महांभक्त राजाहोताभया सोकैसाथा किरात्रीदिन
भगवानके मानसीजापमे लीन रहताथा अर्थात
मनमेंही भगवानकोभजताथा वाहरतें सवलोग
तिसको अभक्तही जानतेथे औरवेअंतरभक्तनाम
करके प्रसिद्धथा तिसकीस्त्री वडीवुद्धीमान और
भक्तीमान पतीव्रताधरम मे प्रवीन और सर्वगुणों

१

कीनिपीयी सोउपनेहृदयमै सोचकरनेलगी कि
इहमेरा प्राणपतीभरतानोहै सोउवभगवानकीभ
क्तीमे कैसेआसक्तहो अर्थात पतीके हृदयमै भग
वानकी भक्तीकैसे दृढहो और साधसंतोंके सुजन
सेवनमे कैसेप्रीतीभक्तीवालाहो इसप्रकारप्रेमभ
क्तीआर बुद्धीमे प्रवीन रानीजोथी सो चिंतनसो
च करनेलगी प्रेमसेनव कुछकदिन बनीत होयग
ये नवणकदिन राजाअपने घरमै बडीगाढी निद्रा

७५ भ॰ ५

भैसेजपरमोयाह्वाया तहां एकस्थानहीं तिसकेन

खमेंसियारामशाहजोहै सोनिकलपड़ा तवराणी

तिसशाहकोसनकरके मानोवल्लानेटभैमगणहोय

गई औररानरानहीं साथवालगए अनथीदीनजनोंकोवु

लायकर अनेकप्रकारकेदान धन वस्त्रभूषण इत्या

दिजोहैं सो सनमानसे सबकोदेनेलगी और भवनो

मैनानामंगलभी होनेलगपड़े तब ऐसे उतसाहकी

धूमधामके शाहको सन करके ॥

राजाविरतनजागपड़े और राणीकोप्रश्नकेनेलगे किप्या
री इहकौनमंगल उतसाहहै और इसकाकारण
काहै किसकेईहांपुत्रभया मेरेकोप्रकटकरकेक
हो ऐसेपतीका वचनसुनकरराणी हरषसेंकहने
लगी किहेप्राणनाथ नातोपुत्रमेरेघरभया औरना
किसी बांधवनातीके परंतुमंगलकाकारण इहहै
किनाथमैने अवलगन मंगलकाकारण इहहै
किनाथ मैने श्री मारेगवसे कबीरासीदिनविवे म

३५
भ०
५

इससे भी सर्वसुखदायक रामनामशब्द जोहै सोनही
सुनाया इसतें मै आपनी जडजातीके स्वभावसे अ
बलगपतीनमको अधरमी नास्तिक और असंत
अभक्तजानतीरहीहूं यद्यपि हृदयमें नाथनमको
उपदेशकरनेकी बहुतवारइच्छाहोतीरही तद्यपि
गृहपती और स्वामीविचारकर लज्जासंकोचसेरुक
जातीरहीहूं कुछकहनेनहीं सकीहूं और इसवि
नाकी प्रबलअगनी नाथमेरे हृदयको सदैवहीं

५

नलावतीरहतीथी आज तुमनिद्रामे जोलीनभयेहु
येथे तोतुमारेभावसें सियेरामशाहजोतिकलाति
सकोमैसमरण करके हे पतीपरम आनंदको प्राप
त होयगईहूं अबमेरेमनकी अभिलाषा सबपू
रणहोयगईहै औरमैने आजनिश्चयकरके जान
लियाहै किपतीतुमारे हृदयमे भक्तसुखदायक
सियेरामजोहैं सोआवशपतिवासकरतेहैं मे इसी
आनंद और सुखकोमानकर हे प्राणआधार आ

भं.
६५
६

ह्मणोंको धनवस्त्रइत्यादि अनेकप्रकारका दानदिया
और घरमें नानामंगल उत्साहहोताहै सोकियाहै तो
लेपती अवनमकोभी उचितहै किद्वारेपर अतिथी
साधब्राह्मणोंको आयेहूये देखकर अपनेहाथसे
अनेकप्रकारका धनदानदेदेकर सबको संतुष्टऔ
र प्रसन्नकरो॥१॥ चौपाई। मुनिप्रसववचनभूपनिज
नारी। भवन मनहू संदरवनवारी। प्रियाकौनस
कतलवसोई। तोकर पहविदनफलहोई। मरहूंघ्या

९

जसंशयकछुनाहीं।जोसियराम वसत मनमाहीं।
मैतिनअंत्रभक्तिजनतसेवा।रह्योकरतनिसिदिवसअभे
वा।आनहृदयमोरतजिस्वामी।भयेकृपालभवन
निजगामी।मरहिंवहीनमीन जिमिवारी।तिमिअव
मरनमोर सुनप्यारी।असकहिभूप सचिवहंकासो
सुतहिंबोलि सभनीतिउचासो।देवराज अवभेषस
हावा।निजसियराम चरनमनलावा।विनप्रयास
तजिकोनककाया।भक्तिप्रसाद परम पदपाया ॥

५५ भ॰ ८

सहगामनि अनुरागनरागी। पतिमनहोतगवनिवड भागी। लोकविलोकिचरितविसमाये। साधुसाधुसववदनउलाये। धन्यभूपहरिपदअनुरागी। तापरधन्यरागिवडभागी। दोहा। असप्रकार संदेस कहुमैगगयाइहमाई। मनिजोगिनजे अगमगतिअंत भक्तिनपाई। २। टीका इसप्रकार राणीका वचन सुनकरके राजाकहनेलगा किहे सुंदर व्रतवाली प्यारी तैनेजो प्रश्नकियाहै सो तिसका।

८

फलप्रनद अवधपहीजान किमैआजअवधपमहूंगा
इसमैकुछसंशयनहींहै क्योंकि भगवानमेरे हृदय
मे निवासकरतेथे औरमै रात्रीदिननिरंतर हायक
रके अंतरभक्तीके सहितसेवाकरताथा अर्थात
मानसी भजन करता और प्रभुकोमनमैंही बसा
यरखताथा सोदीनबंधुभगवान आजमेरे हृदय
कोत्यागकर अपनेधामको चलेगयेहैं प्यारी नेने
मेरे मुखसे निकलते आपदेखलियेहैं जैसेजल

भ. ८

केविनासकलीकाजीवना नहींहोताहै तैसेहीश्र
वमेराजीवनाभीकठिनहै प्रभूकेविना प्राणजोहैं
सोश्रवीचलनेकोचहतेहैं ऐसेकथनकरकर रा
जानेमंत्रीकोबुलाया श्रौर फिरनरनहीं पुत्रकोभी
बुलायकर सुंदरसुभनीतीजोहै सोभलीप्रकार
सवसिखाई तिसतेउपरांत तिसकोराजतिलकदे
कर श्रापभगवानके चरनोमेचित्तको जोडकर
घननके विनासहजेही शरीरकोत्यागकर भक्ति

८

केप्रसादसे परमपदकोप्राप्तहोतानाभया नवप्र
मभक्तीकी मूरती तिसकीरानीजोथी सोतिसके
साथही जलकरके अपने परलोककोसिद्धकर
लेतीभई तहांइसअद्भुतकौतुककोदेखकर
सबलोग अचरजकोप्राप्त भयेहुये अनेकप्र
कार श्लाघावडाई करकर कहतेहैं किधन्य इ
हभगवानकाभक्त राजा औरधन्यप्रेमभक्तीसे:
प्रवीन इसकीरानीहै औरतिनकासहजस बडाई

८४ भ॰ ५

गावतेहुये लोगसब आपने २घरोंकोचलेगये नाभा

दासजी कहतेहैं किहेसंतो इसप्रकार इसहृदरगा

याजोहै सोमैनेकुछसंछेप करके आपके आगे गा

यनकरदेईहै देखिये भक्तीकेप्रसादसे अंतरभक्ती

रानाने मुनी और जोगीजनोंकोभी दुरलभजोगती

है सोप्राप्तकरलेई ।२। इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथे भ

गवदभक्तीमहात्तमे भाषाटीकायां अंतरभक्ती च

पचरित वरणनंनामसरगः ५ ॥

मिहोसिंहकृत

९

नवनरनाथ सदिन सभजानी। राजतिलकनिजमस्तक
रपानी। देनसमरिनगथरनकपाला। कीनगमनका
ननमहिपाला। रत्नरटननागरनटकाहीं। अंनव
परवतजिकाँनमाहीं। दोहा। मुनिजोगिनडरलभ य
गमविनु ञनामगतिसोय। छितपनभक्तिप्रसादतें
लीनविरतसवलोय। तातेसंसतिभक्तिसम सुगम
सलभसुलदाय। नरननवारनिथ अगमभव नाहिं
नआन उपाय।२। टीका। नवनानाने तिनके राख
न

७४ भं० ५

नेकेलिये यद्यपि वहुतनहीविनती कारकेकहा
तद्यपि सोनहींमानतेभये तवप्रजापालनेकेविभ
भूषणमणीवस्त्र इत्यादिधनदे करके वडेसनमा
नसे जवविदायकिये तववेराजाके ऐसेधनसन
कारको पायकर नृपनन्दनगायनकरनेलगऐ
ओर अपनाभांडवमनजोहै सोप्रकटकरवेतेभये
ऐसेतिनकेकपटकोदेखकर भक्तप्रधान ओर
ज्ञानकीनिधीराजाजोप्या सोहृदयमे कछुभीरोष

५

नहीं करताभया भगवानके संतभक्तोंका संदर
भेषमानकर प्रणामकरके घरकोचलाजाताभया
नवईरूंभांडओथे तिनके हृदयमे तिसीकाल भ
क्तीविचारके सहित संदरज्ञानजोहै सोहढहो
जाताभया और कहनेलगे किधन्य इहसंतोंका
भेषहै जो हमने धारनकिया और राजानेभीइह
मारे कपटकोभलीप्रकारजानलिया परंतु स
नभेषकीमहिमा और प्रभावकोदेखिये कि अ

जायाल सर्वप्रकार क्षमाकरके बडेसन्मानसे प्र
णाम करकर नरकोचलागयाहै इहसंतभेषका
चमतकार हमने प्रतत्क्षदेखलियाहै अवइहपर
मपवित्र और सुखदायकभेषजोहै सोहमकदा
चित नहींत्यागेंगे असेविचारकर सोभांडजन
हृदयका कपटदेस सबत्यागकर वडेवनधारी
वैसनवभक्त होजातेभये औरवे राजासेलियेहुये
रतनभूषणवस्त्र लोथे सो सब अनथीसंतोंको

छोड़कर आपलक्ष्मीनाथ भगवानको रटतेहुये
आनंदपूर्वक जवांतरलोकोचले जानेभये इसप्रका
र राजाके उत्तमसंसर्ग अर्थात संगतीसेंवे अभक्त
जोथे सो भक्तहोयगये जवराजाके मंत्री इसअद्
भुत कौतुकको देखकर परस्पर कहनेलगे
किभाई प्रजापालनेअपनद भगवानका बडा प्र
धानभक्तहै और इसकेहृदयमें दीनबंधु सदैव
हीं निवास करतेहैं इहआजसंसारमें धन्यहै और

८४
भ०
॥

धन इसकाजनमैहै ऐसेशालाग्रावडाई करकर स
बअपने अपने चवोंकोवलेआये नवविरक्कभया
हूआ राजा एकवडासंदर ऐार सभादिनदेखक
र सवमंत्रीविद्वानोंको वुलायकरके अपनेहा
थसे पुत्रको राजतिलकदेकर आपसंनभेष धा
रनकरके स्मरनस्मरनकरताहूआ भजनके नमि
तवनकोचला जाताभया तहांनहनागार भग
वानका भजन स्मरनताहूआ अंतकालवनके ॥

मीचही शरीरकोत्यागकर मुनीलोगीजनोको दु
र्लभजोगतीहे सोभक्तीके प्रसादसे यतनकेवि
नाहहनेही प्रापतकरलेताभया तांतेभक्तीके
समान इसअगम संसारसमुद्रके तरनेको औ
सा औार कोईभीसुगम और सुखदायक उपाय
नहीहै ॥ ३ ॥ इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथेभगवदभ
क्तिमहात्मेभाषाटीकायां भांडवचरित वरणनं
नाम सरगः ॥

मिहांसिंहकृत

अथविप्रभक्तचरितं । दोहा । भक्तिमहातम ल
लितवर सुनतजीवनसंसार । आनयथामतिवरन
निजकरहौं प्रकटउचार । चौपाई । मथुराप्रांतवि
प्रवरकाहू । उत्तमभक्तवैस्नवताहू । प्रियबांधव
सुतबरजितहोई । एकलबसहिं सदननिजसोई ।
भिक्षाटनकरतभक्तप्रवीना । रामभजनसंततमन
लीना । असप्रकारबीतेकछुकाला । नवकटि
द्वार नामइकबाला । धृतउपवीतविप्रसुतकाहू । व

८९
भ०
१

रजिनवंधवमातपिताहू। आवापरमदीनवनहोई
तासुविलोकि विप्रवरसोई। तायाशुकवदनमङुवानी
भाषीपरमहरषजनमानी। कहितेंआवककवन तववा
रे। ठाढोड्खिनदीनवनद्वारे। वालकववनसुनत
उजकेरा। कहतनाथपितमाततमेरा। उजसुनविद
तलोगग्रामीना। पालेमोहिजानिग्रनिदीना। अव
उरभिद्व कालगतिपाई। आवातोरसदनउजराई।
वैसवसुनत नमकिसवानी। लागेपामनन हरष

उरमानी। अवनजाहृनतिमोरअगारा। असप्रकार

जव विप्रउचारा। निजअभिष्ट नववालकपाई। भयो

स्थितउनपदसिरनाई। उनवरकरत पुत्रसमलाल

न। लागेपातास्वप्रीतिजनपालन। एकदिवसनववा

लकतेहा। गवन्योरह्मावहिर नजिगेहा। विप्रभक्त

निजमरणविचारी। निजगुरदेवलीनहंकारी। भयो

मरमनिज मरनसवाही। सोसिषमोरनाथगृहनाहीं।

जवलगसोन आवनिजगेहा। तवलगनाथमो

७९
भ०
२

उमरतदेहा। तावहु यतनमतनसंभारी। तेजवशाव
वालव्रतधारी। टीका। ताहभनहुगुरदेव नवमोरसि
खोवनपहु। होहुजसतनव भक्तिहढ भगवनदी
नसनेहु। नवनवभक्तिप्रसादतें मोतवउषमरतजोय
कौतकदेखत सवनसत होहिंसजीवनसोय। १॥
टीका। अवओर मरतसजीवन अर्थात मेरेहृदयेउरष
कोजीवन करनेवालाभक्तीका संदर महानमनोहै
सो जैसाकमनीके अनसारहोय सकनाहै गायन

२

करताहूं मथुराकेपरे एककोई ब्राह्मणवडा उत्तमवै
ष्णवभक्तहोताभया सो कैसा किजिसका मातापिता
स्त्रीपुत्र बांधवकोई भीनहीथा केवल आपहीं अके
लाजरसैं वासकरताथा भिक्षाटन करकर अपनी
उपजीवकाकरता औार रात्रीदिन भगवानकेभजन
स्मरणमै लीनरहताथा इसप्रकारजवकुछकाल
वतीतहोयगया तव एकदिनजिसकी कुटियाके
द्वारेपर यज्ञोपवीत अर्थात जनेऊधारनकियेहुये

७९
भ
२

मातापिताभ्राता इत्यादिवांधवोंसेहीन औरदरिद्रतासि
हीदीन ब्राह्मणका एकबालक आयप्राप्तहोता
भया तबतिसकोदेखकरके ब्राह्मणभक्तदयाके
वशभयाहुआ बडीमधुरवाणीसे पूछनेलगा कि
हेबालकतूं अनसेदुःखी औरदीनहोय करके मेरे
द्वारेपर स्थितभयाहुआहै कहो पुत्रतूंकौनहै औ
रकहांसे आयाहै ऐसेब्राह्मणकावचन सुनकर
बालक दीनवाणीसे कहनेलगा किहेनाथ मेरा

माता पिताभ्राता बांधवकोई भी नहींहै ग्रामके
लोगोंने आजतकमेरी पालनाकरीहै परंतु अबदु
र्भिक्षकाल अर्थात मंदसमयकरके कोईअन्ननहीं
देसका जिसने विपतीकामाराहुआ ईहांतमारेद्वा
रेपरआय प्रापतभयाहूं इसप्रकारजिसबालक
कीवडीदीन कोमलवाणीसुनकर ब्राह्मणभक्त
हृदसे दयाकेवशहोयकर कहनेलगा किहेपु
त्र अब तुमईहांमेरेही घरमें निवासकरो प्रेमसे

७९
भ०
४

नकरसोबालक अपनेमनवांछित फलकोपाय
कर ब्राह्मणभक्तके चरणोंपर प्रणाम करकेतहां
ही स्थितहोजाताभया तवब्राह्मण तिसकोपुत्रके
समान प्यार करकरबडी प्रीतीसेपालनेलगा और
र भगवानकेभजन स्मरणोंमे लगायदिया एक
समय सोबालक किसीकारजकेनमित्त घरसेनि
कलकर कहीं बाहरचलागया तवपीछेतिसके
गृहमें ब्राह्मणभक्तने अपना अंतसमय अर्थात म

४

रणाविचारकर अपनेगुरुजीको पासबुलायलि
या और अपने मरणेका हतांतसबसुनायकर
कहनेलगा किहे दीनयाल मेराशिष्यजोहे सो
कहीं कारणकेनमित्त बाहरगयाहुआहे घरमे
नहींहे नाथजबलग सो घरमेनहींआवेगा त
बलग मेरास्तनक शरीरतुमने संभालकर र
खछोडना और जबवेमेराशिष्यबालक घरमे
आवेगा तबतिसकोसभतममेरी इहशिक्षाक

७९
भ०
५

ह्मियो किंहेपुत्र जोतम सनकादिके भगवानदीनस
खदानकी भक्तीमे सावधानसावोगे तोतमारी
भक्तीके प्रसादसें मगामदाहुमा शरीरजोहै सोकौ
नकसें सबकेदेखतेने अवश्यजीवतहोजावेगा।२।
चौपाई। असकहिदेवर्षोगकरताहीं। सोउजभयो
सनक गृहमाहीं। जवमध्यानभासकरस्नावा। गा
वनकरतबालकतवआवा। सनकविलोकिसट
नगुरुकाहीं। बालकभयोविकलमनमाहीं। सोट

५

नकरनउपखनचितहोई। देवभरोसकवनअबमोही
सिखगनिदेविन्हउगुरुनेहा। दोलेपावदनवचन
जतनेहा। वालतनकथीरजउरलेवौ। महिमतम
मयतोरगुरुदेवौ। जेउपदेशज्ञाननवहेतू। कीन
स्रवनहुश्रवणसवेदेतू। वालकसुनतभयोकर
जोरे। कीजियेकथनदेवगभयमोरे। कवनज्ञानउप
देशसुनावा। मोरहेतगुरुदेवबुलावा। जठिरवि
ग्रनववदनवखाना। असउपदेशतोरगुरुज्ञाना।

रामभक्तिसुतनसुखदसुहाई।जोनतुमकबहुंकहविसम
नभाई।तोयभावसुखिभक्तिनमोरे।होहिंसजीवन
प्राणहमारे।दोहा।बालकतनतदाणसुतनप्रसुमृतन
जीवनजगवारु।लख्योआराधनकरतउर रामना
मसुखसारु।२।टीका।इसप्रकारकथनकरकर
सोब्राह्मणभक्तदैवयोगसेमृतहोयजाताभया।तो
जबदिनका[illegible]समयआयगया।तबवेबा
लकतिसकाशिष्यभीवाहरसेघरमेआयप्राप्तहुआ

आगेगुरुको अन्तभयाहुआ देखकरबालकजोहै सो
व्याकुलहोयजाताभया दुखीहोयकरखडे विलापसे
रोदन करकर कहताहै किहेदीनदयालआपतो
सुखपूर्वक परलोककोसिधारे परंतमेरेको अब
किसकाभरोसाहै औरमै कौनकी शरणको प्रा
प्तहोऊं नाथमेरेको नोकोई आधारनहींरहाहै
ऐसेबालकका रोदनविलापसुनकर और तिस
कीव्याकुलदशादेखकर सोसहजगुरुबडे हितसी

७९
भ०
७

नीकेवचनोंसे कहनेलगा किहेप्रभुतनें हृदयमैंथी
स्वकोधार और मरणेके समय तेरेगुरुने जोतेरे
लिये ज्ञानउपदेशकियाहै सोतुंमेरेतें श्रवणकर
नवबालकहाथजोडकर दीनवाणीसें विनतीकर
नेलगा किहे कृपानिधान आपकृपाकरके क
थनकरिये किसा कौनज्ञानउपदेशहै जोगुरुजी
दीनदयाल मेरेलिये कथनकरगयेहैं नवबुद्धगुरु
कहनेलगा किहेपुत्रतेरेगुरुकी तेरेकोइह शिक्षा

है कि रामचंद्र भगवान की दृढ सुखदायक भक्ती
जो है सो कदाचित्‌ नं सम्यककरके हृदयमै धारन
करैगा सो तेरी तिस सत्यभक्तीके प्रभावसें इहम
न भया हुआ मेरा शरीर सजीवन होजावैगा ऐसे
बृहद्गुरुके मुखसे वचन सुनकरके बालक
जो है सो श्रीजीभक्तीसे तत्तनहीं मरे हुयेको जीव
न करनेवाला सरवसलोंकासार रामनाम जो है
तिसको हृदयमै स्मरने लगजाता भया ॥२॥

७९ भ॰ ८

चौपाई। अवरिल भक्ति प्रेममनलीना। तारकमंत्र रटनजवकीना। तासप्रभावमनकगुरुवाला। उत्रो होतजीवततनकाला। सिसमुखरामनामसुनिसो ई। वोल्यापरमहरषवसहोई। देखवहुवनस सुभ सुखदाई। रामभक्तिमहिमा अधिकाई। जहिप्रसा दस्तवपुषहमारा। उत्रोतानतवप्रकटनिहारा। तेतेमस्तसजीवउखहरनी। रामभक्तिभववारद तरनी। तातलेहुसंततउरधारी। नमरेसदासरव

सवकारी। मैनेरेउपदेससुहावा। परिहरिना
कलोक सनआवा। जियनआससमोरेकछुनाहीं
असविचारिवालकमनमाहीं। वासुदेवपावन
पदरागा। निसिदिनकरहुभक्तिवडभागा। क
रिकरिभक्तिसुधारसपाना। होहुअमरतनवना
नसुजाना। असकहिविप्रनजननिजकाया। क
रिकैतनकसनभवनसिधाया। उरधदहिकसतन
तांकरमारी। विधिवनकीनवालबनधारी। व

८९ भ. मा.

हरिभक्तनमानस अनुरागा। सविहरिभक्तिकरन हृदलागा। रटतनामभगवानसहावा। तहिनिज अंतपरमपदपावा। असइहचरनचारुमनभायन मैसंक्षपतकीनकछुगायन। दोहा। रामभक्तिसं स्वतिसवेदजहिथारनउरकीन। तहिसकतिज नजगतनिजजनम सफलकरिलीन। ३। टीका जवइसप्रकार अवरिलभक्तीसें किजिसमैकोई विरलनहींहै तिसवालकने तारकमंत्ररामनामका

सुमरणकिया तबतिसरामनामके प्रभावसें तिस
बालककामराहुआ गुरुजोथा सोतत्कालजीवन
होजाताभया औरबालककेमुखसें रामनामशब
दको सुनकर वडे आनंदमेंमगणहोयकर कहु
नेलगा किहे पुत्रदेखो सरवसुखोंकेदेनेवाली सुं
दररामभक्तीजोहै तिसकीकेसी अदभुतमहिमाहै
किजिसके प्रसादसे मेराइहमरनभयाहुआ शरी
र तुमारेमरनमुख जीवनहोयगयाहै तातेंइहमरन

८९
भा०
१०

सजीवनी और संसारसमुद्रके तारनेवाली पवित्रराम
भक्तीजोहै सोपुत्रतें निरंतर करके हृदयमें धारनक
रले इहतेरेका सरबकालसुखके देनेवालीहै औ
रमें हैहितकारी केवलतेरे उपदेशकेलिये स्वरग
लोकको त्यागकरके आयाहूं मेरेकोजीवनेकीक
छरइछानहींहैं ऐसेविचारकर हेबडभागी सर्ववा
सनाकोत्यागकरकेवल वासुदेवभगवानके चर
न कमलोंमें प्रीतीकर औरभक्तीके अमृतरसको

१०

पानकरकर देवताउंकेसमान अमरहो इसप्रका
र कथनकरकर ब्राह्मणभक्तजोहै सोफिर सहजे
हीं शरीरकोत्यागकर और बडाअद्भुतकौतकक
रकर भगवानकृपानिधानके परमधाममैंजाय
निवासकरताभया तबपीछे बालकने विधीकेअ
नुसार तिसकाम्रतक करमजोहै सो सबकिया
तिसनें उपरांत स्वस्थचितहोयकरके भगवान
की भक्तीमैलीनहोजाताभया ऐसेसमयपायकर

७९
भ०
॥

सोभीभगवानके चरनकमलोको सुमरता सुम
रता अंतशरीरको त्यागकरभक्तीके प्रसादसेंप
रम पदकोप्रापतहोयगया इसप्रकारइहचरित्र
जोहै सोमैनेकुछसंक्षेपकरके गायनकरदियाहै
जिसपुरषने संसारमै इससर्वसुखोंकेदेनेवाली
रामचंद्रजीकी भक्तीकोहृदयमै धारनकियाहै ति
सपुन्नमान पुरषनेजगतमै सुकरके अपनेजन
म औरजीवनेको सफलकरलियाहै ।३। इतिश्री

॥

८६
भ०
१२

भक्तविनोदग्रंथे भगवद्भक्ती महात्मे भाषाटीकायां विप्रचरित वरणनं नाम सरगाः ॥

मिहां सिंह कृत

१२

ग्रथरविलास चरितं। दोहा। अवमंगल आनंद
प्रद करनअमलउरचारु। भक्तिमहातमग्यानमैं
करहुंकथनमनहारु। मोहहरनदुखहरनसब
हृदयभरनसुखचैन। प्रेमभक्तिवरधन नवलरा
मचरनरतिदैन। रामानुजकरविदतुसिष देवा
चारजनाम। राधाहरजानंदगुन महां महिमअ
भिराम। चौपाई। [illegible]हचतुरथ रामानुजभाये। म
हांसंतसिषत्तानअचाये। श्रीराधानंदकरसि

७८
भ.
१

षचाहू। रामानंदविदनबनधाहू। शांतदांतदाया
रतनागर। वैस्नवसंतविदनगुणसागर। कलमभ
क्तिपरपरहितपाला। ज्ञाननिधानमानमदघाला
अनुग्रहशापादिपरायण। विसनलोकभक्ति अ
नपायन। इमतभक्तिवलभवनिधवारी। विनप्रया
सजहिदीनसितारी। पीपाजीसिषनामसहाये। न
विहबिजनकवीरजगगाये। धनासदनारविजन
वाहू। भवानंदभक्तबनधाहू। इत्यादिकप्रभिरा

मसुहाये। भक्तप्रधानविदतजगगाये। प्रथमसु
चिररविदाससुहायन मैथ्रवकरहुंभक्तिकछुगा
यन। विमलसुविदपावनमनहरनी। मानहुंसु
गमसिंधुभवनरनी। जाकरसुननमनुजअनुरागे
होहिंभक्तवैसवबडभागे। सर्वजनमनिजसोरवि
दासा। भक्तिप्रवीनज्ञानगुणरासा। ब्रह्मचरजव्रत
निरतसुहेला। होतभयोरामानुजचेला। विषय
सुखादिसकलविसराई। संततनिरतगुरनसिव

६६
भ०
२

काई। संतसरूपगुरुदेवप्रमानी। रामानंदविदितज
गज्ञानी। भिक्षाटिननिजपरमसुहावा। सोऊपरम
रविजनहिंसिखावा। पायनदेसगुरुनहितमानी।
भिक्षाअटनकरतसुखमानी। गुरुकहँप्रथमदेत
जनलाई। तेमाटिँकरि हरिसिँकाई। विरचिपाक
नैवेदलगावत। सिषसमेतपाछेकछुपावत। दो
हा। असभिक्षाटनकरत नहिंनिकसि गयोकछु
काल। दैवयोगकरदासरवि एकदिवसनजिआल

२ व २

निकसेभिक्षाटनकरनघटागगनघनघोर। छयो
क्षिपनीक्षणपवनलगीचलचँचद्धंबोर। मसलया
रनवारफर मारनमरूनघ्यान। वज्रपातहूटन न
उरननरनथरनथ्यहरान।।२। टीका। अबश्रोर हृ
दयको निरमलकरनेवाले श्रोर परमश्रानंदके
देनेवाला भक्तीकामनोहर महानमजोहे सोक
थनकरताहूं केसाभीमहानमहै कि मोहभ्रम
पापकलेशोंकेनाश करनेवाला श्रोर रामचंद्र

४४
भ०
३
3

जीकेचरन कमलोंकीभक्ती प्रीतीकेदेनेवालाहै
रामानन्दजीके सिषदेवाचारजजी राघानंदजी
हरजानंदजी महिमानंदजी इहचारोवडेउजागर
औरमहांसंत ज्ञानविज्ञानकीनिधीहोतभये औ
रश्रीराघानंदजीके शिष्य रामानंदजीहुये सोकै
सेकि परमव्रतधारी और इंद्रयजीत वडेदयामान
सरव गुणोंकी निधी जगत मे वडे
उजागर वैस्नव प्रधान ॥ । ३

ग्रोर कृष्णभगवानकी भक्तीमैलीनपरहित ग्रोर
परउपकारमैप्रवीन सवकामनाराखनेवाले क
पाग्रोरशापमैभीसामर्थ ग्रनुपायनीभक्तीके
धारनेवाले किजोकिसीसेंनहींपाईजाती ग्रोर
तिसभक्तीकेवलसे जिन्होने ग्रनंतनहीं जीवोंको
इसमहांभयानक संसारसमद्रसे यतनकेविना
हीं पारउतारदिया ग्रर्थात तिनकाउद्धारकर
दियाहै ग्रागेतिनकेशिष्यपीपानरहरी कवीर

७८
भ०
५

रविदास धन्नासदना भक्तानंद इत्यादिवडेभक्तप्र
धान जगतमैं प्रसिद्धहोतेभये अवतिनमैंसे प्रथ
मरविदास जीकीभक्तीजोहै सोगायनकरताहूं॰
कैसीभीरविदास जीकीभक्तीहै कि मनकेहरने
वाली पवित्र और स्वावके देनेवाली निरमलमा
नो संसार समुद्रके तारनेको वडीसुगमनावका
है और जिसको श्रद्धापूर्वक सुणकरके मानुष्य
जोहैं सोज्ञानध्यानकेसहित परमवैस्नव भक्तहो

५

जानेहैं ऐसेभक्तीवाले सो रविदासजी पूर्वलेजनम विखे ज्ञानकीनिधी ब्रह्मचारीहोयकर रामानंदजी केचेलेहोतेभये कैसे कि शरीरकेविषय सुखभो गइत्यादि सबविसारकर रात्रीदिननिरंतर गुरु जीकी सेवामै लीन रहतेथे तबज्ञानध्यानकी मू रती निरमान संतप्रधानगुरु रामानंदजी आपजो भिक्षाटनधरम करतेथे सोईधरमकरनेकी रवि दासजीकोभी आज्ञादेतेभये तबगुरुजीकी आज्ञा

८८
भ०
५

हैंतेभये तबगुरुजीकी आज्ञापायकर रविदासजीप्र
णामकरके सावधानहोयगये और निजभिक्षाटन
करकर अन्नजोप्राप्तहोता सो गुरुजीके आगेला
यरावते तवसोदीनदयाल भगवानकाअर्चन सेवन
करकर पीछेभोजन बनावते और प्रीतीभक्ती
से प्रथम भगवानको नैवेदलगाय कर फि
र शिष्यके सहित आनंदसे आपभोजन पा
यलेतेथे इस प्रकार भिक्षाटन करते ।

५

करने रविदासजीको कुछकालव्यतीत होयजाता भया नब एकदिनजोषवरका नागाकरभिलाटनक रनेकोचले तौदैवयोगसे आकाशमें वादलकीछो रघटें छायनहोकर जलजोहैं सोमूसलधारवर सनेलगपडा श्रोर पवनभी बडेवेगसेचलकरवा रोवारनें झकोरें मारनेलगी तैसहींपरमभयानक वज्रपात अर्थात विजलीकेटूटनेसे पृथ्वीभीथ रथरकांपनेलगी औरमानुष्य भी भयसेव्याकुल

७७ भं० ६

ह्योजानेभये।।९।। चौपाई। रविजनदेखिह्विष्टिचनमाहीं
करिनसकेभिक्षाटननाहीं। क्रूछेगुरुपैंआवनकाहीं। भयोसामर्थ्यविप्रवरनाहीं। नवइकदेखिनास्तिकगेहा। सकुचिननासह्वारथिरदेहा। नास्तिकठाढ़विलोकिअकेला। कहतकाहुरामानंदचेला
भक्तिमानठाढ़ोममद्वारा। नासमधुरमस्तउवचनउचारा। आजविरामहोवनहिंवारी। इहनवअन्नलेहुव्रतधारी। गुरुहिंकरायपाकनिमकरहो।जा

६

पकृतीरभक्तश्रमहूरहैा। स्वनिरविदासभन्योनिज
वदना। गुरुवरमोरश्रन्त्रलवसदना। करनलाक्त
पासिंधुस्हईकारा। श्रसप्रकाररविदासउचारा। नव
मध्यानभासकरश्रावा। जलधगगन नहिंविधुर
लछावा। विमलव्योमकवहोहिंनिहारत। गुरुक
रयासदासरविश्रारत। नास्तिकवहुरिवदनमरुड
वानी। भाषीजनहुं परमहिनसानी। दोहा। श्राज
नछुटनहषिनभ गुरुद्वध्यनलवगेहु। श्रन्त्रलेत

८८ भं. ८

७

गवहैनंकन नजहुविकट हठपड्ड ।२। टीका ॥
नवद्रसमकार घोरवादलोंकी महांवरखाकोदेख
कर तिसतें रुकाहुआरविदास भिक्षाटनजोहै
सोनहीं करसका तिसतें हृदयमें वडीचिंता औ
र कलेशमानताभया कि अबखोलीहाथ गुरु
जीकेपास कैसेजाऊं औरतिनको जायकरकेका
दिखाऊं ऐसेचिंतनकरताहुआ एकनास्तिकका
घरजोथा तिसकेद्वारेपर आयकरके स्थितहोय

८

रहा नवनास्तिकनिमको अकेलास्थितहुआदे
खकर कहनेलगा किइहकोईभक्तीमान मेरेहा
रेपरस्थितभयाहुआ रामानंदका चेलादेख पड
ताहै ऐसेविचारकर वडीमधरवाणीसें कहने
लगा किहेव्रतधारीसंतभक्त आजवादलजोहै
सोवरसनेसें नष्टतनहीं होनेवालाहै अर्थात इ
हमिटतानहीं देखपडताहै तोनेतममेरेघरसे
अन्नलेलेवो और आपभीकरो फिर कुटियामे
औरजायकर्के शीघ्र गुरूको भोजनकरावो॥१

वैठकर वरषाकाश्रम कलेशजोहै सोत्यागो उसप्र
कार तिसकाकथनसुनकरके रविदासजीकहने
लगे किभाई हमारेचरणकाध्यानजोहै सोहमारे गुर
देवस्वामीसईकारनहींकरतेहैं ऐसेवारना आला
पकरतेकरते दिनकामध्यान समय होयगया प
रंतुबादलजोहै सो विखरनानहींभया रविदासजी
परेदेखतेहैं कि आकाशाकव निरमल होताहै
और गुरुजीके भयसे भी चितकांपताहै ॥

८

किवेदीनघालभूखे क्याकहतेहोंगे इतनेमैनास्तिक
फिरमधुर औरहितकीभीगीहूई वाणीसेकहने
लगा किहेसंत आजआकाशसे वरषा छूटनेवा
लीनहीहै औरगुरुतुमारे घरमैभूखे व्याकुल
होयरहेहोंगे तांतेतुमइसहूठकोत्यागकर अन्न
लेलेवो औरशीघ्रचलेजावो ।२॥ चौपाई । गुरु
लख्यान असहृदयविचारो । लेनअन्नरविदाकरि
धारो । वगहचिरआश्रमनिजआई । तुरतविप्र

८८ भं॰ ५

वरपाकवनाई। गरुपेंजायनवेदनकीना। पावनप्रेम
भक्तिमनलीना। लेतनलसिद्दलगुरुहखपागे। सं
नुतप्रीतिपरोषणलागे। पुनिसभक्तिसनमखभग
वाना। सोनैवेदराखिसनमाना। स्यामजलधतनकं
बुजनयना। कचकुंचितअलिअवलिलजयना। की
रतुंडकलनासिकसोहन। अधरअरुनमनिमानस
मोहन। ललितकपोलभकुटिसुभवांकी। पटतरगु
नन कविनमतिपांकी। भालखोरचितचोरविराजा

५

करनमनसकुनकुंडिलसाजा। रदनकुंदकलिपं
तिनयारी। बाहुअजानखलनमदहारी। असव
चित्रसूरतिभवतारन। लागेहृदयविअजवधारन
होतनवउपूर्ववतसोई। भाषतनवसंधिगायकछु
होई। काथिररहोनाहिंविनमोरा। जहितेंदैवभक्त
चितचोरा। मोरेहृदयजनउरनप्रभनाहीं। असविचा
रिनिजमानसमाहीं। बारवारहरिसूरतिचाहू।
धारतहृदयभक्तवनधाहू। मोनहिंहोनवउहव

८८
भ॰
१०

कारी। भनतमिषहिं नववदनउचारी। सतमसतम
हिदेइसनावा। आजमनतव कहिकरलावा।
नवउरपनरविदासवखानी। विनयनमजगजो
रनपानी। माहितेंभयोनाथअपराधू। छमहैहोतम
हदेवनवसाधू। आजयालइरदिवसविहावा। चो
रहषिकहुपारनपावा। भिलाटनकरिसकोनदी
ना। मारगपकसदनप्रभवीना। वारदपवलनिवा
रणकाहीं। राहाअर्थदिवसलगनाहीं। सोकपा

१०

10

लनालिककरगेहा। कहिकहिवारवारमहिनेहा।
इहकलुअवदीनगुहदेवा। लषनजानितमहिंप
भलेवा। तांकरवेगपाकविरचाई। तमहिंकीन अ
रपणपभआई। रामानंदसननसिषवानी। परम
कोपमानसनिजठानी। भाष्योअरेअधमङरचारी।
मंदअनर्थकीनतवभारी। मोरसधरमकीनसतव
भंगा। वाकरणिजथावाविरगंगा। नालिकसदन
अन्नमहिदीना। जपअवरापचेबनवकीना। अव

३८८
भ०
११

इहप्रणपमोरसठपाई। हौहैचरमकारनवजाई। अम
जवहोरवचनगुरुभाषा। नवरविदासचरनसिराषा
जाहियाहिअसवदनमलीना। लागोविनयकरन
गतिदीना। चरमकारयहमोरअसंसय। हौहिंज
नमभयभक्तविध्वंसे। पैक्तपालपदसेवकज्ञानी
महिवरदेहवदनमरुवानी। तहांपितोरभक्तिसु
खदाई। मोरेहृदयरहवप्रभुताई। इहिविचरचरका
रकरगेहू। हौहिंजनममदीनसनेहू। दोहा॥

म

११

जोलोतवउपदेसमहि कीननमंत्रग्रलान । जोलोसत
ननिजजननिकरमैनकरहुंप्रभुपान ।३। टीका । तव
रविदास नास्तिककाकथन सुनकर और गुरुजीको
भूखविचारकर तवतनिसके घरकाअन्नलेकरके
चलपडताभया और घरमेआयकर ततकालभोज
नवनायकर वडीप्रीतीभक्तीसे लायकरके गुरुजी
के आगेनवेदन करदेताभया तवगुरुजीतरत त
लसीदललेकरके प्रीतीसे तिसभोजनकोपरोस

७८ भ० १२

कर भक्तीसनमानसे भगवानक्रपानिधानको नैवेद लगावतेभये नवस्याममेघवत सुंदरशरीर श्रोर कमलों के समानमनोहरनेत्र कुंडलोंवाले भ्रमरयोंके समान वनस्यामकेशकीरजोतोनाहै तिसकेसमान नासिका मुनिजनोंके मनको मोहितकरने वाले लाल लाल होठ तैसेही सुंदर कपोल। श्रोर वांकी भवें कि जिनका कविजन कोई उपमान नहीं देसकते ॥ ॥

१२

किकैसीहैं और मस्तकमें मनोहरतिलक कानो
में मकराकृतकुंडल कुंदकलीजोनापेकाफलहैतिसकेसमानवडे उज्वलदांत औरदुष्टोंकामदहरकरनेवाली लंबीभुजें असेजोभगवानके वविचध्यान
को नेत्रमूंदकर रामानंदजी हृदयमें ज्याउवनेलगे
तोवे सर्वकेसमानहृदयमें वढनहींहोता अर्थात
सात्तानकारहोकर जडतानहींहै नवभ्रामिकवित
होयकरके कहतेहैं क्यामेराचितमेक्याक्यस्थिरनहीरहा

७८
भ०
१२

है किजिसतेंभक्तोंके मनकोमोहित करनेवालेभ
गवान मेरेहृदयमें आयकरके नहींजउतेहैं ऐसे
विचारकर रामानंदजीफिरवारवार भगवानकीमू
रतीको हृदयमेंधारनकरतेहैं परंतुवेतिनकेहृद
यमे ~~धारनकरतेहैं परंतुवेतिनकेहृद~~ स्थिरनहींहोतीहै
तबरविदासकोकहनेलगे किहेशिष्यमेरेकोसत्यसत्यकहो
किआजतेंअन्नकिसकेघरकालायाहैं तबभयकेव
शभयाहुआ रविदास हाथजोड कर दीन ।

वाणीसेविनतीकरनेलगा किहेनाथमेरेतें वडाभा
री अपराधहोगयाहै आपकृपाकरके क्षमाकरिये
क्योंकि आजदिनभर वडीघोरवरषाहोईहै सोहोनीव
हीहै जिससें मेरेकोसमय नहींमिला और प्रभुमें
भिक्षाटननहीं करसका मारगमें एकघरदेखकर
के वरषाके निवारणाकरनेको आधेदिनपर्यंनत
हांहीं स्थितरहाहूं सोदीनानाथनासिककाघरर
हा जिसनेमेरेको वार वार कहिकर रहूआयाथाअ

भ॰ ८८ ५४

साघ्रन्नदिया ग्रोरमे कृपानिधान ग्रापकोभूखेजा
नकर तिसग्रन्नकोलेकरके चलाग्राया ईहांतत
काल तिसकाभोजनवनायकर ग्रोर ल्यायकर
प्रभुतमारे ग्रोगेनवेदनकरदिया ग्रैसेरविदासके
मुखसेवचनसुनकर रामानंदजी परमकोपके
वशहोयगये ग्रोरतिसकारके वचनोंसेकहने
लगे किग्ररे मंदबुद्धचारी तैनेवडाघोर ग्रनर्थकि
याहे प्रथममेरा सुधरमजोहै सोतैनेसवनष्टकर

१४

दियाहै जैसेकोई गंगाकेजलविखे वारुणी अर्थात
शराब डालदेताहै तैसेमूर्खतेनेइहकुकर्मकियाहै
जोनास्तिककेचरकामेरेको अन्नदियाहै औरघो
रअपराधकियाहै अवश्रभावी तूंमेरेशापकोधा
रणकर औरन्नायकरके चरमकारजोचमारहै
तिसकेशरीरकोप्रापतहो इसप्रकारजवगुरुने
घोरशापदेदिया तवरविदास चरणोंपरसीसध
रकर वाहिवाहि वाणीमेंसें मखमलीनभयाहूआ

८८ भ. १५

दीनहोयकरविनती करनेलगा किहेकृपानिधान
अवतो आपकेवचनसे मेराचरमकारकेघरमे अव
श्यजनमहोवेगा इसमेंकुछसंशयनहीहे परंतुहे
दीनदयाल मेरेकोअपनेचरनोका सेवकजानकर
कृपाकरके इहवरदेवो कितहांचरमकारके जनम
मेभी तुमारीसुखदायभक्तीजोहे सोमेरेहृदयमे ह
फरहे अर्थात सोमेरेकोविसरेनही और चरमकार
के घरमेमेराजनम भी इसीनगरमेहो और जवल

क

१५

गप्रभुतुम आयकरके मेरेकानमै उपदेशनाकरो न
वलगामै अपनीमाताका हृयजोहै सोपाननाकहूं॥१॥
चौपाई। असगुरुजनसमहननसिषवानी। एवमस्तुनि
जवदनवखानी। वहुविधिविपुलमानसपछ्नाना। अ
ह्रोदीनहमशापमहाना। करहिंकृपालसंतनिसमै
से। होहिंनिरतमानसमदईनैसे। एहुसंनसजनअधिका
ई। हृदयनधरनकपटसितताई। विनहिंविविधपवि
धिनिदरनलागे। गुरुउदारदायारसपागे। वह्लवा

८८
भ
९६

16

विपरिहरि वपुनाहीं। गावन्धोधरम्भाजपुरकाहीं। दा
ङ्योनाय यमनन्दपआगे। चित्रगुपतनवभाषनलागे।
सुकृतविपुलपापनवथोरे। भोगानप्रथमकवनमत
तोरे। ब्रह्मचारिनववदनउचारा। महिफलपापप्रथ
मसहईकारा। सुनतविप्रवरकथनसुहावा। यमनेरे
सनिजवदनअलावा। चरमकारकुलजाइहनमारा।
होवजनम असवचनहमारा। नहांललिनसुकृत
फलपाई। रामभक्ति हपफलेन सुहाई ॥ ॥

१५

ह्लोवप्रवर पावनगतिलेवा। सहजप्रसादकविरगुरु
देवा। महाविकटवारदसंसारु। ह्लोवसिविनप्रयास
नवपारु। अनेकवचनसुननहितकारी। कविप्रणाम
उजचल्योसिधारी। चरमकारचियगरभमफारु।
आवाविप्रभक्तव्रतधारु। जननिउदरनवमासवि
ह्लावा। सुभनसदिनदसमजवआवा। नवसुमरत
गुरुदेवकृपाला। निकस्योजननिउदरनजिवाला
दोह्ला। नवजननीअतिप्रेमपयलगीकरावनपान।

९८ भ. १८

सोनपियतनिजवचनवसवालहृदनमखेठान। ४।

टीका। नवइसप्रकार गुरूरामानंदजी शिष्यकीव
डीकोमलदीनवाणी सुनकरदयाकेवशभयेहूये
एवमस्तु कहिदेतेभये कि ऐसेहीहोगा फिरशा
पकोविचारकर हृदयमै वहुतपछुतावनेलगे
किअहो मैनेवडाअनर्थकिया जोइसशिष्यकोह
थाहीं घोरशापदेदिया देखिये संतसुभावकि जो
किसीपरकोप भी करतेहैं तोदयाकेवशकोम

१८

लभीनरतहीं होजातेहैं संतसज्जनजनोंकी एहीविशेष
तावडाईहै किहृदयमें कपटक्रोधजोहै सोराखतेन
हींहैं कृपाकरके आतुरभयेहुये परमउदार गुरुरा
मानंदजी अपनेआपकावडा तिरस्कारकरनेलगे
किदेखोमैंने इसनीचकोपके वशहोयकर अपने
परमहितकारी और सुशीलसेवकको कैसाकठि
नशापदेदियाहै ईश्वरगुरु कृपालतो हृदयमेंऐसा
पछतातेहैं औरउन्होंब्रह्मचारी रविदास शरीरको

भ. १८

नागकरधर्मराजके पुरकोचलाजाताभया तहांजा
यकरके यमराजके मनमरवेस्थितहोयगया तब
तिसकोदेखकर चित्रगुपत कहनेलगे किभाई तेरे
पुन्नवहुतहैं औरपापथोडेहैं अवकहोकितेरीरुची
प्रथमपुन्नभोगनेकीहै किपाप तवब्रह्मचारी क
हनेलगा किमैंप्रथम पापोंकोभोगूंगा ऐसेतिसके
मुखसेंवचनसुनकर यमभूपजोधर्मराजहै सोकहनेलगा
किब्राह्मणजोवेहमारे वचनसेंनमारा चरमकारजोचमारहै
तिसके

18

वरमैजनमहोवेगा तहांअपनेशुन्नोंके फलसे राम
भक्तीकेसहित होयकर गरुजीकेप्रसादसे महावि
कट संसारसमुद्रकोतरकरफिर सुंदरगतीको प्रा
पतहोवेंगा ऐसेधरमराजका वचनसुनकर ब्र
ह्मचारीजोहै सोप्रणामकरकेचलपड़ा श्रोर न
रतआयकरके चरमकारकी स्त्रीके गरभमेंप्रवे
शकरजाताभया तहांनौमहीने माताकेगरभ
मैनिवासकरकर जबदसमामहीना चढ़ानव

महूजेहीं जननीकेउदरको त्यागकरगुरुजीको स्म
मरताहूआ वाहरचलाआवनाभया ऐसेवालकको
देखकरके हरषमेमगणभईहूई मातापे्रमसेहथ
जोहै सोपिलावनेलगी तववालकअपने वचनके
वशभयाहूआ हथनहीं पीवताऔऊचीस्वरभर
भरकररोता और गुरुजीकास्मरणकरताहै। ४।
चौपाई। यद्यपिवालउगायनहिपाया। तद्यपिहोत
भयोहरूकाया। वांपवदेखिहगानगतिताहू। नि

जनिजकहत चकितसबकाहू। ललितरूपसरङ्गअंग
सुहावन। मानहुंभूपसबनमनभावन। इहकसजि
यहिंबालनरनारी। कहतवदननिजप्रकटउचारी
कौननउगाथसुवनजवपाना। होनजननिनववि
कलमहाना। सुकृतजननन तिगुणजननकाहीं। वा
लकपियनउगाथकछुनाहीं। असप्रकारनगदिव
सविहाये। नरत्रियसुननसदननहिआये। रूपसुत
सरस देखिसुनचाहू। विकसतविमलवदनमनहारु

७७
भ०
२०

बिबिधप्रसंगसि सदननिजजाहीं। सुननप्रसंगगप्रवरसि
सुजाहीं। रामानंदजननसुखदाते। श्रीपतिचरनप्रेम
मदमाते। हृदयविचारिशापनिजनेह। आयेचरमका
रकरगेह। सिसुपितमानसदनसबवारन। दीनदया
लकरिदीननिवारन। दोहा। गुरुहुकाकिसिसुपैगव
नि लागिश्रवणउचार। हरनदोषदुखदुरनवपु राममं
त्रसुखसार।।५। टीका। यद्यपिवालकने दूधपाननहीं
किया नयपिशरीरकरके पुष्टहींरहताभया तिस

वालकके सुंदररूप और सुलक्षण अंगोंकोदेखिकरसु
ववंधवजन अचरजकेवशभयेहुये कहतेहैं कि
देखोभाई इहवालककैसाहै जैसेकोई राजपुत्रहो
ताहै और फिरनरनारी सवकहतेहैं किइह ऐसा
दिव्य वालकईहांचरमकारोंके घरमैकैसेजीवेगा
तोजववालकने दूधपाननहींकिया तवव्याकुल
भईहुई तिसकीमाता वैदजनोंकोपूछनेलगी
किमहाराजमेरावालकदूधनहीं पीवताहै कृपा

है

८८
भ॰
२१

करकेकछु उपायकहिये ऐसेसेनवदोदिनवनीतहो
यगाये नवस्नानकरकेग्रामके लोगनरनारीजोहैं
सोसबतिसके घरमेंश्रावतेभये औरराजाकेपुत्रव
नवालकका सुंदरविलाहूआ मुखदेखकर अ
नेकप्रकारकी श्लाघाकरतेहूये फिर अपनेअ
पनेघरोंकोचले जातेभये नहांलोगोंके मुखसें
तिसबालककी महिमासुनकर परमउदार भ
गवानकेचरन कमलोंकी प्रीतीवालेरामानंदजी

हृदयमैं आपनेआपको विचारकर नरन चरमका
रके चरमैंचलेआये नववालकके मातापिताआ
दिवायवोंको चरमैवाहरअलगकरदिया फिरआ
पगुरुकृपाल वालककेपासजायकर तिसकेका
नमैं शरीरकेसवदुखकलेश औरपापोंकेनाश
करनेवाला सर्वसुखोंकासार राममंत्रजोहै सोसु
नायदेतेभये ।५। चौपाई। सोमनपायवालसुखा
दाई। विहसोमनदिनवांछितफलपाई। गुरुकृपा

८८ म० २२

लतवववचनवखाना। अवघगयकवड्गुमदिनस्वन

माना। श्रीपतिचरनभक्ति अनरागे। बहहमसन्त

स्ववनडरवत्यागे। मोहविवसगरुभननवहोरी।

रिसवसभई विध्यतमतिमोरी। जोइहिसमुचिसे

वककाही। दीननिवासस्वपचवपुमाही। क

हांस्वब्रह्मचरजव्रतधरना। कहांमलेल्हुमदन

अवनरना। अमविचारिगुरु सेवकरागे। रोद

नकरनविघ्नधतित्यागे। परमखेदवसदीनस

२२

नेहू। आंछेवरमकार नजिगेहू। नवजननीलालनमन
लीना। वाकस्तनवालकमखदीना। सोप्रसन्नमानस
गनधीरा। लागेपाकरनपानसिसकीरा। लोकविलो
किसकलविसमाये। गुरुउपदेसवालवरपाये। क्र
स्नभक्तिसंदरसखदेवा। हृदयधरतनिजवालअभेवा
कृस्नसमर्ण निरतमनमाहीं। ^प्रमप्रकारजवभयो
सयानहू। नवविरचनतिजकरनउपानहू। अतथी
संतदीनउजकाहीं। देनलेनवेतनकछुनाहीं। सोभा

जनकजननीजा
ननकछुनाहीं।

बिदननामरबिदासा। असमप्रकारकछुकालबितासा
मोकछुबनाहिं जननिसिवकाई। करनसुमसवरन
सिरनाई। भयोबिरक्तजनकलखिनेहू। मोरेहृग्यास
दनश्रमएहू। दोहा। विप्रसंतग्रनथीप्रिये ज्ञासदि
वसनिसिकीन। हमसनहितचित गतरहतकरतन
करमकुलीन। ६। टीका। नवग्रैमेसुखदायक नार
कमंत्रको सुणकर बालक अपने मनवांछितफल
को पायकरके आनंदमैमगणभयाहूआ हमसेल

23

गाइसप्रकारनिसको प्रसन्नदेखकर गुहकपाल ह
र्षसेकहनेलगे किहेपुत्र यव आनंदसे माताकाह
धजोहै सोपानकरो अर्थात्पीलो और हृदयसे सर्व
दुःख कलेशकोत्यागकर नारायणके चरनकम
लोंकीभक्ती प्रीतीजोहै निसमेमगणरहो फिरगु
हनीमोहकेवशभयेहुये कहनेलगे किदेखोका
पकेआधीन होयकर मेरीबुद्धीकेसीव्याकुलहोय
गई सोग्रेसेसहृद और उत्तमसेवकको चांडालके

८८
भ.
२५

शरीरमैंनिवासदेदियाहै वेकहांब्रह्मचरजव्रतका
धारनकरना श्रीर कहांमलेछकेघरमैंजनमहोना
ऐसेविचारकर सेवककेप्रेममैं व्याकुलभयेहूये
धीरजको त्यागाकर रोदनकरनेलगपडे फिर
तैसेहीं कलेशसे पीडतभयेहूये दीनसनेही चरम
कारकेघरको त्यागकर अपनेआश्रमकोचले आ
वतेभये नवमातानेबडे हितप्यारसे स्तनजोमम्मा
है सोबालकके मुखमैंदियावे नरतहठकोत्यागाकर

औरबालकोंके समानचेष्टाक्रीडाकरकर आनंदपू
र्वक पीवनेलगजाताभया इसकौतुककोदेखकर
लोगसब अचरजकोप्रापतहोयगये गुरुजीकाउ
पदेशपायकर बालकजोहै सो ब्रह्मभक्तीकोहृद
यमे धारकर रात्रीदिन ब्रह्मपरमात्माकेभजन स्म
मरणमे लीनरहताथा इसभेदको जिसके माता
पिता कुछजाननेनहींथे इसप्रकार जबसमय
पायकरके बालकसयानाहोयगया तबआपने

हाथसे बडीसुंदरजंजीरबनायकर अतिथीसाधुब्राह्म
णोंकोपहिरायदेता औरमोलकिसीसे नहींलेताथा
सोरविदासनामकरके प्रसिद्धहोताभया और जो
कदाचितकोइ पैसाटकापास आयभीजाता तोअ
र्पणकरके माताके आगे जायराखताथा तबवै
सेतिसको विरक्तदेखकर पिताहृदयमें बडाहो
भमानकर कहनेलगा कि इसपुत्रको तोघरमें
राखनेका मेरेकोवृथा श्रमहीं श्रमहे क्योंकिजिस

कोराजीदिन अतथीसाथ ब्राह्मणहीं प्यारेहैं और
तिनकीसेवा भक्तीमैंहीं लीनरहताहै हमारेसाथ
चिंतकरके कछुहितप्रीतीनहीं करना औरनाआप
नीकुलका करमधरमजोहै सोकरताहै।६। चौपाई
असविचारिमानसमपिततासा। दीनबहिरनिजमद
ननिकासा। तबरविदास स्वमरिगिरधारी। बिरचि
कुटीरललितनिजन्यारी। रचनलगिबिरनिजकरन
उपानह। देतजुजन संतन सनमानह। आठपहर

भ॰
२९

मभिक्षाटनजासा। सोहरिभक्तरुचिर रविदासा।
एकदिवसभिक्षाटनलागी। गवनकुटीरनजनवड
भागी। शालिग्रामललितशिलपावन। मारगदेखि
हगनमनभावन। करिप्रणामरविदासउठावा। अ
टनकरतआश्रमनिजआवा। तहांदेननिजकरन
सनाना। भक्तिभावजनकीननिधाना। निरनप्रेम
पावनचितनासा। लगेपाकरनभजनरविदासा।
हेदाविटपअजरनिजलाई। निजझलकरमनजन

२९

दुरतांई। वन्यो विमल वैस्नव सभचारी। तिलकमालम
द्राबरधारी। एकदिवसतहिंसदनसुहावा। गवनक
रनसाधूइकआवा। दोहा। तहिंदेख्योरविदासकहंरति
सृजनभगवान। सेवकसंतउदारचित वैस्नवभक्तम
हान।८। टीका। ऐसेविचारकर औरतिकाराजानक
रपितानेतिसको घरसेबाहरनिकालदिया नवरवि
दास गिरधारीलालको समरताहूआ तहांएकन्या
रीकुटियाबनायकर तिसकेबीचनिवासकरनेलगा

८८
भ:
२८

27

और अपनेहाथोंसे पदत्राणअर्थात सुंदरजोड़े बनाय
बनायकर बड़ेआदरसतकारसे अतथी साधब्राह्मणों
कोपहिरायदेना औरआपभिक्षाटन करकर अपनीउ
पजीवकाकरलेनाथा सो ऐसाभगवानकाभक्त रवि
दास एकदिन भिक्षाटनकेलिये कुटियाकोत्यागकर
बाहरजोगया तोमारगमे कहीं वडीसुंदरउत्तम और
मनकोभावनी शालिग्रामकीशिलादेखकर प्रणाम
करकेउठायलेनाभया औरफिरभिक्षाटन करके आप

नेआश्रमपरवलाआया तहांनिसशिलाको अपनेहाथ
से स्नानदेकर भक्तीसनमानसे घरमैस्थापितकरके
रात्रीदिन श्रद्धाप्रेमसेपूजन सेवनकरनेलगा घरमैहे
दरतुलसीके वृक्षलगायकर और अपनीकुलका
मंत्रकरमसबत्यागकर तिलकमाला मुद्रा इत्यादिसब
धारकरके वैस्नव उत्तम औरनिरमल सुभचारीभ
क्तजोहै सोवनजाताभया तवएकदिन तिसकेघर
मे एककोई भगवानकीभक्तीवाला सिद्धसंतजोथा

८८
भ०
२८

सो आयस्यापनहू आ वेरविदासको भगावानके भजन
सेवनमै लीनदेखकर वडासंतसेवक श्रोर उदारवि
न महांवैस्नवभक्तजानताभया।७। चौपाई। तवप्रस
न्नमानसद्भतसंता। रविजनकहूंलैगयोइकंता। भन
नभक्तममवचनसुहावन। स्रनहोहदयमोदसरवेक्षा
वन। मोपेइकसपर्शमणिजोई। चारुअभिष्ट देनफ
लसोई॥ तवनिज करहुभक्त स्वईकारा। स
कल इछ्त फुर होहिं तमारा॥ ॥

इहिसनविरविहेमवितभूरी। करहुसंनसेवानवपूरी
देवभवननिजसदनसुहावा। कौनकललितलेहु
विरचावा। मैजवआव कालकछुपाई। इहमणिमे
हिदेहुसवदाई। असकहिसिउ गवननवकीना।
सोरविदासहुविरमणिलीना। सादिरश्रीतिसुरवक
रागे। राविलीन हरिमूरतिआगे। भिदाहिननिज
धरमहुलासा। रहोकरनहिनजनरविदासा। मणि
करलाभभक्तवनधारी। कछुनलीन असहृदयवि

इहधनविदनविस्वमददाई। रामसुमर्णदेनविसराई
विषयग्रंथकरिजीवनकाहीं। करहिंपतिनसंसयक
हुनाहीं। धनवहीनजनदीनविचारा। मांगनजानभी
षजहिंद्वारा। राधारमनरामरववाटन। करतन्हकर
हिं नगरभिक्षाटिन। यातेंग्रथनधनकजननेहीं।
भलोसमरि हरिसदगतिलेहीं। सदासुशीलहोत
धनहीना। आरतनरटनराममनलीना। राममंत्रसव
वसधनचारू। दारदडरतदोषभ्रमहारू। असविचा

रिनिजमानससोई । बिनगानरसोदीनवनहोई । राम
भजनतनपरदिनराती । बीत्योबरषएकइहिभांती ।
दोहा । सोऊसिउग्राबानहांजहिस्पर्शमणिदीन । बी
नदीनवनक्षीनअति रविजनकहेधनहीन । बिनश्र
पतीविनुभागअसकहत नसंस्वतिहोय । सागरते
निकसनलषत बिषनविलपिजिमिकोय । इहय
घपिगानभाग्यभवैसेतघपिहितमानि । करहुंक
विरउपकारकक्षुभक्तसंतजियजनि । ८ । टीका ।

৮৮
भ.
३.
30

तबप्रसन्नभयाहुआ सोसिद्ध रविदासकोन्यारेलेगया
औरकहनेलगा किहेसंतभक्तनेमेरावचन श्रवणक
र किइहमेरेपासपारसमणीजोहै सोसर्वमनोर्थोके
सिद्धकरनेवालीहै तांतेत इसकोलेले तेरेमनवांछि
तफलसबसफलहोवेंगे क्योंकि इसकेसाथतें सब
र्णबनायकर अनथीसंतभक्तोंकीसेवाजोहै सोभली
प्रकारकर और अपनेघरके वीचमें भगवानकामंद
रमंदर अस्थानभी बनवायकरदेवप्रतिमाकोनहा स्था

३.

पितकर मैं जबकुछ्समय पायकरके फिरईहांतुमा
रेपास आऊंगा तब इहमणीमेरेकोतुमदेदेना तबल
ग इससे अपने सबकारजसिद्धकरो ऐसेकथनक
रकर सो सिद्धअपनेमारगकोचलागया और रविदा
सनेवेमणीलेकर बडीप्रीतीसनमानसे भगवानकी
मूरतीकेआगेराखछोडी औरअपनासोईमिद्याटन
धर्मजोहै सोकरकर भगवानकेभजन स्मरणमैली
नरहताथा तिसमणीकालाभजोहै सोभक्तउसमने

७७
भ०
३१

हृदयमे ऐसेविचारकर कुछनहींलिया किइहधन
जोहै सो संसारमै मदआदिविषयोंके उतपन्नकरने
वाला औररामभजनके विसारदेनेवालाहै इहकैसा
भीप्रबलशत्रुहै किजीवोंकोविषयोंमै अंधकरके
पतितजोपापीहैं सोवनायदेताहै और धनसेहीन
जोदीनविचारा होताहै सो जवभीषमागनेजायगा
तोराधाकृस्न सियराम ऐसेभगवानके नामकोउ
चारण करकर नगरमै भित्नाटन करता फिरेगा

न

इसनैंनिरथजोहै सोधनीइरषसैंभलाहै किजोभगवा
नकोसुमरनासुमरना अपने परलोककोसुधारले
ताहै औरभीसुनो किनिरधन जोहोताहै सोसदाम
षीलहोताहै दारिद्र और दुखकाथसाहुआ नारा
यणकासुमरण करतारहताहै संसारमै रामनाम
जोहै सोई अमितधनहै किजिसकीकोइमितीनहीं
है और सरवदुखदारिद्रोंकेभीहरकरनेको एही
सामर्थहै असेविचारकर रविदासजोहै सोधनसे

८८
भ०
३२

32

रहितदीनदारिद्रीहीवनारहा रात्रीदिन भगवानके
भजन स्मरणमैंहींलीन रहताभया इसप्रकार जव
एकवर्षवतीतहोयगया तवसाई सिद्ध किजिसने
भक्तस्रेष्ट रविदासकोवेपारस पाषाणदियाथा त
हांआयप्रापतभया ओर रविदासको तैसेहीं महा
दारिद्रीदीन धनहीनदेखकरके कहनेलगा किअ
होसंसारमैं भागोंकेविनाकिसीकोधनकैसे प्रापत
होयसकताहै इसकीवारतातोऐसेभई किजैसे

कोईसमुद्रमै प्रवेशकरके फिरविषाविषाकहता व्या
कुलभयाहुआ बाहरनिकलआवताहै भोगोंकेवि
नाजलकैसे प्रापतहोनाथा तैसेही मैनेयद्यपि इस
को अभागी जानलियाहै तद्यपि संतभक्तविचारक
र और हृदयमैहितमानकर इसकेसाथ फिर कु
छ उपकार करताहूं।८। चौपाई। असविचारि रवि
जनहिं सुहावा। सिउवदन निजवचन अलावा।न
वनलीनकस भक्तबनाई। हारदहबनहेमसुखदाई

८८
भ०
३३

हनिप्रसन्नबोलेगोरविदासा। मेरेनहिनसजनपन आसा। नवउदारमोपेंनिजकीनी। दायाविपुल दिव्यमणिदीनी। अह्नोकलपतरसंतसहाये। परहितकरनधरनतलआये। सकललोकहितहृदय विचारा। कीनयालअतलतउपकारा। पेअसविनयनाथकहुमोरी। आवतकहतवदनप्रभखोरी मोरेउर मंत्रषमकारा। रामनाम अतलतपन भारा। गुरु प्रसाद परि पूरण सोई ॥

वचोधरनथन गैरनकोई । असविचारि करुणाअव
कीजै । तवनिजनाथहृदिरमणिलीजै । जवरविदा
समधुर असवानी । भनेसुभक्तिप्रेमरससानी । सु
ननसिरमानसहरषाई । निजमणिमंजलीननवण
ई । लागेपावहरि भनन मदफला । जोनोहिहोहिंभ
क्तअनुकूला । तोकहुदिवस वसहुंतवगेहु । सुन
नवचनरविदाससनेहु । बोल्याअहोभागजगमोरे
जोअसउपजिधालहृविनोरे । लखिनिजसदनसंत

शिवनाऊ। करहुसनाथनाथमुहिश्राऊ। दोहा। सिउ
देखिरविदास असरतिरुचिरुचिरसुभाऊ। लगेपार
चन कंचिन मथनसुभग सदनवसिताऊ। ९। टीका
ऐसेविचार करके सिउजोहै सोरविदासको कहने
लगा किहेभक्ततेरेको मैनेरहपारसदियाथा तूंने
सरवदुखदारिद्रोंके हरकरनेवाला और आनंदसु
खकेदेनेवाला सोवणीधनजोहै सो कोंनहीं वनाय
लिया ऐसेतिसकावचन सुनकरके रविदासजीक

हनेलगे किहेसजन मेरेको कछुधनकीआसानहीहै
उदार तुमनेतोमेरेपर अत्यंतकृपाकरी इहदिव्य म
णीजोहै सोदेई सत्यहै संतकृपालपृथवीतलपर प
रहित और परउपकारकेलिये आयेहूयेहैं प्रभुतुम
ने सर्वलोगोंका हितऔरभलाविचारकर इहपरम
उपकारजोहै सोमेरेपरकिया परंतु इसमैं दीनदयाल
मेरी इकविनतीहै सोमनसे कहतेहूये नाथकुछ
लज्जाआवतीहै तथापि कहताहुं किमेरेहृदयके मं

८८
भ॰
३५

35

न्हवा अर्थात संहरवैमे गुरुजीकेप्रसादसे रामनामका
धन अतुलनभया हुआ है किजिसका कोई तोलनहीं
है ताते अब और धनके धरनेको तहांजागा नहीं है
अब मैं तिसको कहां राखूं ऐसे विचारकर हे कृपानि
धान अब कृपाकरिये और अपनी इसपारसमणी
को लेलीजिये इससे मेरा कोई प्रयोजनसिद्धनहीं होता
है जब इसप्रकार रविदासजीने भक्ती औरप्रेमरस
की भीगी हुई वाणी उच्चारणकरी तब सिद्ध सुनकरके

प्रसन्नभयाहूआ अपनीतिसपारसमणीकोलेलेनाभ
या औरफिर हरषसेफूलाहूआ कहनेलगा किहेभ
क्त जोतमअनकूल अर्थात प्रसन्नहो तोमेरीइछाहे
किकछुदिनईहांतमारे घरमेंही निवासकरूं ऐसे
तिसकावचनसुनकर रविदास प्रसन्नहोयकरकहने
लगा किहेसंतकृपालतुम्हारे हृदयमे ऐसीरुची
जोउपजीहे तोमेरे धन्यभाग्य और धन्यमेरे जगतमे
पुन्यहैं कृपाकरके अपनाहीं घरजानकर आनंदसे

उ०
भ०
३८

वसिये श्रोर मेरेको सनाथकरिये इसप्रकारररविदास
की श्रद्धारुची देखकरसिद्ध तिसके घरमैनिवासक
रके अपनीपारसमणीसे सुंदरकंचिनजोहै सोदि
नदिन बनानेलगजाताभया। ९। चौपाई। इवप्र
सादादिव्यविरचाना। तहांभवनहरिकृपानिधाना
अतथीसंतजनजनचारू। लगेपाहोनभोजनस
नकारू। जरहिंसमानसज्जननितआई। दिन
दिन अधिक अधिक प्रभुताई॥ ॥

३८

भक्तसष्ट रविदासप्रवीना।आतुपरमभिक्ताटनली
ना।नवग्रामीनवरनमिलिचारी।भक्तस्नेजस प्रभता
ईनिहारी।लागेकरन हेषसमदाई।चरमकारकस
लीनवडाई।न्रपपेंजायहेष जनवानी।भाषीसहनङ्ग
भूपवरमानी।चरमकारजप्रग्रामनिवास्त।आज
सविदतलोकरविदास्त।शालिग्रामशिलासनमा
ना।कीनप्रथमनिजसदननिधाना।विनुअधिका
रसुपचअगरासा।करतङ्गजनसमश्जनतासा।

८८
भ.
३८

न्रपकहंसुनत कोपउरछावा। पवनहनतइनलीनवु
लावा। करिविसकार कथनअसकीना। नवमठव
रमकार मतिहीना। संसतिसंतस्रष्टजनवरमा। नव
आचरणकीन जनुधरमा। गविसदनतिजसिलासुहानी
शालिग्रामदेवलखुजानी। करहूदिवसनिसिभजनम्र
फा। स्रुफतमोरत्रासननहिंगृफा। जाहुमृफअवबेगलि
वाई। उनहिंदेहु निज़सिलासुहाई। ननरकरहुं तुवशा
णविनासा। सुनतभूपरविजनअनुसासा। जोतिजग

लकरविनयबखाना। अवनकरहूं पूजनभगवाना।
जोहरिचारिउवरणविशेषे। तोहमअप्रथम कवनकि
तलेषे। असकहिभवन कुंचिकारागे। रविजनरा
खिदीनन्दपग्रागे। सोनरनाथदीनउजकाहीं। भा
खोजाहुभवनहरिमाहीं। सादिरसिलादैवसखदा
ई। तावहुविप्रसदननिजल्याई। दोहा। पायनदेस
नवेस असउजनतरंतनरआई। भवनद्वारवंधनम
चिनकरतकरनहरषाई। शालिग्रामसिलासविच

भ०
३८

सेवालेतनजनमान।लावानिजसुंदरसदनरुजवर पर
मसुजान।।९०।। टीका।। नवद्रव्यके प्रसादसे तहांरविदा
सके घरमें वडासुंदरभगवानका भवनजोहै सोवन
गया और अनधीसाधब्राह्मणोंका सवप्रकारका
सनमानसे भोजनभीमिलनेलगा सज्जनसंतभक्तों
का समाजजोहै सोभीनिजआयकरके जडनेलगा
दिनदिनअधिकतें अधिकहीं प्रभुताहोनेलगी परं
तुभक्तप्रधान रविदासजीने अपनानिजभिक्षाटन

परमहीं हफ्ताखा सोई करकर अपनी उपजीवका
करलेतेथे नव ग्रामोंके सबलोग अर्थात चारोंही
वरनमिलकर रविदासजीके सुजस और प्रभुता
बड़ाईकोसहार नहींसके द्वेषभावकरकर कहने
लगे कि देखो इस अधमचरमकारने जगतमेंके
सी प्रभुताफैलाईहै ऐसेमनाकरकर द्वेषसेराजा
केपास जायकरकहनेलगे कि महाराजवडे अच
रजकीवातहै देखिये चरमकार जफयामकेवाहि

८८
भ०
३५

खासकरनेवालाश्राज रविदास नामसें उजागरहो
यकर श्रौर शालिग्रामकीशिला घरमें स्थापितकर
कर अधिकारके विनाहीं मंदपापकीयोनी राशीदि
न ब्राह्मणोंकेसमान पूजनकरताहै ऐसेतिनका
कथन सुनकर राजापरम कोपसे दूतभेजकर
त्वरततिसको बुलायलेताभया श्रौर वडीताडना
तिरस्कारकरकर कहनेलगा किअरे बुद्धीकेहीन
चरमकारतेरा इहक्याकरमहै किसंसारमें ।

३५

जोद्विजीब्राह्मणोंकाधरमहै जढतैने सो आचरण अ
र्थात गृहणकियाहै घरमै शालिग्रामभगवानकी
शिलाराखकर नीचजातीनं नित्तभजनकरताहैं
क्यातेरेकोकुछ मेराभय सूझतानहींहै उठमूढ
अबीचलाजा और जायकरके वेग ब्राह्मणकोशा
लिग्रामकीशिलादेदे नहींतो अबमतेरे प्राणोंका
नाशकरदेऊंगा नवरविदास राजाकीआज्ञासुनक
र दोनोहाथजोडकर दीनवाणीसे विनतीकरने

८८
भ०
४०

लगा किनाथ अवनहीं भगवानका पूजनकहूंगा कें किजो चारवरणकेहीभगवानहैं तोहमअपमकोन गिनतीमेंहूये औरक्यावसतहैं ऐसेकथनकरकर भवनकी कुंचिका अर्थातकुंजीलवनराजाकेआगे रखदेई सोराजानेलेकर और एकब्राह्मणकोदेक रकहा किजावोभवनसे शिलाकोनिकालकर अप नेघरमें लेजायकरके विधीपूर्वक स्थापितकरदे वो इसप्रकार राजाकी आज्ञापायकर ब्राह्मणजोहै

४०

सोतनकालआयकर अपनेहाथसे भवनकेकवाड
खोलकर शालिग्रामभगवानकी शिलाको सनमा
नसे उठायकर अपनेघरमे लेआवतभया।९। चौ
पाई। ताहपंचगव्यादिन्हावन। देतनान्हमजनन्ह
जपावन। करिपूजनविधिवनसनमाना। कीनस्था
पिनसदनन्हनाना। इनरविदासवंदिन्नपतेहू। न्ह
मरिरामआवानिजगेहू। नवनिसिसमयदेवसुख
दाई। शिलान्हभवनभक्तनिजआई। तहिउजमात

७७
भ०
५२

जायजबदेख्यो।।शिलानदैवसदननिजलेख्यो।संभ्र
मविषतचकितउरत्रासा।आवाविप्रसदनरविदासा
तहांदेखिनिजहगननिधाना।शिलासहितखलललित
भगवाना।न्टपसनभन्योजायउजनेहू।शिलाग्रग
मनदासरविगेहू।नवसासननरनायकपाई।रा
खिसदनहहिमूरतिल्याई।कलककवाउनिसिमेंदित
गहा।कहिपथगवनिमर्मनहींकाहा।काहूभन्योर
विदाससमहाना।ज्ञाननमंत्रतंत्र विधिनाना ।।

५८

सोग्रभावग्राकरषणमंज्ञा। लीनमंगायनकेनसतंज्ञा
भन्योभूपमानसविसमाई। अवनमवहूरि वेगडज
जाई। शालिग्रामशिलावरनेह। राखहूल्पायजजन
नज्ञतगेह। मैंइनवोलिदासरवकाहीं। देहूंनदेस
द्वारनवमाही। निसिथिरहैहिं नावकिमिसोई।
शिलाविचित्रकवनपथहोई। आयसमानिविप्रवररा
ई। शिलावहोरिसदननिजल्याई। करिसज्जनसंज्ञन
सनमाना। भक्तिप्रीतिज्ञनकीननिधाना। इतरविदा

७७
भ०
५२

सन्तपतिग्रनुसासा। विप्रद्वारप्रवरयनविनासा। स्वम
रत्नह्रदयभक्तभयहारे। भक्तसुखदप्रभभक्तउवारे
दोहा। तवजामनिप्रवसर शिलावह्नरिभक्तनिजगे
ह्न। रहेद्वारमूंदितभवनगवनिमरमनहिंकेह्र। ११
टीका। तहांतिसशिलाको पांच गव्यादि पवित्रस
नानदेकरके औरविधीवत संदरसृजनकरके ब्रा
ह्मण अपनेघरमै स्थापित करलेताभया ईहांरवि
दासजोहै सोराजाको प्रणामकरके भगवानकृपा

५२

निधानको सुमरताहुआ अपनेघरमै चलाआया ३
सुप्रकारजबदिनकाअंत होयगया तबरात्रीकेसम
यवेभगवानकी सर्वसुखदायक शिलाजोथी सो
अपनेभक्त रविदासकेघरमै चलीआवतीभई तहां
प्राताकाल ब्राह्मणजब आयकर देखनेलगा तो
वे शालिग्रामकी शिलाघरमेनहीहै तबतोअसम
य और अचरजकेवश व्याकुल भयाहुआ ब्राह्म
ण धायकरके तुरत रविदासके घरमै चलाआया

43

ओरतहांसोईशालिग्राम भगवानकीशिला स्थापित
भई देखकर ततकाल राजाकेपास जायकरकहने
लगा किमहाराजमै आपकी आज्ञासे वेशालिग्रामकी
शिला रविदासके घरसेल्यायकर विधीपूर्वक आपने
घरमै स्थापितकरीथी सोनाथ मै नहींजानता कौ
नकारन औरकिसभेदसेवे शिलामेरे घरसे नि
कलकर राज़ीके समय तिसीकेघरमै चलीग
ईहै भवनके कवाड़भीतैसेही मूंदेरहे हैं ।

ऐसेसुनकरके तहांकोई पुरुष कहनेलगा किम
हाराजवेरविदास वडाधूर्तहै सठमंत्रतंत्रवहुत
जानताहै तिसने आकर्षणमंत्रके प्रभावसेशिला
को अवश्यआपने घरमें मंगायलियाहै तवराजाह
दयमें अचरजमान करकहनेलगा किहेब्राह्मण
अवतुमफिरजावो औरशिलाको ल्यायकरके ते
सेही आपने घरमेंस्थापितकरो मैईहांरविदास
कोआज्ञादेताहूं किवेराजीकोतुमारे घरकेद्वार

७७
भ०
४४

परस्थितरहेगा नवदेखेंगे कि कौनरसनेसे श्रोरकेसे
शिलाचलीजातीहै श्रेसेराजाकी आज्ञापायकर ब्राह्म
णजोहै सोफिर रविदासकेघरसे शिलाकोलेआया
श्रोरविधीवत भजनकरके भक्तीप्रीतीसे सनमानस
वीकघरमै स्थापितकरदेताभया ईह्रांरविदासभी रा
जाकी आज्ञापायकरभक्तपाल भक्तसुखदायक श्री
रभक्तभयहारी भगवानको सुमरताहुआराजीभर
ब्राह्मणकेद्वारेपरस्थितरहा नवद्वारभीतैसेहीमूंदरहे

४४

44

औरभेदभी किसीनेकुछनहींजाना सोशालिग्रामभ
गवानकीशिला राणीकेसमय फिरआपनेभक्त रवि
दासकेघरमैचलीआई।।११।चौपाई।नहिरजनीनर
नायकदेखा।सपनेहुइविप्रसभभेषा।सोकहिग्रह
णकोपवसनयना।फरकत अधरभनतमुखबैना।
भूपकवनहिनशिलासुहाई।उजनिजसदनलेत
जदजाई।ऊचनीचभगवाननभाषा।केवलभक्ति
प्रेमसुखराखा।उनकरप्रियेभक्तसंसारा।भूपहृया

गुणवादन्नमारा।रामजातिकछुरीझननाहीं।जानत
प्रीयेभक्तिमनमाहीं।ऊचनीचनरसंसतिकोई।ह
रिकहंभजहिं सहहिजनहोई।नृपविचारिमानस
इहिभांती।तजहुहेतउत्तमलघुजाती।भक्तप्रवरह
रि रविजनसोई।तामेंनीचपरमनहिंकोई।जोपेंदी
नयालयजनुहूला।सोऊनृपति जग सकतिमूला
देखहुवारवारउजलाई।रावोशिलासदनसुख
दाई।कृपानकेतभक्तनिजधामा।देनपठायचरित

अभिरामा।तासभक्तिवसत्रिभुवनराजू।देनसुजस
संदरजगआजू।आवनकेतनेंभक्तसुभागी।करहु
नहठ ल्यावनशिललागी।देखिसुखपनजबभूपति
जागा।इनकहंवोलिभननअसलागा।देखहुजा
यविभतसमनाहीं।शिलासदनतव ऐहिंकिनाहीं।
सासनपायगयोजबतेहू।देखिनशिलाहगननिज
गेहू।भनेयाविप्रतब नृपसनआई।नाथनशिलासु
दननिजपाई।दोहा।तबनरेसरविदास कहंबोलि

सदनमनमान। भन्योधन्यनवधन्यजगभक्तस्हभग
वान। नोपैंकोमलकृपानिधि भगवनभक्तसनेह्न। त्र
वकरहैंात्नवशर्ववत भक्तिगवनिनिजगेह्न। संतसुशी
लउदारवित सदाकरनकलछ्नोह्न। भाग्यपराधअजान
लखि त्नमहृमानप्रदमोह्न। कछुअपराधनभूपत्नव
सदाप्रवलभ्रमहोत। छूटत रामकृपायतें ज्ञान
दिपति उद्योत। होव त्नमहिं कल्यान त्नप
महि प्रसन्न जिय जान ॥ ॥
५६

ग्रसत्याशिवैद भक्तवर चलेसमरि भगवान।।१२।
टीका। नसी राधीकोराजा एक ब्रममेषवाले वृद्ध
ब्राह्मणको स्वपनेमेंदेखताभया सोकैसाकि को
पसे ऊठफरकनेहूये लालनेत्रकरकर कहनेल
गा किहेराजन इहमहामूढ ब्राह्मण किसलिये
वारवार भगवानकीशिलाको उठायकरके ले
जाताहै तिसदीनानाथके तोकोईऊच नीचनहीं
हैं भगवानने केवलभक्ती श्रोर प्रेमही मुख्यरा

५८
भ०
५०

रखाहुआहै उनकोसंसारमैं भक्तहीं प्याराहै इहतमा
रा अपवादजोहै सोराजन सवहूथाहीहै रामकृपा
निधान वरण औरजातीपरनहीं रीझतेहृदयमैं भ
क्तकीभक्तीको प्यारीजाननेहैं ऊचनीचकोईभीहो
जोहरीकोभजै सोईहरीकाप्याराभक्तहै ऐसेविचा
रकर हेराजन उत्तमलहु अर्थात ऊचनीचजातीका
भ्रमजोहै सोत्यागदेवो सोरविदासभगवानका पर
मसरुभक्तहै निसविखेंनीचधरमकोईभीनहींहै

५८

जिसपरदीनदयालअनुकूल अर्थात प्रसन्नहोवें सो

ई जगतमै सर्वश्रेष्ठोकामूल और सुजसकापात्र

है देखोब्राह्मणोने वारवारन्यायकरके शिलाप्र

पनेघरमै स्थापितकीया परंतुभगवान कृपानि

धान कौनुकसे फिर अपनेभक्तकेघरमेंही पठाय

देतेभये तीनलोकके नायक भगवानजिसकीभक्ती

के वशभयेहुये आजजगतमै तिसका सुजस औ

रवडाईदेरहेहैं हेराजन अवभक्तप्रधानरविदासके

चरमेंशिलाकेलगावनेका हठजोहै सोत्यागदेवो इ
सप्रकारसुपनकोदेखकर राजानवजागा तवब्रा
ह्मणकोबुलायकरकहनेलगा किहेउजनमसजा
वो अपने घरमैंदेखो कि वैशालिग्रामकी पवित्र
शिला तहांहै किनहींहै ऐसेराजाकी आज्ञापा
यकर ब्राह्मणतब अपनेघरमैंजायकर देखने
लगा तबवेशिला तहांतिसकोदेखनहींपडी आ
चरजकेवशभयाहूआ तरतआयकरके राजाको

कहनेलगा कि महाराज वेशिलामेरे घरमैनहीहै
फिर रविदासकेपासचलीगईहै नवराजाब्राह्मण
का ऐसाकथन सुनकर तुरनवडे आदिरसनका
रेस रविदासको आपने घरमैवुलायलेताभयाऔ
वहांथजोडकर कहनेलगा किहेभक्तप्रधान तेरे
परभक्त सनेहीभगवान अत्यंतप्रसन्नहैं आगतं
संसारमैधन्यहैं औरधन्यनेरीइह निरमलभक्तीहै
मैआपनेमुखसे तुमारीकहांलग शलाघावडाई

कहतेमसंतकैसेहोकि सदासुशील परमउदाररवि
न औरदयाउपकारकी मूरतीहो नाथमेरेसेवडा
भारी अपराधहोयगयाहै सोमेरेको अजान और
मूढमति जानकर आपकृपाकरके क्षमाकरिये
औरघरमे जायकर सर्ववत आनंदसे भगवानका
भजनस्मरणजोहै सोकरिये ऐसेराजाकी नम्रवा
णीसुनकर रविदासजीकहनेलगे किहेराजन इस
मैतमाराकोई अपराधनहीहै संसारमेइस भ्रमजोहै

सोसदाप्रवलहोताहै भगवानकीकृपासे जवहृ
दयमे ज्ञानप्रकाशहोताहै तवहमसहजेही छूट
जातेहै राजनतेरेकोकल्यानहोवे मैतेरेपर अ
त्यंतप्रसन्नहूं इसप्रकारआसीसादेकर रामराम
स्मरनेहुये भक्तप्रधानआपने आश्रमकोचले
आये।१२। चौपाई। आयभवननिजदेखिसुहावन
शिलानिधानललितमनभावन। प्रेमभक्तिमे
ज्ञनसिरनायो। आनंदनीरहगनभरिआयो।राम

८८
भ॰
५॰

सहूपहृदयपरिलीना। अल्हादजनभजनकीना।
दिनदिनअधिकरामपदरागा। लागेपाकरनभक्तव
उभागा। असभगवानभक्तनितनेहू। देखहुचरम
कारकरगेहू। प्रीतिनिरनपरिहरिप्रभुताई। कीन
निवासभक्तिवसआई। दोहा। यानेंतीनहूंलोकमै
ललिनभक्तजनकाहिं। रामकृपानेंसुलभसब
कछुअसाध्यसनाहीं। इहगाथाइककीनमेरवि
जनकीकछुगान। अवआगेमनहरनकविसुनहु

५॰

संतजनग्रान ।।१३।। टीका। नवभक्तप्रथान चरमैश्रा
यकर सोई शालिग्राम भगवानकी वडी शोभावाली
संदरशिला स्थापितभईदेखकर नेत्रजोहैं सो ग्रानं
दजलसेभरग्राये भक्तीप्रीतीसें चरनोपरदंडवत
प्रणामकिया फिर सोईरामसरूप हृदयमैंधारक
र वडेहरष उतसाहसे वैठकर भजनकरनेभये
नवनेंभगवानके चरनोंमै दिनदिन ग्रधिकसे
ग्रधिकहीं प्रेमवढनाजानेलगा नाभादासक

ब

हतेहैं किहेसंतो इसप्रकार भक्तोंपरस्नेहकरने
वालेभगवान देखिये प्रेम भक्तीकेवशभयेहुये
अपनीमानवडाई और प्रभुताईको त्यागकर चर
मकारके घरमे आयनिवास करतेभये तातें भ
क्तजनोको तीनोहीं लोकमैभगवानकी कृपासे
सब सहज और सुगमहै कुछभीअगम औरअ
साधनहीं है ऐसे एकहेसंतजनो इहगाथा मे
नेगायनकीहै अवश्रीरविदासजीकी औरमनोहरगाथाजोहै

सोकहीसेध्यानदेकर श्रवणकरिये ।। १३ । चौपाई ।
गएछचतौउकरभूपतिरानी । सोहरिभक्तिरुचिरर
निसानी । विनज्ञतवसनश्रमनरुचिल्याई । अस
रविदासकरनसिवकाई । पायभक्तदरसनवडभा
गी । निजजनकेतचलिआवतरागी । तासविलोकि
भक्तिअससेवा । छरकरसकललोक महिदेवा ।
वदनविविधअपकीरतिठानी । चरमकार गृह
जावतरानी । तासुउजनममसेवनसोई । लगेवि

चारकरनसबकोई। अवतेंहमनकरबनहिगेहा। भोजनउजनकीनमनपहा। महिषीहनतदिवस सभपाई। कियेनमंत्रणउजमरवदाई। तिनहूंकी नजावननवपहा। लेवअमात्र अन्ननवगेहा। क रवसिउभोजनहमनाहीं। अमरवनिउजनकथ नमनमाहीं। रोचनकीनधरमनवरानी। श्रीप तिचरनभक्तिरसमानी। दियोअमान्नहरषमन लीना। उजगणरचन पाकतवकीना। दोहा।

नववैठ भोजनकरन विप्रसंननसभभचाह । नवपंक
तिमध्यावतिन रविजन हगननिहाह ।।५।। टीका
चैतोरगढ़केराजाकी रानीजोथी सो भगवानके
चरनकमलोंकी भक्तीप्रीतीवालीथीवे श्रद्धाप्र
र्वक धनवस्त्र अन्न इत्यादिसे भक्तप्रधान रविदा
सजीकी सेवाकरतीरहती श्रोर नित्यतिनकाद
रसन परसन करके आनंदसे फिरप्रणामक
रकर अपने घरमे चली आवतीथी इसप्रका

भ० ५३

रतिसकीसेवा भक्तीदेखकर नगरके ब्राह्मणलोग
जोथे सोआपने आपने मनमे सवतिसकी अपकीर
ती अर्थात अपजस करने लगपडे किदेखोइहरा
नी चरमकारके घरमेजातीहै और ब्राह्मणोंकेस
मान तिसकी सेवाभक्तीकरतीहै ऐसेसबब्राह्म
णपरस्पर मताकरकर कहनेलगे कि अवतें हमर
सरानीके घरमे कदाचितभी भोजननहीं पावेंगे
नवइहब्राह्मणोंका मताजोथासोकहीं राणीनेस

णलियानिसकी प्रीताकेलिये एक सुभदिन देवक
रके भोजनकेलिये नगरके सब ब्राह्मणोंको निमं
त्रणकिया अर्थात नेउतादिया ऐसेराणीकानिमंत्र
णसुणकरके सवब्राह्मण कहनेलगे किहमत
मारे घरकासिद्धपाक अर्थात बनाहुआ भोजनन
हींपावेंगे सूखाअन्नलेकर आपहीवनावेंगे और
पावेंगे इसप्रकारवडे निरादिरवाला ब्राह्मणोंका
वचनसुनकर भगवानकीभक्ती प्रीतीवाली और

भ॰
५४

धर्मसील और धीरजकी निधी राणीजोथी सो हृदय
मै चिंत कभी राखन नहीं करती भई वडे हरष उतसा
हसे प्रसन्न होयकर तिनकी रुचीके अनुसार
सबही अन्न देदेती भई तब ब्राह्मणोंने सो अन्न
लेकरके तुरत यतन से भोजन रचाय लिया और रज
वंसनभक्त अनथी ब्राह्मण सब पंक्ती लगाय करजे
बने बैठे तब बेका देखते हैं कि तिस सर्वसमाजकी
पंक्तीके बीच भक्तप्रधान रविदासजी बैठे हुये हैं। २४

५४

चौपाई। हाहाकार उजनन तबकीना। पकरत भजावहि रकछिदीना। इसरबीरभ्रमत जब देखा। तहांसिथिर भनिरविजन लेखा। तबसबउजन जानिजयलीना। इहचरित्रमायापति कीना। सत्यभक्ति रविदासस हाई। लगेकरन उजनिकरबडाई। परिहरिहृदय दे षसबकाहू। लागेबदन प्रसंसननाहू। इहतोनिपु णभक्तभगवाना। हमइहिहृथाकीनअपमाना। विनविचारपरनिंदरनलागी। भयेउरंतउरनकर

भ० ५५

भागी।काजानहुंभगवनकहिंभांती।टीकनकवन
भेषमनजाती।असकहिविप्रहंदहरषाने।निजनि
जगयेसमगुणगाने।असऽहचरितदासरविभावा
मैसंवसमवदनककुगावा।दोहा।सरवसखदसंम
यहननजन रविदासचरित्र।सुनतश्रवणनरले
हिंभवभगवनभक्तिपवित्र।९।टीका।नवइसप्र
कारदेखतेही सवब्राह्मण हाहाकरतेहुये भक्तउ
नमको भुजासेंपकडकर पंक्तीसेंवाहरनिकालदे

तेभये तोजवफिरकरके हमरीवोरदेखतेहैं तो
तहांफिरवविदास स्थितभयाहूया देखपड़ा सो
सेभ्रमतेभ्रमते जिसवोरदेखतेहैं तिसीवोरतिन
को रविदासदरसनदेताभया नवतोब्राह्मणों
ने हृदयमें जानलिया किइहकौतक मायाकेप
तीभगवानजोहैं तिनकाहै तरतहृदयसे कप
टद्वेष त्यागकर ग्रोर रविदासजीकी भक्तीकोस
त्यजानकर अनेकप्रकारकी शलाघावडाई क

८८
भ०
५६

दकरकहनेलगे किअहोइहतो भगवानकापरम
प्रवीनभक्तहै हमनेइसकाहथाही अपमानकिया
है तातेविचारकेविना परत्रिसप्रकारकरनेमे हम
मंदस्वभाववाले महापापकेभागी होयगयेहैं
हमसरवकाजानतेहैं किभगवानकृपानिधान
कौनभेषमत और कौनजातीपर किसप्रकार
रीफतेहैं ऐसेकथन करकर ब्राह्मणहरषसेराम
गुणगातेहुये अपने अपने घरोंकोचलेगये इस

५६

प्रकार इह रविदासजीका चरित्रजोहै सोमैने ईहांकु
छसंक्षेप करके गायनकियाहै कैसाभी चरित्रहैकि
श्रद्धापूर्वक श्रवणकरनेसे सर्वपापकलेश ओरभ्र
मभयकेनासकरनेवाला ओर सुखसंपत्तीके स
हित श्रीरघुनाथजीके चरनकमलोंकी पवित्रभ
क्तीके देनेवालाहै।।१९। चौपाई। अवरविदासअमा
नुषचाहू। आनउनीत चरितमनह्लाहू। करहुंकथ
नलघुमतिअनुसारी। पायमयाप्रभुसंतनतुमारी।

७७
भ॰
५७

एकसमय नहिंग्रामउमंगा। लोगसनानकरनहि नगंगा। चलनलागउरहरषग्रधाई। तिननेंकाहु एकजनग्राई। भक्तप्रधानदासरविपासा। करिप्रणा मग्रसवचनप्रकासा। हमलखिपरवग्रवरवउभा गी। चलेसदरसदेवसरिलागी। जोरुचितमहिंभ क्तग्रनयारी। तोकरहौग्रवचलननयारी। उजकर वचनसननसखमानी। भन्योवदनरविजन सर उवानी॥ धन्यविप्रतव संस्वतिमाहीं॥

जोमोहिप्रथमसजातिजनकाहीं। अमसउपदेसकीन
सुखदाऊ। हरनंउरानसुरसविदरसाऊ। पैइहजरा
ग्रसतनवपुमोरा। कसउपदेसकरहिंकरनोरा। व
लगतनगात सिथलसवगाज्ञा। उजकसवनहिंदे
वसदिजाज्ञा। करहुंउपायकथनइकनोरे। जोउज
करहुकनारथमोरे। असकहिजगलसुंगिफल
ल्याई। उजकहंदीन चरनसिरनाई। दोहा। इहदी
जोउजहंदफलहरनंउंदभवकाहि। पनिपुनिमो

रमणगमकरि देविपदमपदमाहिं। कहियोजनरवि
दासनवजठिरशक्तवलहीन। नवदरसनहितकीन
हठजदपिविविधविपदीन। पयसामर्थनवनप
रीदियोअवैवनपीठ। यातेंविलपतरहिगयोजो
विचरननवडीठ। जोप्रमादउजनाथ्यनहिहि पतित
उधारनिदेहु। सोसादिरनिजकरनकलधरनिसी
सधरिलेहु। ९। टीका। अवश्रोररविदासका व
डासंदर पवित्र श्रौर मनके हरनेवालाचरित्रकि

जोमानुष्योंमें नहींहै ऐसेंतो आपकीकृपाप्रसादपाय
करके जैसाकमनीके अनुसार होयसकताहै गायन
करताहूं एकसमयजहां रविदासजी वासकरतेथे
तिसग्रामकेलोग वडेहरषमें मगणभयेहूये श्रीगं
गाजीके सनानदरसनको जानलगे नवतिनमें से
एकब्राह्मण रविदासकेपास आयकर प्रणा
म कर कर कहनेलगा किहेभक्तवडभागी हम
ग्रामके सबलोगवडाहरष परवजानकरके श्रीगं

७८
भ०
५५

गामाईकेदरसन करनेकोचलेहैं जोकदाचिनतम्हा
रीरुचीभीहो तोभक्तप्रधान तुमहमारेसाथ मिलक
रके चलेचलो परंन्तुविलंवकुछनहींहै शीघ्रतया
रीकरो ऐसेब्रह्मणकावचनसुनकर रविदासजी
हृदयमे परमसुखमानकर वडीकोमलवाणीसेक
हनेलगे किहेब्रालण तूं जगतमेधन्यहैं किजि
सने वडेहितचितसें मेरेजैसे अधमनीच जाती
को ऐसा पाप कलेशों के ॥ ॥

५५

नामकरनेवाला सर्वसुखदायक गंगामाईके दरस
नकरनेका उपदेशकियाहै अहोदेवतातैनेतोआज
जगतमें मेरेको सफलकरदिया परंतु काकहूं जो
इहवृद्धपेकायसाहुआ मेराशरीरतेरे उपदेशको
सफलनहीं करसकता बलसेहीननिरवल शरीर
औरक्षीणसिथल सवअंगतिनकरके हेहितकारी
इहगंगामाईकी यात्रावननहींपउतीहै अवजोतूं
उपकारकरके मेरेकोकृतार्थकरें तोहेमीततेरेको

८८
भ॰
६॰

पकउपायकहताहूं ऐसेकथनकरकर नरनदे
पंगीफल अर्थात सुपारील्याँकर चरनोपरसीस
नायकरके ब्राह्मणकोदिदेनाभया औरहाथजोड क
रकहनेलगा किहेब्राह्मणोंविखें उत्तमब्राह्मण
ने मेरीवोरसे जगतकेपापहरनेवाली मातगंगे
केचरनकमलोंपर वारवार प्रणामकरके इहदे
नोफलजोहैं सोदेदेना और विनतीकरना किहेमा
तातेरासेवक रविदासजोहै सो अनसेकरके हाथ

६०

ग्रौरवलशास्त्रसे हीनहोयरहाहै तिसदीननेतेरेद
र्सनकेलिये यद्यपि बहुतही श्रवकिया तथापिसा
मर्थ्यनहींवनपडी ग्रवैव जो शरीरके ग्रंगहैं तिन्हों
नेतिसको पीवदेदई। ग्रर्थातसिथलभयेहूये साम
र्थ्यनहींहोयसके इसतें कलपता ग्रौर विलपताहू
ग्रा तेरेहीचरनोमे हर्षाजोडेहूये रहिगयाहै ग्रशक्त
भयाहूग्रा दर्सनकाभागी नहीं वनसका ग्रौर
हेर्व्रह्मणि जोवे पापीजनोका उद्धारकरनेवालीमा

ना नेरेकोअपना कुछ नैवेदप्रसाददेवेगी वोनि
सको नमसतनमान पूर्वक प्रणाम करके अपनेहा
थोंमैधारनकरलेना ।९। चौपाई । सुनिअसवचनवि
प्रविदासा । चलेलेलनफलजगलङ्गलासा । कविन
हनमारगमनिथीरा । पहुचोजायदेवसविनीरा । रज
नीनहा हउनियकाहू । भनतवचन सपनेअसनाहू
जोप्रसादनोहिदेहिंभवानी । सोनवविप्रहरषउरमानी
जायनकेनभक्तरविदासा । मादिरदेहकरनकलनासा

उजविलोकि अससवपनसुहावा। निजजनकहं स

वप्रकट सुनावा। करनवहोति विमलजलपावन

विप्रसनानरुचिर मनभावन। जगकरजोरिजगाल

फललीना। लागेविनयकरनगतिदीना। हेअंवे

जगपतिनिउद्धरनी। हेसुरसरिसिवसीसविहरनी

हेसुखदंनिजननहितकारी। हेअनंतिकलकीर

निवारी। हेसुभकांतिविसदवरदानी। हेसुरअ

सुरचराचरज्ञानी। हेभयभक्तसंतभवहरनी। नी

म

नलोकदुखदोषनिवरनी। जनरविदासभकहफ
नोरे। इहफलप्रभुमिदीनजगमोरे। भम्योचरनन
रतसिरनाई। जजनवकरह्नवदनजाई। बहुवि
धिविनयवदननिजभाषी। मानतोरदरसन अ
भिलाषी। पयजनजराग्रसतवलहीना। जद्यपि
विविधयनन हठकीना। नद्यपिहृदवस्रुषनहिंमा
न्यो। सिथलश्रवैवकंपिकदरान्यो। ह्वारिरह्योनि
जसदनसुदीना। विनयप्रणामविविध विधिकी

ना। सुनत विप्रमुख कथन सुहावा। जाचन करत
जगल कर मन भावा। सुनत जड़न कलंकन धा
री। निकसे वहिर देव सरि वारी। उज्जहद गदे खिपु
नि फल देई। हरषत दीन कर धरि सोई। ते निज
भक्त राखि सनमाना। भये सलेत लप तन मदउपा
ना। वहुरि भवानिप ककलंकण। हरनस
कल जनन ज्वरन कलंकन। करनि का विउजस
नमखिउ ओसा। जनहृंदमक उगनिदाम निमासो

७८
भ०
६३

दोहा। विप्रविलोकत चकितविन जानिसकलसंसा
र। कविप्रणामसादिर सदनचलोसीसनिजधार ॥ ८८
टीका। इसप्रकाररविदासकीविनती सुनकरब्राह्म
णजोहै सोदानोपुंगीफल अर्थात सुपारियोंकीभे
टा लेकर आनंदसे चलपडताभया नवसंपूर्णसमा
जके सहित मारगकोनहृन्यकरके श्रीगंगाजीमे
आयप्रापतहूआ। नवरात्रीकेसमय सयनकिया
नव सुपनेमे एकहउब्राह्मणी आयकरकेतिस

अथवेस्याचरितं । दोहा । अवउत्तम हरिभक्ति हढ
करन करणसुखदान । भक्तिमहातम हरनमन
करहुं कथनअवदान । चौपाई । पूर्व सकललो
क सुखदाये । जेश्रीरंगनाथमैगाये । दक्षणदेस
विदतभगवाना । तिनसामीप एक धनमाना ।
कामकलावति कुसलसुहाई । अनथीप्रियेसंत
सुखदाई । नितरतनन्दत्यगीतभगवाना । मोहत
विस्व चराचरनाना । वसहिंजहांगुणसुमतिम

५१
भ०
१

बीना। सोनिजसदन संसकृतकीना। देखितास
सचिवासमहाना। आवाएक भक्त बिहाना। जा
निविप्रवरगेहनवीना। लछ्मनचिरवतविकल
अतिदीना। तासभवन भीतर प्रवसानो। नेवधु
बारदेखिहरखानो। स्वागतिसखि वदन मदुबा
नी। कहिसतकार जोरि जुगपानी। रतनहेमम
डादिकनाना। धरतरजतभाजनसनमाना। तास
अनधिकर सनमखसोई। हरषतहृदय नम्रब

नहोई। करिकरि विनय वदननहिंथोरी। कीनन
वेदन जगकरजोरी। तासविलोकि भक्तिसिव
काई। गिरावदन विद्वान सलाई। सभैकवन वं
सतवकाहा। कस आचार धरम तवगाहा। दोहा
भन्योवदन नव वारत्रिय मैस्वामिन उरभागि।
सामान्या अस कहन सव संतचरन अनुरागि १
टीका। अव भगवानकी उत्तम भक्तोके हृदक
रनेवाला और श्रवणकरनेसे कानोको सुखदे

नेवाला भक्तोंका निरमल महातम जोहै सो गा
यन करताहूं पहिलेजो दक्षण देसविखें प्रसि
द्ध सर्वजीवोंके सुखदायक श्रीरंगनाथ भगवान
गायनकियेगयेहैं तिनकेनिकट एकअनथीज
नोकोप्यारे जाननेवाली और संतभक्तोंकी सुखे
दायक कल्याणकीमूर्ती वडीधनमान वेस्यावास
करतीथी औरभी कैसी कि रात्रीदिननित्त भक्तीभा
वसें भगवानकेआगेनृत्यऔरतिनके गुणकीर्तनगायनक
रनेमेलीनरह

भ०
२

७३

२

तीथी इसप्रकार प्रेम मै उनमनभई हुई जगनके
सबलोगोंको मोहनकरतीथी और जिसघरमे
वासकरतीथी सो अतसे करके पवित्र और उ
जलसाहुआथा ऐसेतिसके घरको बाह्म
णोंके घरसमान बड़ानिरमल और सुंदर स
छदेखकर [illegible] तथा और त्रिषाकेवश ब्याकु
ल भयाहुआ एककोई भक्तविद्वान जोथा सो
निरभय होय करके तिसके घरके भीतर च

गु. भ. २

लानाताभया नवेवस्थाने संतभक्तको घरमै आये
हूये देखकर दीनभावसे चरनोपर प्रणामकिया
औरफिर हरषमैमगण भईहूई हाथजोडकरको
मल वाणीसे कुसलप्रश्नकर तुरत घरसे एक
चांदीके वरतनमै मणीमुकता कंचिन मुद्राइ
त्यादि धरकर तैसेहीं दीनभावसे हाथजोडे हूये
मुखसे अनेकप्रकारकी विनतीवडाई करकर
सनमान पूर्वक तिस अनथी संतकेआगे ल्याय

[illegible]कर नेवेदनकरदेतीभई अर्थात मनमेख
लायराखतीभई इसप्रकार तिसकीभक्ती सिव
काई देखकर सोविद्वानभक्तवडी प्रीतीके व
चनोसे कहनेलगा किहे सुशीले कहोतेराकौ
नवंसहे और तूं कौनहैं और क्यातेराधरम आ
चारहै ऐसेसंतकावचन सुनकर सो प्रवीनवि
नतीकरनेलगी किहे संतस्वामी मै अभागन
जगतमे वेस्याजाती करके प्रसिद्धहूं और मन

वचन कायाकरके संतभक्तोंके चरनोकी दासी हूं ॥१॥ चौपाई। अस तहि वचन संत सुनिनीके। लागो भनन हरषिनिजजीके। भामनितोर रुचिर बिनेरा। मोहि नउचित गृहएणक पहरा। तवसनकारकीनजेमोरा। सोनरतन कंचिनतेथोरा॥ मैप्रसन्न तोपें हितकारी। उभोविप्रअस वदनउचारी। करिप्रणाम तवसो अभिरामा। बोलीवदनवचन निसकामा। मैसकलपकरन महिदेवा

बिनतेंकीनतोर कछुसेवा। अवलैजाहूं सदन क
सफेरी। कवनहुकभई स्वामिनमेरी। भक्तअव
र दायातवजोई। जोइहिकालनमोपरहोई। तोक
सहोहिं मोरकल्याना। तवमात्वातरूप भगवाना
होहिंसंतअनकूलनजांके। करहिं कुसलभगव
नकसतांके। तासहनत सउगिरासहाई। बोलेसं
तहरषसरसाई। तवरुचिसाधु चरनरतिमाना।
यातेंरंगनाथभगवाना। ताहिअनकूलसरवदा

स्वामी। देवनदेव भक्त अनुगामी। अवइनमणिकं
विनकरभामा। नवविरचायकोट अभिरामा।
सोश्रीरंगनाथपेंजाई। देकुललित प्रभुसीसवफा
ई। सुनिअससंतभक्तमखवानी। करिप्रणामव
धुवारअलानी। दोहा। जोअबकीननमोरनव
भक्तसंतसनमान। नोकरिहें सुईकारकसरं
गनाथभगवान।२। टीका। नव निसवेसाका
ऐसा कोमल वचन सुन करके संत महानमा

अत्यंत प्रसन्न होयगये और कहनेलगे किहे स्वामी

ले इहनेरे घरकाद्रव्य अर्थात धनजोहै सो मेरेको

गृहणकरना योग्यनहीं है नहींतोतैने जो मेराश्री

तीभावसें सत्कारकियाहै सोहेप्रवीने इह कवि

न रत्नोसे कुछ थोडानहीं है मेतेरीभक्ती प्रीती

देखकर हे हितकार तीतेरेपर परम प्रसन्नहोय

गयाहूं इसप्रकार उचारण करके संतविद्यानउ

ठ करके चलनेको तयारहोजानेभये तबवेस्या

५५
भं
६

जोहै सो प्रणाम करके विनतीकरनेलगी किहे
संत उदारमैने संकलप करके कुछधनसे आ
पकी इहसेवाकरीथी प्रभूअवमै कैसेफेरकर
घरमैलेजाऊं दीनदयालमेरी कौनचूकहै औरका
अपराधहै कि जिसते मेरीसेवा सईकारनहीं हो
तीहै हेभक्तउपकारी तुमसाक्षात भगवानकारू
पहो जोइससमय नाथतुमारी मेरेपर दयानही
होगी तोकृपानिधान मेरीकल्यान कैसेहोगी

६

ऐरमें जगतमें किसप्रकार सफलहोऊंगी हे
दीनबंधू जिसपरसंतहीं प्रसन्ननाभये तिसपरभ
गवान कैसे प्रसन्नहोवेंगे ऐसेविनतीरसकी
भीगीहूई तिसवेस्याकी वाणीसुनकर भक्तप्र
धानवेड हरषसे कहनेलगे किहे सुभके तुजो
हैं सोमनवचनकायाकरके संतजनोके चरणो
कीप्रीतीभक्तीवालीहैं तेरेपर भक्तसहायक रं
गनाथ भगवान सदैवहीं अनुकूल अर्थात प्र

भ. ८

सन्तहैं अवतुमेरे वचनसे इनकेचिन मणियों
का बडासुंदरदिव्य मुकट बनवा और फिर श्री
तीसनमानसे जायकर रंगनाथभगवानके सी
सपरचढायदे इसतेतेरी इहसेवासव सफलहोजा
वेगी इसप्रकार संतभक्तके मुखसे परमसुख
दायक वचनसुनकरके वेस्याप्रणाम करकर
और हाथजोडकर कहनेलगी किहेसंतकृपाल
जो इससमय प्रभुतुमनेहीं मेरासनमान सतकार

नहींकिया तो कहिये कि आगे रंगनाथभगवा
न मेरीसिवकाईको कैसे स्वईकार करेंगे ।२॥चौ
पाई। संतकथन सुनितासु सुहावा। अतिप्रसन्न
सुवचवचन अलावा। सोभगवान भक्तप्रियगाये
दीनवंधु प्रभुभक्तसहाये। तुवसिवकाई भक्ति
तिहारा। कसनकरहिं भगवनस्वईकारा। अ
सकहिसंत गवनमगकीना। ईहांवारवधु हर
षप्रलीना। स्वरनकार अतिनिपुणसुहावा॥

७३ भ. ८

पठनहूलनिजलीनतुलाभा। नहिहैंमणिकंचिन

ननसोहा। इतवनवाग कीटमनमोहा। करनहै

तुम्रपणगिरधारी। जवकोनीवधुवारनधारी।

नवरजनीअसस्वपनमहंता। दीनपुनाशिनकहं

भगवंता। आजहोतमजनभिनसारा। आवहिंए

कभवनवधुवारा। मणिकंचिनमंडितमनभावन

मोरेमंजल कीटचकावन। ममसहपदेखिनहग

सोई। कोतककनरतपुष्पवतिहोई। नहिहैंसोनिज

८

धर्मविचारी। आवनमोरनिकटव्रतधारी। नवन
मनहिहिनजनसमुझावहु। प्रभुकहंनिजकर
कीटचढ़ावहु। जेनकरहिंभामनिसईकारा।
तेइहकथनमोरनवमारा। तासुदेहुसादिरस
मुफाई। तेरभक्तिप्रभुकेमनभाई। पूजिकदेवि
स्वपनअसनजागे। सकलपरस्परभाषणलागे।
तेलेनिगुणवारत्रियसोई। प्रेमपयोधिमगण
मनहोई। करिसनानमनमोदउमंगा। सजिआ

भनी वसननतनअंगा। सुंदरसुमन मालउरधारी
लेपनमलय सकलसुखकारी। आवतमनहुंत
पल्लनिरूपा। रजभाजनधरिक्रीटअनूपा। निज
करलियेमानरतिवोरा। दासीदाससंगवहुंवोरा
करतनृत्यगुणगीनसुहाई। जवहरिभवनद्वार
परआई। नवशुजिकनयनन नहिदेखी। निमिक
रत्नपनसमसवलेखी। दोहा। दीनदयानिधकीन
जेनिसिहमकाहिंवखान। आईमोअववारविये

(१)

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लियेक्रीटकलपान ।३। टीका। नवश्रेमे तिसवे
स्याकावचनसनकरके संतभक्तप्रसन्नभयेयह
ये कहनेलगे किहे हितकारनी भक्तोंकेश्रनु
सारी श्रोरभक्तोंपरसनेह करनेवाले दीनद्या
लभगवानजोहैं सोतेरीप्रेमभक्तीकी श्रेसीसे
वाकोदेखकर केसेसईकारनहींकरेंगे संसार
मे श्रपनेंकामानराखेना इहदीनबंधुकी स
दास
नातनवाणहै इसमेकछुसंशयनहींहै श्रेसे

७२
भ०
१०

कथनकरकर संतमहात्मा अपनेमारगकोच
लेजातेभये तवईहांघरमे सोवेस्वातिनकाउपदे
श पायकर आनंदकेवशभईहुई एकवेरेचतुर
स्वरणाकारअर्थात सुनारकोहतभेजकर बुला
यलेतीभई औरयीतीसेपासबैठकर तिनकेचि
नमणियोंका वडादिव्यमनोहर मुकटवनवा
यकर भगवानकृपानिधानकेआगे नवेदन
करनेकोत्यारहोजातीभई किचलकरके अप

१०

करी

नेहाथसेप्रभूकोफलखावतीहूं जबइसप्रकारवेस्या
नेप्यारी नवकुहांगाडीकेसमय रंगनाथभगवान
अपने पुजारियोंको स्वमास्वपनदेतेभये किहेसु
नकजनो आजयानाकालहोते एकवेस्याकंचित
मणियोंकरकेविचित्र वस्त्रादिक औरसुंदर शो
भावालामकटलेकरके प्रीतीमनमानसे मेरेफ
लावनेको ईहांमेरेभवनमेंआवेगी औरवेमेराम
रूप देखकरके नरतहीं पुष्पवती अर्थात चित

७२ भ॰ ॥

वंतीहोजावेगी तिससें अपनाधरमविचारकरसे
मेरेनिकटआवने और सपर्शकरनेका अवश्य
संकोचकरेगी तवतिसकोनमकहना किहेसुशी
ले तू हृदयमेंकुछसोच और संकोचमतकर ति
सकेहाथकर अपनेहाथोंसे इहमनोहरमुकट
जोहै सोभगवानकेसीसपर चढायदे औरजोक
दाचितवेनहींमानेगी तोतुमतिसकोइहमेराकथ
नजोहै सोसबकहनायदेना और इहभीकहना कि ॥

हैहितकारनी नेरीनिसकपटभक्तीजोहै सोभग
वानकेहृदयमैंवसीहुईहै इसप्रकाररातीके स
मयस्वपनदेखकर प्रातःकालहोते उसारीसव
जागउठे और परस्परविचारकरनेलगगातेभये
इतनेमैं सोप्रवीनवेस्याभी प्रेमकेसमुद्रमैंमगण
भईहुई आनंदपूर्वक सनानकरके सुंदरवस्त्र।
और अंगअंगभूषणजोहैं सोसजावतीभई ति
सतें उपरांत हृदयमैं पुष्पोंकीमालाधारकर और

भा॰
भ॰
१२

चंदनकालेपदेकर रतीजोकामदेवकीस्त्रीहै तिस
केमानकोहरनेवाली एकरूपकेथालमैमनोहर
मुकटकोरखकर श्रोरप्रीतीमनमानसे श्रपने
हाथोंमे धारनकरकर चोरोवारदासीदासों कर
के परिवारन कावेरीहुई बडेप्रेमसे नृत्यगायन
करतीहुई। चलपडतीभई तिससमय कैसीभीशो
भाको उदयकरतीहै किमानोतनपरस्त्रनी रूपधारे
हुयेचली श्रावतीहै प्रेमेनृत्यगायन करती ।

१२

ह्रईजब रंगनाथभगवानके भवनकेद्वारपर आय
आपनभई तबतिसकोदेखकर इजिकलोगपरस्प
र कहनेलगे किभाई रात्रीकास्वपन सबसत्य
भयाहै देखोकि रात्रीकेसमयदीनहितकारी भ
गवानकृपानिधानने जोहमकोस्वपनेमे कहा
थाभाई अबसोई वेसाहाथोंमे मर्नेहरमुकट
कोधारनकियेहूये प्रतत्तआयप्रापनभईहै॥२॥
चौपाई। तासुकहतअसबदनउफाई। नवहरि

ऊ॰
भ॰
१३

13

भवनसीलनिधआई। इहनिजकरनकीटमनभा
वा। कृपानाथकहंदेऊवफावा। रंगादेवप्रभसाम
नदीना। नवकरपहरनकीटप्रवीना। असहित
कपिप्रणामहरषाती। भीतरभवनभक्तिमदमाती
बह्मानंदमगनमनहोई। प्रभुपेंआईजुककरदोई
देखनदिव्यदरससवविकरना। भईप्रेमवसदशावि
वरना। पुनिसंभारिसरतनवदेखा। निजकहंरम
निपुणवनिलेखा। सोचितसियरसतजचवसबाको

आमतहगनलाजबहूबाकी। इजकदेखिसकुचअस
नासा। मधुरमंजमसुखवचनप्रकासा। जायसुशील
वेगप्रभुपाहीं। कमसकलकीटचढावतिनाहीं। अ
वनउचितअसभाषनसोई। मैअसपर्श अपावन
होई। इनकरदरसदेखिमनभायन। भईआजरवि
धर्मपरायण। सुनततनासअसकथनपुजारी। बो
लेतोहिनदोषवनधारी। जापेरंगनाथअनकूला।
तसकंआजसवसुकृतिमूला। धर्मअपावनपावन।

उ॰
भ॰
१४

भाना। दीनघालकहं एकसमाना। संन्नतभक्तिय
पावनसेहू। रंगनायकहंपावनतेहू। श्रमविचारि
श्रम हृदयविहाई। प्रभुकहंदेहैकोटचढाई। सु
नतवचनतिनसखरसहावा। परमआनंदवार
वियपावा। दोहा। रविकीटकलकलनतें वहि
रभवनहरिआय। करिसनानजलविमलकट
सजेनवलपटकाय। ४। टीका। नवतिसकोभूज
क कहनेलगे किहेसखीले तंभगवानके भव

तैसे आयकर इहांदिव्यमुकटजोहै सोअपनेहाथों
से कृपासिंधुकोवधायदे रंगनाथभगवानने ते
रहीहाथसे इसमुकटकेपहिरनेकी आज्ञादीहु
ईहै प्रेमसेहनकरके सो वस्याहरणसेप्रणाम क
रकेभक्तीके मदमेमग्नभईहुई मानोब्रह्मानंदमे
मग्नहोयकर दोनोहाथजोडेहुये भवनकेभी
तरभगवान कृपानिधानके सनमुखचले आव
तीभई तवहीनानाथकादरसन करनीहो प्रेमके

वशात्तरत्नतिसकीदृशा विवर्ण कुल्कऔरकी और
होयगई फिरजब शरीरकोकुछसहरनसंभाली
नवभामनी अपने आपको धृष्टवती अर्थात ति
नवंतीदेखतीभई तिसने वडेअचरज और सोचके
वश थरथर कांपतीभई तहांहीस्थितहोयगई
लज्जाजोहै सोनेत्रोंमे अधिककरके छायनहोय
गई नवसृजिकातिसको प्रेमसंकोच और सोचके
वशदेखकर वडेमधुरवचनोंसे कहनेलगा किहे

१७

प्रवीने तें अब वेगनिकट जायकरक्यों नहींरंगनाथ
भगवानके सीसपरमुकट चढायदेती ऐसेतिनका
कथनसुनकर वेस्याकहनेलगी किमैं अब इनके
साथसपर्श करनेकेयोग्यनहींहूं भगवानकीमाया
वडीअगाधहै कुछजानीनहींजाती मैंकृपासिंधुका
दरसन करतीहीं तिनवंतीहोयगईहूं अबशरीरक
रके अशुद्धभईहूंई दीनानाथको कैसेजायकर मु
कटफहराऊं इसप्रकारतिसका कथनसुनकर॥

भ० १९

जारीकरनेलगे किहेप्रशीले हेअनघपारनी तेषेको
कोई दोषनहींहै रंगनाथभगवाननेजोहै सोनेरेपर
परमप्रसन्नहैं तेतोअजजगतमें सरवछेओंकीनि
धीहैं इहपवित्र अपवित्रपरम लोगोंकेलियेहैं भग
वानके आगेसब एकसमानहै भक्तीके सहितअ
पवित्रपरमजोहै सोभगवानको पवित्रहीं लागता
है कृपानिधानके दरबारमें परम अपरम ऊचनी
चका कोईमतकारननहींहै वेतोकेवल भक्तीकाव

१९

16

गईदेतेहैं औरभक्तीपरहीं रीझतेहैं तातेंतं ऐसे
विचारकरहे बड़भागन हृदयकाभ्रमसंकोच
सबत्याग और निरसंकजायकरके दीनबंधु
कोमुकटजोहै सोचढ़ायदे ऐसेतिनका बड़ा
सुंदर और सुखदायकवचन सुनकरके वेस्या
परमहरषकोप्रापतहोतीभई और तुरतहींस
नमान पूर्वकमुकटको तहांराखकर भवन
केबाहरचलीआई तबदासियोंसे निरमलज

लमंगवाय कर और भलीप्रकार स्नानकरकर
फिर तैसेही सुमनसुगंधी चंदनइत्यादि सजाय
कर सुंदरनवीन वस्त्रजोहैं सो पहिरलेतीभई
चौपाई। भीतरभवनहूरषजनआई। लीनकीट
कल करन उठाई। रंगनाथमनमुख निसकामा
ठाढीआय वारत्रियरामा। उनकेठिनवित मांन
सरागी। प्रभुहिंकीटपहिरावनलागी। कछुउतंग
हरिमूरतिकाहीं। देखिविचार करत मनमाहीं।

नोलोभक्तमोवउरहारे। कृपानकेतभक्तहित
कारे। नहिंअगलमनिमानसभावा। दीनल
लितनिजसीसझुकावा। नववधुवारिक्रीटनि
जकरना। पहिरायोमानसमदभरना। भनत
आनंनगमोरसमाना। कोनधन्यजनसहकोति
आना। धनिआनंदमगणअनुरागी। करनत
सुगायनगुणलागी। उठेरोमांचपलकगनिगा
ना। प्रेमवारनयननफुरिजाता। कहनवकिन

५२
भ०
१८

सबलोगनिहारी। इहजगआजधन्यवपुधारी।
जासभक्तियसदेहविसहावा। रंगनाथनिजसीस
नकावा। दोहा। नवसशीलनिधवारत्रिये। कीर
सणामगुणगाय। चलिआईप्रभदितसदन प्रभ
तेहंहोनविदाय।५। टीका। नवशरीरसे शुद्धहोय
करके भगवानकेभवनमेचलीआई फिरतेमेही
मकरको उठायकर ओर आयकर रंगदेवकेस
नमख स्थितहोयकर वडेप्रेमउतसाहसे हीनवं

१८

18

धर्मकोप्रकटजोहै सोपहिरावनेलगी तहांभगवा
नकोसूझी कुछरुचीजोथी तिसकोदेखकर हृ
दयमेविचार करतीहै किअबकौन यतनकरूं
इसमे भक्तोंकेसोच हरकरनेवाले औरभक्तों
केहितकारी अंतरजामीभगवान कृपानिधान
तिसके हृदयके सोचकोजानकर तरतसबनीज
नोंके मनमेंनिवासकरनेवाला अपनासुंदरसी
सजोहै सो तिसके आगे झुकायदेतेभये नव

५४
भ.
१५

वेस्याने आनंदपूर्वक अपनेहाथोंसें वे मनोहरमु
कटजोथा सो कृपासिंधुके सीसपरचढायादि
या और कहनेलगी कि आजमेरे समान जग
तमे हमरा कौनधन्यहै और कौन ऐसा पुन्न
मानसज्जनसका पात्रहै इसप्रकार आनंदमे म
गणभई हुई दीनानाथके आगे नृत्यकरकर
मधुर मधुर स्वरसे प्रभूकेगुणजोहैं सोगायन
करनेलगजातीभई तिससमय तिसकीऐसी

19

१५

दखायो कि हरषसे अंग अंग रोमावली उठी
हुई और शरीर प्रफुल्लितभयाहुआ नेत्रोंसे प्रे
मजलवहा चलाजाताहै नवलीग तिसकी भ
क्तीको देखकर अचरजके वशभयेहुये परस्प
रकहतेहैं कि भाई आजइहवेसा जगतमैधन्य
और धन्य इसकाजनमहै किजिसकीभक्तीके
आगे रंगनाथभगवानकीमूरती नेभीमक्र
कायदियाहै देखोपाषाणकीमूरतीका प्रेम

कुकन्याना वशीअलौकिकवार्त्ताहै इहतोभक्ती
कोंहीं सामर्थ्यहै औरकिसीकोनहींहै तबवेस
शीलभक्तीमानवेस्या तहांतेंमग्गायनसें भगवा
नकृपानिधानकों भलीप्रकारविदायकर फिर
विदायहोयकर वारंवारप्रणामकरतीहुई आनं
दसें अपनेघरको चलीआई।५। चौपाई। तबतेंनि
जनकेन अनुरागी। निजकुलकरमसकलपरि
त्यागी। मणिकंचनधनविविधसेखे। दैनअन

२०

षिसंतनहरिलेषे। बिरविकुटीरललितसरितीरा
लगीनिवासकरनमतिधीरा। दैवचरितनसकल
गायनसुना। निरतसुनन्यभावनजिह्ना। भगव
नभक्तिसुचिरव्रतधारा। जसवनितेंहंतसकरहिंशृ
ङ्गारा। लौकिककरमसकलनजिदीना। केवल
कृस्नभजनमनलीना। दोहा। श्रमश्रीरंगउपास
ना करत बार बपुजोय। अंतनवपुष नजिभवन
हरिगवनै सुजनसुजनतहोय। टीका। नवतेंप्रेममै

५१
भ०
२१

मगणभईहुई अपनेवंसके धरमकोत्यागकर औ
रमणीकंविनमहाइत्यादि धनजोघरमेथा सोसव
हरीकेनमित्त अनथीसंतोकोवांटकर फिरघरमे
निवासहोयकरके नदीकेकिनारेपरजायकर औ
रएकछोटीसीसुंदर कुटियावनायकर आनंदसेव
हांनिवासकरनेलगी औार रातौदिनभगवानकेभ
जनसेवन औरभगवानकेहीनंदन गुणगायनमे
लीनरहतीभई संसारकी औरसंसर्गवासनाको

त्यागकरनिसने केवलएकभक्तीकाव्रतनहीं धारन
करलिया जैसाआनिश्चित कुछभोजनमात्र आय
वेने तैसापायलेना और भगवानके भजन स्मर्ण
मैलीनरहना इसप्रकार रंगनाथस्वामीकी उपा
सनाभक्तीकरतीकरती सोवडभागनवस्था अं
तकाल श्रमकेविनासहजेही शरीरकोत्यागक
र और स्वजसके सहितहोयकर रंगनाथजीके
धामकोही जायप्रापतहोतीभई।८। इतिश्रीभ

५१
भ॰
२२

कविनोदग्रंथेभगवद्भक्ती महात्मेँभाषाटीका यां वेस्या चरितवरणनं नामसर्गः।

मिहांसिंहकृत

22

अथ प्रल्हाद चरितं। दोहा। विमल भक्ति दृढ कर
नमन अद्भुत चरित पुनीत। करहुं कथन कछु वद
न श्रवहरन सकल भ्रम भीत। चौपाई। उत्तर दिसा सुर
सरिकर तीरा। ब्रह्मावर्त प्रांत मतिधीरा। विगत
मोह मत सर अभिमाना। वसहिं भक्त वैस्नव गुणखा
ना। ब्रह्मा तें चींटी परयंता। देखहिं इष्टि एक भगवंता।
ब्रह्मरूप सब जानि अभेवा। करहिं निरन्तर सवक
र सेवा। अवसर एक तास सुर विहाई। नेमसार्नतीर

घजगजोई। दरसहुंजाय हरन अघगाता। असवि
चारिमानस हुलसाता। लियेसंगसिषसेवकरागी
चलेपानकेतभक्तनिजत्यागी। जठिरसरीरपंथश्रम
पाई। देखिपकहंदरश्रमदाई। तपतअवैवश्रनप र
विसंगा। उतसोनहांभक्तपथभंगा। सुभ्रललित
द्रुगदेखिविसाला। अतिउतंगतहंपकरसाला।
वोलोवदन वचनसिषस्वामी। इहितरुमिखिवर सा
खजेजामी। तासन अमिय ललित फलछाये॥

दीनदयालमोरेमनभाये।मोहिलेदेहु कृपानिधि
एहा।अतिवविचित्रफलदीनसनेहा।सिषकरवच
नसुनतमनभावा।गुरुकृपालरखवारखलावा
दोहा।कहिसदेखि बालकनवलसुविफलललि
तरसार।चाहततमिनवितगहितनव [illegible]देहुसय
ननउतार।यथासुजननवनि परहिं कछु नमते
यतनउपाय।सिसुकहिविराखहु निशए अवदे
हुकहिविर फलल्याय।।८।। टीका।अव और हृदय

५२
भ०
२

मैभगवानकी निरमलभक्तीके द्दढकरनेवाला
औार संसारणीभयभ्रमकोहरनेवाला परमपवित्रऔा
र अदभुत चरित्रजोहै सोकथनकरताहूं। श्रीगं
गाजीकी उत्तरदिसामै ब्रह्मावरतकेपरे मोहमद
मछता इत्यादिविकारोंसें रहित धीरज औार धर्म
की निधीवडीमै परमप्रवीन सर्वगुणोंकी खा
नी एकवैस्नव भक्त वास करताथा सोकेसाज्ञानी
औार समदरसी कि ब्रह्मातेंलेकरचीटी प्रयंतजिस

२

का एक भगवंत ही भासताथा इसप्रकार सबको
ब्रह्मरूपजानकर किसीसें भी लववनहीं मोड़ता
था अर्थात प्रीतीभावसे सबकी सेवा करताथा
एक समय तिसके हृदयमें अभिलाषा उपजती
भई किसरव पाप कलेशोंके नासकरनेवाला
नेम धारण तीर्थजो प्रसिद्धहै मैंतिसका दरसन
करूं ऐसेविचारकर अपने सिषसेवक साथ
लेकर आनंदसे घरको त्यागकरकेचलपड़ता

भ॰ प्र॰ १

भया तबजातेजाते मारगमै शरीरजोबहुतनिरवल

था श्रमकरके अलसायगया श्रोर सूरजकी धूप

नेभी श्रंग श्रंगको तपायदिया कहीं एकश्रावे

का सुंदर छायावालावाग देखकर तरनरसने

को छोड़कर तहांउतर पड़तेभये तबतिसवाग

केवीच अतिसे सुंदर श्रोर बड़ाअत्यंत ऊंचाएक

श्रांबकापेड़था तिसकोफलाहुश्रा देखकर ति

नका शिष्यकहनेलगा किहे कृपानिधान स्वा

मीजी आपदेखिये कि इसमहलके शिखरमै अ
मृकसाखाजोहै तिसकेसाथ कैसे अमृतके
समान सुंदर मधुरफललगेहुयेहैं इनकेग्र
हणकरनेकी प्रभुमेरे चित्तमैरुची उतपन्नहो
यगईहै अबकृपाकरके हेदीनपाल इसम
नोहरफल मेरेको अवश्यलेदीजिये इसप्र
कारशिष्यका कथन सुनकर और तिसकी
रुचीमानकर गुरुकृपाल तुरनहीं बागकेरख

बारेकोवलाय करवेइ हितप्रीतीके वचनोसें
कहनेलगे किहेभाई मालीइह हमारावालक
नेरेइसत्रांवके संदरफलपरलोभीहोयगयाहै
तोतें अवतूंदयाकरके हमारेसे अपनीरुचीअ
नुसार मोललेओर इहमनोहर फलल्यायकर
के हमारे इसवालककोदेहेभाई जेसेतेरसेहोय
सके तैसेही यतनसे हमारेवालककीरुचीरा
ख ओर इहफलल्यायकरकेदे।। ।चौपाई। मा

भ. ४

४

लाकारवदन मुसकाई। गुरुहिंहृदजननगिरा अला
ई। अतिउतंगरुहविटप महाना। कोअस सकहिं
सिखर इहिजाना। विनुखग लेनलाभ इहिकेरा
सुनहु संत कै मनुजननेहेरा। तुमहूं सरव सामर्थ
सहाये। सिउभक्तभगवन जगगाये। तुकहुं भ
नहु नमनगतिहोई। देहीनमहिं ललितफलसो
ई। प्रह्लादजन तोकरकाहा। सुनतश्रवणमन
तृषणिराहा। वहुरि भनत अस वदन उचारी। इह

७२
भ॰
५

नखगामकछुवाननमारी। कलकलपातें संखतिमाहीं
सनहुसजन कछुउरलमनाहीं। अमकहिभक्तम
नहिंसिरनाई। समतिकुल उरदीन महाई। नरहिं
प्रसंसिवचन मनभावा। भक्तप्रवरनिजवदनअ
लावा। नमहुंप्रवीनभक्तव्रतधारी। सवकरसव
दसवनहितकारी। नकप्रधानगुण कविरनमारे
सकहिं कवन अस वदनउचारे। जोरघ्ननपनिज
सीससहैया। आश्रनजननकविरसावदैया। या

५

सोजनम परारथलागी। कोनववसररसविस्ववइभा
गी। जोमोपैंनिज करहुसनेहू। नोमांगतनवालक
फलपहू। अतिउतंग नव सिखरवजाई। नापरइह
नसकहिं सिसुजाई। मोपेंकरिउपकारसहावा।
सजनदेहु सिसुहिंफलभावा। असजव अल्हा
दजनवानी। नरुकहूंभनीतविरहितसानी। लिये
ललितफल संजनसाखा। नम्रनसीस भक्तपदरा
खा। नवजन अल्हाद सइवानी। अतिअसन्ननि

५२ भ. ६

जवदन बखानी। मालाकार वेगगत वभाई। निजकर
देहु सिसहि फल आई। तेविलोकि असचरित सुहा
वा। जनअह्लाद चरनसिरनावा। कहतआजतव
पत्र ग्रथोरा। जहि असकीन चरितबितचोरा। म
निषुलस्त जिमिमेक कुकावा। तिमिनह गगन त
महंमहिनावा। भक्तप्रभाव तोर अधिकाई। मेकि
मिसकहं एकमावेगाई। नाथअजानकीन कछुहा
सी। सोतवकृपासिंधुगुणरासी। जानिमोर अपराध

६

महाना। छमहु अनाथनाथ भगवाना। नवबाल
क मनहरष अघाये। नहतेंलीन पंचफलभाये।
दोहा। गुरुप्रसन्नमन भयोतव सत अभिलाष
नमाहु। अवकुरभई किनाभई पायमधुरफल
चाहु। नवप्रणामकरिसिरकहो नवप्रसादजन
नेहु। मोरमनोरथ फुरभयोपाय ललितफलए
हु। २। टीका। नवमाली गुरुजीको मावसे म
सकायकर कूट अर्थात मसकरी कर करक

२१
भ॰
८

होनेलगा कि इह वृक्षतो अपनंनहीं वडाहुआहै इस
के सिखरपरजानेको कौन सामर्थहै हेसंत इस
के फलोंकालाभ केवल पंछीही लेतेहैं मानुष्य
से नहींलिया जाताहै परंतु तुमभगवानके प्य
रेभक्त और सिद्धसामर्थहो इसवृक्षको आज्ञाक
रो जो नीमाहोयकर और सीसकोझुकायकर
अपने सुंदर और मधुरफलजोहैं सोतुमको दे
देवे इसप्रकार मालाकार जो मालीहै तिसका

८

कथन सुन~~[struck out]~~करके अल्हाददासजी मौन होयर
हे फिरथोड़ी देरकेपीछे बड़ीकोमलवाणींसे कह
नेलगे अहोभाई माली इहवारतामे तैने कहीहै
कुछ अचरज और अगमनहींहै भगवानकी कृ
पाके आगे सहज और सुगमहै ऐसे कथन क
र कर दीनहितकारी गिरधारी को सुमर कर
और मनमे हीं तिनके चरनोंको प्रणामकरके प्रीतीके
भरे हुये वचनोंसें तिस वृतकी अनेक प्रकार

७२
भ.
८

8

शालाघावड़ाई कर कर कहनेलगे किहे हृदमैंजा
नताहूं जोतेंभी भगवानका परमव्रतधारीभक्तहैं
कैसाभीहैं किसवका सुखदायक और सवकाहि
तकारीहैं हेहृदउत्तम हेभक्त तेरेसुंदरगुण और
तेराउपकारजोहै सो कौन कथनकरसकताहै द
खोकि घोरघाम अर्थात महां तपीहूई धूपजोहै
सोप्यारे तूं अपने सीसपर सहारताहैं औरजोजी
वतेरे आश्रयहोतेहैं तिनको अपनीछायाकेनी

वेसुख देताहैं तैनेतो संसारमैं केवल परार्थके न
मित्त अर्थात दूसरेको सुखदेनेकेलिये जनमधा
रन कियाहुआहै कहांतेरे समान जगतमैं कौ
न वड़भागी और परउपकारीहै तांतेहे भक्त अ
वमैंभीतेरेसें कुछ मांगताहूं जोकृपाकरके मे
रेपर भी सनेह और प्रीतीकरें तो इहमेराशिष्य
वालकजोहै सो तेरे वड़े रसीले मधुर और अ
मृतके समान सुंदर फलजोहैं सोमांगताहै भ

कतेवासिखरजो अनंतवडाऊचाहै इसतें इहबाल
क इन फलोंको प्रापतनहीं करसकता तोते तू
हीं दयाकरके मेरेपर उपकार कर और इसबा
लकको अपने सुंदर फलजोहैं सोदे और मेरा
आसीरवादले नाभादासजीकहतेहैं किहे सं
तो जव इसप्रकार प्रल्हाददासजीने तिसआंव
के वृक्षको वडेहितप्रीतीकेभीगेहूये वचनोंसे
कहा तववेवृत्त उत्तम ततकालहीं अपनेसंह

णी फलोंकोलियेहये मंदमंद कुकनाहूआ नम्रभा

वसे आयकर भक्तप्रधानके चरनोपर सीसनाव

देना आरंभ भया ऐसेतिसका सतकार और उपका

रदेखकर प्रल्हाददासजी गदगद प्रसन्नभयेहू

ये कोमलवाणीसे तिसमालाकारको कहनेल

गे किहेभाई मालीप्रवतं वेग आयकर आनंद

र्वक अपनेहीहाथसे इहसुंदरफल उतारक

रके मेरेइसबालककोदे नवमालीइस अदभुत ।

७२
भ०
१०

कौतुककोदेखकर अचरजके वशभयाहुआ तु
रतभक्तप्रधान प्रल्हाददास जीकेचरनोपर सी
सधरदेताभया और हाथजोडकर दीनवाणीसे
विनतीकरनेलगा किहेभगवन तुमधन्यहो औ
रधन्यतुमारी महिमाहै किजिन्होने इहत्रलोकि
क मनकेहरनेवाला चमतकार प्रतक्ष दिखायाहै
जैसेमुनीपुलस्तने मेरू अर्थात सुमेरपरवतको फु
कायदियाथा तैसेदीनघालतुमने इसब्रह्मके सि

10

खरको आकाशसे पृथवीपर अपनेचरनोंमे क्रकाय
लिया है हेभक्तसिरताज इहतुमारा अनंतप्रभाव
जोहैसो एकमुखसे कैसे कथन करसकूं मै मूढ
मतीने जडताकरके पूर्वदीनदयालको कुछहा
सीकरीथी सो अपराध कृपानिधान मेरेकोआज्ञा
नॅकर आएतमा करिये ऐसेसुनकर भक्तप्रथा
नप्रसन्नहोयकर तिसको आसीरवाद देतेभये
तवतिनके शिष्यवालकने हरषपूर्वक स्तुतीसे

जान

७२ भ. ॥

निम द्रुलके पांचफललेलिये गुरुजीदेखकरके आनंदसे कहनेलगे किहेपुत्र अव इनफलोंको पायकरके कहोतुमारे मनकी अभिलाषापूर्ण भईहै किनहीं तववालजोहै सोप्रणाम करके कहनेलगा किहेदीनयाल तुमारीकृपाके प्रसाद सें अव इनसुंदर फलोंकोपायकरके मेरेमनकी कामना सवपूर्णहोय गईहै।२। चौपाई। तवप्रसन्नमानस गुरुरागे। तकूहिंवदन असभाषणलागे ॥

नरु उदारतवकीन अघोरा। इहप्रसन्नमानससिसमो
रा। मैआनंदहृदितअवनेहू। तुमहिं देहुं आसिषम
खपहू। सुखसमेत तवसदा सुहावा। रहहुनबल
कलभेदनिछावा। अवतवहोहु सर्ववतभाई। मोर
रुचिर सुभआसिखपाई। करिप्रणाम तवविटप
सुहावा। रहोसुजायगगानपथछावा। असकौतु
क सवलोगनिहारी। इतउत सुनत श्रवण नरना
री। आयचकित चितदरसनलागी। निजनिजआ

७२
भ०
१२

मथाम सवत्यागी। सबकरयथाउचितसनमाना
चलेकरतहरिभक्तसुजाना। छिषसमेनमानसहढ
घाये। नैमशार्नतीर्थनटध्याये। अ्सइहभक्तिमहा
नमसोहा। लोमहरष प्रदमानसमोहा। मैसंतम
वदन निजवरना। रामभक्तिमानसहढकरना।
दोहा। हरनभीन संसय सकलजन अल्हाद चरि
त्र। जेसादिरस्रुति सुनहिंनर होहिं सुपरमपवि
त्र॥१॥ टीका। नवगुरु अल्हाददासजी वडे हरषसें

१२

निसहदलकोकहनेलगे किहेहदउदार आजतंने
मेरेइस बालकको अत्यंतप्रसन्न कियाहै तांतेमै तेरे
१२ परमप्रसँभयाहूआ हेसनेंकी मूरती तेरेकोइ
नर ह
ह आसीसादेताहूं कितू आनंद और सबके स
हित संसारमे सदैव हराभरा औरनित फूलता
फलताही रहें तेरेकोआयुपर्यंत किसीप्रकार
का कोई भी कलेशआपत नाहोवे अवतू हेप्या
रे मेरीइसआसीसाको पायकर अपनीघरवेली ।

५२
भ.
१२

^ स्थित होगया इसप्रकार प्रल्हाददासजीकावचन सुनकर वृहदजोथा सो तत्परतप्रणामकरके अपने स्थानपर जायकर आकाशमा रगमें ^ २

आकृतीकोधारन करले अर्थात जिसप्रकार प
हिलेथा तैसेंही अपनेस्थानपर जायकर ^ स्थित
होजाताभया इस अद्भुत कौतकको देखकर
सबलोग नारीनर अपने अपने ग्राम और धा
मको त्यागकर दरसनकी अभिलाषासें धावते
हूये चलेआये तबभक्तप्रधान सबका यथायो
ग्य आदिर सतकार करकर फिर शिष्योंके सहि
ततहांसे बरथ कर आनंदपूर्वक नेमशारणतीर्थ

13

परचले ग्रावतेभये इसप्रकार इह रोम रोमकोहर्

षदेनेवाला भक्तीका सुंदर महातम जोहै सो मैने

गायन करदियाहै इहकैसे भी महातमके सहित

प्रल्हाददासजीका चरित्रहै कि हृदयमे रामचं

द्रजीकी भक्तीके दृढकरनेवाला ग्रोर संपूर्णभय

भ्रमके नासकरनेवालाहै जोउरुष इसको श्रद्धापू

र्वक श्रवणकरेंगे सो ग्रवश्यपापोंसे छूटकरप

रम पवित्रहोजावेंगे इसमे कुछसंशयनहीं है।

७२ भ॰ १४

इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथे भगवद भक्ति महातमे मिहांसिंहकृत भाषाटीकायां प्रल्हाददास चरित वरणनं नाम सरगः ॥

14

सोकरी फिर हाथजोड़ करकहनेलगा कि हेउजउ
त्तम आजतं धन्यहैं और धन्यतेरा स्त्रूवंसहै कि
जिसविषें तं ऐसी उपमा और स्नजसवाला भक्तों
मे प्रधानभक्त उतपन्न भयाहैं ऐसे वारवार प्रशं
सा वडाई करकर आनंदके वशभयाहू श्री राजा
वडेदीनभावसें चरनोंपरसीस नायकर भक्तोंप्री
तीसे भक्तसभको विदायकर देताभया सोउन्न
कीम्रती नंददासभक्त नवतें घरमे निवास क

भ.
१५

रके संतभक्तोंको सेवता सेवता अंतकाल शरीर
को त्यागकर भगवानकीकृपासे इसमहाअगमसं
सार समुद्रसें यतनकेविना स्वगम सहजेही पारहो
यगया इसप्रकार इहनंददासकी भक्तीकीसुंदर
गाथाजोहै सोमैने मतीके अनुसार कुछ संक्षेपक
रके गायनकरदेईहै ॥२॥ इतिश्रीभक्तविनोद ग्रं
थे भगवद्भक्ति महात्मे भाषाटीकायां नंददासच
रितं नामसरगः ॥ ॥

मिहांसिंहकृत

अथजस्वस्वाम चरितं। दोहा। श्रीजदुपतिपंकज
चरनविमलभक्तिरतिदान। करहुँग्यानगाथ्याक
थन वदन सहविमनमान। चौपाई। अंतरवेदि
देसमहिमाहीं। जस्वस्वामननाम दुजताहीं। सोह
रिभक्त वैषणवभावा। हृषवपकनहिमदनस
हावा। विमवहीनकरहिंनहिसंगा। किरषिकर
मदुजहृदयउमंगा। नहिमनयथालाभवनआई
करहिं विप्रसंतननसिवकाई। अवसरएक चौरवन

८. भ.

माहीं। हरिलैगयो हृषवउजनकाहीं। उवितताम
अन्वेषणहेतू। लगेपाभ्रमनयलविडुननकेतू।
एकहिंरह्योहृषवगृहमोरा। आजमहगयोलेतस
वचोरा। भयोअभावसंतमिवकाई। अवचलिम
रहूं सदनविषखाई। असजियगननभवनजव
गवना। तासविचारि मरण श्रीरमना। विप्रहृष
व सहश्ररविनाहीं। कीनउपामारग सरनाहीं।
तासदेविउजआपनजानी। लावासदनहरषउर

मानी। यथापूर्वकार्शिकनिजकरमा। त्यागणोक
रनविप्ररनधरमा। करनकछिरसंतनसिवकाई
गयोवरषजवनाम्हविहाई। मोऊचैारजहिम्हष
वछुरावा। विप्रनकेनगवनकरिग्रावा। दोहा
नेविलोकिहृगाम्हषवनहंभनत चकतचितहा
य। वंध्योजवनजजमरदनहरू मोरम्हषवरवसोय
टीका। ग्रवश्री जउनंदनभगवानके चरनक
मलोंकीभक्ती प्रीतीकेदेनेवाली ग्रोर वडी म

भ.
२

2

नोहरगाथानोहै सो छबीसनमानसे गायन क
रताहै ओरवेधीरमजो पृथ्वीतलपर प्रसिद्ध
है तहांजसस्थानमनामकरके एकब्राह्मण भ
गवानकाभक्त वेस्नवधर्ममे प्रवीन होताभया
सो बडानिरधन घरमे केवलएकही बैलराख
ताथा ओर तिसीके साथ्यकिरषी कर्म अर्थात
करसाणी करकर जोकुछ आपनकली सोसंत
भक्तोंकी सेवामे लगायदेताथा तिसब्राह्मणने

२

पहीवनधारन किया हूआथा तवएक समय ग्रा
मणके तिसबैलको कोई उष्टचोर चुरायकरके
लेगया तिसके खोजनेके लिये सो जहांतहां वण
स्थल ग्रामोमे भ्रमनकरनेलगा ओर दुःखी हो
यकरके कहताहै किदेखो घरमे मेराएक बैल
हीं आधारथा सोभी चोरहरकरके लेगयाहै अब
संतोंकी सेवाभी जातीरही तातेघरमे चलकर ओर
विषखायकर मरजाताहूं अवजीवनेका कछुपमे

८. नहीं है ऐसे विचारकर जब घरमै आय आपतहू
भ. आ तब भक्तहितकारी भगवान तिसका मरण
३ विचारकर कि अब इह अवश्य प्राणोंकानासक
३
रदेवेगा तरततिसके बैल समान एक सुंदर बै
ल रचायकर तहांमारगमै स्थितकरदेतेभये त
वब्राह्मणतिसको देखकर और अपनाजानक
र बडेहरषसे घरमै लेजायकर बांधदेताभया
फिर पूर्वके समान तिसबैलके साथ अपनाको
३

रशिक कर्म अर्थात करमानी करकर संतोंकी
संदर सेवाभक्तीजोहै सो करनेलगा इसप्रका
र जब वर्षवतीत होयगया तब एकदिन सो
ई चौर कि जिसने ब्राह्मणका वैलचुरायाथा
तिसके घरमै आय प्रापतभया और तहांवैल
को बंधेहूये देखकर हृदयमै बडा अचरजमा
नकर कहनेलगा किकैसा चमतकारहै इह
वैल तोबिलकुलमेरेही वैलके समानहै ॥२॥

चौपाई। करनचैारचिंतनग्रसनीके। ग्रावासदन

सोचवसजीके। देखिनकेतहूषवनिजबांध्यो। ग्रा

वावेगलकरयरिकांध्यो। सोऊहूषवऊजनहारनि

हारी। गयोसदननिजबहुरिसिधारी। ग्रसप्र

कार इतउनवहूवारा। सोऊहूषवहगचोरनिहा

रा। नवऊजचरननसमतिसीसा। नावनभयोउ

हूमतिखीसा। वहूरिवदनग्रसकहनउचारी

सैनव हूषवविप्रबनधारी। हरिग्रारएपलेतनि

४

जथावा। इहकसतानिल्पलवपावा। कहोसम
कारणउजराई। मैअवदेहुंनृषवनवलाई। देवि
प्रभाव दरस नवदेवा। मैनिजजनम सफलकरिले
वा। अवकुकरम सवदीनतयागी। विप्रलोरवर
नन लवलागी। स्वामिनकरहु कृतार्थमोही।
वेदहुंवारवार अवतोही। अवमहिचरनशरण
लिखिदेवा। करहुमंत्रउपदेस अभेवा। तासक
थनसुनिविप्रसुहाया। भयोनरत कोमलवस

राया। हरषिचौरकहं भक्तिवढावन। दीन्होराममंत्र
जगपावन। पापसमनतारकअभिरामा। आवास
दनप्रतिउरकामा। लेनसत्तृषववित्रगृहजाई। सादि
रदीनचरनसिरनाई। आसिखलेत वहुरिहरषाता
आवाभवन भक्तिमदमाता। उजप्रसाद संस्तोत स
खिपागा। भयोप्रधानभक्ति वडभागा। अमरइहचरि
त यथामतिमोरी। कीन वदन वरणन क
छु थोरी। देखहु संतन्ह संगति वोरा ॥

भक्तसहभाउरमतिचोरा। दोहा। जिमियारस संस
र्गगाहि आयसहोतन्निशंक। तिमिसज्जनसंगत
सवद नासनकुमतिकलंक। २। टीका। नवचोर
जोहै सो ऐसाचिंतनकरके अपनेघरमैचलाआया
तहांसोई वैलवांधाहूआ देखकरके फिरब्राह्मण
के घरमैचलाआया तहांभीसोई वैलवांधाहूआदे
खा फिर अपनेघरमै चलाआया ऐसेभ्रमकेवश
भयाहूआ चोर बहूतवार इधर उधरफिरा परंत

५. भ. ६

6

दोनोकोरवे एकहीं वैलदेखताभया तवनोभ्रमन
को त्यागकर दीनगतीसे आयकरके ब्राह्मणके
चरनोपर सीसनायकर कहनेलगा किहेब्रतधा
री भक्तमैंड्रषवुजी चोर तमारे वैलको चुरायक
रके लेगयाथा अवकृपाकरके प्रभूमेरेको सत्य
सत्यकारणजोहै सोकहिये किनिसीवैलके स
मान इहवैलतमनेकहांसे पायाहै मेतमारावै
लजो चुरायकरके लेगयाथा सोदीनघाल अव

६

त्यागदेताहूं क्योंकि आपकादरसन और प्रभाव
देखकरके मेराचित्तशांतीको प्राप्तहोयगया
है और आजमैने अपने जनमकोभी जगतमे
सफलजानाहै और विनसेमंदकरमोकोभी त्या
गकरदियाहै अवनाथ तुमारेही चरनोको मै
अपना उद्धारमानताहूं और वारवार वंदना क
रताहूं कृपाकरके अपनेचरनोका सेवकजान
कर मेरेकोमंत्र उपदेशकरिये और मेरेजनमज

भ. ८

नमके पापोंको हरिये इसप्रकार जिसकी प्रार्थनासु
नकर ब्राह्मणनरनहीं दयाकेवश होजातेभये औ
र अपनेपाससेविदायकर सर्वसुखोंकामूल और
सर्वजगतको पवित्र करनेवाला रामगंत्रजोहै
सो बडीप्रीतीसनेहसे जिसकेकानमे सुनायदि
या तबवेचोर ऐसे तारकमंत्रकोपायकर आनं
दमैमगनभयाहुआ मानोसर्वकामना पूर्ण क
रके अपने घरमें चलाआया तहां से ॥

८

वेचारीकावैलजोथा सोलेकरके गुरुजीके घरमै
चलाआया और चरनोपर प्रणामकरके तिनको
देदेताभया फिर आनंदपूर्वक आसीसालेकर भ
क्तीके मदमैमगनभयाहुआ अपनेहीं घरमै चला
आया तहांकुछकाल भगवानका स्मरणकर
ता करता वडभागी चौरजोथा सो दृढ एकेप्रसा
दसे महांभक्तीमान और भक्तोंमैप्रधान मानोस
वे गुणोंकीखान होताताभया इसप्रकारइह च

६. भ. ८

8

रित्रमैंने कुछसंक्षेप करके गायन करदियाहै
देखिये उत्तम संगतीका कैसाविचित्र प्रभावहै
कि महाराज ऋषभजी थैरजोथ्या सो भक्तोंमे प्रधान
भक्त और सर्वगुणोंकी निधीहोयगया जैसेपा
रसके स्पर्शहोनेनें लोहा मलको त्यागकरके
कंचनहोयजाताहै तैसेहीं संसारमे उत्तमजनो
की संगतीजोहै सो कलंक और कुमतीकाना
शकरके हृदयमे निरमल सुमतीका प्रकाश



भ. ५.

करदेतीहै ॥ इतिश्री भक्त विनोदग्रंथे भगव
द भक्ति महातमे भाषाटीकायां जस्सस्याम
चरित वरणनं नाम सरगः ॥

मोहनसिंहकृत

9

अथ भोरव चरित्रं। दोहा। अव अति मवर प्रमोद
मद प्रणतपालभगवान। भक्तिमहातमललिन
तरकरहकथनकछुआन। चौपाई। नृपपांचाल
देसइकआजा। पुन्यसकलसमरूहिमाजा।
सदानिरतनरहरिसेवनरजा। विस्नुनामनजिकाम
नहूजा। मणिवितवसन असन जनसेवा। निसि
दिनकरत संतमहिदेवा। हिंसकचोर कपटिध्य
गकोई। आवतसंतमेषधरिजोई। जानिभक्तजन

७४
भ०
१

भक्तिअभेवा।मनवचक्रम करतनृपसेवा।नाक
वक्रारहिं अर्थकुरसाता।अमनरनाथ हविरवन
याता।नहिसविसंतभक्तिसिवकाई।रहीदिसा
त्रमकलसभल्लाई।एकदिवसनिजभेषबनाये
नृपतिद्वारभांडवजनआये।सोनरिंदकरवंचिन
हेत।ललितमालमहाअवषेकु।गोहवसनतॅस
जनसहाये।कपटभेष निजसंतवनाये।कासदे
वदेवनसवदाता।रटननिरंतरचराचरज्ञाता।

न

द्वारपाल सन भाषन भाई। नृप सन करहु कथ
न अवनाई। आये संतन द्वार नवनाया। द्वारपाल
सनि भवन सिधाया। नृप सन जाय भषो मृदु
वानी। आये संत द्वार तव ज्ञानी। वैस्नव भेष
भक्त भगवाना। नृपति सुनत न मान सहरषाना
हरि भक्तन दरसन सुख दाई। देवन हर गन ला
लसा छाई। दोहा। आवा वेगन रिंद्र मणि न ज
न भवन निज द्वार। देवन संतन सह पहरा भक्त

भ० ४४
अ० २

वैस्नवज्वाह । नगलपुरू कालकट इवपसोव
रनमहिताय । प्रच्छनस्वागति भक्तिजनलासन
लीनविलाय ।२। टीका । अव औरवडे आनंदके
देनेवाला अनसेकरके पवित्रदीनवंध और शा
रणागत पालक भगवानकी भक्तीका सुंदर
महात्मजोहै सोकथनकरताहूं पांचालदेसवि
षें विस्नभगवानके भजनसेवनमैलीन औ
र अपनेसावसंपतीके सवसमाजकेसहित

एकराजाप्रसिद्धहोताभया सोकैसा कि जिसकोवि
ष्णुभगवानके नामकेविना औरदूसराकोई विष
यनहींथा औररात्रीदिन अन्नधनवस्त्रोंकरकेअ
नेकोंसंतभक्तोंकीसेवाहीं करतारहताथा कोई
कपटी चौरपापी संतभेषधारकर तिसकेघरपर
चलाआवता तोतिसकोभगवानकाभक्त जान
करबडीभक्तीप्रीतीसे भजनसेवन करकर तिस
के मनकी अभिलाषाको पूरणकरना ऐसेतिस

७४
भ॰
३

राजानेसुंदरखलजोहै सोधावनकियाहूआथा और
तिसकी इहसंतभक्तीकी महिमा और चरचाजहां
तहां देसदिसाओंमे फैलीहूईथी तवएकदिनअपने
रूपको छिपायकरके भांडजोहैं सोराजाकेछलने
केलिये तिलकमालामुद्रा औरगेरीरंगे वस्त्रधार
नकियेहूये संतोकाकपटभेषवनायकर सववस्तु
खदायक देवोंकेदेव वासुदेवभगवान सोहैं ति
नकोसमरते हूये राजाकेद्वारपर आयआपनअपे

३

तहां द्वारपालोंको कहनेलगे किभाई तुमभीतर
जायकरके राजाकोकहो कितुमारेद्वारेपर संतम
हात्मा आयेहुयेहैं और दरसनमेलाकियाचहते
हैं ऐसेतिनका कथन सुनकरके एकद्वारपाल
तुरत भीतर चलागया और राजाकोजायकर
कोमलवाणीसे कहनेलगा कि महाराज आ
पकेद्वारे पर भगवानकेप्यारे संतभक्तदरसन
मेलाकरनेकेलिये आयेहुयेहैं तवराजासुनक

रके परमहरषकोप्राप्तभया संतभक्तोंके दरसन
की अभिलाषावालाभयाहुआ तरतघरसेनिकल
कर द्वारपरचलाआया और वैस्नवसंतोंका दरस
नकरकर दोनोहाथजोडेहूये चरनोपरदंडवत
प्रणामकरताभया फिरनम्रवाणीसे सवकुसल
पूछकर प्रीतीभक्तीसेल्याकर स्नमआसनपर
विठायदेताभया।।१।। चौपाई। कहतधन्यतवसंत
उदारा। जेविरक्तविचरतसंसारा। तजिनिंद्रियसुतवि

४

सादिवरभागी। मोहमदनमदमदननत्यागी। के
वलवासुदेवपदप्रीती। कीनीसमनिगुणगुणनी
ती। नमप्रभुपन्यथन्यमोहिकीना। जोनिजबसम
मदनचलिदीना। कहिहैंकौनसंतप्रभुप्रावन
प्राचभागवतमोरमहाबन। हनिकृत्रमवेसब
नृपवानी। भनतमनहूनरनायकमानी। हमनो
हविरहातिकाम्नागी। प्रायऋबपपरिदसनला
गी। हननभूपनवबहजमसहावन। कीननमार

७४
भ.
५
त

ललितसुरआवन।जानिसंतसेवकअनुरागी। ह
मआयेतवदरसनलागी। नवनवेसजोरतजपा
नी।नेमभक्तिकरिविनयवखानी।करिसनानअव
पूजनकीजै।कृपानकेतनपयअसकीजै।नवल
गहेहिंसंतकवितोरे।नवलगवसहू मदनजन
मेरे।दोहा।भांडखनन नपवचन अस कहत
सकवि मनमाहिं।हमकहंगावन अवश्य अव
रहनउचितथिरनाहिं।टीका।फिरराजाकहनेल

गाकिहेसंतउदार तुमधन्यहो जोऐसेविरक्त अ
ध्यान स्त्रीउत्रधनधाम और मोहमदकोत्यागक
र निरमोहहोय करके जगतमैविचरतेहो औ
र निरन्तरकरके वासुदेवभगवानकेहीचरनो
का भरोसारखतेहो हेभगवनतुमनोधन्यहो
परंतु आजमैभीधन्यहोयगयाहूं किजिसको
परमेस्वरकृपसंतोने घरबैठेआयकर दरसन
दियाहै इसप्रतनमेरेभागोंकीवडाईहै अवक्त

७४
भ.
६

पाकरके कहिये कि प्रभुतमाराआगमन जोआ
वनाहै सोकहांतेंहूआहै तबइसप्रकार राजाकी
वाणीसुनकरवे कपटी वैस्नवजोवनेहुयेथे सो
कहनेलगे कि हेराजन हमद्वारिकाकोत्यागक
र अवधपुरीजो अजुध्याहै तिसकेदरसनको च
लेजातेथे मारगमे जहां तहां तुमारी संतभक्ती
औरजसबडाईको जोसुना तोदरसनमेलाकरनेके
लिये ईहांतुमारेनगरमे चलेआयेहैं तबराजासे

६

यजोऽङ्कार वर्णीनंमवाणीसें कहनेलगा किहेसंत
जी महात्मा अवआप आनंदसेसनानकरके पूजन
करिये ओर मारगका श्रमकलेशजोहै सोनिँरि वा
ये फिरनवलगअभुतमारी इछाहुचीहो नवलग
ईहामेरे घरमैवासकरिये इसप्रकार राजाके मु
खसेबवन सुनकर भाइजो सोहृदयमे सकुचक ये
र कहनेलगे किहेराजन हमकोतो अवश्यजा
नाहै एकस्थानपर स्थिर होयकरबैठना उचितन

५४
भ.
८

हीहै।१। चौपाई। पघपतिमूलगरविवेकारन। कीन
विविधमलविनयउचारन। नघपतिमिनहुं नमामो
काहु। लखनरेस संजत उतसाहु। मतिग्राभणव
सनविनलाये। देततिनहिं जवकीनविदाये। सो
ग्रसपायद्वयसनमाना। लागेकरन ननु कलसा
ना। निजमतभांर प्रकटतिनकीना। नवनरनाथ
कपटक्रतचीना। भक्तसुजानजानगनिपराऊ। की
ननननकरोविनियकाहु। जानिभक्तहरिभेषसु

८

ह्ावा। करिप्रणाम न्रप भवनसिधावा। इतभाति
कमानस उरछाना। भक्तिविचारहचिर हप्हता
ना। संतभेषजगपनमहावन। हमकोमोधारन
मनभावन। जदपिहमारकपट न्रपलेखा। तद
पिजानिसभसंतनभेषा। करिप्रणाम निजस
दनसिधासो। हमप्रभावनहिविदतनिह्रासो।
प्रवनतजव ह हमावदमहावन। संतभेष
पावन मनभावन। करतभांडमसहृदयविचार

७४ भ॰ ८

भयेभक्तवैसव ब्रतधारू। सोयपुनरतनवसनन्द
पलीने। संतनकहंविभक्तसवकीने। रटतनवद
नभगवन श्रीरमने। जहंतहंमादितभक्तिरतग
वने। सुचिसंसर्गभूपवरपाई। भयेग्रभक्तभक्त
जडपाई। सचिववविलाकि चरितग्रसचारू। क
हतनरेश रुचिरव्रतधारू। विदतभक्तभगवन
सलकेरू। जाकेउरप्रभदीननवंधू। वमनतसदा
संतन हमलेखो। ग्रहोथन्सन्तपसंसनतितदेखो

किइहदीनानाथ मोनहींचलतेहैं अव हमभीई
हांहीं वासकरतेहैं द्वारिकामैकालेकरकेजावें
यही कृपानिधान हमारे सवकुटंवके अधारथे
हमतहो किसकी शरणकोप्राप्तहोवेंगे ऐसे
कथन कर कर अन्नजल सवत्याग करके रात्री
कोतहो वापिकाके किनारेपरहीं सोयरहे तवर
णछोड भगवानतिनको स्वपनेमे कहनेलगे
किभाई इहपरमभक्तके धारनेवाला रामदासवा

५९
भ०
१०

10

स्मरणजोहै सोमेराअनंतप्यारा ओर वडाहितकारीभ
क्तहै मैतिसकीभक्तीके वशहोयरहाहूं अवअपने
द्वारिकाधाममें नहीं जाऊंगा हेब्राह्मणोंनममेरीमू
रतीके समभाग अर्थातबराबर इसमेरेभक्तराम
दाससें धनतोलकरके लेलेवो ओर द्वारिकामेंजा
यकर मेरी सुंदर नवीनमूरतीवनवायकर भक्ती
सनमानसे तहांमेरेभवनमें स्थापितकरदेवो मैं
तुमारी पालना करता रहूंगा ॥३॥ ।

१०

चौपाई। रामदासकहंवहुरिरसाला। दीनस्वपनश्र
सदीनदयाला। इनहिंमोरम्हरतिसमवाहू। विप्र
देहहाटिकपनभाहू। पुनिप्रभुदीनस्वपननिसि
माहीं। जनवररामदासप्रियकाहीं। सोतव अलं
कारनिजकाना। रच्योजतीनरकन परिमाना। न
लायरनममम्हरतिसंगा। देहुतोलिनिजहृदयउ
मंगा। तोरस्रवणभूषण समसोई। होहिंहृविर
ममम्हरतिजोई। असप्रकारनिसि स्वँननिहारी।
प

९९
भ·
॥

रामदासमैंप्रानतउनारी । आयहुतोंनस्वपनसवका
हा । विप्रसननतविसमयवसराहा । मोरेभयोस्वपन
निसिपहा । करहुंउपायकवन प्रवतेहा । लावहुं
कहांनिधनधनमोई । असउजविपुलसोचवसहो
ई । नियमननभनन स्वपनमनकाई । सोप्रवीन प्र
सवदनअलाई । ननहुसकलचिंतापतिमाना । प्र
भुमोरेअसस्वपनवखाना । तवनिजकरन प्रभ
नेउमंगा । धरहुतलाममनसलिसंगा । होहिंतत्व ॥

असदेखिप्रभुजारी। लेतजाहिंनिजसदनसिधारी। अ
सभाषतपतिदेवतनारी। करनआभरनदीनउता
री। विप्रदेखिमानस सकुचाना। इहकसहोहिंत
त्वभगवाना। तवभामति असवदनउचारा। की
नयतनधूलिकमिलिभारा। उठनदेवभक्तभयहा
रे। तवकमलावशकरपतिआरे। भक्तहेतप्रभुक
रहिंनकाहा। विप्रस्वनतअसनृपनिराहा। गयो
हरषितववापिकिनारे। लीनतवरतप्रभुवहिरीत

९९ कारे ॥ दोहा ॥ वहुरि नलाउजवर धरी शिला
भ० भक्त चितचोर । करण हेम आभर्न त्रिये रा खि
१२ दीन इकबोर । ५ । टीका । फिर भगवान कृ
पानिधान रामदासको स्वपनदेतेभये कि हेत्रा
लण तू इन पुजिकों को मेरी मूरती बरावर
धनतोल करके देदे सो इहलेकरके द्वारिका ।
को चले जावेंगे ऐसे कहिकर फिर भक्तपा
ल रामदासकी स्त्री को सपन मै ॥

१२

कहनेलगे किहेसुशीले तेरेकानमें तीनरत्नोपरिमाण
सुवरणका भूषणजोपड़ाहुआहै सोतेंमेरी मूरतीके
साथतोलकर इनमेरेस्तनकों कोदेदे हृदयमेंकछु भ
म संदेहमतकरना इहतेरेकानकाभूषण मेरीमूर
तीके तुल्य अर्थात वरावर अवश्यहोजावेगा इस
प्रकार रात्रीके समय स्वपन देखकर पृजिकजोहैं
सोप्रातःकाल रामदासकेपास आयकर स्वपने
का सब वृत्तांतसुनाय देतेभये तबरामदास सुन

९९
भ०
१२

करके अवरजके वशहोयगया और हृदयमें वि
चार करनेलगा कि मैंभी राज्ञीका एही स्वपनदे
खाहै अब कौन उपायकरूं मै तो दीन निरधनहूं
इतनाभारी धन कहांसेलाऊंगा ऐसे चिंताके व
शभयाहूआ ब्राह्मण स्त्रीके पास जायकर स्वपने
का हृतांत सब सुनायदेताभया। तव सो चतुरभा
मनी सुनकरके कहनेलगी कि हे प्राणनाथ कु
छ चिंता सोच मत करिये दीनवंधूने स्वपनेमें।

१२

13

मेरेकोभी कह्याहै कितूं आनंदपूर्वक मेरीमूरती
केसाथ अपनेकानकाभूषण ललाजोतताहूंहै ति
ससें तोलकरकेदेदे मेरीकूपासे तेराकरण भू
षण मूरतीके साथ बराबरहोजावेगा सो लेकर
के पूजारी हरषसें द्वारिकाकोचलेजावेंगे इसप्रका
र कथनकरकर सोपतीव्रता ब्रह्मपतनी तुरत
अपनेकानकाभूषण उतार करके पतीको देदेती
भई तवब्राह्मण तिसतीनरती सुवर्णके करण

९९
भ
१४

भूषणकोहृदयमें संकुचकर कहनेलगा कि अहो
इह्लकैसे भगवानकी मूरतीकेसाथ तल्पहोवेगा
तवतिसकी स्त्री कहनेलगी किहेपती तं विचार
करकरकेदेख जो एजकोंने मिलकर दीनानाथ
कीमूरतीको उठावनेकेलिये अनेकहीं उपायकि
ये परंतवेतिनसेंनहीं उठाईगई और तिसीमूरतीको
तुंपतीअकेलाही उठायकर मोरगाडीपरधरकर लेआयाहै
तोतेअवकर्णभूषणकेसाथ तल्पहोनेमें संशयकरना

१५

प्राणनाथ इहकौन बुड़ीकीबातहै भगवानकृपा
निधान संसारमेंभक्तोंके नमिन्नक्यानहीं कर
तेहैं नवरामदास सुनकरके मौनहोयगया
और नरनन्नायकरके भगवानकी मूरतीको
उठायलयाया और बलाजेतराजहै जिसकी
एक चोरधरकर हमारीचोर स्त्रीके कानकाभू
षणजोहै सोधरदेताभया। ४। चौपाई। लोक
विलोकि चरितमसकाये। मननवरन सजक

१४
म.
१५

15

विसमाये। इहकसमस्षामूढहवकरहीं। कहुवि
तम्मज्ञानिनफपरहीं। कियेविविधहमयतनमहा
ना। उवोनशिलाभक्तसुवदाना। श्रवतमकरन
श्राभरनपाई। लागोनल्पकरनकमभाई। रामदा
सतिनकरसुनिवानी। वोल्याहरिभरोमजियठा
नी। गुरुलाघवलीलाभगवाना। तवहुंनल्पकरिले
हुसुजाना। विप्रवदनश्रसतिनाहिंश्रलाई। सुमति
हुसजवनलाउठाई। नीनरकतकंचिनमननाहो।
भईनल्प मूरति सुरनाहो।

म

१८

देखिचरित्रसकलविसमान्यो।मूढ़पकनतहांव
दनवखान्यो।हमनलेवकंचनइहभाई।लेवदे
वमूरतिसुखदाई।असकहिलेगयतननभ्रतठाव
न।शिलादिव्यभगवानसुहावन।सोकिमिउ
ठहिंहरनजनत्रासा।यदपिकीनतिनविपुल
प्रजासा।अंतहारिनिजसदननसिधाये।सोअग्राभर
नकरनकोसमत्रियपाये।विप्रभक्तिअदभुतमन
भाई।जानसकलनिजवदनसिराई।दोहा।धम

धन्य इहधन्य ऊन जासभक्तिवसआय। अलवलन
नल्पनलाभये करन आभरनभाय। नवम्रतिर
एक्कोउकहं रामदासउनल्पाय। कीनस्थापितभ
वननिजभक्तिपीतिसरसाय। लागेणसेवनदिवस
निसि तासभक्तअभिराम। रसोसियनवलगाज
गन पलनविसारेस्याम। अंतकालहरिकृपातें
विनश्रमत्तासतनिकाय। ऊनवरभक्तिप्रसादतेंली
न परमपदपाय। अवलोंसोसंस्वति विदत सक

१५

लदेवसिरमोर। भक्तहेतनतजि द्वारिकावसहिं ग्रा
मनाकोर। अमप्रकार इहचरितमैं रामदासमन
ल्हाह। कीनयथामति कथनकछु हासभक्तिप्र
दचाह।५।। टीका। तवइस वारताको देखक
रके लोगसव मसकावनेलगे अधीन हासीक
रनेलगे ओर इनकभी अचरजकेवशभयेहहये
कहनेलगे किइह ब्राह्मणकाकुछ वितपन अ
धीन सोदाई होय गयाहै ओर मूढ हयाहीं इ

हक्याहठकरताहै हमसवनेमिल करके कोटहीं
यतनकिये पयंतइहदेव शिलाजोहै सो नहींउ
ठी और अवइहमूढ स्त्रीके करणभूषणके सा
थ तोलकरके वरावर करनेलगाहै तवराम
दास तिनकीवाणीं सुनकर और हृदयमें भ
गवानका भरोसाराखकर कहनेलगा किहो
भाई गरुलाघव अर्थात भारीओर होलाहोना
भगवानकीलीलाहै तमवरावर सुणकरकेले

लेवो इसप्रकार कथन करकर ब्राह्मणनेनव कृ
ष्णभगवानमाको स्मरकर नलाउठाई नवतीनर
त्नीपरिमाणजो कानका भूषणथा तिसकेसाथ
भगवानकी सो शिला बराबरहोजातीभई इस
अद्भुत कौतुकको देखकर सबलोग अचरज
को प्राप्तहोयगये नवतिनप्रजको मैसे एक
मूढ कहनेलगा किहम इस स्वरणकोनहीं
लेने अपनेदेवकी सुखदायक मूरतीजोहै सो

रहमलेवेंगे ऐसे कथनकर कर भगवानकी म्र
रतीको उठावने लगपड़े यद्यपि तिनोंने अनेक
होयतन उपायकिये तद्यपि भक्तहितकारी म्र
रतीकी मूरतीजोथी सो नहीं उठतीभई अंतको
लज्जितभये हूये हारकर ब्राह्मणकी स्त्रीके क
रण भूषणको लेकर अपनेघरको द्वारिकामे
चले आवतभये ऐार मारगमे रामदास ब्राह्म
ण की पवित्र भक्तीकी अनेकप्रकार शलाघा

वडाई करतेचले आवतेहैं कहतेहैं कि धन्यहै धन्यहै
इहब्राह्मण जिसकीभक्तीके वशहोयकर अतल
त भगवान जोथे सोतीनरत्तीके करण भूषणके
साथ तलामैतलकरके वरावरहोयगये ऐसे
शालाघाकरकर और द्वारिकामैजायकर भगवा
नकी नवीनमूरती वनवायकर भवनमै स्थापि
त करलेतेभये और ईहांरामदासभी दीनानाथ
की निसमनोहरमूरतीको ल्यायकर मनमानसे

विधिपूर्वक घरमै स्थापितकरके भक्तीप्रीतीसे सं
शयभ्रमको त्यागकरके रात्रीदिन तिसीके पूजन
सेवनमैलीनहो जाताभया। जबलगजगतमै जी
वतारहा भगवानके चरनकमलोंकी भक्तीके
विना और कोई अधारनहींराखा और अंतका
ल भगवानकीकृपासें यतनके विनासहजेही
शरीरकोत्यागकर भक्तीके प्रसादतें परमपदजो
है तिसकोप्रापत होजाताभया अबलगवे भगवा

नक्तपानियान संसर्गजगतमे प्रसिद्धहैं कि भक्त
की भक्तीकेवश होयकर द्वारिकाको त्यागकरके
डाकोर ग्रामविषे जायवसेहूयेहैं इसप्रकार इह
रामदास ब्राह्मणकीभक्तीजोहै सोमैने गायनकी
है इहकैसीभीभक्तीहै किजिसके श्रवणकरनेसें
भक्तपालभगवानके चरनकमलोंमे अवश्यप्रीती
उपजआवतीहै। इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथे भगवद्भ
क्तिमहात्मे भाषाटीकायांरामदास चरित्रवर्णनंनाम

मीहांसिंहकृत

९९
भं.
२.

सर्गः ॥

20

२.

अथरामदासचरितं। दोहा। प्रथमंजलमानसहरनभ
क्तिमहातमश्रान। करहुंकथनसादिर वदन क्रम
भक्तिवरदान। चौपाई। द्वारावतिकर पूरवकोरा। र
हाप्रसिद्धग्रामजाकोरा। रामदासप्रसनामसहाये
निवसहिंतहांविप्रसरवछाये। साकुटंवहरिभक्ति
प्रवीना। धरमसकरमरुचिरवनलीना। दसमीदि
वस हरिकानाना। असप्रतिमासतासव्रतठाना।
पावनदिवस एकदसमाहीं। धारहिंविप्रसव्रत

९९
भ०
१

काहीं। भक्तिप्रीतिसंतनतनिसिमारी। जायएकवरहिं भवनगिरधारी। ईहांकरत निजसदन अभेवा। भि
लाटिन करि संतनसेवा। असप्रकारकछुकालसि
राना। भयोविप्रवरजठिरमहांना। पैयाज्ञारएछोड
सहाई। नजीनविप्रभक्तसुखदाई। निवलअसकत
वृद्धजकाया। नवहंकंठवमोहमनछाया। नहितें
करि दरसनभगवाना। जातवहुरिफिरिसदन सु
जाना। अवसरएक इकादसिमाहीं। आवायविप्रपो

षवतकाहीं। द्वादसिकहं उजपारनकीना। भयोसि
सियलवषुषवलहीना। जरायसन गृहसकोनजा
ई। देवभवन निद्रा नहिआई। सोरठा। नवस्वपने
सभआय। उनहिंभनतनमरउवचनअस। देखिवसि
थलतवकाय। उपज्योभक्तकलेशमोहि। दोहा
नवमनवचकायानिपुण मोरभक्तव्रतधारि। अस
अगामनइखवसजननव सकहूं नहगाननिहारि।
तोते आपन सदन अवैले चलहोउजमोहि। सेव

९९ भ २

सहैां सज्जननहां तव आगमनश्रम खोई।१। टीका

अब और बड़ा सुंदर मनके हरनेवाला और श्रीस

भगवानके चरनोकी प्रीतीके देनेवाला भक्तीका

महातमजोहै सो कथनकरताहूं कहतेहैं किद्वा

रकाकी पूरब और एकजनाकोर नामकरकेग्राम

प्रसिद्धहोताभया तहांकुटंबके सहित मनवच

नकाया करके भगवानकी भक्तीमे प्रवीन और

सुंदर व्रतमे लीन रामदासनामा ब्राह्मणवासकर

नाथा तिसने इहव्रतधारनकियाहूआथा कि नित्य
दसमीके दिन द्वारिकामै चलेजाना और तहांएका
दशीका व्रतधारकर रात्रीभर श्रीगोपालजीके भव
नमै जागरणकरते रहना और घरमै भिक्षाटिनक
रकर अतथीसाधब्राह्मणोंकी सेवाकरनी इसप्र
कार कुछसमयवतीत होयगया तबवे ब्राह्मणवृ
द्धहोजातामया परंतुतिसने रणछोड भगवानकी
यात्रानोदी सो नहींत्यागी नित्यआयकर व्रत जा

८९
भ०
१

3

ग्रणइत्यादि सब करतारहा यद्यपि वउन्हउ निरवल
औरश्रशक्तभी होयरहाथा तद्यपि भगवान कृपा
निधानका दरसनपरसनकरके कुटंवकीमोह म
मताकेवशभयाहुआ फिर लोटकरके घरमेंही च
लाआवताथा एकदिन निराहार एकादशीकाव्र
तधारन करके द्वादशीको पारनजोकिया तोशरी
रखुढेपेकाग्रसाहुआ अतसेदीए औरसिथलव
लहीनहोयगया घरमैनहीजायसका तहांभगवा

३

नकेभगवनमैंहीं सोयगया और निद्रा आयगई तव
दीनवंधुभगवान सपनेमै तिसकोकहनेलगे किहे
ब्राह्मण तेराइह सिथल निरवल और हृडशरीरदे
खकरके मेरेकोपरम कलेश प्राप्तभयाहै क्यों
कितूं मनवचनकाया करके मेरा दृढभक्तहै तेरा
ऐसेहृडनिरवल और सिथल शरीरमै ईहां आव
नेका श्रमकलेशजोहै सो मेरेसेंसहारानहींजाता
है तातेहे सज्जन श्रवणही उचितहै कि तूंमेरेकोश्र

९९ भ० ४

पनेइवरमैहीं लेचल मै आनंदमेननहांहीं निवासक
रके तेरे इसआनेजानेके डुखकलेशको फिर इनने
ऊँमैनहींदेखूंगा ।।१।। चौपाई । विप्रसनत अमभगव
नवानी । आवासदनहरषमखमानी । शकटअरूढ
होत ततकाला । आवावहुरिभवनमहरपाला । एका
दसिपावनब्रतठाना । रहोकरतनाग्रनभगवाना । जु
गलजामजवरयनविहाई । नवइजनक्रुपासिंधुपेंजाई
अलंकारकलवसनमहाये । सकलडनादिदिव्यम

४

नभाये। रविभवनसंनतमनमाना। वहरिललितम
रतिभगवाना। करिप्रणामपकलमरथरना। रविस
यतनशकदनिजकरना। चलोवेगमानमसवक्षय
यो। प्रातदिवसमनवहादसिभययो। पूजकनिकरभ
वनहरिप्रायो। तिनहिंदैवरणछोडनपायो। देखजव
नसवेदउनगेया। सवकरहृदयसोचभ्रमछैया। क
हतदैवरणछोडहमारो। लेतकवनश्रमकहांसि
धारो। जानिनपरहिंकवनछलभययो। दीनघाल

६९
भ॰
५

कह्निके संगगयथे।दोहा।बसोभवन हरि कवन निसि ह्रदयहोत संदेह्र।दीनदयानिपकहे सोऊग येलेतनिजगेह्र।२।टीका।नवब्राह्मणभगवानकी ऐसीवाणीसुनकर हरषमे मगणभयाह्रुआ अपने घरविखें चला आवताभया तहांसे शाकटजो गाडी है सो लेकरके फिर ततकाल द्वारिकामे चलाआया और एकादशीकाव्रतधारन करके भगवानके भ वनमे जाग्रनकरतारहा जब दोपहर रातचलेगई

५

नवदीनवंधुके पासजायकर सवभूषणवस्त्र उतार
करके वडे सनमानसें तहांभवनके वीच अलगरा
खदिये श्रौर फिर आपप्रणाम करकर अकेलाहीं
प्रभुकीमूरतीको उठायकर श्रौर सनमानसे गाडी
मे राखकर रातोरात शीघ्रगतीसें धायचलताभ
या ईहांजव द्वादसीकेदिन प्रातःकालहोतेहीं पू
जकजन भगवानकी सेवाकरनेकेलिये भवनमे
आये तोक्यादेखतेहैं किरणछोड देव कौनहांस

६५
भ.
६

रनी नहींहै तवतोसवपुनारी वेउभ्रमसे अवरनकेव
र्णहोायकर परसपरकहनेलगे किभाई इह का
चमतकारभयाहै कछुसमझकविचारमें नहीं आ
वता हमारे रणछोडभगवानको कोनलेगयाहै
परंतुएक संदेहहोताहै किरात्रीके समय भवनके
भीतर किसपुरषनेवासकियाहै सोईकृपानिधानकी
मूर्तीकोयतनसे अवशनिकालकरलेगयाहै ।२। चोपाई
तवतिनसवननवदनप्रसकाहा। ईहांहरामदासुतजगाहा

६

सोनपरत अब नयननदेखा। होततासभ्रमहृदयव
सेखा। तेइजशाकटसदनतेंलावा। तहिंपरप्रभकहं
राखिसिधावा। अमकहि सनक विघनउखारे। ला
गिचलेतहिंपाछिलसारे। जवतहिंग्रामनिकटव
हुआये। देखाचलेजानउजथाये। सोसुवतिरण
छोडसहाई। शाकटअहृद्र्हगनदरसाई। रामदा
सदेखततिनकाहीं। कंपनलगेपांचासमनमाहीं
तिरथरसुरतिवेगउनारी। उसोतुरतवापिकावा

८९
भं.
८

वारी। तिनजनवच्छायहगननिजदेखी। प्रभुस्मरति न
वप्राकटनलेखी। एककहतदेख्योमैवीरा। इहउज्ज
न्नातवापिकातीरा। अस्कहितहांनायजनवदेख्यो।
यहोवारहरिस्मरनिलेख्यो। लगेजनन न्ततनास
निकारी। निकसनमोनभक्तहितकारी। करिवल
यतनअंतसवहारे। इहनचलनप्रभुभक्तउवारे।
अस्कहिउखितधीरउरत्यागे। हमहूंनमावभन
नच्छमलागे। इहहमारककरुणायअगारा। रहोम

८

कलपरिवारआधारा। अन्नअहारवारजनलोई। रहे
सकलवापीतटसोई। तबरजनीरण्छोडकृपाला
दीनसुपनअसतिनहिंरसाला। इहउजरामसदासब
नधारी। मेरोप्रीयेभक्तहितकारी। मैइहिभक्तिवि
वसअवभाई। वसहुंईहांनिजसदनविहाई। तवस
मनूरतिकेसमभावा। इहिउजतेंधनलेहुसुहावा
दोहा। तासमोररचिनवल तव मठमूरतिसुखदा
ना। करहु स्थापितभवनमम द्वारावतिसनमान। २।

६४
भ.
८

टीका। तब ऐसेसुन करके सब कहनेलगे कि ई
श्वराजीके समयभवनमें रामदास ब्राह्मणजोहै सो
जायन कररहाथा सो अबदेखनहीं पडताहै और
वे घरसेगाडीभीलायाहुआथा भ्रम होताहै कि
वेही गडियापर राखकर देवमूरतीको अपने
घरमें लेगयाहै ऐसेकहिकर पुजारी ततकालउ
ठकरकै सबकेसबतिस रामदासकेपीछे लागचलते
भये जबजातेजाते तिसकेग्रामके निकटजायपहुंचे

नवकोदेखतेहैं किवे ब्राह्मणमारोमार गाडीकोहां
केचलाजाताहै और रणछोड़भगवानकी मूरती
जोहै सोऊपररखीहुईहै नवरामदास तिनकोआ
वते देखकर भयसे कांपताहुआ नरतभगवा
नकी मूरतीको उठायकरके पास एक वापिका
जोवावलीथी तिसके जलविखें डार देताभया न
ववेपुजारी निकट आयकर देखने लगे तोभग
वानकीमूरती गाडीपरनहींपाई नवतिनमेसे ए

९९
भ.
५

कहनेलगा कि इह्बालग मैने बापिकाकी
वोर जातादेखाथा ऐसेतिसका कथनसुनकर वे
सब वापिकापरजायकर जोदेखनेलगे तोभगवा
नकी मूरती जलमै पड़ीहुईपाई तबतोबेसबके
सब दीनबंधकी मूरतीको तुरत यतनसेनिका
लनेलगपड़े परंतभक्तहितकारी भगवान भक्त
केवशभयेहुये कबनिकलतेथे उनकोहारक
र धीरजकोत्यागेहुये उदासीहोयकरके कहनेलगे

५

अथनंददासचरितं। दोहा। अवअदभुत अवरज अ
मलभक्तिमहातमचाह। करहूंकथनसादिर व
दनउरतदोषअमहाह। चौपाई। छेत्रनेमसार
नसुखमूला। पश्चमतासदेवसरिकूला। विद
नवेशलिनामइकग्रामा। तहांवसहिं उजगण
अभिरामा। तिनमहंनंददासउजदीना। निजवि
घावरसंपतिहीना। कार्शीककरमनिरतदिन
राती। धीरजधरमसीलनिधशांती। संततली

५१ भ. १

नसंतनसिवकाई। परमप्रवीनभक्तिजउगाई। संध्या
समयसदनजेतासा। आवतअनथिसंतकरिआसा
सादिरतिनहिं विप्रवउभागा। देतनिमायपाकअ
नरागा। असनिरपेख देखितहिकाहीं। भयोहे
षउरजनमनमाहीं। अनथिसंतसेवासविनोई।
तासकदर्थकरनहितसोई। कीनपरस्परसम्मति
नेहा। इहनिकषणनगरउजरेहा। अथिकदंभक
तिलेहिंवडाई। मिथ्याकरन संत सिवकाई ॥

करिप्रपंचसठभयोउजागर। अबइहिकरहृय

तनकछुनागर। जहितेंलोगसदनजउनासा।

जाहिंनजानिप्रथमअगरासा। अमनष्टअसदो

षलगाई। करहुप्रथमहूतमानवडाई। दोहा।

असविचारि सतवन्तनरि धरतदेत्रउजतास।

आयेनिसिनिजसदन सठपरम अनर्थप्रकास।

टीका। अब आगे औरवडा अचरज और अदभु

त भक्तीका निरमल महातममनोहै सो मतिअ

भा॰
भ॰
२

नमार कछुगायनकरताहूं। कैसाभी महानमैहै
कि जिसके श्रवणकरनेतें कृष्णभगवानके च
रनकमलोंमै प्रीतीउतपन्न होयजातीहै श्रोरदो
षड़ख संशयभ्रम इत्यादिविकार जोहैं सोभी
सब नाशको प्राप्तहोतेहैं नेमशारणनामाती
र्थजो संसारमै कल्यानके देनेवाला प्रसिद्धहै
जिसके पश्चमबोर गंगाजीके किनारेपर एकब
रेली नामकरके ग्रामहोताभया तहांवहुतसेब्रा

२

स्नानजोहैं सो निवासकरतेथे तिनकेवीच एकनं

ददासनामा ब्राह्मणथा सो निरधनदीन औरश्र

पनी ब्रह्मविद्यासेहीन कार्शिक करमजो करता

णीहै सोई कर कर जडुनंदन भगवानकीभक्ती

मे लीनभयाहूआ रात्रीदिन अतथी संतभक्तो

की सेवा करतारहताथा संध्याके समयजो को

ई अतथीसाथ ब्राह्मण तिसभक्तके घरपरवला

आवता तोवि वडभागी प्रणाम करके वडीश्रद्धा

५। भ० ३

3

सनमानसे विदायकर भोजन जिमायदेता ओर
नित्य संतोंका आसीरवादलेताथा इसप्रकार ति
सकी संतभक्ती ओर महिमावडाई देखकर दुरज
नजोथे तिनके हृदयमे द्वेष उतपन्न होयजाता
भया सो मूढ तिसके संतभक्तीके यशकोसहा
रनहीं सके ओर तिसके निसफलकरनेको प
रस्पर सम्मती कर कर कहनेलगे कि इह नाथ
ब्राह्मण ईहां हमारे नगरमे बसताहै मूढ

३

बडे दंभ और प्रपंचसे संतोंकी जूठीही सेवा करके
र लोगोंमें जससमान और बडउजागर होयगया
है अब इसमंदपापकी खानीका ऐसाउपाय क
रिये और ऐसाजनशके नासकरनेवाला अनमि
ट दोषलगाईये किजो कबीमिटहींनहीं औरजि
ससें लोगइसको मलेछजानकर कबी निकट
नहीं आवें इसप्रकार तिनउषोंने मताकरकर
रात्रीके समय एकमरीहुई बछीउठायकर और

ल्यायकर तिस नंददास ब्राह्मणके देवमेंराखदे ई और आपप्रथम इस अनर्थको उतपन्न करके र फिर राखीकोल्यायकर अपने अपने घरोंमे सो यरहे ॥१॥ चौपाई। नंददासजव प्रात सुहावा। चा हदेवनिजदेखनआवा। पाछेसोउसुपचजनआ ये। उनहिंवदनकटु वचनअलाये। अरेविप्रकु लजनम हमारा। कीनसि इहककरमकसभारा विनअपराधवनसनरिमासे। अथमकवननव

वत

काजविगारो। वृथामूढमदाम्बजधारी। गलनदं
भनवड़रमनिभारी। असकहि प्रथम ऊचमरला
ई। सवनधेनुमरतंसदिखाई। उरजनहोविसनन
समदाई। जेसजन उरजनसवआई। विप्रचकि
त अस चरित निहारी। भनतदेवगति कवनन
मारी। उरजनदेखि करहिं मखनिंदा। ठाढेमो
न सजनसववृंदा। समरिराम नवविप्रप्रमाना
सनहुसजन मखवचन वखाना। तमवनहेसा

७। भ॰ ५

5

दीसमदाई। जोनिरदोषप्रेहूंमैभाई। तोइहम्स्न
कवनसनरिजोई। होहिंसजीव न्हरतअवसोई।
मोरजियनइहिजीवनसंगा। करहोंनतरप्राणनि
जभंगा। असकहिविप्रवसनसिनलीने। म्हरभी
म्हता अछादनकीने। भक्तमाखद करुणायनिधा
ना। लागेपाललिनविमलगुणगाना। दीनदया
निधनंदडलारे। म्हरडजयधरनिधेनरखवारे॥
हेगिरिधरन हरन भवत्रासा। हेश्रीपतिहेभव

५

नप्रकाशा। हेकरुणासागरजनरंजन। धरनधीरज
नपीरविभंजन। हेअगदलनखलनसंघारे। दीन
बंधुप्रभदीनउधारे। हेप्रल्हादद्रुपतजानारन। म
ग्रनीग्रंटचंटगजउरन। कठिनकालप्रभुभक्त
सहैया। याहृयसलगजराजछुडैया। सदापैजभक्त
नरखवारे। कृपानकेन भक्तभयहारे। हेकूर
महेमनसमरारी। हेनरसिंहरूपप्रभुधारी।
वामनपरसरामवाराहू। भक्तनहेत वपुधमर

८१
भ०
६

नाह्न। धरनकलेशभक्त भवह्नरने। सदाभक्तउरथी रजथरने। असप्रकारमुख असतुतिगाये। प्रभुप दपदम मनहिंसिरनाये। दोहा। नयननमीलन कीन तव हृदयधारिप्रभुध्यान। कह्नदयानिध राखियेमोरपैजभगवान॥ टीका। जवप्रानाकाल होने नंददास अपने सेवकके देखनेको आया तवपी छे पीछे सोहूषणलगावने वाले दुष्टजनभीचले आये और तहां आवतेहीं नंददासको वडेकठोर

६

वचनोसे कोपकरके कहनेलगे कि अरेमंद तूं
नो ब्राह्मणकुलमै उतपत्रभयाहुआहैं ओर तहां
जनमधार करके इह्नतेने कैसाकुकर्म किया
है जो अपरायकेविना निसअपराध इसगऊकी
बछीको मूढ़मारडालाहै कहोनेराइसने क्या
विगाडाथा होहोपापी ओर डरमती दंभी इह
तैने तिलक माला मुद्राहृथाहीं धारनकियेहु
येहैं इसप्रकार कहि कर फिर वशीष्ठजीस्वरसे

भ॰
८

7

प्रकारकर सबको सुनावनेलगे कि अहोदेखो
लोगो इस नीच ब्राह्मणनेकैसा अनर्थकियाहै तब
तिन ग्रथमोकाशोरसुनकर दुरजन और सुजन
अर्थात्बुरे भलेलोग सब आयकरके जुडजातेभ
ये दुरजन जो दुष्टलोगथे सो देखकर बडीनिं
दाकरनेलगे और सुजन जो भले पुरष
थे सो मौन होय करके हृदय मै सोच
करनेलगजाते भये तब नंददास अचरजके ८

वशभयाहूआ विचारताहै किहेदेव इसनेरीकोन
गतीहै मैकुछ जाननहीं सकताहूं ऐसेसोचकर
फिर हृदयमै भगवानकृपा निधानको स्मर
कर कहताहै किहेभाई सज्जनजनो अवतम
सव मेरेसाक्षीरहना जोतोमै इसवारनामै नि
रदोषहूं तवतोभगवान इसमरीहूई गऊकीव
छीको अवश्यजियायदेवेंगे औरजोकदाचितन
हींजियावेंगे तोमैभी इसकेसाथहींप्राणोंको

भा॰
भ॰
८

न्यागदेऊंगा इसके जीवनेसे मेराजीवनाभीहै औ
से कथन करकर ब्राह्मणजोहै सो स्वेतवस्त्रलेकर
तिसमतभईहूई वल्लीपरजालदेताभया औार आ
पभक्त सुखदायक कृपाकीनिधी भगवानजोहैं
तिनकासमरण औार तिनके निरमल गुण ग
णजोहैं। सोभक्तीप्रीतीसे गायन करने लगजा
ताभया किहे नंदकुमार हेगरुड ब्राह्मण पृथवी
औार देवताउंकी रक्षाकरनेवाले हेहजकी सहा

यनाकेलिये गोवरधन परवनके धारनेहारे हेसं
सारकाभय कलेशहर करनेवाले हेलक्ष्मीके
पतीहेभवनोंके प्रकाशकरनेवाले हेक्रपाकेसमु
द्र हेदीनहितकारी हेदीनदुखहारी हेपापोंकेना
सकरनेवाले हेअसुरसंहारी मुरारी हेभक्तजनो
कोतारनेवाले हेदीनबंधु हेप्रल्हादकेरखवारे
हेकौरवोंकी सभामै द्रोपदीकी पैजराखनेहा
रे हेभारतमै टटीहरीके अंडोंपर हसतीकेगले

काछेदाजलकर रक्षाकरनेवाले हेकठिनकाल
मै भक्तों की सहायताकरनेवाले और ग्राहजोतें
डुबाहै तिसकेयसेहुये गजकी सहायताकरने
हारे हेभक्तभयहारी हेकृपानिधान हेञ्जगज
गभक्तोंकीलज्जारावनेवाले हेभक्तोंके नमित्त
मछ्छ कछ्छ नरसिंह वाराह वामन परसराम इ
त्यादि अवतारोंके धारने हारे और तिनकेकले
शोंकोहर करके सदैवधीरजके देनेवालेभग

९

वान इसप्रकार असतुतीगायन कर कर मनमै
हीं दीनानाथके चरनकमलोंपरसीस नायकर श्री
र सुंदरस्यामसूरतीको हृदयमै वसायकर ऐसेक
हताहुआ किहे दीनवंधुहेभक्तपाल मेरी लज्जा
राखिये नरतनेत्रोंको सूद्लेनाभया। २। चौपाई
विप्रकरत असविनयसहैना। देखोखोलिजुग
लजवनयना। जियनवत्सनारिसनसुखपाई। पु
लकगातरोमावलिछाई। मानहुंभवनचतुरदस

भ०
१०

राज्न्। पावाविप्ररंकजगप्राज्न्। वोलितरनमालीसम
दाई। जियतववस्ततविहगनदिवोई। सकलचकित
चित मनअनुरागे। यन्यपन्यमुखभाषनलागे। क
रिप्रणामवह्रुसज्जनसवखाना। आजनमहूंजगभक्त
प्रधाना। डरजननदेविसकलसकुचाने। अथोवद
नलाजनविसमाने। येनसतानवन्तध्यनभारी। हूं
वह्रूंवमखेलागउचारी। जननीतासहसननअकुला
ई। वंघनग्रीव मचितकरियाई। परसिजीह लालन

१०

अनुरागी। गोरसपानकरावनलागी। आवाजवधाव
न अनुगामी। नासहरभिकरहुनगतिस्वामी। पू
छनलोगसकलनहिऐसे। इहस्तनभईवनसन
रिकैसे। वीनेतीनदिँसममगेहा। स्तनवसभईवत्स
नतिएहा। चरमकारतनहिदिवसउठाई। दीनसिख
रि वहिरनतजाई। आजहननतरहिमखरउचारा।
धाईजननिकरतहुंकारा। मैदेखतननहिपाछिलधा
वा। ईहांहजियनवत्सनरिपावा। असहतांननहिव

८१
भ०
॥

दनम्रलाई।न्रपहिंनायपडनिकथाम्हनाई।भूपम्हन
नमानसहरषाना।डरजनवोलिदंडदियनाना।ब
हुरिलीनडजम्रवरडलाई।प्रथमनम्रचरननसि
रनाई।म्हदिनभूपमानसम्रनरागा।वहुविधिव
दनप्रसंसनलागा।दोहा।म्राजधन्यनवधन्यजग
धन्यवंमडजनोर।जहिमयम्रस नव म्हजम उप उप
जभक्तसिरमोर।पदनननम्र प्रसंसि म्रन मेदन
पनडजकाहिं।कीनविसरजन भवनम्हमभक्ति
॥

भावमनमाहिं। नवनेंसह्रकानिरूपङन सविकोर
तिन्हतहोय। सेवनसज्जन संतजन अंनवगुषत
जिसोय। हरिप्रसाद संहति अगमवारदनसो
महान। मैकीन्योइह चरितकछु यद किंचन
मतिगान। ३। टीका। इसप्रकार ब्राह्मणजोहै सो
नानाविनती और असतुती करकर कुछ्कदेर
केपीछे जवनेत्र खोलकर देखनेलगा नवक्या
देखतहै किवे मरीहुइ बछीजोथी सो जीवनभई

७८
भ०
१२

12

हुईहै नवनीनंदलालकाशरीर आनंदसेपुलकमा
नहोयगया और रोमावलीजोहै सो हरषसे अं
गअंगपर उठखडीभई मानोआजरंक ब्राह्मणने
जगतमै चौदांभवनके राजकोप्रापत करलिया
है तिसकें उपरांत तिनसात्वीपुरषोंको बुलाय
करवे जीवनभईहुई गऊकीवछीजोथी सोदिखा
यदेई नवनिधको देखकरके सबलोग अचर
जकेवशभयेहुये धन्यधन्य उचार कर और प्र

एगाम करकर अनेकप्रकार स्तजस औरवडाईके
वचनोसें कहनेलगे किहे उत्तउत्तम आगसंसा
रमे भक्तोंविवें प्रथमगिनतीवाले और जडनंद
न भगवानके प्यारे तुमहींहो तुमारेसमान औ
र दूसरा कोई नहींहै तब उत्तनजोथे सो अ
वरजभयेहूये लज्जासंकोचसें नवनीचेकिये
मौनहोयरहेहैं कछुबोलनहीं सकते इतनेमै
वे वछिया त्वध्याकरके व्याकुलभईहूई हुंवहुंव

भा॰ भ॰ १३

शावदजोहै सो करनेलगापडी नव तिसकीमाता

अपनी पुत्रीका इवशावदस्नकर प्रेमसे आतुर

भईहुई गलेसेन्नरन बंधनको तोडकर धाव

तीहुई तहांचलीआई और वडेलाड प्यारसें अप

नीबालकीको जिह्वासें चाटचाटकर गोरसजो

दूधहै सो पिलावनेलगी इतनेमें जवतिस घे

नुकास्वामी अर्थात मालकभी पीछे धावता

चलाआया तवलोगतिसको पूछनेलगे किभाई

१३

इसगऊकी इहवछिया कहो कैसेमरनहोयगईथी
सोकहनेलगा कि आजतीनदिन हुयेहैं जोइह
वछियामरनहोयगईथी और चरमकारजो चमा
रहैं तिनोंनेउठायकर वाहिर कहीं भूमीमेंड
लदेईथी आजतिसका शब्द सनकरके इहथे
नुनिसकी माताजोहै सो तुरत वेगसे हुंकार
शब्दकरतीहुई धायपड़ी मैंभीदेखताहुआ इ
सकेपीछेपीछेहीं चलाआया अवईहांआयकर

के इहवछिया जीवतीपाईहै इसप्रकार कथनक
रकर फिर पही प्रसंगतिसने तरतन्नाय करके
राजाकोसुनायदिया तबराजासुनकरके वडेहर
षकोप्रापतभया श्रोर तिनदुष्ट जनोकोवुलाय
कर भलीप्रकारताडना कर कर दंडदिया ति
सते उपरांत फिर राजाने वडे श्रादर सतकार
सेनंददासजीको वुलाया श्रोर प्रीतीभक्तीसे चरनो
परप्रणामकरकर अनेकप्रकारप्रालाघावडाई जोहै

अथविप्रचरित वरणनं। जहिसेवत संतनि मनुज
मृतसंजीवनि ह्वैजात। सोजनउपतिपदभक्तिवरकरहुं
कथनअवदात। चौपाई। एकवकाहुविप्रगुणधामा
मथुराग्रांतवसहिंअभिरामा। विनवियजननिआन
नहिंकाहू। भवनजनककेवोधवसंततताहू। समयए
क सहवालअगारा। आवालेतविप्रनिजदारा। घर
महवकरमनिरतनवडभागी। संततक्रुसलचरनअनुरा
गी। तवमारगआगुपकरधोरे। मिलेनासहलंविक

८९
भ.
१

सठभारे। मानिज्ञामसतिनकरउँस्नकाया। बैठोदेखि
सलिलद्रुमछाया। हृदयविचारचतरग्रमवाना।
ईहांकरउँसुजनभगवाना। जोलोग्यानपथिकन
हिंआवा। तोलोमैनकरहुंनिजजावा। तिनसनला
गि ग्रभयचितहोई। चलहुंसुगामकाननपथखेवाई
तासमंतग्रसलेठिकजानी। बोलेवदनकपटमरउ
वानी। कसनतमईह्रांविप्रवउभागो। सुजनकरनइह
निजलागे। सकनपरहिं विघ्न वउचोरा। फिरहिं

१

बधिक पथल लंधि कठोरा। इहांन मारर हन उजभाई
हमरे ज्ञान परत उरवदाई। तुम कहं उचित करन ग
एधामा। पंथ निवारि विउन विस्रामा। जोजन चारि
कठिन पथ भाई। हम सन चलहैं हो सगाम विहाई।
तिनकर कथन सुनत उजकाना। उरज्ञासितद्यम
वचन बखाना। जहिं मन न मिलहिं न जाति सुभाऊ।
तहिं मन उचित न मारग जाऊ। आगल चलहु तु
महं हितकारी। मैं आवहुं पाछिल जननारी। दोहा

९९
भ॰
२

सतिलेंधिक समसवचनतहि अनेकपदन्नतगाय।
हमरदलकलववविउनपथ्यवलहुस्तगमलश्विस्ताय
टीका।नाभादासजीकहतेहैं किहेसंतो जिसके
सेवनकरनेसें मानुष्यसंसारमें मरेहूये जीवतहो
जातेहैं ऐसी मूलसजीवनी जदुनंदनभगवानकी
निरमलभक्तीजोहै सो आपकेआगेगायनकरता
हूं सर्वकालकेविषे कोई ब्राह्मण मथुराके नि
कट वासकरताथा जिसकामाता और स्त्रीकेवि

२

ना पिता पुत्र भ्राता और कोई बांधव नहीं था एक समय
तिसकी स्त्री अपने माता पिता के घर मै गई हूई
थी तब माता को अकेली जानकर तिसको अप
ने ससुर मास के घर मै लेकर सो धरम सकरम
मै प्रवीन और कुसल परमात्मा की भक्ती वाला ब्रा
ह्मण अपने घर को लिये चला आवता था तब मा
र्ग मै बड़ा भारी बण आया तहां तिसको अप
म लंघिक किजो लूटने वाले महापापी थे हा

९९
भ०
२

योंमे शस्त्रधारेहुये मिलपरतेभये तिन डष्टोंकाभ
यमानकर ब्राह्मणजोहैं सो नहांहीं सुंदरजल
और वृक्षोंकीछाया देखकर वैठजातेभये और
हृदयमै इहविचारकिया कि अब ईहांहीं भगवान
कास्मरणकरतेहुं जबलगकोई और पथिक अर्थी
नरसते चलनेवालानहीं आवता तबलगमै ईहां
से आगेपाउं नहींधरुंगा और साथियोंके सा
थमिल कर और अभय होयकर ॥

३

इसवणके मारगको सुगमताासे निवारणकरंहुंगा
नववैचोरलंठिक तिसकेमंत्रविचारको जानकर
कपट करके कोमलवाणीसें कहनेलगे किहे
ब्राह्मणवडभागी तुमको किसने सिखायाहै जो
ईहां जंगलमें अकेलेवेठकर अपने इष्टदेवका ए
जनकरने लागेहो क्यातुमको सूजनहींपडताहै
जोरहो चोरवणमें अनेकजीवघाती अधम चोर
लटेरे ग्रोर सिंहवाघमरग इत्यादिपडे फिरतेहैं हे

९९
भ॰
४

भाई ईहांतमारा रहनाहमारे विचारमैं सरवप्रकार
डाखकेदेनेवालाहै तमकोयोग्यहै किइस वणके
भयंकर मारगको निवारणकरके फिर स्वस्थचि
त होयकरके विश्रामकरो केवलचार जोजनहीं
विखडा और कठिनमारगहै सो हमारेसाथ मि
लकर सगम सहजेहीं काटचलो तमकोकछ
भीखेदनहीं होवेगा ऐसेतिनका कथनसनक
र बाह्मणहृदयमैं भयमान कर कहनेलगा कि

४

होभाई जिसकेसाथ अपनाजातीसभाव नहीं मिल
ताहो तिसकेसाथ पंथचलनाउचितनहींहोताहै
तमदयाकरके आगेआगेचलेचलो मै स्त्रीकेसहि
ततुमारे पीछे पीछे लागाचला आवताहूं तवपा
पीलटेरे तिसकावचनसुनकर कपटसे कहने
लगे किहेब्राह्मण चिंतामतकरो हमतुमारे र
त्तक और सुखदायकहैं हमारेसाथ मिलकर
वणकेमारगमे सुगमही पारउतरचलो। १॥

५९
भ
५

5

चौपाई। हृदयमलकुच संदेहविहाई। हमसंसर्गजा
नि मदहाई। काटिवलकुवणमारगकारी। हम
हूंकरवअनहितकलुनाही। तुजमयप्रभुहमार
नमारा। मालीकुलदेवकरतारा। कवहूंकरव
हमकपटयकामा। तौंकरदेहिंदेवपरिणामा।
तिनकरकथनसुननतुजजाना। मालीगुनत कु
लभगवाना। पथआरणपविगानउरधामा। च
लेपपतनिजनधरिविलासा। भयोप्रवेशविघन

५

जबहोरा। तबसुग्रथमलंठिकसठबोरा। बदनमी
ठमानसकटुहोई। कपटीकूरकालवतहोई। एउ
गबहुरसमाथउजनदीना। रणबतकाटिप्राणगतकी
ना। तबदोलावाहुनसनवानी। ग्रथमलंठकनब
दनबखानी। इहूपथनजनलेतपथ्यग्राना। हूमरे
सदनकरहुनबखाना। ननरबिप्रसमग्रवहिंनमा
रे। जाहिंनुरत सठप्राणवजारे। दोलावाहकोपन्न
नवानी। तिनकर सन्नन ज्ञामसिथमानी। चलेना

सपथ न दृष्यगिरहोई। उत्तवियसन नत वचनतिनसोई।
निजपतिमरनजानि अकुलानी। आर्द्दितविरहंनि
रतमखेवानी। हाहाकार रुदनकरिलागी। सिथ
लसरीरथीरसवत्यागी। दोहा। कहतसहअवपतिक
हांतवइष्टदेवप्रभसाखि। चल्योहूतो इनसन विछुन
उरभरोस जिनराखि।२। टीका। फिरकहतेहैं कितं
हमारी संगनको आनंदकेदेनेवाली जानकर संस
यकोत्याग करके इसवणकेमारगकोकाटचल ह

मतेरेसाथकुछ अनहितनहींकरेंगे हेब्राह्मणहमा
रे तमारेवीचसाक्षी कुसभगवानरहे जोकदाचि
तहमकुछकपट करेंगे तोभगवानतिसका हम
कोवदलादेवें अर्थात हमअपनीकरनीकाफल
पावें इसप्रकारतिनका कथनसुनकर और कु
सभगवानको वीचसाक्षी जानकर साधूसरल
चितब्रह्मण जोथासे स्त्री केसहितनिरभय हो
यकर और विस्वासराखकर तिनकेसाथचल

९८
भ०

पड़ताभया जब चलते चलते बड़ेभारी गहिवरब
ण्विषें आय प्रवेशभया तबवे अधमपापकीव्रा
नीलुटेरे मुखसे मीठे औरहृदयसे महांकपटीत
रतकालकेसमान निरदय होयकर औरकोपसे
खड्ग निकासतेही प्रहारदेकर त्रिणवत ब्राह्म
णका सीसकाटकर पृथ्वीपरगिरायदेतेभये
तिसतें उपरंतदोलावाह अर्थात पालकीके च
लाने वाले कहारजोथे तिनका कहनेलगे कित

मणीधर पालकीको उठायकर और इसमारगको
त्यागकर हमारेघरके मार्गकोचलपड़ो नहींतो
ब्राह्मणके समानतुमको भी मारकर इसस्त्रीको
हमअपनेलेजावैंगे ऐसे कोपकेभरे हूये तिनदुष्टों
के वचनसुनकर भयके वशभये हूये कहारनने
पालकी को उठायकर तिसीमारगको चलपड़
तेभये तबब्राह्मणकी स्त्री तिनके वचन सुनकर
और पतीका मरना जानकर व्याकुलहोयगई औ

९९ भ. ८

र उरवकीभरीहूई विरहांकी वाणींसे वडाहाहाका
र कर कर रोदनकरतीभई शरीरकरके सिथल
होयगई हृदयकाधीरज सवछूटगया विलापक
रकर कहनेलगी किहेप्राणपती अवतमारेवेइष्ट
देव ह्रस्यमानमा मालीजोघ सोकहांहैं कि जि
नका भरोसारखकर इनकेसाथवणके मारगमै
अकेलाचलपडाथा। चौपाई। उज्जयिजव अस व
चनउचारा। तरनविछुनपथचारिसवारा। शक्कि

खरगआयुधकरयाहो। आयनिनहिं असवदनम
वाहो। ऐरेनिहमसठ चौरगवारा। विनअपराधवि
प्रतममारा। दीन्होवीचसारिवभगवाना। कपाठ
अनर्थवहुरिकसठाना। असकहिआसिप्रकार
तिनकाहीं। हतकियेवपअधमनहांही। उत्नप
तनीकहूंधीरजदीने। पतिसनिकटआयसंग
लीने। प्राणनाथकहंसोऊनिहारी। लागीकद
नकरनलरभारी। अवपतिमोरकवनगतिहोई

९९ भं॰ ५

सतपितमातभ्रातनहींकोई। तुमहूंएकमोहिप्राण
आधारा। भयोसुमरनक प्रान संसारा। श्रमसआरत
तहिदेखिसवारा। अभयदानदैविविधप्रकारा।
दायाधुक्रमधुरमृदुवानी। सनहुपुत्रि प्रम वदन
वखानी। कृमप्रसादतोरपतिपहा। जीवहिं अ
वसि नहिंनसंदेहा। असप्रश्वासनदेनप्रवीना। तु
जवप्रमाधनयोजनकीना। पटमनकरतप्रक्रा
दिननासा। कीनग्रापवन गवनहुलासा। पाछे

जननिद्रागतहोई। उठेप्रातरंनविप्रवरसोई। दोलावा
हदेविहरलोचे। उनहिंमवमसवदीनसनोचे। वि
प्रहननतविसमयवसभयथो। सवकरवहृदयमोद
सविछयथो। तदपश्चातपतनिजतथावा। विप्र
विपनतजिसदनसहावा। मातचरननंमतसिर
नाई। निजहृतांतसवदीनसनाई। जननीसुननतह
रषवसभारी। कहृतधन्यवरभक्तिमुरारी। जहि
प्रसादमतजीवनताना। नवद्वैकीन सफलह

५८ भ० १०

गमाना। एसप्रकारजगकरतबडाई। कृस्नभक्तिसं
सतिसुखदाई। सोरठा। नतिकुतरक अभिमान।
तिनन्हतनबिनहिनअधिक। प्रीतिभक्तिभगवान
करिहिजबर बिय मननिजन अंतकालनजिकाय
सुमरतकृस्नकृपायमन। उजबरलीनसिपाय।
मतिउरलभसदगतिकहिबिर।२। टीका। इसप्रका
रजवबलपतनीने अर्थात ब्राह्मणकीस्त्रीने भ
गवानकृपानिधानपर वचन लायकरकेकहा

10

१०

कि अबमोनेऐसाहीकहाहैं तबतिसीकाल तहांब
एसें शस्त्रीखड्ग क्या बरछी तलवार इत्यादि
शस्त्रधारेहूये तरत बारम्बार प्रकटहोजातेभ
ये और घोड़ियोंको चपलकियेहूये आयकरति
नड्हल्लेबकोंको ललकारकर कहनेलगे किय
हे अधम लुटेरयो अबठाढेरहो आगेपाउँमतध
रो मंदमूढ तुमने निरअपराध ब्राह्मणको ह
थाही जानसे मारडालाहै होकपटी होअपरा

९९ भ॰ ॥

धी नमनेतो कुलप्रमानमाको वीचसालीदिया
था श्रोर अभागी चांडालोफिर ग्रेसा अनर्थ कोंकि
या ग्रेसे कहिकर कोपसें खड्गोंके प्रहारदेकर
तिनदुष्टोंके सीसकाटडाले श्रोर ब्राह्मणकी स्त्री
को धीरजदेकर जहांतिसका भर्ताहुआ पतीप
डाथा तहांलेआये तवसोब्राह्मणनाथकी मृतकद
शादेखकर विरहाके वशभईहुई वडीऊंचीस्वर
सें रोदन करकर कहनेलगी किहेपती अवमे ॥

री कौन गती होवे कि जिस का मन गत मैं माता पिता
पुत्र भ्राता इत्यादि कोई बांधव भी नहीं है केवल
एक तुमही मेरे प्राणों के आधार थे सो भी आज
मृत्यु के वश होय गये ऐसे विलाप की भरी हुई
जिसकी उस की और दीन वाणी सुनकर सो सवार
दया के वश होय गये ब्राह्मण की स्त्री को अभय
और धीरज देकर बड़ी मधुर और कोमल वाणी में
कहने लगे कि हे पतिव्रते चिंता रोदन को त्याग कर

९९
भ०
१२

स्वस्थचितहो अब कृष्णभगवानकी कृपासेतेरापि
तीजोहै सो अवश्यजीवत होजावेगा इसमैंकुछसं
शयनहीं है ऐसे धीरजदेकर ब्राह्मणकाकटाहु
आसीस जिसकेधड़के साथजोड़दिया और रूप
रजिसके खेत अर्थात विद्यावस्त्रडालकर आपक
लकस रटतेहूये सो सवार बणकोचलेजातेभ
ये जबईहां योगीटरकेपीछे मरनभयाहूआ ब्राह्मण
जोथा सो जैसेकोई सोयाहूआ निंद्रासेजागपड़ताहै

१२

जैसेही नरतजागकरउठवैठनाभया दोलाबाहजो
कह्मारथे सो ब्राह्मणकोजीवतभया देखकरअ
त्यंत हरषकोप्रापतहोयगये और तिसकेमरने
काखबरतांतसुनायदेतेभये ब्राह्मणसुनकर
के बडे अचरजकोप्रापतहूआ सबकेह्रदयमें
आनंदछायगया होयगया तिसतें उपरांत ब्राह्मण
जोहै सो स्त्रीकेसहित वणकेमारगकोकाटक
र हरष पूर्वक अपने घरमें आयप्रापतभया

तहांदीनभावसे माताकेचरणोंपरप्रणामकरके
अपनेमरने और जीवतहोनेका सबवृत्तांत सुना
यदेताभया तबमाता सुनकरके प्रसन्नभईहुई
सुंदरवाणीसें कहनेलगी किहेवत्स धन्यसो भ
गवानहैं औरधन्यतिनकी ऐसी सुखदायक भ
क्तीहै किजिसकेप्रसादसें तूं मृत सजीवनहोयक
रके आजइस जननीके नेत्रोंकोसफलकियाहै
इसप्रकारदोनो कृतभगवानकी भक्तीकी य

13

नेक महिमावरणई गायनकरकर फिरमाला औ
रहीकेसहित बास्नए कपट अभिमान इत्यादि
विकारोंको त्यागकर दिनदिन अधिकमें अधि
क कृस्नभगवानकी भक्तीप्रीतीवाला होयक
र अंतकाल कृस्नभगवानमाकोहीं स्मरनाह
आ शरीरकोत्याग करके मनीजोगीजनोंको
दुरलभ जोगतीहै सोप्राप्त करतेभया। १।
इतिश्रीभक्तिविनोद ग्रंथेभगवद भक्तिमहात

मीहोसिनकृत

९९ मे भाषाटीकायां ब्राह्मण चरितवर्णनं नाम स
भ॰ र्गः ॥
१४

14

१४

अथबालचरित्रं। दोहा। विमलभक्ति दायक विम
ल चरितहरनमनग्लान। करहौंमति अनुरूपक
छु कथन श्रवणसुखदान। चौपाई। नहिंजैमल
नृप देसरसाला। बसिहैं एकनथन गोपाला।
विषयबंधुसन आन नकाहू। रहिसबहु जननी उ
कताहू। महिषीराविसदननिमएका। करहिं उ
गथविकथनिननेका। नहिमन नामसदन निर
वाहू। होतभलहिं सब अगमनकाहू। विघन

२४
भ.
१

चरायदिवस नितताहू। आवतसाकहिं मदित अ
वाहू। एकदिवस नहिकाननदेखे। निरतभज
न हरिसंतसभेखे। तिनपें पुष्पपत्र फलल्याई।
ईधनादिसादिरसिवकाई। लावेपाकरनखाल
मनकाया। उपजीहृदयसंततनवदाया। ताखव
दनअसकह्यावकाई। अवतेंरामनाममनवभाई।
उरतदोषदारुणउखेरारन। करहुभक्तिजत
तानउचारन। सुननतसाधुउपदेसरसाला। राम

नामरतभयोगवाला। एकदिवससंतनसिवका

ई। करतचैार वन महिषिचुराई। गयोलेत जम

नाउनपारी। ग्वालविप्रनइनलागनिहारी। श्रम

प्रकार खोजतवनतासा। पछीसांझ रविमिटो

प्रकासा। दोहा। आवासोचतसदन नव परिहरि

विप्रननिरास। भरत उसास उदास चित जननि

त्रास उरतास॥१॥ टीका। अब श्रोर वजसुखदाय

क विस्मभक्तीके देनेवाला मनोहर चरित्रजोहै

९४
भ०
२

सोहेमंतजनो मै आपके आगेगायनकरताहूं क
हतेहैं कि तिसीचतौड़गढ़के राजा जयमलनामा
के देसमै एककोई निरधन गोधनके चरानेवा
लागवालजेहै सो वासकरताथा तिसका इस्त्री
पुत्रभ्राता इत्यादिबांधवकोईभी नहींथा केवल
एकहड़माताहीथी और आपथा एक महिषी
जोमहीं है सोघर मै राखकर और तिसके दूधको
वेचकर आनंदसे भलीप्रकार अपनी उपजीव

२

काकरलेतेथे सोग्वाल मह्रिषीको नित्य बणमै

चरायकर सांझके समय घरमै लेआवताथा ए

कदिन कही बणविखें कोईतपस्वीसंत जो भग

वानके भजन औरध्यानमैलीनहूये बैठथे ति

नको देखताभया भजनका प्रभाव ऐसाहीथा

तुरत तिसके चित्तमै संतसिवकाईकी इछाह

चीजोहै सोउतपन्नहोजातीभई तिसदिनतें फू

लफलपत्र लकडी इत्यादिनित्यबणमे लाय

करके तिनके आसनपरछोड़जाता और जबसांझहो
ती तोमहिषीकोआगेराखकर अपनेघरकोचलाआ
वता ऐसेजब संतसेवकाई करते करते तिसको
कुछदिन बतीत होयगये तबतिसकी निसकप
ट सेवाभक्तीदेखकर संतमहातमा प्रसन्नहोय
करदयाके वशहोजातभये और कहनेलगे कि हे
भाई अबतैंतू सर्वपापों और दोषदुखोंके नासकर
नेवाला रामनामजोहै सो भक्तीप्रीती सें उचारण

कर तिसतें तेरीअवश्य कल्यानहोजावेगी। इस प्र
कार संतोंके मुखसे उपदेशसुन करके ग्वालजोहै
सो रामनामको रटनकरनेलग जाताभया। तबए
कदिन संतोंकीसिवकाई करते करते तिसकी
महिषीको कोई चोर चुरायकरके लेगया और
जबलेकरके जमनाके पारचलागया तबपीछे
गुवाल बणमें तिसको टोवनेलगा ऐसे खोजते
खोजते तिसको सूरजभी लुपतहोयगया और

९४
भं॰
४

सांकपकाई नवसोचके वशनिरास श्रौर उदास वि
नहोकर उसास भरता हूआ माताके भयसे कांप
ता कांपता वणको त्यागकर घरविखेंचला आव
ताभया।१। चौपाई। एकलदेखिनासमहतारी।भ
ननतात कहंमहिहिषि नमारी। मातनुग्राससमानत
मनमाहीं। कहत सुदीन आजउजकाहीं। पालन
हेत जानिश्रमभारा। तीनवरघलगवोलहमारा
हतसंतति नाकरभवर्नेई। सोहमार जननीसव

४

होई। सुनिसुत वचनमातमनराखो। भईमौनकछु
वदननभाखो। ग्वालसुदिनमानस अनरागा। त
वतेंजाय विपुन वडभागा। भक्तिभावजुतप्रीतिव
ढाई। ततपरभयो साधुसिवकाई। काननकंदमू
लफलपावहिं। ल्यायजननिकहं तोषकरावहिं
असप्रकार कछुकालविहाया। तवभगवानभक्त
सुखदाया। तासभक्ति दृढदेखिसुहाई। भेप्रसन्न
मन त्रिभुवनराई। महिषीसोउ देनहितताासा। भ

दू
भं॰
५

येउदितप्रभु भवनप्रकासा। नव इकदिवस भानुजानीरा। ताकरपानकरावननीरा। नसकर सोकुसहितपरिवारा। लियेआव महिषीउतपारा। पुत्रीपुत्रलिलततहिवारी। चारुग्रीव भूषणरजनउरी। हरषितौरचालर नहिंठाहीं। पयरनहेलतजमन जलमाहीं। प्रेरिमहिषिसंजनपरिवारा। आपुरहेऽइनतटकिनारा। दोहा। नवसविस्त प्रेरक प्रभु। नरतप्रेरिउरनास। दीनसमणीकरायनहि। पूर्वस्वा

५

5

मिनिजवास ।४। टीका। नव माता तिसको इकेले हीं आवते देखकर रहनेलगी किहे पुत्र नमारी म हिषीकहांहै सोजननीकेभयसे उरताहुआ कह नेलगा किमाता तिसके पालनेका वहुत श्रम और कलेशहोताथा इसलिये सो महिषी एकब्रा ह्मणकोदेदईहै और तीन वरषलग तिसके सो षवालकरलियाहै हूतजोघेउ और संततीजो तिसके वछीवछे होवेंगे सोभीसव हमारेही

९४ भ० ६

होंगे ऐसे गुरुकावचन सुनकर माता मौनहीं हो यरही कुछबोलतीनहीं भई तबसे बड़ेप्रेम और हरषमै मगनभयाहूश्रा तिसदिनतें निरभय होयकर और नित्यवणमै जायकर प्रीतीभक्ती से संतसिवकाई जोहै सोकरनेलगा दिनभरसं तोंकी सेवाकरता रात्रीको घरमै श्रायकर वणसे कंदमूल फल फूल जो ल्यावता सो माताको श्र हार करायदेताथा इसप्रकार जब संतसेवाकर

तेहुये तिसग्वालको कुछ कालवतीत होयगया ।
नवभक्त सुखदायक भगवान ऐसी तिसकी सं
तभक्ती देखकर अत्यंत प्रसन्नहोयगये और ती
नलोकके नायकप्रभू तिसग्वालको सोई म
हिषीके ल्यायदेनेकी रुचीवालेहोयजानेभये
तव एकदिन सोई चौर तिसी महिषीको तिस
के सब परिवारके सहित कि जिनके गले
और श्रिंगोंमे चांदीके भूषणपडेहुयेथे लेक

दं० भ० ८

ष्के जलपिलानेकेलिये जमुनाके उतपार आयाथि

नहोताभया तिसमहिषीके चारवछीवछेजोथे ति

निसबकोसनानकरानेकी इछासें चोरनोहै

महिमावेसे पिचकार पिचकार कर जमुनाके प्र

वाहमे प्रेरदेताभया जबतिनोने कालिंदी जोज

मुनाहै तिसकेजलमें प्रवेशकिया तब सरवज

गतकेप्रेरक भगवानने तुरतहीं तिस महिषी

के हृदयको प्रेरकर अपने पूर्वले स्वामीके घर

८

का सुमरण करायदिया ।२। चौपाई । अससमहिषी

श्रवतभगवाना । कीनजन्मन इतपावपयाना । लि

येसकल परिवारसहाई । ठाकीस्वामिसदन तिं

जआई । नवगोपाल हगन अनिहारी । हरषतजा

य निकट महतारी । भन्योआजजननी उजतेहू । म

हिषीदीनपठायसिगेहू । अवलोजवनउगायहुतली

ना । तासमोलसंचितसवकीना । करनअलंकृत

भूषणचारू । पठेदीन संज्जनपरिवारू । इहृउज

मानसमन्यवनवारा। हमसनकीनजामहितभारा
नवग्रदत्तडरवादिकलीने। मानमोदञ्जतसृजन
कीने। करतस्परशतासुनिजपाना। मादिदेवंवापि
सदनसभैयाना। स्यंगाग्रीवभूषणनिनमारी। रा
खेवहृरिसदन संभारी। सुतनकरकीनद्व्यतहिसं
गा। पानिगृह्णमनमोदउमंगा। तेजनवभयोगवा
लरतदारा। पुत्रपुत्रिसंजनपरिवारा। भोगतभो
गविविधसुखपाई। करतरुचिर संतनसिवकाई

ग्रंतसगगमपरिहरिनिजकाया। विस्वलोककहं ग्वा
लसियाया। दोहा। असहहभक्तिप्रभाववर ग्रहसैंत
नसिवकाई। जहितेंचोरजमहिषिनिज ग्वालसुभक्तिज
नपाई। टीका। नवभक्तहितकारी भगवानकी प्रे
रनकीहूई महिषीजोहै सो अपनेपरिवारके सहि
त नरतीहूई। जमनाके इसपारचलीग्राई ग्रोर फि
र मातीजाती अपने स्वामीके चरपर ग्रायकरके
स्थिनहोयगई ग्रैसेतिसको ग्वालदेखकर हर

दश
भा.
८९

घमैमगणाभयाहुआ आयकर माताकोकहनेंकि लगा
हैमैया आजतिसधरमी ब्रह्मणने हमारी महिषी
को चरमै पठायदियाहै अवलग तिसकाजितना
दूध और घृत लियाथा तिसके मोलके भूषण व
नवायकर और परिवारके सहित महिषीको प
हिरायकर आनंदपूर्वक हमारेघरमे भेजदेईहै इ
ह ब्रह्मणवडासत्यवादीहै हमारेसाथ जननी इस
ने परमहितकियाहै नव ग्वालकीमाता हृदय

९

मैं अत्यंत प्रसन्न होय गई तरत ही अन्न जो चावल उ
रदा जो हरभ इत्यादि लेकर और तिनका पूजन करकर
फिर वड़े प्यार सें हाथका स्पर्श देकर तिन सबको
सुंदर अस्थान पर वांधलेती भई। तिसते उपरांत ति
नके गले और सृंगोंमें भूषण जो थे सो सब उतार
कर यतनसे घरमें रखलेती भई तब समय पायक
र तिन भूषणोंके द्रव्यसे पुत्रका विवाह भी किया
और घरकी विवस्था भी भलीप्रकार सब बनाय

पड़े हुये

लेई ऐसे मोगवाल स्त्रीके सहितभयाहुआ समय अ
नुसार पुत्रीपुत्रोंवाला होयकर संतोंकीसेवाकर
ता करता अंत सहजेहीं शरीरकोत्यागकर संतभ
क्तोके प्रसादसे विस्नुलोकको चलाजाताभया ना
भादासजीकहतेहैं किहेसंतो देखिये भक्ती और
संत सिवकाईका प्रभाव कि जिसकेप्रसादसे ग्वा
लेने चोरीगई हुई महिषीको भगवानकीभक्ती
और भक्तोंके सहित यतनके विनासहजेहीं

६४
भ.
॥

प्रापत करलिया ।३। इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथे भ
गवद् भक्तिमहातमे भाषाटीकायां ग्वालचवि
नवरणनं नाम सरग्गः ॥

मीहांसिंहकृत

ग्रथजामाता चरित्रं। सोरठा। रामानुज निधि ज्ञान। जामाता शिषतासु इहनिरत भक्ति भगवान। कथा मनोहर जासुमें। करहुं कथन प्रवसोय। मोहहतन मंगल करन किये श्रवण जहि होय। संतन भगवान भक्ति हद। चौपाई। अस हरि भक्त निपुण जामाता। निसिदिन भजहिं महाविदाता। हरिजन भक्त संत महिदेवा। मनवच काय करहिं नितसेवा। एकदिवस हरिहेत प्रवीना। लेन प्रसून

५४
भ०
१

गवन वनकीनो। वहिर ग्राम मारग तवदेखो। काहू
परो उवष मरतभेखो। गोपीचंदन लिपन सरीरा।
अहवन माल ग्रीव गनचीरा। वैस्नव भक्तसंत इ
नजानी। साधुअनाथ पथिक मतजानी। करिविचा
रअस मानस वरना। इहिकर संसकार अवकरना
कोटि यज्ञफल नाहिन संसा। लोक सुजस परलो
क प्रसंसा। अस विचारि शवसीस उठावा। य
द्यपि विपुल खेद स्रम पावा॥

तद्यपि त्याग भूमि समसाना। कीन दगध संजन सनमाना। जिमि पित दाह रीत सुतवरनी। तिमि सब भक्त कीन तहि करनी। रहे ग्रानतहं वैस्नव जोई। ग्रस ग्रवलोकि तास गति सोई। सोरठा। क रन लाग सबकोय। नहिं निंदा ग्रलिद्वेष जन। ग्र सम निवर शिष होय। इह कुकरम काकीन सब

टीका। रामानुजजी जो एक ज्ञानकी निधी वडे संत महातमा भये हैं तिनका एक शिष्य भगवा

५४
भ०
२

नकी भक्तीमै प्रवीन जामाता नामकरके प्रसिद्ध
होताभया अवतिसकी मनोहर गाथा किजिस
के श्रवणकरनेसे निरन्तर करके हृदयमै भग
वानकीभक्ती दृढहोतीहै कथन करताहूं कह
तेहैं किसोहरीकी भक्तीमै परम चतर जामाता
रात्रीदिन मनवचन काया करके भगवानके भ
जन और भगवानके दास संत भक्तोंकी और
अनथी ब्रह्मणोंकी सेवा मे लीन रहताथा नव

२

एकदिन भगवानकेलिये पुष्पलेनेको कहीं बाहर
जो चलागया तो मारगमें क्या देखताहै कि शरीर
को गोपीचंदन मलेहुये और गलेमें तुलसीकी
माला पहिरेहुये वस्त्रोंसेहीन कोई साधु मराहु
आपडाहै तिसको भक्तसंत और अनाथ ब्राह्मण
जानकर कि रमने में चलताहुआ मरगयाहै अ
पने हृदयमें विचार करनेलगा कि इस अनाथ
का संसकार करना कोटी यज्ञकाफलहै और

लोक अलोकमें समझके देने वाला है ऐसे विचार
कर तिस शव को अर्थात मेरे हृदय संतको पीठप
र उठायलिया तद्यपि समसान भूमीमें ल्यायकर
के विधि अनुसार सनमानसे तिसको दगधकर
दिया जैसे पिताके दाहकी रीती पुत्रको कही है
जामाताने तैसेही सब करम किया तब नहां औ
रबैसब जनजो थे सो तिसकी करनीको देखकर
अपने अपने सब निंदाकरने लगे कि देखो इसके

५४
भ०
३

3

यद्यपि तिका वहुत
हैं श्रम और खेद
पाया

३

से महाप्रधान मनीका शिष्यथा इसनहने इहकानी
च करम कियाहै। २। चौपाई। तेरेप्रथम सवन अस
काहा। सठ इह साधु कवन मनराहा। कौन दगाध
नम विन्हहिं विचारे। अव पंकति गन होइ हमारे।
भयो प्रथम नव पानिक भागी। दोष लगाय दीन
तिन त्यागी। जामातातिन कर सुनिवानी। मानन
भयो विपुल हियहानी। भलो करन भल लीन बु
लाई। शोक निरत आश्रम निजआई। खानपान।

५५ म. ५

सवदीनन्यागी। नारायण सुमरण लवलागी। घर
नि सयन करि रयन विहाई। दूसरदिवस प्रातउठि
जाई। करि सनान संध्यादिक करमा। कीन्यानित्य ने
म निजधरमा। त्रितिये दिवस गुन्योमनमाहीं। अव
निज सकल धाम धनकाहीं। संतन कहं सव देहुं
लुवाई। चतुरथ दिवस भक्त हरषाई। विविध भांति
भोजन वनवाये। जहं तहं दीन्यो निमंत पठाये। वे
सव सकल निमंत्रण नासा। सनि सनि करहिं।

५

4

वदन उपहासा। कोअस स्वपच नास गृहजाई। भोज
न करहिं सधरम विहाई। मंद कुकरम कीन जगभा
री। हम नजिनास अन अहवारी। करसपर्स इन्या
हिकनागा। जान्यो अधम पतित हतभागा। जव अ
सभयो नास विसकारा। लाजित मानिशोक उर
भारा। चिंतारतनकेत अकुलाई। चारु चरन भग
वन चितलाई। भरि भरि भनत रुदन दृगवारी।
अवकाकरहुं भक्तभयहारी। सोरठा। अंजनाभिभ

५४
भ॰
५

गवान। परिश्रम भक्त विचारिडर। नासवदन सनमा
न। सपने कौन प्रबोधप्रभु। २। टीका। फिरकहतेहैं
कि अरे अधम गवार इहमराहूथा साधु भेषकोन
रहा मंदतैने विचारे और देखेबिनाही इसको लेजा
य करके दगधकर दियाहै अबमूढ़ तूं हमारी पंक
तीसे बाहिरहो तैनेबड़ाभारी पापकियाहै ऐसे दोष
लगाय करके सब वैसवोंने तिसको अपनी पंकती
से न्यारादिया तब जामाता तिन वैसवोंका कथन।

५

सुनकर हृदयमें परमहानी मानकर कहनेलगा
कि देखिये भलाई करने का बुराईका फलप्राप्त
होगयाहै ऐसे शोक करके कलंनाहुआ अपने
घरमें चलाआया और अन्नजल सब त्यागकर भग
वानके चरनोंमें चित्तको लगायेहुये पृथ्वीपरही
शयन करके रयन वतीतकरी दूसरेदिन प्रातःका
लहीं उठकरके सनान संध्यादिक अपना नित्यक
र्म जोहै सो सबकिया तब तीसरेदिन हृदयमें वि

चारकिया कि अब आपने घरका सर्वस्वधनजोहै
सोसब संतोंको खवायदेऊं और आपनिसकामहो
यकरके भगवानका भजनकरूं ऐसे विचार कर
चौथेदिनको घरमै अनेक प्रकारके भोजन व्यंजनो
की रचना करकर जहांतहां नगर ग्रामोंविखें नेउ
तानाहै सोपठायदिया तब जहां जहां तिसका नि
मंत्रण अर्थात नेउताजाताहै तहां तहां ही सबवै
स्नव वडीहांसी करकर कहतेहैं कि भाई ऐसा को

न अधम महांनीचहै किजो उसके घरमे जायकर भो
जन पावेगा और अपने धरमकानासकरेगा तिस
मंदने नीचकरमजोकियाहै तिसतें हमने अपनी
पंकतीसे बाहिर करदियाहै औरहे अवमूढ वडे भा
री पापका अधिकारी होयरहाहै खानापीना तो
और बातहै हमतिसकेसाथ सपर्शमात्रभी नहीं
करसकतेहैं इसप्रकार जबसब वैस्नवोंने तिसका
तिरसकारकिया तब परमलज्जा और शोकको

प्रापत भयाहुआ वहीचिंता और कलेशमानकर
घरमें न्यारेजाय करके बैठगया तहां भगवानके
चरनोंमें चित्तको लगायकर और रुदनके जलसे
नेत्रभर भरकर दीनबंधुकेआगे प्रार्थना करताहै
किहे भक्तोंके भयको हरकरनेवाले भगवान आ
पमैंकाकहूंगा तबइस प्रकार अपने भक्तको दु
खीभयेहुयेदेखो तबअंतर जामी दीनानाथ ति
सकाश्रम विचार करके किदेखो इसने अजा

र्वक अपना सब घर लगाय करके वैस्नव संतोंके
नमित नानाभोजन और व्यंजन वनवायेहैं वडीप्री
ती और सनमानसे तिसको स्वपनेमें प्रबोधकरने
लगे अर्थात समझावनेलगे ।२। चौपाई । चिंताशो
क करहु कछुनाहीं । भक्तआन तोरेगृहमाहीं । आ
वहिं वैस्नव संत घनेरे । मम वैकुंठ लोकतें प्रेरे ।
भोजनबहुभांत नार करिजावहिं । इहपश्चात सकलस
व आवहिं । तोपैंयावित करहि रसोई । नव तमभ

१४
भ०
८

नहू हरष जनहोई। अवभोजन रुचे कछुनाहीं। वैसा
उछिष्टमोर गृहमाहीं। असप्रकार जव स्वपन निहा
उदय अरुन उठि कीनविचारा। हरषत परमप्रेम
नलीना। मंदिर सदिन मारजन कीना। करिध्वनी
न मंगल सव भवना। वहुरि सनान हेत इत ग
वना। मज्जन करत भक्ति मनलीना। प्रेम सहित
पूजन हरिकीना। पत्रावली द्रोण दलरूरे। घट
अनेकसीतल जलपूरे। राखेसकल भवन निजल्याई

८

8

जेजे वसतउचित समदाई । वेसव देखिनास कृतन्हा
री । रहे परस्पर वात विचारी । इहिके कौन पतिन
मतिहाना । आय करहिं भोजन जलपाना । मरवे
वृथा यतन श्रम करहीं । हमरे मरम जान नहिं प
रहीं । सोरठा । चारुंसव धुनिसोय । भयोकाल नहि
गगनपथ । सुनन श्रवण निजसोय । जामाना हव
षो हृदय ।२। टीका । भगवान कहतेहैं किहे भक्त
तं हृदयमें चिंता और शोकमतकर आताकालवि

एवं तेरे घरमै मेरेप्रेरेहूये वैकुंठ लोकसें वैस्नव संत
जोहैं सो वहुत आवैंगे औरवे जव भोजन पायकरके
चले जावैंगे तव तिनके पीछे फिर इहमूढ ईहांके
वैस्नवनोहैं सोआपही तेरेघरमै आयकर्के भोजन
मागेंगे तव तुम मौनहोयरहना और जव लजित
भयेहूये वारवार कहैंगे तवतुम कहियो कि अव
सूचा भोजनतोनहींहै इह उछिष्ट अर्थात जूठा भो
जन मेरे घरमै है इह पावनाहै तो पायलेवो असम

४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ता

कार जब स्वपनदेखा। तब प्रांकाल उठकरके और

हृदय मै विचार करके आनंदमै मगनभयाहूआ

घरमै मारजनजो काडू इत्यादि उज्जलताईहै सो स

ब करताभया ऐसे सब घरको पवित्र करके फि

र नदीपर स्नान करनेको चलागया तहांसंध्या

स्नान करके फिर घरमै आयकर प्रीती भक्तीसे

भगवानका पूजन किया तिसके उपरांत फिर

बडे सुंदर कोमलपत्र और द्रोणजोडूने और ज

५८
भ.
१०

10

लकरके पवित्र कियेहुये अनेक घटजो घडेहैं सो
ल्याय करके घरमैं जहां तहां राखदिये और भीजो
जो वस्तु उचितथी सो सबल्याय राखी तब नगर
के वैस्नव तिसके परिश्रम और सब समाजके
जोडनेको देखकर परस्पर विचारकरके कह
नेहैं किभाई सो ऐसा कौन पतित अर्थात
पापीहै कि जो इसके घरमैं आय करके अन्न ।
जल खानपान करेगा इस न्नरखेने तो ।

रह ह्वयाहीं यतन और श्रम कियाहै इसका भेदहू
मको कुछ जाननहीं पडताहै तब इतनेमे तिसी
समय आकाशमारगविखें नानाप्रकारकी संद
र संख धुनीजोहै सो होनेलगी तिसको श्रवण
करके नामाना परम हरषको प्रापतभया और
हृदयमे जानगया कि भगवान के भेजे हूये सोई
वैसव संत अब आयगयेहैं।१। चौपाई। आव
नदेखि संत नमकारी। भेश्रवरन वश वैसव

५४
भ.

सारी। कृपासिंधु भगवान पधाये। हरषत भक्त भ
वन चलिआये भनत वचन मानस सुखदाता। प
रि हरि विलम वेगजामाता। जेवनार तुम जवन
वनाई। सोहमकहं अव देहु जिमाई। दीनघाल
कर सासनपहू। हमकहं करन पाक तवगेहू।
जव अस वचन वदन तिनवरना। तुरत पखारिवा
रु कर चरना। सादिर भोजन दीन जिमाई। सुछि
न तिनहिं चकित चितहोई। कहितेंआय कवनत

मं

अथश्रीधरस्वामीचरितं। चौपाई। अबमैंआन महात
मचारू। करहुंकथन गायन मनहारू। प्रव श्रीध
रस्वामि सुहाये। वेदावेद विदन जोईगाये। तिनक
रकाहुधनद सिषराहा। तासविरच्योयग्य उतसाहा
मनवच करम करन हितसेवा। तेनिजपठेवोलिगु
रुदेवा। सोअस चाहतिँवणपाये। श्रीधरस्वामिस
दनतहिआये। यतिगृह चरनवंदिसनमाना। स्वा
गतिपूछिदीन सुस्थाना। भयेजवहिं प्रणामव

९५
भं.
१

नासा। विप्रवृंद नव हृदय हुलासा। दानमान बहुविधि सब पाये। निजनिज सदन प्रसंसत आये। हृदे भक्ति प्रीति सनकारा। भनि भलि विनय वचन बहुवारा। हेमवस्त्र मणिगण विन दीने। निजगुरु देव विसर्जण कीने। असजव स्वामिनजन सिध भवना। कीन्ह कृष्ण जुन मा... गावना। विपुन विलोकि चोर सठ घाती। पापी निरदय पथिक अराती। शस्त्रिव उग्र आयुधकर धारी। कपटी क्रूर भयंकर भारी।

चलेम्नातजफ पाक्लिललागेण। देखिविभ्रउरथीरजना गेण। भयवसराम कवच उच्चारण। लगेकरन ज्ञ जग्रामनिवारण। मंत्रप्रभाव रुचिरमुखदाई। दस रथ हनराघवजगभाई। दोहा। लखनरामधन बानधृत उज सभक्त रखवार। प्रकटे ततक्षण विश्वनपथ निजवर विरदसंभार।।१।। टीका। अब आगे औरभक्तोकी अद्भुत और मनोहर गाथा जोहै। सोगायन करताहूं हेसंतजनो आपध्या

९५
भ०
२

नदेकर श्रवण करिये पूरव जोवेद नवकेज्ञाननेवाले श्रीधरस्वामी कथनकियेगयेहैं तिनकापक कोईबडाभारी धनीजोथा सो शिष्यहोनाभया श्रोर तिसने उत्साहपूर्वक यत्नकाप्रारंभकिया नवश्रपने गुरु श्रीधरस्वामीजी तिसनेसेवा करनेकेलिये श्रीतीभक्तीसे बुलायभेजे सो अपने शिष्यकी श्रद्धाभक्तीविचारकर प्रसन्नभयेहूये तिसकेघरमै चले श्राये नवधनीने चरनोपर प्रणाम करकर श्रोर

भलीप्रकार कुशल पूछकर सनमानपूर्वक वैठने
दर अस्थानमें वासदेदिया जोजवतिसका यज्ञसंपूर्ण
होयगया और ब्राह्मणोंके समूह भलीप्रकार सब
सनमानपाय कर प्रसन्नभयेहूये मुखसे षलाघा
वडाई करते अपनेघरोंको चलेगये तवपीछे गुरू
जीको वडे आदिर सतकारसे सुवरनमुद्रा मणी इ
त्यादिधनजोहे सोदेकर और हाथजोडकर विनती
केभरेहूये दीनवचन उचारकर वार वार प्रणाम

९४
भ.
३

करके विदाय करदेताभया इसप्रकार जवस्वामीजी
शिष्यके घरकोत्यागकर द्रव्यकोलियेहुये अपने
मारगको चलपडे जवतिनको देखकर चोर उपद्रवा
नी और निरदयपापी पथिकजो रस्तेचलनेवाले
हैं तिनकेशत्रु हाथोंमे वरछी तलवार इत्यादिश
स्त्रधारे हुये महाक्रूर और भयंकर भेषकियेहुये
वणसे निकलकर तिनके पीछे लाग चलतेभये
जवस्वामीजीने तिनअधमोंको अपने पीछे आव

नेदेखा नव हृदयकाधीरजजोहै सोसबछूटगया भ
यके वशभयेहुये सबखासोंकेहरकरनेवाले राम
कवचको उच्चारणकरनेलगजातेभये नवतिसमं
त्रके प्रभावसे अपनेभक्तसहायक विरदको सम
रकर धनुषबाणधारी रामलषमणदोनोभ्राता रा
घवजोहैं सोब्रह्मणभक्तकी रक्षाकरनेकेलिये न
रतहीनहांवणमे प्रकट होजातेभये।१। चौपाई
अमदेखेचोरन हगहोई। राघव धनुरबान छुतदोई

८५
भ०
४

मानिन्नासतिन वीवनकेरा। सकहिंनहगानविसरत
नहेरा। उजवरहहिं अगेगवरसागे। चलेजातअसपा
किललागे। चौरविलोकिरूपजगभ्राता। गवरस्या
म संदर दुइगाता। अंगअनंगकोटिछविलाजा
पीतवसन वनमालविराजा। विलसतमलयभा
लकलखोरा। भयेचकितमोहितचितचोरा। सिथ
लअंगवस चलोनकाहू। तौलौआयसदनदुइजना
हू। भक्तपालराघवजगभाई। नवदुइजननाथहिंसद

४

नप्रुचाई।होतलषननिजभवनसिधारे।नमस्कार
रहेठाढ़उजहारे।लखनरामछबिविशदयचितारी
सोकितगयेकहूतधनुधारी।ठाढ़ेवीरदेखिनिज
द्वारा।श्रीधरस्वामीकियोविचारा।इहजडभ्रमजहूं
नजतमहिनाहीं।नंम्रवचनउजवरतिनकाहीं
भनेकवनभैयानमसारे।ठाढ़ेकौनकाजममद्वा
रे।सोविश्रामकरनकछुकामा।सोइहिसदनव
सहुतवधामा।दोहा।नवचौरनभ्रमवदननिज

९५ भ. ५

भयोवचनडजकाहिं। क्रमकाननपथसंगलवला गकपदमननमाहिं। सोरठा। आयेसदननमार। गवरस्यामधनुवानधृत। सुरवीरसकमार। सोर खवारनमारकहा।२। टीका। नवचैारतिनदोनो धनुषवाणधारी वीर राघवोंको देखकरभयके वशभयेहूये ब्राह्मण की ग्रोर देखनहीं सकतेहैं तिसकीहदृष्टीको वचायेहूये पीछे पीछे लागेच लेजातेहैं ग्रोर लखमण राम गवरस्याम दोनो

५

भ्राताकैसेकि कोमलहैं शरीरजिनके श्रारकोटिका
मदेवकी छबीका लज्जादेनेवाले सुन्दरहैं श्रेग
पीतवस्त्र हृदयमें तुलसीकीमाला श्रोर माथेमें
चंदनका मनोहरतिलक ऐसे अनंत शोभा कर
के युक्त सूरवीर राघवोंको देखकर चोरजोहैं सो
अवरजके वशमोहितभयेहुये अशक्त होयगये
तिनका कछुभी वस नहींचलताभया इतनेमें
श्रीधरस्वामी अपने घरमें आयपहुंचे तब भक्त

८९ भ० ६

पाल और भक्तवत्सल दोनोभ्राताराघव ब्रह्मणभक्तको
घरमै पहुंचाय करफिर आपनवरनहीं लषतहोयक
र आपनेधामकोचलेजातेभये चोरजोथे सोतहांश्री
धरस्वामीके द्वारेपरस्थितहोयरहे और रामलक्षमन
की सुंदरछबीको हृदयमैविचारकर परस्पर कह
तेहैं किभाईवे दोनोगवरस्याम धनुषबाणधारीजो
थे सोकहां चलेगयेहैं श्रीधरस्वामीने चोर अध
मोंको द्वारेपर स्थितभये जोदेखा तोहृदयमें वि

६

6

चार करकहतेहैं कि इहदुष्टपापकी खानी अवीपी
छानहीं छोडतेहैं तबकोमलवाणीसें तिनकोक
हनेलगे कि हेभाई तुम कौनहो और कौनकाज
केलिये मेरे द्वारेपर स्थित होयरहेहो जोकदाचित
विस्राम करनेकीरुचीहोतो इह तुमारा अपनाघर
है आनंदसेनिवासकरो तब चोरकहनेलगे किहे
ब्रह्मण हमहृदयमें तुमारे लूटनेकी इछाधार
कर बणमेंपीछे पीछे लागे इहां तुमारे घरमें

चलेआयेहैं औरदोसूरवीर तुमारे रखवारे जोहोय
गये तिनकेभयसें हमाराकुछ वसनहीं चलसका
अवकहो किवेदोनो गवरस्याम धनुषवानधारी कु
मार और वीरप्रधान तुमारेरखवारेजोथे सो कहांगा
येहैं ।२। चौपाई। तिनकरसुनत मरमजुतवानी ।
विप्रवदनयसगिरावखानी। भनहोमोहिप्रकटकरि
भाई। कोतमसोममकवनसहाई। नवतिनसकलमरम
निजकाहा। हमरा जनम विप्र कुलमाहा ॥

नेकछु पूर्वकरम अनुसारा। चौरकरम बनभयोह
मारा। तुमहिं देखि काननवधहेतू। हमप्रचंड आयु
धकरलेतू। चितलालस पाछिलतबलागे। पैसु
कमार युगलवडभागे। आकृति सुभट धनुषसर
धारे। भयेतोरउजवररखवारे। जबचोरन असव
चनअलावा। तवउजनाथतिनहिं सिरनावा। अहो
आनतव सं स्वतिधन्या। जहिं असदेव चराचर म
न्या। सिउसाथमति उरलभलेखा। तमहुं सुलभ

९५
भ
८

8

नयनन्हभरिदेखा। मैतोजामसमानिउरमारा। रामक
वचमलखमंत्रउचारा। तहिप्रसाद राघवजगवीरा
लखमनराम हरन जनपीरा। काननमधेमोरर
खवारे। प्रसप्रकार जवस्वामिउचारे। नेत्रजोरि
कर चौरनदीना। तवप्रणामचरननङ्गकीना।
तुमहंथप्पजगविप्रस्तुधरमा। जहिप्रसादहम स्र
धमकुकरमा। गवरस्रामराघवजगभ्राता। जीवच
रावरकर सवदाना। इननयननभरिलीननिहारे

८

१

आजहमारभागजगभारे। असकहिआपुथदीनमि
शरी। रामलषनमूरतिउरधारी।। श्रीथरस्वामिच
रनसिंनाये। दटलरामनिजसदनसिधाये। असइह
चरितचारुमनभावा। मैसंत्तपतवदननिजगा
वा। दोहा। उजउतम संसर्गतें चौर कुमतिअग
खानि। तजिकुकरम मे भक्ति जतराम चरनर
तिमानि। जिमिआयस कंचिनभवत पारस प
रसिकरंत। तिमिजगउरत वधूतकल करत

९८
भ.
५

सकंगतिसंत ॥३॥ टीका॥ ऐसे तिन चोरोंकी गूफवा
ली सुनकर श्रीधरजी कहनेलगे कि हेभाई मेरे
को प्रकट करकेकहो कि तुम कौनहो और वेमेरे
सबवारे कौनथे तब चोर अपनाभेद कथन कर
के सबसुनायदेतेभये कि हे ब्रह्मण हम ब्रह्म
ण कुलमेंजनम हुयेहैं परंतुकछुपूर्व जनमकी
करनी करके इहांचोर कर्म जोहै सोई हमारा व्रत
और धरम होयगया अर्थात इसी चोर कर्मको

५

हीं हमने गृहण कर लिया है बन मैं तुमको थके
ले देखकर धन के लालच से हाथों मै प्रचंड शस्त्र
पकड़कर तुमारे वध करने का मार देने की इछा
न से पीछे पीछे लाग चले आये हैं परंतु वे तुमरे वी
रों के प्रभाव वाले नीले धनुष बाणधारी गौर
स्याम दोनो सुकुमार तुमारे रखवारे होय गये
तिनके भय से हमारा कछु बस नहीं चल सका
जब इस प्रकार चोरों ने कथन किया तब श्री प

दर्भ
स·
१०

ऋषीश्वरोंने तिनको प्रणाम करकर कहाकि अहोभाई आजतुमही संसारमें धन्यहो किजिस चराचर सृष्टी के स्वामी कारधुनन्दन सिद्धनाथ तपस्वी जोगीमुनीलो गोंको अनेक यतनहठ करनेसे भी दुरलभ होताहै अर्थात नहीं प्राप्त होता सो रघुनन्दन आजतुमने य तनकेबिना सहजेहीं नेत्रभरकर पायलियाहै से नेजोभयके वश होयकर रामकवच मंत्रको मु खसे उच्चारण कियाथा तो तिसके प्रसादसे भक्त

१०

जनोंकी पीड़ाकलेशहरने वाले रामलछमनदोनो
भ्राता राघव जहांवणमें मेरे रखवारे होयगये इ
सप्रकार स्वामीजीका कथन सुनकर चोरदीन
होयकरके चरनोपर प्रणामकरतेभये और हा
थजोड़कर कहनेलगे किहे ऋषप्रधान तुमध
न्यहो और हे धर्मकी निधी धनवनमारीकरनीहै
कि जिसके प्रसादसे हम अधम कुकरमियोंने
चराचरसृष्टीके पालकगावर स्यामदोनोभ्राता

८५
भ०
॥

नेत्रभरकरके देखलिये आजजगतमें हमारे भा
गोंकेसमान किसकेसुरणभाग्यहैं ऐसे कथनक
रकर शास्त्रजोथे सोहाथोंसेडालदिये और राम
लमनदोनोंभ्राताकीसोई गवरूपामम्रतकी हद
यमें धारकर श्रीधरस्वामीजीके चरनोपर वारंवा
र प्रणामकरके रामरामरटतेहुये अपने घरको
चलेजातेभये इसप्रकार इससुंदर गाथाजोहै सो
मैंने संक्षेपकरके कुछ गायनकरदेईहै देखिये
॥

ब्रह्मणोंविषे उत्तम श्रीधरस्वामीजोहैं तिनके संस
र्ग अर्थात संगतीसें पापकी खानी और अधम
कुमती चोर जोथेसो अपने सब कुकरमोंको त्या
गकर श्रीरघुनाथजीके चरन कमलोंकी भक्ती
प्रीतीवालेहोजातेभये जैसेपारसके साथसप
र्शहोनेसे लोहाजोहै सोमलको त्यागकरके शु
द्धकंचिनहोजाताहै तैसेहीं संसारमें पापोंके
धोडालने और चित्तके निरमल करनेको संतोंको

९५ संगती सामर्थ्यहै ।२। इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथेभगव
भ. दभक्तिमहात्मे भाषाटीकायां श्रीधरस्वामी च
१२ रितवरणंनाम सरगः ॥

मीहांसिंहकृत

12

अथ श्रीरंगचरितं। दोहा। अनभक्तिगाथा रुचिर कर हुं कथन सुखदान। जासु सुनत उपजै विमल भक्ति कृपल भगवान। चौपाई। दक्षण इक बड देस इक ग्रामा तहं वैस्नव श्रीरंग अकामा। विस्नु भक्ति मन तुरुचर डुम सोई। ग्राम लोग सब रति जन होई। पूजहिं तासु वचन मन काया। नर तिय सकल धरम रत दाया। मातुल भागनीय जग रामा। निवस त सुरन कारन हि ग्रामा। सो उपदेस संत वर पाई

" सहाई। देवि ग्रनपि वै सब महि देवा। करन भक्ति " १

भयो निरत हरि भक्ति ज्ञत सुमन सेवा। एक दिवस मति न हृदय विचारा। हरि तें ध्यान धरम नहिं भारा। हम श्री रंग नवल मट भाई। करत यतन प्रभ सेव ब नाई। पै धन विन कारन कस सरहीं। प्रम प्रकार उर चिंतन करहीं। संत परस्पर इह मन ठाना। ग्राम जवन जय नी धन माना। ता कर वनहु जगल सत जाई। चोरज करम तास धन ल्याई। तव श्री रंग नवल मट रूरा। लेव व नाय यतन करि हूरा

अस्तुति स्वरनकार करिगवना। आयेजगल वो
थके भवना। भयेतास भतकपट उराई। लागे
करन रुचिर सिवकाई। दोहा। नव तिनकीनवि
चारउर करिहुं कवन अवचारि। ईहांन पतिमारे
ववित सुमगति आन अयोरि। १। टीका। अव श्री
र भक्तोकी मनोहर गाथा जोहै सो कथन कर
ताहुं कि जिसके श्रवण करनेतें हमभगवान
की भक्ती हृदयमै हढ होजानीहै दसणमे ट

१८
भ०
२

वङ्गदेश विषें एक ग्राम था तहां श्रीरंगनामकरके एक वैष्णव प्रधान होतेभये सो कैसेकि विष्णुभक्तों के मानो कल्पवृक्ष तिसग्रामके सवलोग तिनको परमप्रीती और श्रद्धापूर्वक पूजतेथे और सवही पुरुष दयाधर्ममें प्रवीनथे तिसीग्रामविषें मातुल और भागनेय अर्थात दो मामाभानजा निवास करतेथे सोकिसीसंत महात्माका उपदेशपाय करके भगवानकी भक्ती प्रीतीवालेहोयगये

२

अतिथि साध ब्राह्मण देव के अ श्रद्धा भक्ती से तिन
का सेवन सतकार करते थे एक दिन तिन के हृ
दय मै अभिलाषा उपजती भई कि हम श्री गंगा
जी का सुंदर भट जो है सो बनावें इस तें परे अन्य
धरम और कोई नहीं है परन्तु हमारे पास इसका
एक धन नहीं है ऐसी सोच करते करते अंत कोइ
हा निश्चर किया कि इह ग्राम विखें जयतीजो बड़ा
धनमान है तिसके जायकर के नौकर बनिये

५८
भ०
३

3

और चोरीसे तिसके घरकाधन लयायकर तव
श्रीरंगस्वामीजीका मटजोहै सोवनायलेवें इस
प्रकारमनाहठ करके तिसधनीके घरमें चले
गये और दोनोंकपटको छिपायकर तिसके नौ
करवनगये नवरात्रीदिन टहिलसेवा और का
मकाजजोहै सो सवकरनेलगे ऐसेकछक दि
नोंके पीछे सोदोनो सुनार परस्परविचार कर
नेलगे कि हमने इसकेघरमें चोरीकरनेके ।

लिये नौकरी करी है परन्तु ईहांतो देवकीप्रति

माकेविना श्रौर अधिकधनकोई नहीं देखपड

ताहै।१। चौपाई। असविचारि मातलनिसिका

हीं। उतसोभग गवास्त मटमाहीं। रतनजटि

त कल मुरनिदेवा। गहिमगनेय उरय पथ

लेवा। नव मातल असनाह बाबाना। मोरसी

स हनि खेडग खजाना। कादिजाइ निजसद

नसिधाई। तमकहंहोहिं सफलधनभाई।ना

सवचन वसहृनि करवाला। कादिमीस मातल
ततकाला। प्रतिमादेव लेतङ्कुतगवना। रावीजा
यतास निजभवना। आवावङ्गरि जयतधनिगेङ्गा
भयोशयनरत विगतसंदेहा। ऊहांतासमातल
कर आना। कटोसीस ततन उपजाना। खल्या
तरत संलगनकवारा। आयोनिकसि वहिर न
वहारा। निजसिजा जनमौन धराये। रहोसाय
निसि अवसर आये। भोरहिं देखिनास असआ

५८
भ॰
४

४

तास्वरुचिर असगिराप्रकासी। अवतेसंत वैस्नव
चीना। जोप्रावहिं नवग्रामप्रवीना। तोमोहि धी
ग्र सूचनादेहौ। करिसेवा वांछित फललेहौ। सु
निसासन स्वामिनि ततकाला। करिप्रणाम ग
वनीनववाला। संतआगमन विलोकनलागी
करत प्रजटन ग्राम अनुरागी। एकदिवस होवा
वतिनेहीं। आयगये वैस्नव गणजेहीं। खोज
तफिरे नगर सवमांही। तिनकहं मिलेपा वा

८८
भ०
५

सपलनाहीं। कौन नकाहु जवहिं मनमाना। त
वइक वहिरवापिजलथाना। तरुवरदेखि सघ
न सुठिछाया। तहांतिनहिं आसन हढलाया।
मोदासी तिनपे अनुरागी। करिप्रणाम असम
छनलागी। कहितें आयसंत समुदाया। तिनहु
संतनिज सकल सुनाया। हम आये द्वारावति
त्यागी। जगन नाथ प्रभुदरसन लागी। तसुनि
निज स्वामनिढिगआई। कथासंत आगमनसु

५

नाई। देवीप्राय वैस्सव ग्रामा। दीन नकाहू तिन
हिं विस्रामा। अंतकलेश मानि उरभारी। वाहि
र ग्राम एक वापिनिहारी। तहां विछाय परणन
हतासा। विनभोजन निजकीन निवासा। विस्नु
भक्ति रतभूप कुमारी। असकलेश सनिसंतन
भारी। होनउरवित निजसुत कहंदीना। हाला
हल विलंब नहिंकीना। वालकभयो नरतम
तजवहीं। लागीकरन रुदन अनितवहीं। दोहा

स्वनिश्चारत स्वरतास अमसॅरमास पतिवंधु। ऐसापर
नें धायसव सम्भ्रमविगत अनंइ।२। टीका। फिरके
सेकिदयाधरमसेरहित नित्यपापमेंही जिनकी
प्रीती ऐसेपतीकी कुलकोदेख करके राजकन्या
परमशोककोप्रापतहोयगई इसप्रकार कुछ
काल वतीतहोजातामया तवसो भूपकुमारी
सुंदर पुत्रजोहै सो जनमतीभई तिसवालककी
देखकर मातसमर पती और वांधव जोथे सो

तब परम हरषको प्राप्तहूये और तिसको अ
पना जीवन प्राणजाननेलगे बालकके उनमा
हूमै मगणभयेहूये कहतेहैं कि आजहमारे
समान जगतमै कौनवडभागीहै ऐसेजबचा
र वर्षवतीतहोयगये तब एकदिन राजकन्या
अपनी दासीकोवुलायकर कहनेलगी कि अ
वतैतू तिसनगरमै जायकर देखतीरहना
कोई वैसवसंततजन जोआवै तो आयकरके

५८
भ॰
८
7

शीघ्र मेरेकोजणायदेना मैतिनकीसेवाभक्ती क
रके अपनेमन वांछित फलको प्रापत करलेऊं
इसप्रकार स्वामनीकी आज्ञापायकर दासीजो
है सो त्वरत प्रणाम करके चलीगई और ग्राम
मै जहां तहां फिरकर संतोका आगमन अर्थात
आवनेको रात्रीदिनदेखनेलगी तब एकदिनद्वा
रावतीतें विचरते विचरते वैसनवसंतजोहैं सो
तिस नगरमै आयप्रापतभये सो॰ संन्यासी त्यागी

८

मे ओं संपूर्ण नगरमे फिरतेके परन्तु
किसीने भी तिनकाकुछ सनमान नहीकिया और
नातिनको कहीं निवास करनेकेलिये कोई आश्रया
न प्राप्तभया तबतो दुखीहोयकर और बड़ाक
लेश पायकर नगरके बाहर एक वापिका अर्था
त बावली और घने वृक्षोंकी छाया देखकर भूखे
प्यासे वहां आसन लगाय देतेभये इतनेमे फि
रती फिरती सो दासीभी तिनके पास चली आई

७८
भ.
८

8

और वैस्नवसंतोंकों देखकर प्रणाम करके कोमल
वाणीसें सछनेलगी किहेसंतो कृपाकरके कहिये
कि तुमाराकहांतें आवना हुआहै ऐसे तिसका
हित प्रीतीवाला वचन सुनकरके संतकहनेल
गे किमाई हमद्वारिकातें आयेहैं और जगन्ना
थ स्वामीके दरसन की अभिलाषा रखतेहैं त
वसंतोंका वचन सुनकर दासी तुरत अपनी
स्वामिनीकेपास चलीआई और वैस्नव संतो

के आवने का सब प्रसंग सुनायदेतीभई किहेदेवी
ईहां नगरमैं वैस्नव संत आयेथे परन्तुकिसीने
तिनको निवास केलियेनहीं दुछा ओर नाकिसी
ने कुछसनमान किया अंतको उदासीहोयकर ति
राटिरसे नगरके बाहर एक बावली ओर हलो
की छनीछायादेखकर तहां पत्र विछायकर ओ
र तिनपर आसन लगायकरकेभूखे प्यासेहीं
पडेहुयेहैं इसप्रकार दासीके मुखसे वचन सु

नकर विस्नु भक्तीमे लीन विस्नुभक्त राजाकीक
न्या जोथी सो संतोंका ऐसा डुख और कलेशवि
चारकर सहारनहीं सकतीभई तिनके डुखसे
ब्याकुलभई हुई वरतहीं अपने पुत्रको हालाह
लजो विषहै सोखवायदेतीभई जव तिसके प्र
भावसे वालकअस्त होयगया तव वडीरुची स
वसे हाहाकार करकर रोवनेलगी ऐसेरुचिस
का रोदन और विलाप सुनकर सास ससुर प

५८
भं०
५

नी औरबांधवजोथे सो अपने अपने महलोंसेंनि
कलकर भ्रमकेवश व्याकुलभयेहुये धावनेचले
आये।२। चौपाई। देखिबाल मरन हाहाकारा। ला
गेपाकरन सकल परिवारा। मरनबाल कारन
जबहूका। भनन जननि मोहि नाहिनसूका।
तब बांधव धीरज सब त्यागे। ताडन सकल व
छ निजलागे। अस बिलोकि तिनकर दुखभा
री। बोली बदनबाल महतारी। जनकनकेन

आनमसमरहृयैा। सोऽइकरि वसविवस स्तनभयैयैा
नेनकमोर नव हृदयविचारी। लखिहरि भक्तस
वैस्नव कारी। तिनपैंजायजोरि जगपाना। करत
प्रणाम नम्र मनमाना। लावापीति भक्ति जन
गेहा। कीन विविध विधिपूजननेहा। चरनोंक
तिनलेन सुहाया। कीनमस्तक मार्गए इतका
या। सोप्रभाव संतनपद वारी। उठ्यौवालमस्त
हुस्स उचारी। तोते नमहुं यतन श्रवपहु। कर

हुवेग बांधवजन नेहू। देखिसंत वैस्नव कहूंआये
ल्यावहु भवन वेगहुत जाये। होहिंजियत मनवा
ल तुमारा। तासवदन जव वचन उचारा। कहन
हमहुं कस जानव सोई। वैस्नव संत कवनकस
होई। अवलो पसोअवण नहिंएहू। वैस्नव सं
तभेन तवजेहू। तासकहेउ हरषत मनमाहीं। इ
हदासी जानत तिनकांहीं। सुनत सकल ऑमो
दउमंगा। लियेतासदासनि कहूंसंगा। आयसंत

म

५८ भ॰ ॥

गण चरण जहासो । जोदिन गलकर विनयउचा॰
सो । महाराज सिंहश्राज हमारा । स्तनवस भयो
प्राणतेंप्यारा । तव प्रभाव चरणन तहिमाई । गा
वाकरि करि विविध वडाई । तोनेवलहु संतकार
दाया । जानिदास निजहोहु सहाया । तवप्रसाद
स्तनवाल हमारा । जियहिं संत प्रभू भूप उवारा ।
सदासंत संसृति उपकारी । नामभक्ति वसवेल
सिधारी । जवप्रवेश भूपति गृहकीन्हो । स्तनसि

॥

समान चरन गहिलीन्हो। दोहा। करिमज्जन विधि

वत सकल नम्रत विनय वखान। अहोभागाभूरी

भवन आयसंत भगवान।३। टीका। नव बालक

कोमरेहुये देखकर संपूर्ण परिवारजोहै सो हा

हाकार शब्द करकर रोवनेलगा और जब बा

लकके मरणकाकारण पूछा तब तिसकीमाता

कहतीभई किमै कछुनहीं जानतीहूं इहकैसे म

रहोयगयाहै ऐसे तिसके मखसे वचन सुनक

५८
भ.
१२

12

रके सब बांधव दुखितभये हुये अपने अपने हृदय
को पीटनेलगे इसप्रकार तिनकापरम दुख और
कलेश देखकरके बालककी माताजोहै सो कहने
लगी किहे बांधवजनोमे तुमको एकवार्त्ता सुनाव
तीहूं तुमहृदयमे धीरज धार करके श्रवणकरो
क्योंकि एकदिन पिताके घरमेमेरा भ्राताजोथासो
दैवजोगसे कालके वश होयगये अर्थात मरगया
तबमेरापिता मनमे विचार करके तहां वैसवसे

नोंकी जमातश्राई हूईथी तिनके पासचलागया। श्रौर दीनभावसे चरनोंपर प्रणाम किया फिरहा थ जोड़कर भावसे अनेक प्रकार विनतीवड़ाई क र कर तिनको अपने घरमें लेश्राया श्रौर विधीपू र्वक वड़ीप्रीती सनमानसे तिनका पूजनकिया नव संतोंके चरनोंका जलनोया मोले करकेति सप्तनभयेहूये वालक के शरीरपर मार्जन कि या श्रर्थात छिड़का नवसंतोंके चरणामृतके प्रभा

भ॰ ५८ १३

वैसे सो मराहुआबालक हलस हलस कहताहुआ उबखडाभया तांते अब तुमभीहे बांधवजनो रोद न विलापको त्यागकरकरो वैसवसंत आयहूये देखकर तिनको जायकर भक्ती सनमानसे घर मै लेआवो तोतिनके चरनोके प्रसादसे इह तु मारा बालकभी जीवनहोजावेगा इसमै कुछसं शयनहींहै ऐसेतिसका कथनस्नकर सो बां धवजन कहनेलगे किहे सशील तूंनेसत्यकहा

13

है परंतु हमतिनको कैसे पहिचानेगे वैस्नव कौन
और कैसेहोतेहैं हमने आजलगकानमें भी नहीं
सुने तव सो राजकुमारी हृदयमें वडाहरष मान
कर कहनेलगी कि मेरी इसदासीको तुमसाथ
लेजावो इह तिनको जानती पहिचानतीहै इसप्र
कार सुनकरके वांधवजोथे सो तिसदासीकोसा
थलेकर आनंदसे खोजतेहुये तिन संतोकेपास
चलेआये और दीनभावसे चरनोंपर प्रणाम

५८
भ
१४

करकर और हाथजोड़कर बिनती करनेलगे किहे
संत उदारहे कृपाल आजहमारा प्राणप्यारा बाल
कजोथा सो कालके वशहोयगयाहै प्रभू तिसकी
माताने आपके चरनोका प्रभाव और महिमाव
डाईजोहै सो अनंतनहीं कथनकीये किजिसकाकु
छ्अंतनहीं तांतेआपने सेवकजानकर कृपा...
...निधान कृपाकरिये और हमारेघरमेचलिये
आपके चरनोंके प्रसादसे हमारामृतनभयाहुआ

१४

बालकजोहै सो अवश्यजीवत होजावेगा जब इसप्र
कार राजाकेसहित सबबांधवोंने प्रार्थनाकरी त
बसंत सदैवपरउपकारी और दयाकीनिधीहोतेहैं
तिसराजकन्याकी भक्तीकेवशहोयकर ततकाल
ही तिनकेघरमैचलेआये तब संतोकादरसन क
रके राजकुमारीकि जो मनभयेहुये बालककी
माताथी धायकरके संतोके चरन पकडलेतीभई
और फिर विधीवततिनका सबपूजनकरके हा

७८
भ०
१५

यसोउकर वसीदीनवाणीसे कहनेलगी कि अहो आजहमारे धन्यभाग और धन्य हमारासफल ज नम कि जिनके घरमै अनायास अर्थात यतनके विनाहीं संतभगवानचलेआये और चरन धारक र हमारे घरको पवित्र कियाहै ।३। चौपाई । मिलो आज वांछित फलमोरे। अन्तरजामि विदतसव नोरे । असकहादृ जुत वचन सुहावा । सुनततुरा त संतन सुखपावा । देखिनपट सुतवाल अक्का ८न

१५

करनलाग भगवान अराधन । असप्रकार संध्या
नवछायो । मारतंड भगवानउगायो । सनकवाल
मनईंड प्रकास्यो । वाधव कुमद विलोकि विका
स्यो । सकलनगर चरचा असछावा । संतदीन
सनवालजियावा । भूपसमेत सकल परिवारा ।
जानिरमत संतन उपकारा । बार बार चरननसि
रनावहिं । करत सुजस मव रपति नपावहिं
नवनर नाष्यपाक विरचाये । प्रथमप्रीतिजुत

५८
भ
१६

संतनिमाये। पुनिपरिवार सहित निजकीना। भो
जनभूप परम सावलीना। नहिपश्चात वसन य
ननाना। मणिकंचिन ल्यायो मनमाना। कीनन
वेदन संतनआगे। करिप्रणाम मानस अनुरागे
कादेहैं भगवन तवकाहीं। दीनयालककुलाय
कनाहीं। तवसंतन असगिरा उचारी। जोइह न्
पति सुनवोलमारी। भगवनभक्ति निरतव्रतध
न्या। भगवन भक्तभूप करकन्या। हमइहि भक्ति

बिबसन्तपग्रावा। भक्ति प्रभावबाल मरतजपावा।
भूपभक्ति सम संसरनिग्राना। नहिंन नरन भव
सागरयाना। तोतेनमहु हेघ सबकोई। संतत
कृस्नभक्ति रतहोई। करहु ग्रकेहिं राजसहावा
ग्रससंतन जवबचन ग्रलावा। पसोल्लकट इव
चरननराई। भयोक्रनार्थी कपट बिहाई। सोइबा
तवसहसंत समुदाय। ग्रमप्रकार कहिचरितनवर
सपनेंसेन बिदाय। निजमारग गवनेमदित।

क

भूष भक्तिमनहोय। हृत्कमल पदधारिउर क्रम
नि दैष सबखोय। राजकाज ननपरमयो। ४। टी
का। फिर कहतीहै कि आजमेरेको मनवांछित
फलजोथा सोप्रापत होयगयाहै हे संतस्वामी
तुम अन्तरजामी सबकुछ जानतेहो तब ऐसे
कटाक्षवाले तिसके वचन सुनकर कि जिनमें
रहस्यार्थ सिद्धहोताहै जोभगवन बालककामा
रना केवल आपकेदरसनके लियेहै संतमहात

मास्ननकरके परम आनंदको प्रापतभये और न
वीनहीं उज्जलवस्त्रले करके मग्नभयेहुये वालक
के ऊपरडालदिया फिर आप तिसकेपास बैठ
करके भगवान कृपानिधानका स्मरणकरने
लगे इसप्रकार दीनबंधुको स्मरते स्मरते सं
ध्यापरगई और सूरजभगवान अस्तहोयगया त
व मग्नभयाहुआ वालकजोथा सोमानो चंद्रमा
केसमान उदय होजानाभया तिसकोदेखकर

भा० भ० १८

18

मातापिता बांधव इत्यादिक मद अर्यानन्द्रोपे जो

थे सोभी प्रफुल्लित होयगये संपूर्णनगरमें इह

बरचानवरतहीं फैलगई कि राजाकामराहुआ

बालकसंतोंने जियायदियाहै तव राजाके स

हित सबपरिवारके स्त्री पुरष संतोका अत्यंत

उपकार जानकर आयकरके वारवार चरनो

पर सीसनावते और तिनकी महिमावडाई

कथनकरते त्रपतनहीं होतेहैं तिसते उपरां

अनेक प्रकारके भोजन व्यंजन बनवायकर और
प्रीती सनमानसे प्रथम संतोंको जिमायपीछे प
रिवारके सहितराजा आपपावताभया फिरसुंद
रवस्त्र और मणीकंचिन इत्यादि धनजोहै सोल्या
यकर और संतोकेआगे भेटाराखकर हाथजोड
करके दीनवाणीसे विनती करनेलगा किहेकृ
पानिधान मैं क्यादेऊं इहकुछ आपके लायक
नहींहै मेरीइछ्छेहीं अर्थात खालीहाथरहीं आ

एकीसिवकाईहै नवसंतमहात्मा राजाकीप्रार्थ
नासुनकर प्रसन्नहोयगये और कहनेलगे कि
हेराजन इहतुमारे पुत्रकीपतनी तुमारी स्नुषा
अर्थात ... जोहै सोपवित्रव्रतके धारनेवाली
भगवानकीभक्तीमे प्रवीन और विस्नभक्त रा
जाकीकन्याहै इसीकीभक्तीके प्रभावसे तुमारा
मृतभयाहुआबालकजोथा सो जीवनहोयगया
है तांतेहेराजन भक्तीकेतुल्य और दूसराकोई

भीधरमनहींहै इससंसार समुद्रकेतारनेको भक्ती
हीं जहाजकेसमान प्रधानहै हेमहाराज अवतुम
भीद्वेष श्रौर कपटकोत्यागकर श्रीभगवानकेच
रनोंकी सुंदरभक्तीजोहै तिसकोहृदयमें धारनक
रके निरभयहोयकर अपनासबराज काजकरो
श्रौर प्रजाकोपालो इसप्रकार जबसंतोंने उपदेश
किया तबकपटसे रहितकृतार्थ भयाहुश्रा राजा
दंडवत चरनोंपर गिरपड़ताभया श्रैसेसंतमहात

१७
भ॰
२॰

माजोहैं सो भक्तीकाप्रभाव दिखायकर और वि
दायहोकर कमलकमलरटनेहुये अपने मारगको
चलेगये ईहांतिनके प्रसाद और राजकन्याके उ
पकारसे राजाभीकुमती और द्वेषसें नहुजकमल
भगवानके चरनकमलोंकी भक्तीप्रीतीवाला हो
यकर राजकाजमें लीनभयाहुआ दयाओरधर्ममें प्र
जाकोपालनेलगा ।४। इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथे भगव
द्भक्तिमहातमे भाषाटीकायांकलशावदरेसंपानवासी

मीहांसिंहकृत

भगवद्भक्तिमहातमे भा॰ अ॰

२॰

अथनिमकंविनवरितं। दोहा। अतिअदभत सुंदर
सुखद भक्ति महातमअग्यान। करहूंकथन सादिरव
दन हृस्मभक्तिवरदान। चौपाई। विप्रएकमहदेस
निवासी। जहिहरिपालनाम धनरासी। करत
दैवपूजनमनभावा। भयोहूउततवबालकजावा।
उपजतसवनहरषउरमाना। इनअतथीन दीन
वहुदाना। दिनदिनवृद्धिवालजवलीना। तव
उपनयन करमसवकीना। पुनिवालककरह

८८
भ॰
१

विरविवाहा। दीनकराय विप्र उतसाहा। सोमने
हलालन जतपाला। रह्मामगधविद्यावरवाला
पैमानसरकसतेसभाऊ। भगवनचरनभक्तिर
तिनाहू। देवनघ्रतथिसंतमहिदेवा। सादिर
करहिं विप्रसतसेवा। जननीजनकशरि उरधी
नी। होनप्रसनदेखिसभरीती। प्रमसप्रकारकछु
कालविहाना। ननेजनक रुज प्रारतप्राना।
सहगामनीभईमहतारी। पतिसनजरतप्रलोक

सिधारी। नवसहविप्रनिजपतनिसमेता। प्रीतिसहब
कहविरनकेता। लागकरन संतनसिवकाई। अस
विनयिनसंविनसमुदाई। संतनकहंसबदीनविया
वा। वहुरिपतनिआभरनसहावा। साधुनअर्थ स
कल वयकीनो। भयोवहुरिजनदधबहीनो। लागेप
करनगृहगणरिणदाना। असप्रकार भारंकमहाना
लवेनलोकनिसकंविनताहू। वहुरिदेननाहिन
रिणकाहू। नवसहविप्रसंतननहिनलागी। लोकला

८०
भ०
२

जकलहीनतयागी। भिक्षाहितकरिसंतनसेवा। ला
गेपाकरन प्रवरमहिदेवा। निसकंविननाकर अ्सना
मा। भाषनसकलनारिनरग्रामा। दोहा। भिक्षाहित
असधरमतें संतनत्पतिकछुनाहिं। होतनजातोवि
प्रवर नवविचारिमनमाहिं। संतनहितलागेपाकर
नदिवस रजनि उजचोरि। आपमांगि भोज
न करत यथा लवथ कछु थोरि॥ १॥ ॥
टीका॥ अब और वरा अदभुत सुखदायक

२

और कृष्णभगवानके चरनकमलोंकी प्रीतीकेदेने
वाला भक्तीकासुंदर महात्ममजोहै सो कथनक
रताहूं मरुदेसविखे एकधनवानब्राह्मणहरी
पालनाम करके वास करताथा और निज भग
वानके भजनसेवनमें लीनरहताथा परंतु सं
तानसेहीनथा वृद्ध अवस्थाविखे भगवानने ति
सके घरमेंपुत्रदिया तब बालकके जनमका
उतसाह मानकर धनथीसाथ ब्राह्मणोंकोदा

९० नमानसे भलीप्रकार प्रसन्न करना भया नवदिन
भ० पायकरके बालकको सयाना होय गया तब
३ तिसको विधीपूर्वक यज्ञोपवीत धारन करवाय
कर और फिर थोडे दिनके पीछे आनंदसे तिस
का विवाह भी करवाय देना भया इसप्रकार बडे
यतनेह और प्यारसे पाला हुआ सो बालक विद्या
सेहीन रहा अर्थात तिसको विद्याकुछ प्राप्त
नहीं भई परंन्त कुछ पूर्वले संसकारके प्रभावसे

३

सतेमिटहीं तिसकेहृदयमें भगवानके चरनोंकी
भक्ती उतपन्न होजातीभई जहांकहीं अनथीसा
ध ब्रह्मणकोदेखता प्रीतीमनमानसे जायक
र तिनकीसेवाकरताथा तब ऐसेतिसकी से
नसिवकाई से प्रशादेखकर औरं हुभरीनीवि
चारकर मातापिता अपने चितमें असंतहीप्र
सन्नहोतेथे ऐसेजब कुछकाल बतीतहोग
गया तबरोगकरके पीड़तभयाहुआ तिसका

८८ भ. ४

4

पिताजोथा सोकालवश होजानाभया पीछेमाता भी तिसकाविजोग नहीं सहारसकी पतीके सा थचलकर परलोक के मारगकोसिधारजातीभ ई तवर्वलक्ष्मणतिनका सबसंसकार कर कराफि र स्त्रीके सहितघरमें स्वस्थचितहोयकर अनयी साथ वलक्ष्मणेंकी भलीप्रकारसेवा भक्ती करने लगा थोडेहीं कालमें पिताका संचितकिया अ थीत जोअहृष्यधनजोथा सो सबसंतोंकोखवा

दिया तिसतेउपरांत स्त्रीके भूषणइत्यादि और
जोकुछ घरमेंरहा सोभी सबसंतोंके अर्थलगा
दिया पीछेजब घरमें कुछनहींरहा तबतिए
जोकरजहै सो लेलेकर निरबाहकरनेलगा ज
बकरजदेनेसेभी लोगहटगये तब लोकलाज
और कुलकानको त्यागकर भिक्षाटिन करकर
साधसंतोंकी सेवाकरनेलगा और नगरकेस
ब स्त्री पुरषोंमें तिसकेचिन तिसकानाम प्र

९० भ० ५

सिद्ध होयगया इसप्रकारजवतिमने भिक्षाटन क
रनेसे भी संतोंकी त्रपतीहोतीनहींदेखी नवति
नकी सेवाके नमित चोरजकर्मजोहै सोधारनक
रलेताभया अर्थात रात्रीदिनचोरी करनेलगा औ
र आपस्त्रीके सहितभिक्षामांगकर जैसाकुछ
प्रापतहोता तैसाभोजनपायलेता।१। चौपाई।
नवहूंजान उजवरनिजजीके। होतनसंततोष
कछुनीके। नवलेठिक वनिकाननभारी। गये

५

विप्रकरञ्जायुधधारी । विनइकविप्रवैसखसोई ।
ननहिंनञान पथिककसहोई । लटलेतधनञा
णवचाई । शक्तिखड्गवक्रत्रासदिखाई । सोऽद्द
व्यसेननकहूंल्याई । देनविप्रवरसदनखिवाई ।
एकदिवस तहिविप्रनमफारा । मिल्योनककाहूप
थिकधनवारा । तवक्रूद्धेनिजसदनपरावा । विप्र
नजद्यानतैनविहावा । प्रातकालउठिकानन
गवना । तवहूंआवक्रूद्धेनिजभवना । देवेस

८
भ.
६

6

दन बैषणव कारी। तिलकमाल मुद्रा वरधारी। इन
उनहाँ हित निवारन तेह्र। कव ब्रावत निस कंचि नगे
ह्र। सोइ प्रसदेखि संतसमुदाई। करत प्रणाम चरन
सिरनाई। वहुरि पत निसन कहत उचारी। करहुँ उ
पाय कवन प्रवप्यारी। संत समहु मदन जे श्रावा
जोन श्राज इन भोजन पावा। सोर मरणनिश्चय तव
होई। इन चियमहनत कहन श्रमसोई। दोहा। संत
नविन भोजन करन पतिनम दमान्त मार। सोइ

६

मोर संसयनहीं सुनहैा प्रगणप्राधार॥१॥ टीका॥ श्री
से चोरीकरनेसे भी निसर्बसल्गणनेजाना किसंतोंका
भलीप्रकारसोघनहीं होताहै नवहाथमे शास्त्रधा
रकर श्रौर लौकिक लुटेरावनकर वणविषेचला
जाताभया एकवैसव संतर्बसल्गणको छोडकर श्री
रसवकोलूटनेलगा किसीके प्राणोंकीहानीनंही
करता भयदिखायकरके केवलधनहीं लोसले
ता श्रौर घरमे लायकरके संतोंकोखवायदेता

८७
भ.
८

एकदिननिसदो वरामें कोई भी रसतेचलनेवाला
नहीं मिला तबनिराशभयाहूआ खालीहाथघरहीं लो
ट करके घरकोचलाआया रात्रीभर स्त्रीके सहित
भूखाहीं घरमें पडारहा तबप्रातःकालभया तब
उठकरके फिर वणको चलाजाताभया निसदिन
भी कुछ प्रापतनहीभया पछतावताहूआ घरको
चलाआया आगेकयादेखताहै किसुंदर तिलकमा
ला धारणकियेहूये वैस्नवसंतोंका समूहघर

८

मैं बैठा हूं और सव संत इधर उधर ने चलु माय कर प
डे देखते हैं कि तिस के छिन कवचर मै आवता है
तव तिस के छिन ने आयकर सव संतों के चरनों पर
प्रणाम किया फिर अपनी स्त्री के पास आयकर
कहने लगा कि हे प्यारी अव कोन उपाय करूं इह
देख संतों की जमात घर मै आई हुई है जो आज इ
न्होंने भोजन नहीं पाया तो मेरा निश्चय करके म
रण है ऐसे पती के मुख से वचन सुनकर सो भा

९१
भं०
८

नी रोपककैं करूनेलगी किहे प्राणनाथ संतोके भोजनपायविना जैसेजनमारीदपाहोवेगी तैसेही मेरीभीजानलेना इसमेंकछु संसयनहींहै।२।चौपाई।इनकहंदीननाथ अबकहिये।महाराजमज्जहितलेये।याकेभोजनवनहिंनमारे।जाहिंमंतनवसकलसिधारे।नवहमनजवप्राणनिजदोई इनसनपत्रपति मरणनहोई।भलोयतनगुनिमानमममाहीं।भलोविप्रवरसंतनकाहीं।दीनप्रा

८

व

लनँमज्जनकीजै। सरितातीरपंथश्रमछीजै। पाछेवन
हिंसदनएककवाना। श्रमप्रकारजनविप्रवखाना।
विप्रमरएश्रमसहहृदयचितारी। द्वारावतीकृस्नगिर
धारी। भैक्तपालनिजविरदसंभारो। हृकमगिर
सनश्रमसवचनउचारो। लेंठिकरूपविप्रवतथा
री। मनवचकायभक्तममभारी। सोसंतनहितत
जिउजथरमा। करतविपननिन लेंठिककरमा
वीतेदिवसजगालनहिकाहीं। पायोपथिकद

८० मं ५

भजननाहीं। ज्वपतसंतसदनतहिकारी। मैसभ
लनिजतेविइलारी। जोनहिंजाऊंदेनावितप्यारी
तेनिजनजहिंप्राणनतनारी। हकमणिसनत
वचनभगवाना। बोलीनमजनकजनगपाना। दीन
नाथुप्रभकनमाया। मैहूंहगाननिजचाहूंनि
हारा। स्त्रीमनरवजोनदेसप्रभपाऊं। लोकपालन
वसंगसिधाऊं। दोहा। प्रियहविमानिप्रसन्नम
नप्रभयभक्तवरदानि। चलहुवलहुबोलेवट

५

न न सकिमथुरमड्गानि। हमतनमकहंललवसे
ईपे सहकमगिन्नास। देहोकवहूंनतवषियाग
लवहू लपतयजास॥१॥ टीका। फिरकहनेलगी
किहेनाथ अबसंतोको कहिये जो आपस्नान
करनेकेलियेजाईये पीछेभोजन तयारहोयजा
ताहै तब इसप्रकार संतस्नान करनेकोचले
गयेहैं [illegible] पीछे फिर हमदोनो प्राणीकोआ
गदेवेंगे तिनकेसतसमाद हमारामरनाकैसे

८०
भ०
१०

होयसकेगा ऐसेस्त्रीका कथनब्राह्मणके मन
कोभायगया भलोयतनविचारकर संतोंकेआ
गेविनतीकरनेलगा कि महाराज आपनदीकेकि
नारे जायकरस्नान करिये और मारगकेश्रम
कलेशकोनिवारये कृपानिधान पीछे भोजनत
रतहीं तयारहोजाताहै इसप्रकार जब ब्राह्मण
नेकहा तबतिसकामरना विचारकर द्वारिका
मे गोवरधन परवतके धारनेवाले भक्तरक्षक

१०

भगवान अपना भक्तपालविरदजोहै सोहृदयमें
स्मरतेभये औरु रुकमणीकोकहनेलगे किहे
प्यारी एकब्राह्मण लंठिक जो लटेरेहैं तिनका
रूपधारेहूये मनवचनकायाकरके मेरा दृढ
भक्तहै सो जगतमें संतोंके नमित्त अपनाब्रह्म
धरमत्यागकरके लंठिकजो लटेरेहैं तिनकाकर
मकरताहै आजतिसको दोदिनवतीत होयगा
ये कोईभीधनवाला परष वणके मारगमेआ

८० भ० ॥

जाजातानहीमिला ग्रौर घरमे वहुतसे संतभूखे
प्यासेवैठे हूयहैं ऐसेमे अपनेतिसभक्तको पर
मदुखीदेखकर जोकदाचित धनदेनेकेलियेनहीं
जाऊं तोवस्त्रीकेसहित अवीप्राणोंकोत्यागदेना
है इसप्रकारभगवान कृपानिधानका कथनसु
नकर रुकमणहाथजोडकर दीनवाणीसे कह
नेलगी किहेप्राणनाथ हेदीनहितकारी भगवा
न ऐसेसनमारेप्यारे भक्तको मे भी नेत्रोंकरके दे

॥

खनाचहसीहं जोश्रीमनखेसे आज्ञापाऊं तोहकृपानिधा
न आपके साथहींचलूं और प्रभुहूतमोजोतैसे भक्त
कोहरसन करकर इनतेउंकोसफलकरूं ऐसेश्र
पनीप्यारी रुकमणीकी रुची मानकर भक्तजनों
को अभयवरके देनेवाले कृमलश्रमात्मा प्रसन्न
भयेहुये मनखेसं मधुर मधुर मुसक्यायकर कह
नेलगे किप्यारीचलोवेमेरा भक्तजोहैसो नहो
वणके मारगमें मेरेको और तुमको अवश्यल

८८
भ०
१२

देषा परंतु देष्यारी इहनुमारे हाथकी अंगुलीमें टि
कमलीकी शोभाकाली मुद्रका अर्थात अंगूठी
जोहै सो नहीं लुहावनी तिसको यतनसें छिपा
यराखेना। ३। चौपाई। इसप्रकार भगवान उ
दारी। प्रेमकरूपभक्तहितधारी। भक्तसहायक
रनहितस्वामी। चलेकृपालभक्तअनुगामी। सरव
सिद्धिसामर्थ्यमधारी। साधेदारभक्तचाग्रजी। श्री
सुखमेपुरवचनप्रभुकाहा। कंह्वादिषनिसकेवि

नगाहा। भूषणकनक अलंकृतदेवी। हंसखो
हृदय विश्वप्रवसेवी। संतनकैलास ओरहनाई
करहुसनानवेगतवजाई। वन्योजातदुग्धभोजन
भवना। [illegible] कीन संतननवगावना। भन्योवहो
रि [illegible]तसाहा। मेहिंविशनिमकंचिनगाहा। वो
लेभक्तपालभगवाना। मैनिजवाहेविशुनपथजा
ना। स्वविद्याभरन अलंकृतअंगा। रहौपकशम
दाममसंगा। सन्योविशनइक पथिकविदारी।

सत्वीरलंठिकअतिभारी। नामअग्रसवसपकँजाना ल
मैनसकहुंपथ्यविघ्नमहाना। सोरठा। जोउपका
रविकारि। मोहिंअरणसारगकठिन। उजनतमदेहु
उना[illegible]तोसेवाकछुकरहुंमै।४। टीका। इसप्रका
र कहि[illegible] सिद्धियोंकरके सामर्थ्य और भक्त
हितकारी भगवान रुकमणीके सहित वैस वैस
नीकारूपधारकर भक्तकी सहायता करनेकेलि
ये द्वारिकासे चलपड़ते भये तबकौनकसे नगरत

निसव्रतधारी भक्तके द्वारेपर स्थयकर हितकेभरे
हूये कोमलवचनसें कहनेलगे कि निसकेवि
नूनामा ब्राह्मणजोहै सोकरतेहै ऐसेफकमणी
के सहित नैनरूपभगवानको सवरणकेभू
षणोंसे सजेहूये वडेधनवानदेखकर ब्राह्मण
[illegible]यमहराथको प्रापतहोनाताभया श्रोर संतोको
फिरउठरायकर कहनेलगा कि आप श्रीचरना
र्इये सनानकरिये भोजन अचीवन नानाहै क

छविलंवनहींहै संतस्नानकरके सवसनान करनेको
चलेगये पीछे आनंदसे ब्राह्मणतिनकोकहनेल
गा कि पथिकभाई मेराहीनामनिसकंचिन ब्राह्मण
है तव भक्तपालतिसको कहनेलगे किभाई मै वण
के मारगसें जानाचहताहूं परंतु अंग अंग भूषणों
करके भरीहूई मेरेसाथ इस्त्री है सुननेहैं किईहां
वणकेमारगमे एककोई वडाभारी सूरवीर शा
स्त्रधारी लूटेरापडताहै तिसकेभयसे मै इसघोर

१८ भ. १४

14

वणके मारगसें ~~जानमहनताहं पवंत~~ अकेलानहीं
जायसकताहूं जोकदाचित तुम उपकारकरके
मेरेको इसवणके कठिनमारगसे पारउतारदेंगे
गे तोमैंयथायोग्य तुमारीकुछसेवाकरूंगा औ
रतुमारे उपकारको चित्तसेंनहीं विसारूंगा। ५
चौपाई। विप्रहनन असवचनप्रकासा। तजहूंग
वनकाननतुवत्रासा। मोरसंगतवहोहिंनहानी
असकहिंधरो धाम्रहडतपानी। प्रभुहिंलेतपय

त्रिपुनसिधासो। गवनकालनिजत्रियहिं उचासो।
अवविलंवभोजन कछुनाहीं। असकहितिनहिले
नवणमाहीं। आवानवसत्रन्हनकरिनयना। वो
लोप्रभहिं कोप वसवयना। वेगसकलभूषणप
टनारी। औरपथिकमोहि देहुउतारी। ननरप्रहार
खड्गकरिमाना। कवहींतरतनतोरहनमाना। वाधि
कवचनसननन असछवणा। वोलेवैसरूपश्रीरम
ना। अहोविप्रकुलजनमनमारा। इहहुरघरमकर्म

१८

कलधारा। चारिदिवसजगजीवनलागी। दीनमया
दवंसङ्गजत्यागी। कोनवकीनङ्गरनआचरना। ङ्गज
परलोकलोक सवहरना। सुनतकथनभगवन
ङ्गजकाहा। महिनवैसकछु निजहितराहा। आवत
सदनसंतभगवाना। मैतिनअर्घयतनकरिनाना
असलंदिकहतिसांकसवेरा। करहुंतोषनित सं
तनकेरा। यामैमहिस्पर्शकछुनाहीं। पापङ्गत्पसव
भगवनकाहीं। सुनहौवैस मोर प्रणपहा। कव

९८ म॰ १९

हूंकिन्नाहिंमंतममगेहा। त्वष्यातविनभोजननजलपाना।
तोमैतजहूंनरननिजप्राना। वन्ध्याग्राजमहि ग्रवसरसो
ई। तोतेतमहूंवेगप्रवदोई। निजभूषणदुतदेहुउतारी
तासकथनसुनिभक्कडवारी। सुनिग्राभर्नवसनजज
तमाला। तासदीनभगवननतकाला। दोहा। नव
सकमणिसोमहिकामनचिंततफलदाई। ताकरदीन
नयतनजन राखीकरनअराई। निसकंचिननकिको
पवस मांगिवदन वहूवार। जवनदीननवग्रंगरि

१६

१९

न्नतल्लीनस्मिसवल्लनिकार।५। टीका। इसप्रकारवैस
रूप भगवानका कथन सुनकर ब्राह्मणकहनेल
गा कि भाई तुमवणके मारगकाभयजोहै सोचि
तसे त्यागदेवो मेरेसाथतुमारी कदाचितकछु
भीहानी नाहोगी ऐसेकहिकर ब्राह्मणहाथमें
शस्त्रधारकर और भगवानकोसाथलेकर वण
केमारगको चलपड़ताभया तवचलतीवेर आप
नीस्त्रीको कहनेलगा कि अबभोजनकी कछुवि

९० भ. ८

लेवनहींहै ऐसेसुनायकर और दीनबंधुकोलेकरन
रत वणिविवेचलाआया तहां आवतेही कोपसेला
लनेत्रकरकर और शस्त्रोंकाभयदिखायकर सर्व
भयकलेशोंके हरकरनेवाले भगवानको कहने
लगा किहेपथिक अवतं शीघ्र स्त्रीकेसहित
सबभूषणवस्त्र उतारकर मेरेकोदेदेनहीं तोअबी
खड्गका प्रहारदेकर तेरेकोमारडालूंगा इसप्र
कारनिसलेविकब्राह्मणका कथन सुनकर वै

17

१८

स्वरूप लक्ष्मीकेपतीजोथे सोकहनेलगे कि अहो
वडेअचरजकीवातहै जोतमने अतिउत्तम ब्राह्म
णकुलविषें जनम धारकर इह कैसा अधर्म और
कुकर्म धारनकियाहै केवलचारदिनके जीवने
केलिये वंसकी मर्यादाको त्यागदियाहै और लो
कपरलोकके सुखको नष्ट करनेवाला उराचा
रपापजोहै सो गृहणकरलियाहै ऐसेभगवान
कावचन सुनकर ब्राह्मणकहनेलगा किहे ।

९० भ. १८

वैसतमने सत्यकह्याहै परंतुनिश्चयकरकेजानो किर
समैं मेरेकोकछु अपनाहितप्रयोजन नहींहै केवल
संतोंके नमित्तइसलौकिक कर्मकोधारन कियाहै अ
पनेपासधननहीं जोतिनकोखवाऊं मेरे घरमैं कृ
पाकरके संतमहातमा नित्यचलेआवतेहैं इसलि
ये मै अनेकयतन करकर और धनल्यायकर तिन
का परितोषकरदेताहूं इसमैं मेरेकोकछुदोषस
पर्शनहींहै पापपुन्य सवभगवान कोहै वैसमे

रानोप्रणहै कि जबसंतमेरेचरसे भूखेप्यासेजावें तोइ
ह मेरेप्राणभी तिनके संगहींजावें सोआज वैसेंही
समय आयकरके बनाहूआथा दैवयोगसे तमआ
य प्रापतभयेहो अबवारता आलापको छोडकर
तमदोनोंहीं अपने सबभूषणवस्त्र उतारकर मे
रेकोदेदेवो तबभक्तहितकारी भगवान तिसका
कथनसुनकर तरतहीं मालाके सहितसबभू
षणवस्त्र उतारकरके देतेभये रुकमणीने सो

८० मनवांछित कामनाके देनेवाली मद्धकामोधी न
भ॰ हीदेई यतनसें छिपायराखी निस कंचिनदेव
१९ करके कोपसे वारवार मांगतामया जवनहीं
देई तव वलसे हाथपकड्कर अंगुलीके स
हितहीं छीनकरलेलेताभया।५। चौपाई। ले
तवाजन अनलनभारी। चलोहरषि जव सद
न सिधारी। भक्तपालनवकहावुफाई। उजनव
जोमदक रहपाई। मोअमोल इमदेव प्रभाऊ।
१९

सभगासबवांछित फलदाऊ। असकहिकृपासिंधुभगवाना भयेतरत
तहां अंतरध्याना। उनअमोलभूषणधनपाई। संतनहरषस
दननिजआई। विरचितअमियपाकसनमाना। दीन
जिमायसंतभगवाना। असप्रकारआभरनसहाये
विप्रअर्थसंतनसबलाये। तहिपसात अपेलाना
हीं। जबजबहोहिंविप्रबरकाहीं। तबमुद्रापेमांगि
सभेवा। करतरहतअससंतनसेवा। निसिदिन
रटतकृस्नपनिमाया। अंतकालबियजनततजिका

८७ म. २.

या। मनिजोगिनऊरलभगतिजोई। पायोस्तलभवि
भवरसोई। देखहुइहकसभगवनभाई। अहोरी
तिकछुलखीनजाई। कहाकरमनहिंपायिकविदा
रन। कहांयालभवसागरतारन। तेअपराधसक
लविसराई। मनिउरलभगतिदीनसहाई। दोहा
नातेदीनानाथसमकोहसमरसंसार। छोहकरन
दुखहरन घन जननिजहककनिवार। ९। टीका।
औसेवाह्मण जव अतलन यनकिजो नहीतोला

२.

जाना लेकरके हरषकेवशभयाहूआ अपनेघरको
चलपडा नवभक्तपाल भगवान तिसको कहनेल
गे किहेब्राह्मण इहमनोहर मइकाजोतैनेपाईहै
सोवडी अमोल कलप वृक्षके प्रभाववालीहै
और सर्वसुखोंके सहितमनवांछित फलकेदेने
वालीहै ऐसेकथन करकर कृपाकेसमुद्रभगवा
न तुरत तहांही लुपतहोजातेभये औरईह्याब्रा
ह्मणभी अमोलभूषणधन पायकरके आनंदमे

८० भ॰ र॥

मगणभयाहुआ अपनेघरमैबलाआया तब अमृत
के समान नानाभोजनपकवान बनायकरप्रीति
सनमानसे संतमहात्मा वैठार कर जिमायदिये
इसप्रकार सवद्रव्यजोथा सो ब्राह्मणसंतोंके न
मित्तहीलगायदेताभया तिसतें उपरांत जवति
सको धनकीइच्छाहोती तव मड्कासे मागकर
संतभक्तोंकी सेवाकरता रहताथा ऐसेजगतमै
संतोकोसेवता और रात्रीदिनइस भगवान

कोभजनताह्यथा ब्राह्मण अंतकालश्रीके सहितश
रीरको त्यागकर मनीजोगीजनोको दुर्लभजो
गतीहै सो स्वगमहीं पायलेताभया नाभादास
जीकहतेहैं कि हेसंतो इहदेखिये दीनबंधुभ
गवानकी गती कुछलखीनहींजातीहै कहां
तिसब्राह्मणका तिसअपराधी रसते चलनेवा
लोंको मारने औार लटनेका अधम कर्म औार
कहां कृपानिधानका तिसको इसकठिनसमा

८०
भ०
२२

रसमुद्रसें पारउतारना अर्थात जिसके सब अप
राधोंको बिसारकर मुनीजोगीजनोंको दुरलभ
जोगतीहै सो देदेना तातेंहे संतभक्तो दीनानाथ
और दीनहितकारी भगवानकेबिना संसारमे
दीनोपरदयाकरनेवाला और दीनदासोंके अप
राधोंको बिसारदेनेवाला और दूसराकोई नहींहै ८१
इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथे भगवदभक्ति महात्मे मीठांसिंहकृत
भाषाटीकायां जिसकंबिन चरितवरणंनामसर्गः

२२

अथ अन्यचरितं। दोहा। भक्तिमहातम आन अब कर
हूं कथनमनभाव। जासुसुनत संतन विमल हृ
दभक्ति उरछाव। चौपाई। गौड़देसइकग्रामसुहा
वा। खरदानाम विदत अससगावा। तहंावसहिं उ
जवर अधिकाई। विद्यावेदनिपुण सुन्दराई। ति
नमै एकविप्रपनवाना। त्रियपुत्रीसुतनयुक्तसुजा
ना। पैविरक्तसम वसहिं अवासा। एकसमय
उपज्योहहिविनासा। करहूंअटिननीरथगृहत्या

९८
मं०
१

गी। पैनिजहृद्काय गतिलागी। एकलगावनपंथ
सकुचाहीं। अस प्रकारचिंतामनमाहीं। तवआवा
इकउजनहिपासा। जासगावनतीरथउरआसा। ज
ननीजनक नवांधवनारी। हृददेखिउरभयोसवा
री। निजवांधवकरलेतरजाया। लियेतासहउज ज
ठिरसिधाया। प्रथमहिंगयागावन करिआये। त
हंप्रीतिजन श्राद्धकराये। ससिपरश्री वहु
विहलमाते। उजजगआयभक्तिमदमाते। श्रुति

प्रयागमथुरादिकतहाँई। याचाकीनहृचिरमनभाई।
दैवयोगकरहृडसरीरा। ग्रसोरोगदारुणअवदवे
पीरा। विप्रनवीनतासमितकाई। कीनीविविधज
नहृंपितमाई। हृडविप्रजवभयोसवारी। नहि
प्रसादकृजविगनविचारी। भाषतजथामोरहुज
देवा। तवरहिसमयकीनह्वविसेवा। मैश्रोरन
कसहेहृंतमारा। विप्रश्रनंनकीनउपकारा।
पैप्रवमैप्रसन्नमनहोई। प्रतिउपकारकरहृंक

८० भ॰ २

हुतोही। जेमोरीकन्यासुभगेहा। तुमकहंहोहिं स फलउजनेहा। सनिउजनहृदविसमतुववानी। निज उरआगमअसंभवजानी। दोहा। कहांसदनत्रुकृत मकहांकहांपुत्रपरिवार। मैनिरधनपितुमातगा तकस पवनहिंउपकार।। १। टीका। ग्रवग्रोरवग संदरभक्तीका महात्मजोहै सोकथनकरताहूं कैसाभी महात्महै किजिसके श्रवणकरनेसें कु लभगवानकी निरमल ग्रैार सावदायकभक्ती

२

निरंतरकरके हृदयमें हृढहोजातीहै गौउदेसवि
खें खरदानामकरके एक रमणीकग्राम होताभ
या तिसगाउंकेवीच देहकीविद्याके जाननेवाले व
हुतसे ब्राह्मणनिवास करतेथे तिन्होकेवीच ए
कधनवान ब्राह्मण अपने पुत्रपुत्री और स्त्रीकु
टंवके सहित वासकरताथा परंतु चितसे विरक्त
रहताथा एकसमय तिसके चितमें अभिलाषा
उतपन्नभई कि मैंघरकोत्यागकर परलोकके

९८
भ०
३

सिद्धकरनेके निमित्त सुंदरतीर्थयात्राजोहैं सोकहुं
फिर अपनेशरीरको वृद्धऔर निर्वलजा नकर
शंकितभयाहुआ कहताहै कि इसवृद्धअवस्थावि
षैंमैं तीरथोंकाभ्रमन अकेलाकैसेकरसकूंगा ।
इसप्रकारचिंताकेवश होयरहाथा कि इतनेमैं ए
ककोईजवाअवस्था ब्राह्मणतीर्थयात्राकी इच्छावा
लाजहांतिसकेपास आयप्राप्तभया तिसकामा
ताविताभ्राताकोइनहींथा नववृद्धब्राह्मणतिस

याज्ञवल्क्यकोदेखकर हृदयमैं अत्यंतप्रसन्नहोय
गया। तदनन्तरअपनेबांधवोंकी आज्ञालेकर तिसब्रा
ह्मणकोसाथलियेहुये घरसेनिकलचलताभया
तवजातांजाता मारगकोकाटकर प्रथम गयाजी
मैंजाय प्रापतहुआ तहांविधीपूर्वक पिंडदान
श्राद्ध इत्यादिसव कर कर फिर भक्तीप्रीतीवाले
भयेहुये दोनोब्राह्मण आनंदसे काशीपुरीमैं
चले आवतेभये तिसतें उपरांत प्रयागराजफि

रमथुरावृंदावन इत्यादियात्राजोहै सोकरतेभये त
बदैवयोगकरके तिसवृद्धब्राह्मणकाशरीररोग
केवशक्षीणहोयगया तिसतें सो परम कलेश
कोप्राप्तभया तबसाथकाब्राह्मणजोथा सोति
सकी मातापिताकेसमान अत्यंतही सेवाकरता
भया ऐसेतिसकीसेवाके प्रसादसे सोवृद्धरोगसे
नवृत्तहोयकर सुखी और स्वस्थचितहोयगया
तब तिसब्राह्मणको कहनेलगा किहे देवतातैने

इससमय जोमेरी इहसेवाकरी और मेरेपरउपकार
कियाहै मैतिसका कौनप्रति उपकार करूं और
क्यावदलादेऊं अवमेरेपास औरतोकछुनहींहै
परंतु एकहै किमेरेघरमे एककन्याकुमारीहै
सोमैने तेरेकोदेई इसप्रकार तिस हुडकेमुखसे
सेवचन सुनकर ब्राह्मणतिसबार्ताको अगमऔ
र असंभव अर्थात कठिन और नाहोनेवालीजा
नकर हुडकेकोकहनेलगा किहेपिता कहांघर

९८
भ॰
५

कहांतुम और कहां पुत्रपरिवार कहांमैदीननिरध
न कि जिसका मातापिताभ्राता संबंधीकोईभी न
हींहै इसउपकार कहो कैसे बनसकताहै।१।चौ
पाई। जवहिरविप्र नव नाम बखाना। कन्यादानकर
नकहेंआना। विनमोरेसामर्थ्यनकोई। सदासेव
ढरीतिअससोई। कन्यादानजनकविनुकरना।
उचिंनबरनवेदवुधवरना। तातेतुमहिंदीनमैमेसो
ई। रहीभवनकन्याममजोई। मोरवचनकरअव

त

५

इहिकाला। सादीरहेहैंदेवगोपाला। असमसमध्य
जानिभगवाना। उरनिजहृदयसतनवजाना।
करिप्रणामरजगाभगवनकाहीं। चलेभवनहर
षतमनमाहीं। नवनैंतासहूउकरसेवा। लागेपा
करनअधिकमहिदेवा। असप्रकारतीरघसम
दाये। करिकरिसदनविप्रजगन्नाथे। बांधवजन
सनजविरघलाई। निजरुजकरनविप्रसिवकाई
सनादानमाविबहुरिउचारा। भनेसहननतवांधव

८८
भ.
६

सनदारा। इहग्रनरीतग्रहोकसहोई। हमरेवंस
ग्राजलगकोई। नातीभिन्नग्रानउजकाहीं। कन्या
दानदीनपितनाहीं। जोहमकरवग्राजइहिनाती
होवग्रवशपवाकनिजजाती। इहहैजनकमोनव
वहोई। जोविवादकरिहेंकछुसोई। हमसंतोष
करवतहिनीके। सुनिउजहउकथ्यननिनजीके।
वसीभूततांकरमनमारे। रहेमोनगगनगिराउचा
रे। नवतांकेउजथरमविनावा। करहुसत्यनिज

वचनसुहावा। दोहा। हुजसुतनसुनिकथननहिक
रिवहुविधिविसकार। कोपिभननकटुवचवदनदी
नोमरननिवार। टीका। ग्रैसेतिसकाकथनसुन
कर हुजकहनेलगा किहेहितकारी कन्यादानक
रनेको मेरेविना ग्रौर कोई सामर्थ नहींहै इहप
रमपरावेदशास्त्रकी मर्यादाचलीग्राईहै किपि
ताकेहोते ग्रौर किसीको कन्यादानकरना उ
चित ग्रर्थात योगयनहींहै केवलपिताकोहीं।

९८
भ०
७

अधिकारहै तांतेमै सो कन्या तेरेकोदई इसमेरे
वचनके इससमय इहकाल परमातमा सा
दीहैं ऐसेजव कालभगवानको बीच साक्षी
कहा तवब्राह्मणने निश्चय करके सत्यजान
लिया तिसतें उपरांतगिरधारी गोपालको दो
नो प्रणामकरके आनंदसें घरके मारगको च
लपडतेभये तवतें सो ब्राह्मणतिस वृद्धकी
अधिकतें अधिकहीं सेवाकरनेलगा इसप्रकार

७

सवतीर्थयात्राकरतेहुयेदोनोंब्राह्मण सुभदिन वि

चार करके घरमें आयप्राप्तहोतेभये तबहुब्रा

ह्मणने अपने स्त्रीपुत्र और सव बांधवोंके साथ ति

स ब्राह्मणकी सिवकाई और अपनेरोग कलेश

का वृतांत जोथा सो भलीप्रकार सव सुनाया ति

सतें उपरांत फिर तिसब्राह्मणको पुत्रीदानदेना

भी कथनकिया तववांधव और प्रसंग तोसुन

तेरहे कछुनहीं वोले परंतुजव पुत्रीदानका प्र

संगसुना नवकहनेलगे कि अहोपिता इहतैने के
सी अनरीतीकी अयोगवार्ताकरीहै हमारेवंस
मैयवलग ऐसी कुचालीकवीनहीहूई जोअपनेना
तेसे वाहिर ओर किसीहमसरेको कन्यादानकिया
हो और जोकदाचित आजहम इसको नातीकरले
वैं तोअवीअपनीजातीपंक्ती सेवा हरहोजावें इसमे
कुछसंशयनहीहै हेपितातुममौान होयरहोजा
कदाचित रहकुछ संशयविवादकरेगा तोहमइस

केसाथ समफलेवेंगे और इसकोभलीप्रकार संतुष्टकरदेवेंगे ऐसेब्रह्मब्राह्मण बांधवोंकाकथनसुनकर तिनकेवशभयाहुआ मनमारेहुये मौन होयरहा कुछवोलनहीं सकताभया नवसौब्राह्मणतिसब्रह्मको परम स्मरणकरावताभया कि अब अपनेवचनको सत्यकरिये इसप्रकार नवब्राह्मणनेकहा नवब्रह्मब्राह्मणके पुत्रबांधवोंने सुनकर उत्तरवचनोंसे तिसका बहुत त्रिस

९०
भ.
५

कार करके फिर कोपसे पकड़करघरमेसेबाहिर निका
लदिया।२। चौपाई। नवसविप्रनजिजठिरअगारा।
अतिनिरासचितछितपतिहारा। दीरघसरनिजवद
नअलाई। नृपहिंदीनसवविथासुनाई। सुनतभयो
रिसवसछितराऊ। जठिरसहितसुतवंधवताहू।
पठतनुरतभनपकरिमंगाये। कुवरिविवादवदन
नराये। छुत्रनलागसकलतिनकाहीं। हुइविप्र
वंधवसुततताहीं। कगारनलागनिवलउजसंगा।

५

भञ्जोभूपनववचनउमंगा। कहहैसन्यथरममोहि
भाई। वुधजननैवेंठिमहहसम्नदाई। नववुधजनन्नगल
नकरकाहा। निजनिजयथाकथननिनराहा। स्व
ननसकलभ्रमवदनउचारे। सदाविदनकलरी
निहमारे। वह्नरिमर्यादेदेसभ्रमभानी। देहिन
कुवरिमवनलखुजानी। सवोविवादविग्रहहकर
हीं। अन्नचितकथननानिसवपरहीं। भ्रमकहि
वदनसभ्यसम्नदाये। नामडजहिं भ्रमगिराभ्रला

10

९८ भ. १०

ये।तुवसनहृइविप्रजवकीना।वचनदेननिजकु
वरिनवीना।सान्हीरघ्योकवनतहिकाला।देहुदि
खायमिलहिंनोहिवाला।विप्रहुननअसतिनक
रवानी।वोल्योहुनहुसभ्पजननमानी।रघ्योनमन
नअ्रानतहिकाला।विनुसान्हीगोपालक्रपाला
भगवनभवनवचनमोहिसंगा।कीनजठिरङज
हृदयउमंगा।दीनवीचसान्हीभगवाना।अवनि
जयरमविप्रविसराना।हुननसभ्पजनवदनउ

१०

चोरे। जेोसाहीअसकृस्त नमारे। ईहांदेहिंसादीत
वआई। तवतोहिमिलहिंकुवरिसखदाई। सुन
तअसंभववातइरवोरी। विप्रवदनअसगिराउचा
री। इहसवभयेहुउङजवोरा। मेहिमरोसअवभ
गवननोरा। करतपननाकरसमदाई। मोरकव
नविनकुस्सहाई। प्रभुपेचलहुसोचउरठानीवे
ल्योवदनविप्रअसवानी। मोरविनंतिसुननकृवुथ
सारे। जेोलागहिंकछुउचिततमारे। जेोतवचारि

९८
भ॰
॥

मासलगअन्या। देननदेहुहउँ जनकन्या। ईहांमोर
आगमननिहारे। पुनिकरिहैहरुविजवननमोरे।
पैकवहुंकितववचनविधंसो। ब्रह्मचानतवपाप
नसंसो। हतिनहिकथनसभ्यजनमोरे। साधुमा
धुअसवदनउचारे। हमतववचनकीनहईकारा
अवमानहु तवकथनहमारा। दोहा। चारिमास
उपरांतजे एकादिवसकाहिजाहिं। नवकन्याइह
हउकर कवहुंमिलवनोहिनाहिं।३। टीका। नव

॥

सोतिनके घरसे निकलकर परमदुखी और निरा
सचित भयाहुआ राजाके द्वारे पर चला आया तहां
वशीलं वीरूची स्वरसे पुकार कर अपना हतांत स
व राजाको सुनायदेता भया तब राजा सुनकरके
कोपके वश होयगया तरनहीं अपने हूत भेज
कर वृद्धब्राह्मणको तिसके पुत्र बांधवोंके स
हित तहां सभामें बुलायकर झगडे विवादका
कारणजोथा सो पूछनेलगा तब तिस वृद्ध ब्रा

९८
भ०
१२

ह्मणके पुत्रऔरबांधव तिसदीन ब्राह्मणकेसाथ
वादसंवादकरनेलगे परंतुराजाने और विद्वान
पंचब्राह्मणजोथे तिनकोआज्ञादेई कि तुम इनके
बीचबैठकर सत्य सत्यजैसे उचित धर्महै सो सब
कविचार कर मेरेकोसुनावो तब विद्वान ब्राह्म
णोंने तिनदोनोका कथन वृतांत सुनकर फि
र सार असारको परसपर विचार करकहनेल
गे किभाई सदैवतें हमारे कुलकीरीतीहै औ

१२

रदेसकी मर्यादाभीहै कि लघुगोछोटी जातीहै तिस
को कदाचितकन्यानहीं देतेहैं इसब्राह्मणका अन
चित हथाहीं विवादहै ऐसेविद्वानजन परस्पर क
थनकर कर फिर तिस ब्राह्मणको कहनेलगे कि
भाई जव इडब्राह्मणने तेरेसाथ अपनी कन्याके देने
का वचन धर्मकियाथा तव कोनसाखीरहा तिसको
वतायदेवो जोवेआयकर साखीदेवे तोतेरेकोक
न्यामिलजातीहै इसप्रकार तिनकाकथनसुनकर

९८
भ०
१२

ब्राह्मणकहनेलगा किहेसभाके विद्वानजनो तिसस
मय मानुष्यतोसाक्षीकोई नहींथा केवल गोपालभ
गवानहीं साक्षीथे क्योंकि तिनकेहीं भवनमे इसहड
ब्राह्मणने मेरे साथ अपनी इछासेआनंद पूर्वक क
न्याकेदेनेका वचनकियाहै और दीनबंधु भगवान
कोहीं बीचसाक्षीरखाहै अबहड अपनावचन धर्म
जोहै सोविसार बैठाहै ऐसेतिसकाकथनसुनकर
सभाके विद्वान कहनेलगे कि हेब्राह्मण जोकदा

13

वित ऐसे सकल देव तेरे साखी हैं तो वे आयकरके सा
खी देवें तिसपर अवश्य कन्या तेरेको मिल जावेगी
ऐसे वडी अगम और अनहोनी वात सुनकर व्रा
ह्मण हृदय में कहने लगा कि हे भगवान इह
तो सब तिस हृदयालय का ही यत्न करते हैं और
र तिसी की ओर सब होय गये हैं मेरेको केवल प्रभु
तुमारे ही चरनों का भरोसा है और दीन बंधु तुम
हीं मेरे सहायक हो ऐसे सुनायकर इह छकि

९८
भ०
१३

याकि अबगोपालजीके पासहीं चलताहूं तबतिन
कोकहनेलगा किहेविद्वानजनो जोतुमारेचित्तको
उचित औरनीकीलगे तोमेरी इहविनतीहै कित
मचारमहीनेतक इसहूडकीकन्या किसीओरह
सरेको गृहणनहींहोनेदेना तबलगमेराआवना
देखकर उपरांतजैसी तुमारीरुचीहोगी तैसीकरि
यो औरजो कदाचितइसमेरे वचनको भंगनकरो
गे तोतुमको अवश्यब्रह्मघातका पापलागेगा

इसप्रकार निसकाकथनसुनकर सभाकेसबलो
ग साधुसाधुकहनेलगजातेभये ओर फिरकहने
लगेकिभाई हमनेतोतुमारा कथन सबसहीका
रकिया परंतुअबतुम हमाराकथनभी सत्यकर
के मानो सोक्याहै किजो कदाचित चारमहीनेतें उ
परांत एकदिनभी निकलजावेगा तोकन्यातुमको
नहींमिलेगी।३। चौपाई। तिनकरकथनकरनसु
ईकारा। सुमतिकुसलउज्जवेगसिधारा। मासप्रयंत

८८
मं.
५

14

विपुलश्रमपावा। मथुराकादिककठिनपथआवा। एक
लखायभवनभगवाना। करिप्रणामजोरतनजगपाना
विथासकलनिजदीँसिभाखी। जोप्रभचलहूदेनहि
तसाखी। तोनीकेननवपुविवशरहूं। ईह्नांनाथपथ
दिइंयनजारहू। असदुख्यानउजविषतविह्वाला। द
ह्योसोयनिसिभवनगुपाला। भक्तपालनवत्सपन
मकारा। उजहिंप्रकटअसवचनउचारा। चिंतात
जहुसंगतवलागी। चलहुंविप्रप्रभुनानिँत्यागी।

न

ज

नोरकविरहितहृदयविचारी। भावहुंसत्यविप्रव्रत
धारी। करिसनानन्वप्रातहजाना। करहुंपाकभ
गवानवखाना। कालिअर्धरजनीजनभंगा। नजिनि
जभवनचलहुंनवसंगा। मैपाछिलनवआगल
गवना। मोरचरननेवरखवनवना। सननतचलहु
आगलपथ्यसेखो। विप्रकवहुंपाछिलनवदेखो।
नोनचलहुंमैसंगनमारे। असप्रकारजनवदेवउचा
रे। दोहा। विप्रदेविअसस्वपननव उठेप्रातहहर

९८
भ॰
१५

घाई। करिसनानभोजनस्थितभयोभवनप्रभुत्राई।

टीका। तवब्राह्मणभी तिनकाकथन सुईकारक

रके कामानकरके हृदयमै क्रमप्रमातमाकोस्म

रनकर तहांसेनवरतहीं चलपडताभया एकमहीने

तक श्रमपायकर औरमारगकोकाटकर मथुरा

पुरीमै आयप्रापतभया तवश्रकेलाहीभगवानके

भवनमै आयकर औरनम्रता ईसेप्रणाम करकर

दोना हाथजोडकरके अपनीसवविथा सुनायदेता

१८

भया और फिर कहने लगा कि हे दीनहितकारी प्रभु जो आप मेरे साथ अब साक्षी देने के लिये चलो तब तो भली बात है नहीं तो मैं अबी तमोर सनमुख अपने प्राणों का नास कर देऊंगा अर्थात आपके देखते ही अगनी मैं जल मरूंगा ऐसे कथन करकर भु खाप्या साही व्याकुल चित होय कर गोपाल भगवान के भवन मैं ही सोय रहा तब भक्तपाल तिस ब्राह्मण की दशा देखकर दया के वश भये हुये स्वप

८८
भ.
१६

तैसे कहनेलगे किहेब्राह्मण तुम हृदयकीचिंता
को त्यागदेवो मै अपने ईश्वर्यवडाईको त्यागकर
और हितमानकर तुमारेसाथ अवश्यचलूंगा
अवतुम प्रातःकालहोते स्नान कर कर भोजन
पावो और कलकोजव आधीरात वतीतहोजावे
गी तवमै अपनेभवनको त्यागकर तेरेसाथचला
चलूंगा परंतुतुम आगेआगे मेरीचरननेवर।
का अर्थात मेरेपाउंकी फांजरकाशवद सुनते

16

१६

चलेचलना पीछेफिरकरनहीदेखना और जो क
दाचितनमपीछे फिरकरदेखोगे तोब्राह्मणमैंत
मारे साथनहींजाउंगा इहमेरावचन तुमसत्यक
रकेजानलेना इसमैंकुछसंशय नहींहै इसप्र
कार नव दीनवंधनेकहा तवब्राह्मणस्वपन दे
खकरके जागउठा और प्रातःकालहोते सनानक
रकर भोजनपाया तिसतेंउपरांत फिर भगवान
कृपानिधानके भवनमें आयकर वैठजातामया ४

९८
भ०
८

17

चौपाई। उतकंठितचितलागनिहारन। होहिंरजनिकवशोकनिवारन। अस्तहिकरतप्रतीत्ताताहीं भईरैनहरिमंदिरमाहीं। तवभगवानभक्तचितचोरा। मंदिरअजरअर्धनिसिधोरा। चलिआयेनाथकमलवभवना। नेवरसखरस्नननतउनअवना। चपलचैलनिजलेतसहाये। चल्योअग्रभगवानसिधाये। भयेउदनमारगनवभाना। सोहंकरनपथ्यगवनमसाना। उजकरहृदयलालसाभारी। देहि

८

आजु चलि साखिमृगारी। सफल होहिं मम मानस
कामा। भई नास अस चिंतत स्यामा। मोद मगन
प्रभु बचन बिसरयो। नेवर मखर श्रवन नहिं प
रयो। भ्रम बस पाछिल लागनि हारन। नव गो
पाल भक्त भय वारन। ठाढ़े अविरभूत थिर होई
बिप्र देखि प्रभु मूरति सोई। सजल जगल नयन
हुलसाना। पुलक गात मुख गदगद बाना।
करि प्रणाम अस्तुति भगवाना। लागे करन

९८ भ. १८

वदनउजनाना। हरषिहरिहिं असकहतउचारी। कृ
पासिंधुअवचलहुसिधारी। अवनजाहुंभगवनअ
सवरना। करहुविप्रममवचनसमरना। नवभूदे
वविपुलपछुताना। अहोकथनभगवनविसराना
असउजनहोवहिरथिरथामा। प्रभुपैविपनठाडि
तहिठामा। नहांनरेसदेसकरनानी। संजुतसविव
स्वनइहभानी। भयोभूरिविसमयचितदयना।
हनहुनविंदइंद्रगुणअयना। इहिउजनदीनविपुल

१८

18

श्रमपावा। सालीभरनहेतम्हिलावा। सोरठा। स
त्यवचननरनाह। ममसपथमनम्हखजविर। निज
वरकुवरिविवाह। भाषाइहितजसनकरन। दोहा।
दीन्यासालीवीचम्हिहजथरमहफकीन। भयेस
कलश्रवरनविवसदैवस्वपन निसिचीन।५। टी
का। नवविसकरके वडेउनसाह वालाभयाहश्रा
ब्राह्मणदेखरहाहै किमेरेशोकके निवारनेवा
ली राखीकवहोतीहै इसप्रकार निसकोप्रतीत

९८
भ.
१९

न अर्थात उशीकते उशीकते को नहांदीनानायकेभ
वनमैंहीं सरजलपतहोयगया और राज्ञीपउजा
तीभई नवभक्तजनोकेविघ्नको चुरायलेनेवालेस
र्वभवनोकेपतीभगवान वडीअंधेरी आधीरात
को भवनसेनिकलकर बाहर अंगणभूमीमेंच
लेआवतेभये तिससमय दीनवंधुकी चरननेवर
अर्थातपाउंकी फांजरीका मधुर मधुर शवदजो
हुआ तोतिसकोसुनकर ब्राह्मण चपलतासेत

१९

19

रत अपनेवस्त्र आदिलेकर शीघ्रगतीसे कृपानि
धानके आगे आगे होयचला नवचलनेचलते
सूरजनोहै सोउदयहोयगया और मारगचल
ने चलते फिर अस्तहोनेका समयभीआयगया
ब्राह्मणके हृदयमे बडाउतसाह कि आजभगवा
न चलकरके साखी देवेंगे और मेरेमनोरथस
वसफलहोवेंगे ऐसेचिंतनकरतेकरते को सो
कपरजातीभई आनंदमै मगणभयेहूयेको भ

८८ गवानकृपानिधानका वचनजोथा सो विसरगया
भ० नेवरकाशवद जो कानमे नहींपडा जो भ्रमकेवश
२० भयाहूआ पीछेकोदेखनेलगा जाताभया नवभ
क्तोंका भयहर करनेवालेभगवान नरनहीं प्रत
क्षहोयकर सनमुख स्थितहोयगये श्रीमत्राह्म
ण गोपालजीकी मनोहरमूरतीको देखकर श
रीरकरके प्रफुल्लत ग्रोर नेत्रोंमे हरषजलभरे
हूये हाथजोडकर गदगद वाणीसे प्रसन्नकी
२०

करनेलगाजाताभया औरफिरबारबार प्रणामकर्के
विनतीकरनेलगा किहेदीनदयाल हेक्रुपासिंधु अ
वदयाकर्के आगेचलिये औरमेरीमालीदीजिये तव
भक्तपालकहनेलगे किहेब्राह्मण अवमैंआगेनहीं
जाऊंगा तुममेरे वचनको स्मरणकरो किजोतुमा
रे साथनियमकियाथा अव मेराकुछ दोषनहीहे
जोहुआ सो तुमसेहीं हुआ तवब्राह्मणक्रुपानि
धानके वचनको स्मरकर हृदयमें अनेकप्रकार

९८ भ० २१

पछतायकरकहनेलगा कि अहोमैं अभागीने दीनाना
थकेवचनको विसारदिया ऐसेचिंताकेवस व्याकुल
भयाहुआ ब्राह्मण तहांग्रामकेवाहररहीं नंदलालभ
गवानके पास स्थितहोयरहा तवतिसदेसका तहां
राजा जोथा तिसको मंत्रीके सहित रात्रीकेसमय
भगवान ऐसा स्वपनदेतेभये किहे राजयोंविखें
प्रधानराजनदेखो इसदीनब्राह्मणने कैसा श्रम
और कलेशपायाहै जोमेरेको साक्षीदेनेकेलिये

२१

21

त्यागाहै हेराजनमैं सत्यवचन कहताहूं किमेरेमन
मत्व हूउब्राह्मणने प्रकट करकेकहा जोब्राह्मण
मैंअपनी कन्याकातेरेसाथ विवाहकरदेऊंगा इस
वारताकावीच साखी मेरेकोकियाथा तोंतेहूउवि
प्रने इसब्राह्मणको कन्यादानदेनेका सत्यकरके
धर्म कियाहुआहै आगेजैसी तुमारीरुचीहो तैसी
करो इसअदभुतस्वपनको देखकर राजा और
मंत्रीपरम अचरजको प्रापतहोयगये।५।चौपाई

९८
भ०
२२

22

उठेप्रातसवकरतविचारा। निसिप्रचरजनकछुसप
ननिह्नारा। तवतज्जिसदनप्रातजनकाह्न। आवाव
हिरग्रामनवनाह्न। तह्नांविप्रजतदेखिसहाई। मूर
तिललितभक्तसखदाई। करिप्रणामप्रसकहत
विचारी। इह्नतोप्रकटप्रापुगिरधारी। प्रहइह्नविप्र
लखोमैवेह्न। प्रसकहिचलोग्रामनिजतेह्न। जा
यसवनसनवदनउमंगा। हरिआगमनजसभयो
प्रसंगा। सालीविप्रदेनहितआज्ञ। उजसनआयविद

२२

तजउराज। ललितस्यामसरूसूरतिधारे। अमृकसथ
लयिरभक्तउवारे। लोकसुनतमानसहरषाये। तहां
भूपसंगतचलिआये। गिरधररूपअनूपनिहारी। ग
दगदगिराहगनभरिवारी। लगेकरनअसतुतिभ
गवाना। सोआनंदकिमिजायबखाना। नामसविप्रप
दवंदितरागा। भूपप्रसंसनवहुविधिलागा। आज
नमहूसंसतातिसुरयरना। धन्यसुजनसबवजाहिंन
वरना। जासभक्तिवसगैयनपाला। आयेईहांतज

९८ भ० २२

ननिजग्राला। असकहिहृदविप्रनरनाहां। बोलिली
ननिजसनसखतांहां। वेदवहीनरीतसबकीनी।
इजहिविवाहकुवविवरदीनी। खरदाग्रामविविधय
नमाया। दायजदीनमुदितनरराया। शिलपिनिपुण
ननकालबुलाई। राजेनहांभक्तसुखदाई। भनिभ
नितहांवदननरराई। भवनभूरिरचनाविरचाई। ना
मथकीनस्थापितमोई। मूरतिदिव्यदयानिधिजोई
विप्रप्रवरकुलकन्यापाई। भयोप्रजाविभवनसरराई।

२२

23

प्रतिदिनकायकरममनवाचा। दीननाथसेवनरुचि
राचा। साक्षीभूतहोनहितघाला। भयोनामसाक्षी
गोपाला। सोप्रसिद्धअजहूंजगगावा। देखहुभक्ति
प्रभावसहावा। वसीभूतउनहोतसहाये। साक्षीदे
नदेवचलिआये। दोहा। कह्योप्रातजवकैगयोजा
गेसकलउजारि। भगवनमूरतिभवनसभनाहिं
नहगननिहारि।८। टीका। जवप्रातकालभया
तवउवकर परसपरविचारकरनेलगे। किइहवा

९८ जीके समय कैसा अदभुतस्वपन देखनेमैआयाहै
म. ऐसेसोचविचारकररहेथे कि इतनेमै एकपुरष
२४ घरसेनिकलकर कुछ्हदीपरग्राम सेबाहरजोच
24
लाआया तोक्यादेखताहै कि एकपुरषके सहित
तहांभूमीपर गोपालदेवकीमूरती स्थितभई हुई
शोभादेतीहै तबवेप्रणाम करके कहनेलगाकि
इहतो साक्षातआप कृस्नभगवान विराजमानभ
येहयेहैं और इहपुरषभी गोपालजीकेपाससोई
२४

ब्राह्मणदेवपढ़तेहैं ऐसेविचार करकर लोटक
रके अपनेग्राममैं चलाआया तहांआवतेही सब
लोगोंकेसाथ नंदलालभगवानका आगमन प्र
र्थात भावनाजोहै सो सपष्ट करके सुनायदिया
किभाई ब्राह्मणकी साखीदेनेकेलिये तिसके
साथ सुंदरस्यामसूर्तीवाले सर्वचराचरके सा
मी आजमथुराको त्यागकर हमारेग्रामके बाहि
र आयकरके विराजेहुयेहैं तबलोकसुनकर

९८
भ०
२५

के हरषकेवशभयेहूये राजाकेसहित सबधावते
हूये तहांहींचलेआये जबगोपालभगवानकी
मनोहर मूर्तीकादरसन पाया तबनेत्रोंमेहरषज
लभरआये और गदगदवाणीसे दीनानाथकी
असतुतीकरनेलगजातेभये तिससमयका आ
नंद सबजोहै सोकछुकहानहींजाता फिरतिस
ब्राह्मणकेचरनोंको वंदना करकर अनेकप्रका
रकी शलाघावडाईसे कहनेलगे किहेब्राह्मण

25

आनतंहीं जगतमै धन्य और सजनसकापावैहं किजि
सकी भक्तीकेवश सर्वसृष्टीकेआधार गोपालजीअ
पनाधामत्याग करके ईहांहमारे गाउंमैचलेआये
हैं ऐसेकथन करकर राजाने तिसहृदब्राह्मणको
नरतनहां भगवानके पासहीं बुलायलिया औरवे
दकीविधी अनुसार तिसब्राह्मणकेसाथ कन्याका
विवाहजोहै सो करवायदिया और बहुतधनप
दार्थके सहित वत्सरदानामग्राम जोथा सो आनंद

९८
भ॰
२९

पूर्वक कन्याको दायजमैदेदिया तिसतैंउपरांतफि
रराजाने वडे प्रवीन शिलपकारोंको अर्थात राज
उर्योंकोउलायकर जहांभक्तपाल भगवान विराजे
हुयेथे तहांतिनको भलीप्रकारसिखाय समझाय
कर भवनकी मनोहर रचनाजोहै सोकरवायदेई
तवतिसभवनकेवीच भगवान कृपानिधानकी
दिव्यमूरतीको विधीपूर्वक ल्यायकरके स्थापित
करदेतेभये और सोईबालए संदर कुलकी कन्या

कोपायकर तहांदीनवंधुके भवनका पुजारीहोनाता
भया रात्रीदिन मनवचनकाया करके गोपालभग
वानके भजनसेवनमै लीनरहनेलगा नवदीनाना
थसाक्षी देनेकोजो आयेथे इसीते प्रभुकानामसा
क्षीगोपाल प्रसिद्धहोय जाताभया सो अवलगभी
संपूर्ण जगतमै विदतहै देखिये भक्तीकाप्रभाव कै
साआश्चर्यहै कि भक्तके वशभयेहुये भगवान मथु
राकोत्यागकर साक्षी देनेकेलिये खुरदानामग्राम

६८
भ०
२८

27

विचिचलेआवतेभये औरजहांजबआताकालह्रोयग
या तबमथुराकेउजारी गपाल देवकेभजनसेवन
करनेको भवनके कवाडखोलतेभये तोकादेख
तेहैं किभीतर दीनबंधुकी मूरतीहीनहींहै ।९। चौ
पाई। लगेविचारकरन समदाई। देवकवनइहभ
योरजाई। मनुजकरमकछुजाहिंनचीना। इहसुर
असुरचरितकछुकीना। तोलोगोउदेसतेंकाहू।
याखाकरनआवउतमाहू। जहंजहंदेवभवनसुभ

२८

लेखे। किरिकिरिनामसकलहगदेखे। कहिदसमन

केशवसुखदाया। नवगोपालभवनचलिआया। न

हंगावनमूरतिभगवाना। सुननतासअमवदनवखा

ना। करहूनकछुचिंतामनमाहीं। मैअवकरहूंकथ

नलवकाहीं। सुनिसुजकजनवदनअलावा। हमरे

भागविवसतवआवा। वेगसुकरहूकथनअवप्यारे

कहहांप्राणआधारहमारे। सुरउजनथरनिथेनप्रति

पाला। सकलसुखदप्रभदीनदयाला। तासदेव

८८
भ॰
२८

विनुमरणमहमाना । अमसप्रकारजवतिनहिंउवारा ।
नवहलांननतहिकीननहूपा । उजसनयथागवनम
रभूपा । जगनननाथशरिपक्कमवोरा । जगनजगको
मयामकलमोरा । खवदानामसकलविज्ञाना ।
निवमहिंनहांभक्कसखदाना । नमरेरहांविप्रजेयम
वा । नहिमादीप्रभदेनसहावा । कृपासिंधुनिजभव
ननयागी । आपनविप्रभक्कहिनलागी । नहांनिवा
सजायनिजकीना । नामवडाईमजनमनगदीना ।

28

इनकमननननामसग्रमवानी। चलेनरंनथायमहव
मानी। नहांजायनिजभगवनग्रागे। विथ्यनकरन
रोदनमखलागे। हमरीकवनह्नकप्रभजाना। जहि
नैनजिग्रायेभगवाना। सोरवा। हमरेमरवप्रकार
दीनघालकरुएगायनन। नमहंप्राएग्राधार। न
हिंनग्रान ग्रवलंवजग। ७। टीका। नवपरमग्रव
रजकेवशभयेहृये इन्किक परसपरसवविचार
करनेलगे कि इहकौन चमनकारहै ऊछल

९८ भ॰ २९

खोनहीं जाता मानुष्यकामोरहकरम नहींहै कि
सी असुर देवताने कोई छलचरित्रकियाहै इतनेमे
कोई एकयात्रु परषतहां आय प्रापतभया सो जहां
तहां सबदेवभवनों ओर अस्थानोंकोदेखताहुआप
रमसुखदायक केशवभगवानका दरसन करके
फिर आनंदसे गोपालजीके भवनको चलाआया
तहांवेइवरष भगवानकी मूरतीकेचले जानेका प्र
संगसुनकर तिनपूजकोंकोकहनेलगा किभाई

२९

नमचिंतासोच मतकरो मैतमको सब हृतांतसुनाय
देताहूं ऐसेतिसकाकथन सुनकरसुनक जोष्ठेसो
कुछधीरजकोधारकर कहनेलगे किहेप्यारे तूंतो
आनहमारे भागोंकेवश ईहांआयप्रापतभयाहै अ
वकृपाकरके हमको धीचरवनायदे किगोब्रह्म
णदेवता और पृथ्वीके पालक हमारे प्राणआधा
र प्रभुकहां और कौनस्थलमैविराजेहुयेहैं तिन
केविना आनहमारा सरवस्वडूवाजाताहै और ह

९८
भ०
३०

30

मसव मरणांतहोयरहेहैं। इसप्रकारभवरुजकों ने
अपनाडुःख और कलेश कथनकिया नवजिसप्र
कारदीनबंधु भगवानका जानाहुआथा वे सवप्र
संगप्रकट करके सुनायदेनाभया कितमारे ईहां
जो एकब्राह्मणआयाथा तिसकीसाखीदेनेकेलि
ये दीनानाथजीके निकट चारकोसपर खुरदाना
मकरके एकग्रामहै कि जहां मेरानिवासहै तहां
तमारे गोपाल कृपानिधानविराजेहुयेहैं औरतिस

तिसकीभक्तीकेवशभये हुयेजगननाथ

३०

ब्राह्मणकी साखीदेकर तिसको संसारमै धन्यधन्य वडा कीरतीमान और सुजस मानकरदियाहै इसप्र कार तिसकेमुखसे वचनसुनकर परम हरष और सुखको प्रापतभयेहुये पुजारी ततकालतहां को धायचलतेभये तवजातेजाते मारगकोकाटकर त हां दीनवंधुभगवानके पासजायपहुंचे और दंडव तप्रणाम करकें फिरदीन वाणीसें रोदन करकर विनती करनेलगे किहेकृपानिधान हमदीन

८८
भ०
३१

31

दासोंतें कौनचूकभईथी कि जिसतें दीनानाथहम
कोत्यागकरकेचलेआयेहो हेभक्तहितकारी हेज
गतपाल अबहमारी कौनदशाहोवेगी हमकिसकी
शरणकोप्राप्तहोवें हमारेतो प्रभुतुमहीं आधार
हो तुमारेविना संसारमें और किसीका आश्रयभ
रोसानहींहै ।७। चौपाई । असकहि वारवार हरषाये
प्रभुन्हरतनिकहंलागउठाये । सोकिमिउठहिंभक्तव
सहाई । धनिधनिकरहिं विविध हठमाई । अंतअव

३१

जलनजनतडरवारी। भेउद्युगादमरणकहंसारी। तवभ
गवानस्वपननिसिदीना। मथुराकहंत्वचनाह्रप्रवी
ना। मोरअगमन आसजियचोवोई। मैवसिभूतभक्त
अवहोई। ईहांनिवासकरहूंस्वपाई। तववनतनम
रतिअवजाई। करहुस्थापितविधिवननाहो। मोर
निवासलखहुतहिमाहो। इजकदेखिस्वपननिसि
सोई। उठप्रातचिंतानियचोवोई। कविसनातनसंध्या
दिकस्तुति। कविसनातनसंध्यादिकहोय। श्रीगोपा

९८
भ०
३२

32

लचरनसिरनाये। गवनसमयङ्जवरहरषाई। स्वि
भोजनजुतभक्तिनिमाई। देतविपुलधनकीनविदाये
हरषिविप्रमथुरागृहिआये। इजहभक्तकरभक्तिस
हायन। करहीं बारबार सखगायन। सूरतिनवल
विरचिभगवाना। राखिभवनसंजुतसनमाना। स
दिनसर्ववतसजिकनाहीं। लगेकरनसूजनसहनाहीं
मथुरावासिसकलहरषाये। सुंदरनवलदेवनि
जपाये। असप्रकारइहचरितसुहावा। मैनिजव

दन संतजनगावा। दोहा। अखिलकामप्रहरणहवि
रविमलभक्तिभगवान। तातेपरिहरिभक्तिअस
भजियन संततिग्रान। जहिंप्रभाववसहोतहुत
त जिनिजभवनरसाल। सालौदेनदयानिधीइन
सनगवनगोपाल। ९। टीका। इसप्रकारकथन
कर कर फिर हरषसे आयकरके भगवानभ
क्त सखदानकी आरतीका उठावनेलगे परंत
सोभक्तजनकेवशभईहुई देवआरतीकैसे उठस

९८ भ० ३३

33

कतीथी वारवार हठकरकर अंनको अन्न जलत्या
गपानत्याग करके मरणेपर हुववांधलेतेभये तव
तिनको रात्रीके समय भगवान स्वपनेमे कहनेल
गे कि भाई तममथुरामे चलेजावो अवमेरेजाने
की आसाहृदयमे त्यागदेवो कोंकिमे भक्तकेव
शभयाहुआ अव आनंदपूर्वक ईहांहीनिवासक
रुंगा तममथुरामे जायकर मेरी सुंदरनवीनमू
रती वनवायकर विधीवत तहांभवनमे स्थापित

३३

करदेवो श्रौर तिसविषे निश्चय करके मेरानिवास
जाना ऐसेराजीकेसमय स्नकस्वपन देखकरके
प्रातःकालहोते उठकर श्रौर चिंताका त्यागकर स
नानसंध्यादिकरम सव करतेभये तिसतें उपरांत
श्रीगोपालजीके चरनोपर प्रणाम करके जवचल
नेको तयारभये तवब्राह्मणने वडेआदर सतकार
सें भोजनजिमाया श्रौर फिर यथायोग धनवस्त्र
देकर प्रीती सनमानसे विदाय करादिये तवसो

भजक ब्राह्मणकी सुंदरभक्तीकी अनेकप्रकारश
लाघावडाई करतेहुये मारगकोनहृत्यकरके मथु
रापुरीमे आयप्रापतभये तहांगोपालदेवजीकीत
रन नवीन मूरती बनवायकर और विधीपूर्वक
वडेउत्सवकारसें मंदिरमे स्थापित करकर वैसेही
यथावतभजन सेवन करनेलगजातेभये तवम
थुराके लोगजोभगवानकी विरहंसे व्याकुलभये
हुयेथे सो देखकरके सब सुखकोप्रापतहोयगये

नाभादासजी कहतेहैं किहेसंतो इसप्रकार इहमने
हरगाथाजोहै सोमैने गायनकरीहै संसारमेंसर्व
कामनाके सिद्ध और सफलकरनेको इह भगवा
नकी निरमलभक्तीजोहै सोई सामर्थहै भक्तीके
समान संसारसमुद्रके तरनेको औरकोईभी सुग
मउपायनहींहै ताते और सववासना उपासनाको
त्यागकरके वलभक्तीकोही आधार करना चाहि
ये देखियेभक्तीका प्रभाव किजिसकेवशभयेहुये

९८
भ॰
३५

35

भगवान अपने मथुराधामको त्यागकर ब्राह्मण केसाथ साक्षीदेनेको खुरदाग्रामविषे आयनिवा सकरतेभये ।८। इतिश्रीभक्तविनोद ग्रंथेभगव दभक्तिमहात्मे भाषाटीकायां ब्राह्मणचरित्र व रणनं नाम सरगः ॥

मीहांसिंहकृत

अथहंसहंसनीचरितं। दोहा। चंद्रकिरण सदृश
सरद भक्तिमहातमग्यान। श्रोतन जनमन कुम
दकल विकसन विमलमहान। चौपाई। करहुं
कथन निजमति अनुसारू। मानस हरनप्रेम
प्रवाहू। मथुरानिकट भूपइकभ्राजा। धरम
निरतनिज युक्त समाजा। श्रव करम विवस
निजसोई। अतिरुजराज गलित वपुहोई। रह
तसदा न्रप आरतदीना। यद्यपि विविधयतन

५९
भ०
१

तहिकीन्हा। तदपिभयोअंगनिरुजनाहीं। विषयनत्र
धीर उचित मनमाहीं। अंतविचार कीनउरराई
अवकहं उग्रछेदनतटजाई। इहनिजननहुं वपु
षडावखानी। असप्रकार सम्पतिनृपठानी। य
थाउचित निजसंगसमाज। कछुसंदपत लीन
नरराज। भाउग्रुगद गवननजवेनहू। तवकविरा
जपक नृपगेहू। आवाअनायास ततकाला। दे
खिउदोग गवनमहिपाला। हृष्ठितकहेंा जात ९

छितराई। नवनरेसमनिज विधासजनाई। ग्रसेपोसजनह
नमोरसरीरा। तजहुंजायतन मीरथनीरा। दोहा।
वैदछविवतरूप बचनसनि भयोसंकगतगाय। अ
वहजराजकलेशकर तजहुसोचनरनाथ॥२॥ टी
का। अवआगे ग्रोर वडामनोहर प्रेमके उतपन्न
करनेवाला ग्रोर चंदमाकी किरणोंवत सीतलग्रो
नाजनोंके कुमदरूपी मनको प्रफुल्लत करनेवा
ला भक्तीकामहात्मनोहै सोहेसंतो जैसाकमनी

५९
भ०
२

के अनुसार होयमरकनाहै आपकेआगेगायन क
रताहूं करतेहैं कि मथुराके निकट अपनेसबस
माजकरके एक बडाप्रतापमान और दयाधरम
कीनिधी एकराजावासकरताथा सोअपनेपूर्वले
करमके अनुसार ईहांकुजराजजो कुष्टरोगहै ति
सके वशहोयकर सदादीन और दुखीरहताथा
यद्यपि तिसमहारोगके निवारणकेलिये राजाने
बहुतसे यतनउपायकिये तथापि रोगकी कछभी

थांतीनहींहोतीभई तब कलेशसे व्याकुलचित्तहो
यकर अंतको इहविचार दृढकरतीभया कि अब
राजसमाजसब छोड़कर किसी उत्तमतीर्थ पर जा
यकर इहदुखकलेशोंकी खानी शरीरजोहै इ
सकोत्यागदेऊं इसप्रकार निश्चयकरके जोजो
उचित समाज साथलेनाथा सो इकट्ठेसंदेपहीं करके
लेलिया और चलनेको त्यारहोयगयाथा इतनेमे दै
वयोगसे स्तेनसिद्धहीं अर्थात यत्नके बिनाअप

५१
भ०
३

नेआपही एककविराजमोवैदहै सोततकाल रा
जाके घरमै आयप्रापतभया और प्रजापालकी
नयारीदेखकर सहनेलगा किहे पृथ्वीनाथत
मकहां जातेहो तव राजाने तिस वैद को
अपनी विथा सव सुनाय देई किमै
इस राजरोगका असाहूया अत्यंत दु
खी होय रहाहूं अनेक उपाय किये।
है इसको नहनी नही ॥ ।

३

3

होती इसलिये अबकिसी तीर्थपर जायकर इसवि
कारकेभरेहूये शरीरकोत्यागदेताहूं नवश्रेसे दु
खकरके स्रवन राजाके वचन सुनकर वैदनिरस
कहोयकरके कहनेलगा किहेराजन अव इस
राजरोगकीचिंता श्रीर कलेशमेहि सो हृदयमे
त्यागदेवो।२। चौपाई। मेप्रसाद निज गुरुवरदा
या। विक्रनतोरवपुष महिराया। करनलाहू जि
मिपारसहेमा। नवतोहितीनदिवस अमनेमा

५८
भ०
७

करहं शरद केविनवनराई। देहवेगाखगा हंसमं
गाई। वनहि नाम औषधि सबकारी। वैदवद
नजवगिरा उचारी। सोसुनिराज हरषवस भ
यऐ। वोलिवदन आपन अस कहयो। वधि
क निकर जहं तहं नमनावहु। हेमसकुन बं
धन करिल्यावहु। आपपायछिनपत अनुसासा
चलेनरंन करन गहिपासा। चारोदिसा गवन
तिनकीना। नवउक वधिक सरोवर चीना।

३

भ० ५५

से हे राजन इस तेरा विक्रान्त अर्थात विगड़ाहुआ शरीर होगा है जैसे पारस लोहे को कंचन करदेता है तैसे तीन दिन के बीच तेरे को शरीर कंचन के समान करदेहूंगा परन्तु हे प्रजापाल अवशीघर हंसपक्षी जो है सो मंगवायदे जिसकी औषधी बनेगी कि जिससे तेरे को ततकाल ही कल्यान होजायगी इस प्रकार वैद का कथन सुनकर राजा परम आनंद को प्रापत भया और बाधजो पंखियों के

५

पकडनेवालेहैं तिनको बुलायकर आज्ञादेताभ
या किहोवधिक तुम जहांतहां परवतस्थल सु
रोवरोंपरधायजावो और जैसेहोयसके तैसेहीं
यतनसे श्रीघ्र हंसपंक्षीजोहै सोपकडकरके
ईहांमेरेपासलेआवो ऐसी राजाकी आज्ञापायक
र वधिकजोहैं सो पंक्षियोंके वंधनकरनेवाली
फांसियोंको लेकर जहांतहांकोचलपडतेभये ।
चारोंहीदिसामें भ्रमनजोकररहेहैथे तोतिनमेंसे

एकबधिक कहींबड़े भारी सरोवरको देखताभया
तहांतिसके निरमलजलविषे एकबड़ामनोहर
हंसनीहंसजोड़ापरम आनंदसे परस्परविलास
करकर इधर उधर विचरताफिरताथा सोबधिक
तिनकोदेखकर हृदयमे बड़ाप्रसन्नभया और
कहनेलगा किजोकदाचित इहपंखी मेरीफा
सीमे फसजावें तोमेरेमनकीआसा सबपूरण
होजातीहै औरमैजानताहं कि आजमैंहंसाव

धिकोंमैसेमेरेहीं ऊचेभागहैं कि जिसको ईश्वरल
भ हंस यतनकेबिनाहीं प्राप्तभयेहैं ऐसेविचार
कर सोप्रथम फंधिक तिनदीन हंसोंके पकड़ने
केलिये अपनी फासीजोहै सो यतनसे अमकर
के जहांतहां लगायदेताभया ।२। चौपाई । नास
कपट असहृदय विचारी । लेतछिये जतहंदरगारी
फंधिक दृष्टि अगोचर होई । वैठेजायसकुन वरदो
ई । असप्रकार कछुदिवसविहाये । व्याधसजाल

स

पकर नहिं पायो। नव धावन नन भूप पठायो। नी
नदिवस नव वधिक सरायो। पयोन हंससम छ ह
मपाहीं। राजन देस कौन करनाहीं। जो इव स
मतौ न दिन पाये। कवहूं कि प्रथम हंस नहिं ला
ये। साकुटंव नव भूप चतमारा। आपु करन निज
करहूं संहारा। करन देस आप सनि राई। उरत परास
पर गिरा सुनाई। जियन आस देहू विहाई। मिलन पता
लय संभव भाई। असकहि आप विकलमनमारे

स्रव

७८

भ०

७८

7

सरसरितन थल सकलसिधारे। तेफेदिक तिनहं
सन पाछे। हृदय विचारियतन निजआछे। आवत
स सरोवरतीरा। तहंएक वैस्नव मतिधीरा। भग
वन भक्तविरक्तविकारू। मानहुंशांति रूपधृत
चारू। वैसोध्यान लीन हरिपूजा। तनपर भक्ति
भाव तजिहूजा। तहिसमीप खगदंपतिसोई। वि
हरत उभय त्रासवसहोई। संतनिकट खग श्रम
यनिहारी। भनतव्याध श्रम हृदयविचारी। दे

५९
भ.
८

ह्ना। वैसव भेष प्रभाव इह जो उरपत खगनाहिं। तो
तेवधिकऊराहूंवउ भेष वैषणवमाहिं। ३। टीका। न
वतिसका ऐसाकपट हृदयमे विचारकरके स्त्रीके
सहित हंसउडारीलकरके फंदिककोहस्तीके पं
रोद्दहोय करके जायवैठा इसप्रकारजव कुछदि
न वतीतहोयगये और फंदिक हंसकोनहीं पकड
सके तवराजाके धावनजनजो हलकारेहैं सोपी
के पीछेहीं आयकर तिनकोराजाकी आज्ञा सुना

घटेतेभये कि तीनदिन बीतगयेहैं मूफ्तमनेहंस
पकड़करके नहींभेजा हमारी आज्ञाजोहै इसीन
हीं कीहै अब अधमजोकवी और तीन दिनके पी
छे तमहंसपकड़करके नहींल्याये तोमैतमारा
मंदसब कुटंबकेसहित नासकरदेऊंगा इसप्रका
र राजाकीबड़ी क्रूरआज्ञासुनकरके बधिकजोहैं
सोपरस्पर कहनेलगे किभाई अब जीवनेकी आ
सा त्यागदेवो क्योंकिहंसोंका मिलना बड़ाकठिन

भ. १५५

है ऐसे कथन कर कर व्याधमोहै सो परम विनासे म
न मोरे हुये जहां तहां परवत स्थल नदी सरोवरोंको
चले जाते भये तब मोर्फ पिक तिनहंसोंके पीछे य
तन विचारता हूया सरोवर के किनारे लागा चला
आवता है तो क्या देखता है कि तहां आगे एक विर
क्त वैस्नव संत भगवानकी भक्तीमे लीन मानोशां
तरसमो है सोई रूप धारकर बैठा हूया ध्यानमें म
गण होयकर भगवानका स्मरन कर रहा है तहां

तिसमहात्माकेपाससे दोनोहंस और हंसनी अभ
यहोयकरवडे आनंदसेविचररहेहैं तवरसयका
रसंतनकेपास तिनहंसोंको निरभय फिरतेदेखक
र फंदिकपापी हृदयमे विचारकरनेलगा कि ई
हो इह हंससोनहींडरतेहैं तोकेवलवैस्नव भेष
काप्रभावहे तोजेमैभी अवयही यतनकरूं कि अ
पने इसवधिक शरीरको वैस्नवसंतके भेषमेछि
पाऊं और इनकोपकरुं। चौपाई। अस तनहि वधिक

५५
भ०
१०

मंत्रविनदीन्हो। मिलहिं नहंस कपट विनकीन्हो।
करिचिंतन सठसायंकाला। गैरक पटमुद्रादिक
माला। वैस्नवभेष अलंकृतहोई। हरिहर रटत
वदननिजसोई। ह्वांवनतट वकध्यानलगाई। वै
ठेसठनिज वपषंडराई। तेहसमीप अतिनिपुन
मराली। वधिक कपट असदेखि उचाली। पति
सन कहत मनोहरवानी। नाथ अधम हिंस
क अगवानी। धरत वैस्नव धरम विरोध ॥ १०

10

कसोवहत सव हमहिनिरोधू। कपटि निपट हित
गहन हमारो। कपटभेष वैस्नव निजधारो। तोते
हमहिं उचित ग्रवनाथा। होइहुंवउ इहिहिंसकहा ८
था। संतभेषधून सषानहोई। लेहिं ग्रामिष ग्रथ
मनिजसोई। साधुभेष हमदेव सहावा। जोइनति
नवंछित नहींपावा। तोअपमानताप पतिपावा
हमहूंनपाव सजस कल्याना। जोइनपकारि हम
हिंपतिमारा। नवहूं सफलपरलोक हमारा। ग्र

वलगनाथ सकल वपुमाहीं। कीन्हो अर्थसिद्धक
छुनाहीं। आगलशेष जियनसंसारा। वृथानाहिं
पतिप्राणनिवारा। साधसदैव खगानवधकारी
द्विपति हमारभागकरनारी। जोइन हमहूंवध
न हितकाहू। वैसमवसंतभेष असथाहू। नापर
रामनाम जगतारक। रटत वदननिजकिलष
निवारक। इहिनें हमहिं आनकल्याना। होहिंक
वन सजनहो पतिप्राना। लोकअलोक सजसनिज ॥

जानी। वधहुनाय इहि हिंसकपानी। दोहा। सुनिम
रालश्रम वचनत्रिय वहुविधिवदन प्रसंस। कहत
प्राणप्रियकौन नव सफल सकल निजवंस। ५।
टीका। नवनिस प्रथम फंदिकने चित्तमै पहीमता
निश्चय करलिया कि कपटकिये विना हंस क
दाचित भी पकडे नहीं जावेंगे ऐसे चिंतन कर
कर कपटीने तिलकमालामुद्रा और गेरू रंगे
वस्त्र धारकर तुरतही वैस्नव संतका संवरभेष

५९
भ॰
१२

जोहै सो वनायलिया और तिससंतनभेषमे अधमत्र
पने वधिकरूपको छिपायकर हरीहरी रटमा
हुआ सरोवरके किनारेपर वकजो वगुलाहै ति
सके समानध्यान लगायकरके वैठगया तव
परम चतुर और वडीसुशील मराली अर्थात हं
सनी तिससंतकी कुचाली और कपटदेँकर प
तीको वडीमनोहर वाणीमें कहनेलगी किहे
नाथ अधमहिं सक का जीव चानी औरमहापाप

कीखानी धरन वैसव संतकाकपट भेषवनाय
कर हमकोपकड़ने चहताहै इसने केवल ह
मारेही पकड़नेकेलिये छमकरके वैसव भेष
कोधारन कियाहै तोतेहेमाणपती अवहमको
उचितहै कि इसकेवंधनमे आयजावें और इसके
हाथसे पकड़ेजावें क्योंकि इसकपटीने संतभेष
जोधारन कियाहै सो असत्यनाहोजावे और
जिस संतभेषके प्रसादसे रह अधम अपनी म

५१
भ०
१२

नवांछित कामनाको पूरणकरलेवे प्राणनाथमा
पृस्त्रेषभेजोहै सो कल्पवृक्षके समान सर्वमनोर्थों
को सफलकरने वालाहोताहै जोकदाचित इसने
अपना मनवांछित अर्थ प्राप्तनहींकिया तोकु
पात्रिप्रान संतश्रेष्ठका अपमानहोवेगा और ह
मकोभी सजनसकल्यान प्राप्तनहीं होवेगी और
जोकदाचित हमकोपकडकर इसने मारदियातो
भी हमारापरलोक सफलहोजावेगा हेप्राणपतीदे ख्रिये

13

अवलगहमने इसपंक्तीकायामें कौन अर्थसिद्ध
कियाहै और आगेहमाराजीवना जोहै सोभीव
थाही जानेवालाहै इहवचिकजोहैं सोसदेवपं
छियोंको मारतेचलेआयेहैं परन्तु हमारेभागों
का चमतकार देखिये जोइसने हमारेमारने
केलिये सरव सुखदायक और कल्यानका मू
ल वैसनव भेषजोहै सोधारन कियाहै निसप
र और अधिकता देखिये कि पापोंके नासकरने

५५
भा.
५५

वाले जगतारक रामनामको मुखसे उचारण क
ररहाहै हेप्राणआधार इसतें अधिक और क
ल्यान हमको कवी प्राप्त नहीं होवेगी औरना
ऐसासमयफिरहाथ आवेगा कृपानिधानलो
कपरलोकमे अपनासुजनस जानकर इसफंसि
ककेहाथ वंधनमे आयजावो इसप्रकार हंस
नीके मुखसेवडेगूढ वचनसुनकर हंस ति
सकी वारवारवडी प्रशंसाकर कर कहनेल

14

गा किञहोपारी तेंधनयेहैं योरधन्यनेरी ञेसीसम

तीहै स्वशीलत्तंनेता आजमेरे हंहएीवंसका उद्धा

रकरदियाहै ।४। चैापाई । जीवन मक्तकीन मोहि

प्यारी । सुमति वटनञमरगिराउचारी । मोरेकय

नतोर सुईकारा । ञसप्रकार जवहंस उचारा ।

नवनिरभयरवरा देयमितोई । जियन आसनिज

मंसवतिखोई । मंदमंद गतिपरहितलागी । आ

येवधिक निकटवउभागी । तेवकप्यातिहंस

गहिलीन्हो। छलबल अर्थ सिद्ध निजकीन्हो। अथ
मलेछ नवनाह सिधारा। बेगनि बिलापकरतजि
यभारा। होई है देव जियनकसमोरा। सहिनस
कहुं पनिप्राणविछोरा। बन्धोकहतनकछु आन
कुचाली। रुदनकरत अति उरवत मराली। प
तिसनेत पंथिकभजनाई। वैठीप्रिये हंस अकु
लाई। गहीवधिक करनरतपसारी। त्यागमद
न पिंजर त्यागरी। रुपपें जाय नवेदनकीन्हो

१४

राउविलोकि विविधविनदीन्हो।नव कविराजवो
लिनरसाई। हंसनि हंसदीन नहिकाहीं। सोप्र
सन्न मानस गहिपानी। भननलागतप कहंस
उवानी। करि सनान ग्रव भोजनकीजे। वग्रह
जराजकष सवकीजे। मैश्रोणन इन हंसनकेरा
मरदनकरहं भूप ननतेरो। तीनदिवस पुहदे
तमसाहू। होहिंतोरहज सुचित अमासू। दोहा
नामवचन सुनिराउ ग्रम ग्रति ग्रानंदजतहोय

५५
भ.
१६

16

तोलोभाउघुगद हितवेगनवैरबंधसोय ।।५।। टीका
फिर कहतहैं किहेसुमती तैंनेमेरेको ऐसीवात
सुनायकर संसारमे जीवन मुकतनकरदियाहै अ
वतेरा इह सुखदायक कथनजोहै सोमैनेसुईका
रकिया इसप्रकार जव हंसनेकहा तवसंसारमे
जीवनेकी आसात्यागकर और निरभय होय क
रै दोनोपंछी मंदमंदगतीसें अर्थात सहजे स
हजे चलकर पराये हितकेलिये तिसपंथिकके

निकटचलेआवनेभये तवनिस कपटीने वकजीव
गलाहै तिसके समानध्यानजोलगयाहुआथा ति
नपंछियोंको पासआये हुयेदेखकर हाथपसार
करके हंसको तरतहींपकडलिया और महंमंद
ने छलबलकरके अपनाअर्थजोहैसोसिद्धकर
लिया जबइसघुडी तिस हंसको लेकरकेचल
पडा तब हंसनीजोहै सो परमविलाप और रो
दन करकर कहतीहै किहे देव अबमेरा जीव

५९ भ १८

18

सत्वभयाहुआ मधुरवाणीसें कहेनेलगाकिहे पृथ्वी
नाथ अब आप आनंदपूर्वक स्नानकरकर भोजन
पाईये और इहशरीरका राजरोगजोहै इसका अ
वकष्ट और चिंताहृदयसे सबदूर करिये मैइनद्वं
द्वोंका रुधर अर्थात लहू लेकर राजन तमारेशरी
रकोमरदनकरूंगा तो गुरुकेप्रसादसे तीनदिनके
भीतर इहतुमारा असाध्यरोगजोहै सोसबनष्टहोजा
यगा इसमेंकुछसंशयनहींहै ऐसेवैदकेमुखसेंवचन

सनकर राजा परमहरषको प्राप्त होयगया नवकु

छेदरकेपीछे वेदजोहै सोतिनदीन पंडियोंको पिं

जरेसे निकालकरगलाकाटने श्रोर वधकरनेको

तयारहोजाँभया ५५ । झूलनाछंद । देखिकरकाल

सम्मँलकरिराजकर जपतनइ रा.... नय

ना । भवनमदमीमभय भक्तभंजन सकल ललि

तवरभक्तभव अभयदेना । खगान अवरोहप्रभु

हित्यवसेष अमवग्रष ममभक्तहित मेषमहिना

ता

रा

५५
भ०
१९

अमरमहिरूप भवकूपकरहरनभय नरतनधरप्र
वर करुणायचैना। दोहा। जासनाम भेषजविमल
मतजीवनसंसार। वनिसदैव भेषजलिये आय
धरनपनिहार। टीका। नव कविराजजोवैदहै ति
सकेहाथमे खैंचीहूई मलवारदे खकर हंस हं
सनी भक्तोंके हृदयकाभय हरकरनेवाले और
जगतमै भक्तोंको अभय वरकेदेनेवाले राजीव
लोचन अर्थात कमलोंके समान नेत्रोंकीशोभा

१९

वाले कृपानिधानभगवानमोहें तिनकास्मरण
करनेलगे नवदीनबंधुभगवान तिनदीन पंछि
योंका दुखकलेशजानकर कि इन्होंनेमेरेभक्त
केभेषकेलिये आपनेपरइह कष्टकलेश सहार
लियाहै तरनहीं जगतकेरूपकाभय निवारने
वाले दयाकेधाम किजिनकानाम संसारमें स
तसंजीवनी को मरेहुयेको जियायदेनेवाली
निरमल औषधी लेकर राजाके द्वारमें आय

औषधीहै ब्राह्मणकावधपापरे हरियेदेखनकर और

५५
भ.
२.

२०

प्रगट न सो नै भई ॥५६॥ चौपाई ॥ जद्यपि लखन सहस सोन वध
लागे । तहं कपाल भक्त अनुरागे । नृप सन कहहु
न बदन सुबानी । सुनहु बचन नरनायक मानी
श्रुति सिमृति अस बिदत बखाना । लेहिं न जग
हिं सक कल्याना । सब करम कीन न मजेहू ।
लीन बदष नोकर डरपहू । अब अनाथ खगाबि
न अपराधू । लागे पाकरन भूप कन बाधू । इहलोला
क परलोक नसावहु । इधारी न जीवन जानि मार

१०

हू। सुखमाहीन मलीन मलिन मनिमानहू। मैमिथ्रनकरितैने
लेहहावा। देहूं बपुष नवभेखवेनलावा। इहपुरमा
धकज नवेत नमारा। जाहिंसहज रूपसकल ति
वारा। हिरिजन वैदवचन सुनिराया। करिसहईका
र चरनसिवनाया। कृपानकेनभमनसुखदाई। न
वभेखजकछु नैलमिलाई। पारद परमसुलेमजि
मियातू। कंचिन होतविॅल मलवातू। भेखजकछु
वनजरन निभिराया। मकरी मुड फटक वत

म

काया। लोकविलोकि चरित विसमाये। साधुसा
धुसव वदनपलाये। मायामनुज भूप सुखपाई।
ज्ञानिनसकेउ वेदचतुराई। करिप्रणाम जुगजोर
रहाथा। लागेविनय करन नरनाथा। वेदराज
कुलराज अघोरा। कौन नकृत्य आजजेमोरा। तव
उपकार अवयगतचीना। जबमोहि नवलजनम
जगदीना। मैअवककरहुं कवनसिवकाई। सुनतु
न तनविन जतनसमदाई। तमहिं कृपाल नवेदन

मोरा। पैतिय सकुच हैातकछुथोरा। विश्ववैद सुनि भू
पतिवचना। परमवनीत प्रीतिजनरचना। दोहा। बोले
सुनहु नरिंद्रमणि महि न अपेला कोय। पैजाविन इ
ककरहुं तोहि खगावर दंपतिदोय। ११ टीका। नववि
स अस्यानविन पंक्तियोंको वधकरनेलगेथे अर्थात
मारनेलगेथे तहां भक्त हितकारी भगवान आयकर
वटीकोमलवाणीसे राजाको कहनेलगे किहे मा
नके राखनेवाले प्रजापाल तुमेरेवचनको श्रवण

५८
भ.
२२

22

कर क्योंकि श्रुति और पुराणोंने प्रकट करके क
थन कियाहै कि संसारमें हिंसक जीवघाती जोहै
सो कल्यानको कदाचित प्रापत नहीं होताहै तैसे
पूर्व जैसा कोई करम कियाथा तिसका तैसाही ईहां
प्रायकरके शरीरविषे कलेशपाया अब आगे
फिर तिस अपराध इस दीन और अनाथ पंछीजोहैं
इनको तं मारनेलगाहैं हे राजनतैसे लोकतो हारा
परन्तु परलोककेभी हारताहैं इस अनर्थसे नहूतसे

सृष्यानीवोंकोमनमार मैतैलमै मिलाय करके एक
श्रोषधीतेरे शरीरको लगायदेताहूं तिसतेतेराइह
असाध्यरोगजोहै सोसहजेहीं सब नष्टहोजावे
गा इसप्रकार वडेहितकेभरेहूये वेदके वचनसु
नकर राजानमस्कारकरके वारवार चरनोपरसी
सनावताभया नवभक्तसुखदायक भगवानके
पानियान कोई श्रोषधीजोहै सोतैलमै मिलाय
देतेभये तोफिर जैसे पारकास्पर्श लेतेहीधात

५८
भ.
२३

23

मैलको त्यागकरके निरमल कंचनहोजातीहै तैसे
ही औषधीकीलागहोनेसीं राजाकीकायाजोहै सो
फटकमणीकेसमान शुद्धनिरमलहोजातीभई इस
अदभुत चरित्र को देखकरके लोगसब अचरज
को प्रापत होयगये और साधु साधु शबदको उचार
नकरने लगजातेभये नवमायाकरके मोहित
भयाहूआ राजावैदकी चतुराईको कुछ जान
नहींसका प्रणाम करके दोनोहाथ जोड कर ।

विनतीकरनेलगा किहे वैदराज तुमधन्यहो कि जि
नोनेमेरा ऐसाभारी राजरोगनष्टकरदियाहै इ
ह तुमारा उपकार मेरेपर अवधगतहै किजिसकी
कोई अवधीनहीं मानोजगतमे मेरेकोनयाजन
मदियाहै मेंतुमारी कौनसिवकाई करूं स्त्रीपुत्र
तनधनधाम इत्यादिजोहै सो कृपालसबतुमारे
अरपणहै परन्तु फिरभी चित्तमे सकुचहोताहै
कियाउहै. तब संपूर्णसुखोंकेवैदभगवान तिस

५८
भ०
२४

24

केवेरेकोमलविनती प्रीतीवालेवचनमनकर प्रस
न्नहोय करके कहनेलगे किहे प्रधानराजन तैने
सबसत्यकहाहै परन्तु इसमेंमेरेको कुछइच्छान
हींहै केवलएक अभिलाषाहैकि इह स्त्रीभरतादे
नोहंसपत्नीजोहैं सोमांगताहूं । १ चौपाई । इहज
गसकुनभूपमोहिदेहो । लोकललित सभकोरति
लैहो । अरुइहवैदराज गुरुमोरे । इनकर वनहिंप्र
पजसतोरे । सेवाकरहु रुचिर हितमानी । सुनतवे

२४

हभगवन असवानी। हृदय चकनगनि सोचनलागा

नवभगवान मधुरम्रुखवागा। वैदवंस गणिसकल

सुनायो। नवविस्वास तासउरआयो। इह अवसपसि

ष होहिंहमारा। तव नरिंद्वमरव विविधप्रकारा।

वैदराजकर असनतिकीन्यो। वहूरिमराल जुगल

स्पलीन्यो। सादिर कृपानाथकरदीने। विनय प्र

णाम विविध विधिकीने। तवनलेत भगवान सि

धाये। नगरवहिर पमदिन जवआये। वंपमोदस

५९ भ. २५

भूदीनन बंधु। कीने जब हिं दीन खगहंह। मायामोह नव दन सर बानी। तिनहिं दीन बन नवदन बखानी। नवसमान वसंत निसारी। लख्यो नहमहुं आन उपकारी। जो हमसे दीनन खगकाहीं। विनहित दीन मोतनव साई। एकवदन हमजद्ध खगजाती तोर इमनकी रति कहिभाती। सकहिं अमाथ नाथ कसवरनी। ग्राहोपत्य नानाविकरनी। यथा ग्राह गजयत्त मयारी। निमिसहाय नवकीनहमारी। अस

२५

25

मकार मोहिबकनमाया। एकगानमसर मरमनहिं
पाया। करिप्रणाम गुणगाणजवगाते। उहेमरकु
न उरहरष श्रद्धाते। करिकौतक प्रभमक्तउवारे
भक्तपालनिजधाममिधारे। इहनहि वैदसजक
हेराई। देतवसन वितवाजिसजाई। दोहा सादि
रकीन विदायतव नमचरन सिरनाय। राजकाज
ततपर भयो प्रापनपतिसबपाय। ८। टीका।
तोतेभूपते इहदोनायंत्नी मेरेकोदेदे इसमैनेवा

५९
भ॰
२६

लोगोंविषें वर्णाश्रमधर्म और वर्णाईहोगी और इहवे
दमाजनेहैं सो मेरेग्रहहैं इनकोंतमारेसें जहांल
गहोसकतीहै सेवाकरी नवरूपप्रकार भगवान
की वाणीसुनकर सोवेदहृदयमैं आचर्यहोयक
रके सोचनेलगनांभया नवदीनवंध तिसकावंस
जोहै सोगिणकरके सब सुनायदेनेभये तिसतें
वेदके हृदयमैं निश्चयहोयगया किइह अवश्य
हमारापिणपाहै ऐसेसुनकरके राजानेभी तिस

ता

२६

वैद राजकी वहुतप्रसन्नताे वडाईकरी ... सतें उप
रांत दोनोहंसपंछी मंगवायकर वडीप्रीतीसें सन
मानसे विनतीप्रणामकरकर कृपानिधानको
देदिये तवदीनानाथ तिन अनाथ पंछियोंको
लेकर हरखके वश भयेहूये नरतवल पडतेभ
ये और जब नगरके वाहिर निकलआये तव
तिन हंसोंकोकृपासिंधुने वंधसेमोक्त करदि
या अर्थात छोडदिया सोवंधनसेछुटकर मा

याकरके मोहितभयेहुये वडीकोमल श्रौर दीन
वाणीसेकहनेलगे किहेदाता तेरेसमान संसार
मे उपकारकीनिधी श्रौर हमरवाकोई नहीं देखप
ड़ताहै क्योंकि हमदीन श्रौर वलहीन पंक्षियोंको
तैने जान पहिचानके विनाहीं ऐसे कठिनवंधन
से मोक्षकरवायदियाहै हमपंक्षीजद जाती एक
मुखसे तुमारे अनंतसुजस श्रौर अगाधमहिमा
वडाई को कैसे गायनकरसकें अहोयत्नमहो

27

ग्रौर धरम ग्रनाथोंकेनाथ ङ्मारीकरनीहै जैसेग्राह
जोतेंदुआहै जिसकेग्रसेहूये गजराज ग्रर्थातहसती
की मुरारीभगवानने सहायताकरीथी जैसेहेउदार
जैनेदयाकरके हमको राखलियाहै ऐसेमायाके
मोहितकियेहूये पंछीदीनहितकारी मुरारीभगवा
नकाभेदनहींजानसके प्रणामकरके तिनकासुज
स ग्रौर महिमावडाई गावतेहूये हरषसे पंखो
लकर ग्रौर उडकर ग्रपनेमारगको चलेजातेभये

५५
भ०
२८

28

ईहाभक्तपाल भगवानभीअपना अद्भुत कौतुकक
रके आनंदसे अपनेवैकुंठ धामकोचलेआये फिर
राजातिसकविराजको नानाधनवस्त्र और साजस
माजके सहितसुंदर घोडेदेकर वारवार चरनोपर
सीसनायकर वडेसनमानसे विदायकर देताभया
और आप कुसभगवानको सुमरताहुआ सुखपू
र्वक अपनेराजकाजमे ततपरहोयगया।८। चौपा
ई।जासगहननहित हंसबयाधू।धासोकपट भेषति

नमाम्। तौंकरहृदय समति असहाई। अहोभेषक
स संतवजाई। जासप्रभावहंसवगजोरे। आयेविन
प्रयास करमोरे। अरुवलजास मोतनिनपाई। सोअ
संतभेष सावदाई। मैनिजकुमति कपट वडथा
हो। असप्रभावनहिं विदतनिहारो। जोअससस
भेषनिजधरहीं। अनायासभव सागर तरहीं। अस
विचारिहिंसकजियमाहीं। वैसवसंतभेषवरका
हीं। सहिउपदेशलेत गरुत्ताना। धारतभयो सु

५८
भ०
२९

निजअभिमाना। भगवतभक्तिनिरत जगहोई। विव
रतलागत्रुष्टमतिकोई। असरुह चरित ललितसुख
दाई। हृसति हृसवयापनकराई। मैनिजअलप यथा
मतिलीने। हरिपद नलिन चाहचितदीने। गायन
कीनकविरमद भरना। देवहृदेव भक्त भयहरना
सर्वकालभक्तन रखवारे। भक्तअमरनर भक्तउवा
रे। भक्तसहाय भक्तहितकारी। नानारूप भक्त हि
तधारी। दोहा। कौतककरत वचित्र प्रभुसदाभक्त

२९

स्वदैन। रंजनमहिम्नर स्वरथस्न करन ङगाथ ति
थसैन।९। टीका। ग्रोरजिस फंधिकने हसोंके प
कडमेकेलिये वैस्नव संतका कपटमेष धारनकि
याथा तिसकेहृदय मे इहहमती ग्रायकरके व्या
पतहोतीभई कि ग्रहोसंतमेषकी महिमावडाई
कैसीग्रगाधहै देखिये जिसके प्रभावसेवे हंसों
काजोडा पतनके विनासहनेहीं मेरेहाथमें ग्रा
वगया ग्रोर फिर जिसकेवलप्रभावसें तिनोंने

५८
भ०
३०

मोक्षभीपायलई सो ऐसासखदायक कल्पवृक्षके
समानसंतभेषमै ड्रमतीने केवलकपट सेहीधा
रनकियाथा नातिसका प्रत्यक्ष ऐसाप्रभावदेखा
जोकदाचित इससंतभेषकोमै सत्यसत्यनिसकप
ट होय करके धारन करूं तोइसमै कुछसंदेह
नहींहै जोइस अगाम संसारसमुद्रको यत्नकेबि
ना सहजेहीं नरकरपार उतरजाऊं ऐसेविचारक
र जीवघातनी फंधिक जोहै सो संतमहात्मानकी ।

३०

अथजुगलकन्याचरितं। दोहा। अब अद्भुत संदे
र सावदभक्ति महातमग्यान। करहुं यथामतिक
थनकलदैन भक्तिभगवान। चौपाई। ग्रामाधी
स एककोमन्या। ताकर रही रुचिर इककन्या। भू
पसुताकर सहचरिसोई। दिनदिन तासु प्रेम व
ढेहोई। क्रीडाकरत रहतनित नाहीं। एकदिवस
जननी ररनाहीं। ह्वनतसंत वैस्नव ब्रतधारी। लि
येसंग निज युगलकुमारी। तिनपें आय हरष

५५
भे॰
१

उरलायो। दरसन करत चरन सिरनायो। तेजवव
लन सदन निजलागी। तवसुकमारि जुगल वड
भागी। नमजोरि कर विनय उचारी। सुजनहेतु ह
महिं व्रतधारी। काहू ललित ठाकुर प्रभु
दीजै। दीन दयाल निज सेवक कीजै। प
रम प्रीति जुत वचन सुहाये। तिन
कर सुनत संत मन भाये। सिला सु
हंद दहुंन कहं दीन्यो ॥ ॥

हृषि सुखिबचन संत अस कीन्हो। शिल्पविल्प इनक
र मनभावा। राजकुवरि वर नाम सुहावा। सो अस
लेत परम हरषाई। करि प्रणाम निज सदन सिधाई
अति प्रसन्नमानस अनुरागी। पूजन देव करन ज
ग लागी। जे निसकाम तिनहिं व्रतधारा। दीनानाथ
कीन सुईकारा। अब आगे तिनकर इतिहासा। प्र
थक प्रथक कल करहुं प्रकासा। अवसर एक ग्रा
म पतिनेहा। लहेउ आय प्रबल रिपुगेहा। दोहा॥

५५
भ॰
२

नाम सुता ठाकुर रुचिर मंजुषा धनजोय। धनन के न संजन सकल गयोलेन मन सोय॥१॥ टीका। अव और वडी सुखदायक श्रीराम भगवानके चरनोंकी प्रीतीके देनेवाली भक्तीकी अदभुत गाथा जोहै सो कथन करताहूं एककोई कितनेक ग्रामोंका मालक वडी प्रतिष्ठावाला पुरुष होताभया तिसके घर मै एकवडी रूपवती कन्याथी सोराजाकी कन्याके साथ मैत्री भावरखतीथी अर्थात तिसकी वडीहि

२

नकारनी सहेलीथी रात्रीदिन दोनोमिलकर क्री
डा विलास करतीरहतीथीं एकदिन राजाकीमा
ता एक उत्तम वैस्नव संतआये हूये सुनकर ति
नके दरसन करने का दोने कन्याको साथलिये
हूये चली आवतीभई तब संत महात्माका दर
सनकरके चरनोपर सीसनाया औार बडे आनंद
का प्रापतभई फिर थोडीदेरके पीछे दरसन पा
यकर जबघरको चलनेलगी तबसोदोनोकन्या

५५
भ॰
३

हाथजोड़कर बड़ेदीन वचनोंसें संत महात्माके
आगे विनती करनेलगी कि हे दीनयाल हमारे
परकृपा करिये और अपनी सेवक वनाईये पू
जन सेवन करने केलिये इछाकर जोहैं सो ह
मकोदीजिये इसप्रकार परमप्रीती और भक्ती
वाले तिनके वचन सुनकर वैसव संत हृदयमें
अत्यंतप्रसन्नहोयगये तरतहीं दोशिला तिनदोनो
कोदेदेई और मखसे हस करके कहने लगे

३

किहे पुत्री इह ठाकरजोमैने नमकोदियेहैं इनका
शिल्प विल्पनामहै ऐसे तिन ठाकरोंका नामसुन
कर और लेकर कन्यावडे हरषको प्रापतभई हू
ई प्रणाम करकर अपने घरको चलीआई और
प्रीती भक्तीसे नित्यतिनका पूजन करनेलगी औ
से तिनोने निसकाम होयकरके जीवन धारन
किया सोटीनवधू भगवानने स्वईकार करलिया
अवतिन कुमारियोंकी भिन्न भिन्न गाथाजोहै सो

११
भ॰
४

कथन करताहूं निसग्रामाधीसका घरजोथा सो किसी प्रबल शत्रुने आयकरके लूटलिया और तिसकी कन्याका ठाकुर जो सुंदरमंजूषा अर्थात एक कोटीसी सुंदर संदूखडी मे जोथा सोभी घरके सवधन असबावके सहित शत्रु लूटमे लेगया॥ चौपाई। कन्यादेखि दैव निजमाना। परम शोकवस रोदन ठाना। बंधुवर्ग लखिनाश्र डखारी। पितु जन मानदेखि डखभारी। भनत नाश्र सब वदन

४

4

सिरवाई। तवरिपु सदन पुत्रिवर ज्ञाई। सोगाह्न शि
लादेव निजज्ञाई। आन उपाय चलत नहिं कोई
बांधव बचन सुनत ततकाला। लियेसंग इकसु
दरिवाला। रिपुगेह गवनि हरष उरछायो। सो
नकि तास निवारण आयो। कवन काज मोरे त
व आवन। तव सुकुमारि वचन मनभावन। बो
ली सोहिन इछ्य कछुकामा। पैइक शिलादिव्य
अभिरामा। मोरी जवन लूटि तवलावा। सोमेवा

५५
भ
५

हुंदेव निजपावा। बोल्यो सो अमर्ष वसहेंई। ईहो न देव हव नवकोई। जो अस कवहुं किदेवनमारा। तोनलेहु कस वदन गहारा। तास वचन सुनिवि यत अधीरा। जविन दीनभरि नय ननमीरा। धरि भरो सहद्दमान समाहीं। लगी गहारन प्रभु निनकाहीं। ननतनए देव हरन जनहावा। पोफ्ठ न निज मंजुल मंजवा। प्रमावन नहिंप प्रभुआये लोक विलोकि चरित विसमाये। सो मंजूष देव

निजपानी। करिप्रणाम सादिर हरषानी। आद्यभव
न निज भजन कीन्हा। भक्ति प्रभाव सवन अमचीन्हा
इहतोकर अदभुत मनभावा। मैसंतपत चरित्र क
हुगावा। दोहा। अब इतिंघे वरन हूं कथा पावन
राज कुमारि। जासुसुनत उपजत विमल हृदयम
क्ति गिरधारि। टीका। नव कन्याजोथी सो अपने
ठाकुरका लूटमै जाना देखकर परम शोकके
वशभईहुई रोदन करकर विलाप करनेलगी।

५५
भ.
६

ऐसे तिसको उखी और व्याकुल देखकर माता पिता और बांधव जाती नाती जो थे सो सब तिसके न्याको अनेक प्रकार धीरज देकर और सिखाय समझाय कर कहने लगे कि हे पुत्री तू हृदय मे कुछ भय संकोच मतकर और भगवान का स्मरन करी हुई तहां शत्रु के घर मे जायकर अपने इष्टदेव की शिला जो है सो मांगले इसके विना और उपाय कोई नही है तब बांधवो का वचन सुन करके

6

६

सो कन्या तबतहीं एक सहीसखीको साथ लेकर
आनंदसे शत्रुके घरको चली आई तहां तिसको आ
वती देखकर सो आगेहीं निवारणकेलिये चले
आये और कहनेलगे कि इहां हमारे घरमे तेरे आ
वनेका क्या कामहै तब कन्यावडे चतुराईके वच
नोसे कहनेलगी कि भाई मेरेको कुछधन पदार्थ
की इछा नहींहै मैतो केवल इसलिये आईहूं कि
जोतुम हमारे घरके धन असबाव के बीच एक

भ० ५५
८

मेरे ठाकुर इष्टदेवकी शिला लूटकर लेआये हो
मै सो चहतीहू और कोई कामना नहीं है ऐसे ति
सका कथन सुनकर सो अभिमानी कोपसे कह
ने लगे कि ईहां तेरा देव हव कोई नहीं है और जो
कदाचित तेरा कोई ऐसा देव है भी तो तूं उसको बु
लायले तेरा होगा तो बोलपड़ेगा इस प्रकार तिन
का वक्रका विरुद्ध वचन सुनकर के कन्या जो है
सो व्याकुल होयगई धीरज छूटगया और दीन होकेव

८

न भईहूई के नेत्र रुदन जलसे भरआये तब भगवा
नको स्मरकर हृदयमे हर्षभरी साराखकर स
वके देखते अपने प्रभूको बुलावनेलगी किहे स्न
पानिधान आवते कों नहींहो जब प्रेमसे तिसने दीन
बंधूको बुलाया तब अपनी मंजुषा अर्थात सुंदर
सुहरवडीमे पोढे हूये दुखकलेशोंके हरनेवाले
भगवान प्रेम करके घेरे हूये ततकालही तिस
के पासचले आवतेभये इस अदभुत चरित्रको

५५
भ
८
8

देखकरके लोगसब अचरजको प्रापतहोयगये औ
र कन्या प्रणामकरके अपने ठाकुरको लेकर आनं
द पूर्वक घरमैचलीआई तहांभक्तीप्रीती औार मन
मानसें तिनका भजन सेवन करतीभई तब तिस
कीभक्तीके प्रभावको देखकर सबलोग धन्य धन्य
कहनेलगे इसप्रकार इहएक ग्रामाधीसकी क
न्याकी भक्तीजोहै सो मैने संक्षेप करके कुछ गाय
न करदेईहै अबआगे हमरी राजकन्याकी पवित्र

भक्ती जोहै सो कथन करताहूं कि जसके श्रव
ण करने सें गिरधर भगवानके चरन कमलों
की प्रीती ग्रौर प्रेम उपज ग्रावताहै। चौपाई। सो
प्रति दिवस वचन मनकाया। पूजन करन देव
निधिदाया। भयोतास जब रुचिर विवाहू। ग
वनोलेन भवन निजनाहू। सिलादेव निज ग
वनयाना। राजकुवरि तब कीन पयाना। कहां
जाय मंदिर प्रभ पूजा। रहीकरन उरभाव नहू

५५
भ.
५

१

जा। नव अविलोकि नास पतिकाहा। इह कस कर
मनोर प्रियाराहा। विहसि नासु अस वचन वखा
ना। करहुं नाथ सृजन भगवाना। लोक सृजस प
रलोक सवारन। मैत्रनकीन जवन प्रभु धारन।
सुनत अधम जड नास्तिक मूला। कुमती पतित
धरम प्रतिकूला। करि अपमान मंद दुरवदाई।
परम कोपवस शिला उठाई। संजन सृजपक
रण असाधू। सरता वारि विलोकि अगाधू। हुउ

५

न आव सदन निजमाहीं। हृदय विचार कीनक
छुनाहीं। विपन धीरगन राजकुमारी। हाहारो
दन करत निहारी। जाकर मंद मूढ हतभागा
कोपवचन कछु भाखेनलागा। सो उर विरह
देव निजमानी। लागीकरन प्रण हुतहानी।
मंदविलोकि प्राण तहिनासा। लागेपा करनति
वर्ण अजासा। परहु धीर उर शोक विहाई। मै
ल्यावहुं ठाकुर नवजाई। असकहि लिये संग

भ० १०

५५

भतकारी। किये यतन सरिता वहुवारी। तीनदि

वस नहि खोजन लाये। शिलावचित्र तवहुं न

हिंपाये। छूछे ग्राव सदन निजहारी। तियकहुं

देखि ग्रन्त विनुवारी। रोदन करत उरविन अकु

लानी। हाहाकार करत विलपानी। दोहा। वो

ले। मंद उरान मन रिसवस खड्ग निकास। वि

लपनतजहु नमूढ कस जानिप्राण निजनास

टीका। सोराज ऊमारी प्रीती भक्तीसे निरधारी

१० २

भगवानका भजन करती रहतीथी जब तिसका
विवाह भया तब पतीजोहै सो सब दाज समाजके
सहित लेकरके अपने घरविषें चलाआया तहां
राजकन्या कि जो अपने ठाकुरजीको पालकी
मै विठाय करके साथहीं लेगईथी बडे प्रेम स
न्मानसे तिनका भजन सेवन करतीरही तब
एकदिन तिसका पती देखकरके कहनेलगा
कि प्यारी रहनेराकाकरमहै औरतंू क्या करती

५५
भ॰
११

हैं सोप्रवीन हसकरके कहने लगी किनाथ भ
गवानकासृजन करतीहूं और अपने लोक परलो
कको सुधारतीहूं ऐसे तिसके मुखसें वचन सुन
करके सो अधम नास्तिक महांपापी और जड
अधरमी तरत वडे निरादर और कोपसें भगवा
नकी शिलाको सृजाके सबसमाजके सहित उठा
यकर और जायकर नदीके अगाध जलविखे
फैंकदेताभया कुमतीहृदयमे कुछभी सोचन

११

हीं करताभया और वकताहुआ मंद अपने घरको
चलाआया राजकुमारीजोहै सोदेख करके व्याकु
लहोयगई और हाहाकारसें रोदन कर कर वि
लाप करनेलगी तब सोमूढ अभागी तिसका
रुदन विलाप सुनकर बडे कोपके वचनोंसे ति
सको तिरस्कार करनेलगा और राजकन्या अपने
ठाकुरकी विरहसे प्राणोंको त्यागदेनेलगी त
व तिसके प्राणोंकी हानीदेखकर पापकी

भ॰ ५५
१२

खोनी आयकरके निवारणेलगा और मंदवारंवार
स्नेकाय कर कहनाहै कितु हृदयमै धीरज धार
और शोकको निवार मै जायकरके तेरे ठाकुरकेलंग को
घदेताहूं ऐसे कथन कर कर और सेवक समूह
साथ लेकर नदीके जलमैजायकर खोजनेलगा
इस प्रकार तीनदिन लगतिसने अनेकही यत
नकिये परंतु सो भगवानकी सुंदर शिलातिस
का प्रापतनहीं होतीभई अंतको हारकरके घर

मैचला आया इहां ठाकुरजीके विजोगसे ह्यी कीइ
हदशाहोयरहीथी कि अन्नजल कुछ खानपान
नहीं किया परमविलाप करकर हादेव हादेव
पुकार रहीहै तबदुष्ट अधमसें और तो कुछ न
हीं वनसका कोपसें खड्गजो तलवारहै सो खैं
चकर कहताहै कि अरे मूढ विलापको त्यागदे
नहीं तो इह प्राणोंके नाश करने वाली खड्ग दे
ख इससें तेरेको दोखंडकर देऊंगा ।१। चौपाई ।

५१
भ
१२

13

नास कथन सुनि सोवत धरनी । भाषत नाथ धरम
नव करनी । जो मोहि लखे देन मनदाना । कोउ
दार नव सह सामना । जाते भाग आज जग मोरे
जो अस सुमति उपजि जिय तोरे । करि प्रहार अ
स बेग सरोही । करहौ जुगल खंड पति मोही ।
अगम अभजहु देव गिराये । नहां देहु बपु मोर ब
हाये । मै निज इष्टदेव फिराजाई । करहुंस फलम
न काम सहाई । अस हठ वचन सुनत सतराया

भयो अमर्ख विगत वसदाया। मारिवस वदनजा

ह इतनाहं। सरितापसो देवनवजाहं। सनि

असपति नदेस अनरागी। प्रभुपंत वनि हरषि

वडभागी। सरनानीर आय मतिधीरा। कपिध

णाम एवसी इतनीरा। कंठ प्रपंन आवजववा

री। समरत हृदय भक्त भयहारी। नवभगवा

न देखि प्रणतासा। चाहत करन प्राण निज

नासा। संजन पिाला हरन जनहारवा। मेलोच

रन नामसंजूषा। होत सपर्श तरत गहिलीना।
सोइ ववित्र दैवनिज चीना। वंदित वारवार हर
षाती। आसतु पानप्रेम हगाळानी। करि सनानति
ज भवन पराई। पतिहिं सकल निज विथा सु
नाई। भक्तिप्रभाव देखि कैसो साचा। तजत उरांत
भक्ति पथराचा। सकल देसनिज भक्ति सुहाई
विस्तन कीन नाम सतनाई। संस्तन विविध
भोग सुखभोगी। अंतलीन गतिउरलमजोगी

च्चि संसर्ग भक्ति ह्यावेदाई। विनुप्रयास तिनदंप तिपाई। दोहा। असइह चरित पुनीत मै कछुसंछ म करिगाव। जेसादर नरसुनहिं भव विमलभ क्तिपद पाव॥४॥ टीका। तब इसप्रकार पतीका कथन सुनकर सो व्रतधारी राजकुमारी प्रस न्नहोयकर कहनेलगी किहे नाथ तेधन्यहैं औरधन्यतेरी करनीहे जो मेरेको कृपा करके इसमय मनदानदेने लगाहैं आजतेरे समान

हमरा जगतमै कोई उदार नहींहै मेरे वडे उदय
भागहैं जोतेरे हृदयमै हेपती ऐसी हमती उप
जीहै अव विलंव मतकरिये खड्गका प्रहार
देकर मेरेको दोखंड कर दीजिये और जहांनदी
के अगाध जलविषे मेरे प्रभूदेव डालदियेहैं
तहांही मेरेको भी तिनके चरनो केवी सरनो
केवी चडालदेवा मै अपने इष्टदेवके पास जा
य करके मन वांछित कामनाजोहै तिसकोम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

फलकहं ऐसे पतनीके वेउद्दफ ओर भक्ती प्रीती
वाले वचन सुनकर सो राजकुमार क्रोधसे न
ष्ट होजाताभया ओर रोम रोम विखें दयाका
प्रवेश होयगया कहनेलगा किहे भामनी तूंत
होचली जाकिजहां नदीके अगाधजलविखें ने
रा इष्टदेव पड़ा हुआहै ऐसे पतीके मुखसे आ
ज्ञासुनकर सोदृढ़भक्तीवाली राजकुमारी न
तकाल उठकरके भगवानके सुमरती हुई ।

५५
भ.
१५

15

चलपडी और नदीके किनारेपर आयकर दीन
बंधुके चरनोको प्रणामकरके जलमै प्रवेशकि
रजानीभई जव जानीजानी को कंठ पर्यंत जल
आयगया तव तिसका सत्यप्रण और दृढ हठदे
ख करके कि अव स्त्रप्राणोंका नाश करतीहै भ
गवान कृपानिधान चरनही शिलावाली मंजूखा
अर्थात संदूखडी जोथी सो तिसके चरनके सा
थमेलदेतेभये जवतिसको मंजूषाका सपर्शभ

या नवनरनहीं हाथ पसारकर पकड़लेनीभई औ
र सोर अपने इष्टदेव पहिचानकर नेत्रोंसें प्रेमजल
वहायकर हरषके वशभईहुई वार वार वंदनाक
रनेलगी तिसनें उपरांत सनान कर कर आनंद
पूर्वक घरकोचली आई और घरमें आयकर पती
के आगे सब वृत्तांत सुनायदेतीभई सो भक्तीका
प्रभाव सत्य देखकर और हृदयका सब कुटिल
पन त्यागकर भक्तीप्रीतीवाला हो जानाभया

तब तिसने आपने संपूर्णदेश विषें जहां तहां हे
र भक्तीकाही विसतार करदिया और संसारमे
अनेकप्रकारके भोग और सुखभोगकर अंत
को पवित्रभक्तीके प्रसादसे मुनिजोगीजनोको
दुरलभ जोगतीहै सो दोनो स्त्रीभरता यतनकेवि
नाहीं प्रापत करलेतेभये इसप्रकार इह पवित्र
गाथाजोहै सोमैने संक्षेप करके कुछ गायन
करदेईहै इसको जगतमे जोकोई प्रीती और

५५
भ.
१८

सनमानसे श्रवणकरेगा सो अवश्य भक्तीके
पदको प्रापतहोजावेगा इसमै कुछ संशय न
हींहै ।४। इतिश्रीभक्त विनोदग्रंथे भगवद्भ
क्ति महातमे भाषाटीकायां जगत्कन्या चरित
वरणने नाम सरगः ॥ ॥

मीतोसिंहकृत

१८

अथपंचालदेशभूप चरितं । दोहा । बिमलभक्तिकर ललित वर बिमल महातम जोय । लोमहरष प्र हकरहुं अब कथन यथामतिहोय । चौपाई । रूप पंचाल देस इकभयेयो । परमदेव सज्जन परस्ह यो । सत्यवाक्य रत धरम प्रकासा । अतथिसंत ज न संततदासा । तहिसम शील पतिदेवत नारी । अ ति उतकृष्ट रुचिर ब्रतधारी । करम बचन मन प्रीति अभेवा । निरत प्रवीन प्राण पतिसेवा ।

५८
भ.

समय एक पावस ऋतपाये। वैसवसंत मदन नहि
आये। सिषगणलिये संगनिजसोई। छितपति भ
क्ति प्रेमरतहोई। करिप्रणाम मानस वडभागा। आ
पन भागसराहन लागा। वहुरि विलोकि ललि
त थलपावन। जहां सुमन द्रुम सलिल सुहाव
न। तहां निवास दीन तिनकाहीं। भूपति हरष
हरि मनमाहीं। दिन दिन करन लाग मनमा
ना। नितनव प्रीति नजायवखाना। भक्तिप्रभाव

संत अवसेरवी। होत नत्यपत भूप हगदेरवी। अस
प्रकार जब चलेउ छ मासा। करनवास नहं तिन
हिं विनासा। नवसिषगण अस विनय उचारी।
वीति गयो आवट प्रभुसारी। अब श्रीजगननाथ
हित मोने। कृपानकेत चलहु दरसाने। दोहा।
सुनिसिष वचन महानमन नृपने मांगिविदाय।
करन सलवन नृपहिंसो पर्यौ श्रवण ड खदाय।
टीका। अब आगे और विस्नुभँवानकी भक्तीका
ग

५९
भं०
२

वरासुंदर पवित्र ओर रोम रोम हरषके देनेवा
ला महानमनोहै सो जैसाकि वडीके अनुसार
होय सकताहै गायन करताहूं पांचाल देशवि
षे एकराजाहोताभया सो कैसा कि भगवान
के भजन सेवनमे प्रवीन का चतुर सत्यवादी
धरमके प्रकाश करने वाला ओर अनथी ब्रम्ह
ण संतभक्तोंका सेवकथा तैसेही वडीसुशील
उत्तम ओर पतिव्रता धर्ममे प्रवीन तिसकी स्त्रीथी

2

मनवचन कायाकरके पतीकीसेवामे तिनलीन
रहतीथी तव एकसमय चौमासेके दिनोमे एक
वैस्नव संत शिष्य समूह साथलियेहूये तिनके
घरमे आय प्राप्त होतेभये तव राजातिनकोदे
ख करके वडा प्रसन्नभया श्रोर सनमख जाय
कर चरनोपर प्रणाम कर कर अपने भागों की
वडाइ करने लगा कि आज मेरे धन्यभाग्यहैं जि
सके घरमे कृपाकरके संतोंने चरन धारनकि

७९ ऐसें ऐसेकथन कर कर फिर वडासुंदर और पवि
भ॰ त्र अस्थान देखकर कि जहां निरमलजल और
३ पुष्पोंके सहित सुंदरछाया वालेहक्षथे तहां ति
नकोनिवासदिया और भक्ती प्रीतीसे दिन दिन
अधिकसे अधिकहीं सेवासनमान करनेलगा
और संतोकीभक्तीका प्रभाव देख देख राजा
त्रिपत नहींहोता इसप्रकार जब तहां निवास
करतेहुये संतोंको चउमासा वतीतहोयगया
३

नवशिष्य समूह हाथजोड़कर गुरुजीकेआगे प्रा
र्थना करनेलगे किहेभगवन अब पावससरितु
जोहै सो बीतीनहोय गईहै कृपाकरके श्रीजग
ननाथ स्वामीजीके दरसन को प्रस्थान करिये
अर्थात चलिये ऐसे शिष्योंका वचन सुन कर
के संतमहात्माजोहैं सोराजेनें विदाय मांगनेम
ये तबतो तिनका वचन कानमें पड़तेही रा
जाकोमानो करन फूलवत अर्थात कानकी

पीडाके समान दुखदायक होजातभया ।२। बो

पाई । रहतन भूप संतवरमाने । विनय युक्त य

स वचन बखाने । आजकाल मोरेवसि भवना ।

पुरदिनकरहु नाथतव गवना । अस भूपति ज

वनमुउचारा । वैस्नव संत कीनस्वईकारा । तव

नरेस निज सदन सिधासे । संतगवन चिताउ

रभासे । महिषीदेखि भूपमनमारे । मृदुलवच

न अस वदन उचारे । कारन कवन होम प्रभु

कीना। देखि विपरत कछु वदनमलीना। संतगवन न
वभूप अलाग्यो। रानी सुनत सोच उरठाग्यो। अस्तय
कार रविलीन विहाये। नृपतें मागेउ संत विदाये।
विनय वखान भूप कर जोरे। वसहै आज कृपानि
धि मोरे। इह अपराध छमा करि भारी। गवहै श्री
नसंत व्रतधारी। सुनि असविनय भूप मखवे सोई
भयेनहुन्त भक्तिवस होई। नृपति विरहं उरसंत
विचारी। पीडत नृपो अन्न अरु वारी। जदपि वि

५९ भ· ५

विध महिषी समझावा। नदपिताह संतोष न आवा। नव रागीलीन्हो जियजाना। संतवियोग नजहिं नृपप्राना। मोरजियन सब संहतिकाहा जोना जियन प्राण पतिराहा। तोतेकरहुं उपाय नथाना। जहितें अवलहोहिं पतिप्राना। करत सोच निसि विविध प्रकारा। अंतनयतन इह हृदय विचारा। देहुं सुतहिं निजगरल खवाई। तासविलोकि मरन समदाई। दोहा। प्रातनजैहे

संनवर वसहिं कछुक दिन सोय। होहिं स्थितचि
त नृपति तव विरंहू कछिनड रखियोय ॥५॥ टीका।
तव राजाने जानलिया कि संत रहते नहींहैं हाथ
जोडकर दीनवचनोंसे विनती करनेलगा कि हे
संत कृपाल आज और कालकादिन मेरे घरमें
वास करके फिर तिसके उपरांत आपकी जैसी इ
च्छाहो तैसीकरिये ऐसेजव नम्रहोय करके
राजाने प्रार्थनाकरी तव संतमहात्मा दयाके व

प्राप्तभयेहुये स्वईकार करलेतेभये श्रोर राजा श्राप
ने घरमेंचलागया परंतु संतोंकेचलेजानेकी विं
ताहृदयमें अत्यंत व्यापितहोय रहीथी तब राणी
जोहै सो राजाका मन मलीन देखकरके कोमल
वाणीसें कहने लगी किहे प्राणनाथश्राप कैा
न चिंताके वश होयरहेहो राजाकहनेलगा कि
हेप्यारी संतजोहैं सो श्रब जानेको कहतेहैं तिस
ते मै उदासीन होय रहाहूं ऐसेसुनकरके रानी

हृदयमें बडा होच करनेलगी जब तीनदिनवी
तगये तब संतोंने राजासें फिर विदायमांगी
भूप सुनकरके ओर हाथजोड करके विनती
करनेलगा किहे प्रभू मेरे अपराधकोक्षमा क
रिये ओर कृपाकरके आजकादिन मेरेघर
मे वासकरिये प्रातहोते आनंदसे पधारिये
ऐसे राजाकीविनती सुनकरके भक्तोके वश
भयेहुये संत जानेसे नहतपहोयरहे ईहां तिन

कीविरहं विचारकर दुखी और व्याकुलभया हु
आ राजा अन्नजल आदिखानपान सब त्यागदेता
भया यद्यपि राणीने वहुतही समझाया तद्यपि
तिसको कुछसंतोषनहीं आया तव परम चतुर
राणीजोथी सोजानगई कि पतीतोसंतोंके वियो
गसे प्राणोंको अवश्य त्यागदेवेगा और जोसंसा
रमे प्राणनाथजीवता नहींरहा तो पीछे मेरा
जीवना कौन अर्थहै तातें अबकोई ऐसा उपाय

कहूं किजिसमें पतीके प्राणोंकीहानीनाहो इस
प्रकार राञीभर सोचकर कर अंतको इहसिद्ध
किया कि अपने पुत्रको विषदेकर मारदेऊं न
व तिसका मरनादेखकर अंतजोहैं सोकल्हको
नहींजायसकैंगे कुछदिन ईहांही निवासकैंगे
पतीतिनकी विरहसें छूटकर स्वस्थ चितहोजा
वेगा।२। चौपाई। असविचारि मानस निजरानी
दीन्हेगरल सुतनहिं निजपानी। टीका॥शब्दार्थ स्पष्ट

५८
भ.
८
8

दिन्हिं निरुआनी। जबनिसि शेष इंद जागरहयौ। गर
लप्रभाव बालमरन भययौ। राजपतनि लागीत
वकरने। हाहाकार दिग्धसर भरने। सुनतलोग
सहिसा उठिधाये मृतक विलोकि बाल विसमाये
आयेराउ सचिव लियसंगा। देखिसुतहिं निजप्रा
णनभंगा। भयोनिमगरए शोक नियवारी। कह
हु कवन कारन इहप्यारी। नवकर जोरिवचन
अमरागी। पतिकहं नम भनन मखलागी। जो

अपराध छमहु प्रभु मोरे । तोमै करहुं नवेदनतैरे । भ
योनरेस कहो तव प्यारी । राजपतनि नवविनय उचा
री । गुनिजियगवन संतभगवाना । तवपतिविरहं
परम डरखमाना । मोरेपरी जानिजिय नाथा । जानत
प्राण तव संतनसाथा । असविचारि सतहीं विषदी
नी । इहिकर मरण संतवरचीनी । नजहीं प्रानगव
न निजसोई । प्राणनाथ तमरो हितहोई । भूप प्र
सन्न सनत अनरागा । बहु विधितासु प्रसंसन

लागा। वैसुवमंत देविहठरानी। निदरत निजहिं परम डरवमानी। जगसंगत संतन सुखदायो। मममंसगी इनहुं डरवपायो। अवकसजाऊं कहतवस दाया। नजैहो देविभक्त डरवकाया। अस कहि बोलि निकर सिषलीन्यो। महिषी चरित कथन सव कीनो। दोहा। सुनत निकर सिष मरण सिसु धुननसीस पछतान। नवग्रह अण जसकीन तस आगल करहुं वखान। ३। टीका। ऐसे विचार क

के राणी अपने पुत्रको विषजोहै सोखवायदेती
भई और जब दोघडी रात बाकीरही तब विष
के प्रभावसे बालक मरणको प्रापतहोजाताभ
या तिसकोमरेहूये देखकर राणीबडीलंबीस्व
रसे हाहाकार शबद कर कर रोदन करनेल
गी तबलोग सुनकरके इधर उधरसे धावतेच
लेआये और बालककोमरेहूये देखकर सब
अचरजको प्रापतहोयगये इतनेमै मंत्रीका ९

५८
भ०
१०

10

हाथलियेहुये राजाभी आयगया और पुत्रको
मृतदेखकर मानो शोकके समुद्रमें डूबजाता
भया राणीको कहनेलगा कि प्यारी इसकाको
न कारनहै तब सोपतीव्रता हाथजोडकर विन
ती करनेलगी किहे प्राणनाथ जो आपमेरा अ
पराधक्षमाकरो तो मैं सत्य सत्य कथन करतीहूं
राजाकहनेलगा कि प्यारी कहो मैंनेतेरा अपरा
धक्षमाहै सो क्षमाकिया तब राजपतनीकहनेलगी

किहेनाथ आपनेजो संतोकाचलेजाना विचारकर
तिनकीविरहका हृदयमें अत्यंत उरव और कले
शमाना तिसतें मे अपने मनमें जानलिया किप्रा
णपती के प्राणजोहैं सोतो संतोंके साथहीं जावें
गे ऐसा उपायकरू कि जिसतें प्रानसंत नाचलेजा
वें इहविचार करके नाथ मैने बालकको विषदेक
र मारदियाहै कि इसको मरना सुनकर संतम
हात्मा नहीं जावेंगे और हमारे प्राणभी अत्र र

५८ भ० ॥

हैंगे तिनकीहानी नाहोयगी सर्वप्रकार करके हि
न और भलाही होयगा ऐसे पत्नीके मुखसें वच
न सुनकर राजापरम प्रसन्नहोय करके तिसकी
अनेक प्रकार शालाघावडाई करनेलगा और वैस
व संत राणीका हठदेखकर अपने आपको निंद
कर और धिक्कार कर कर हृदयमे परम डुखमान
तेभये कहतेहैं कि संसारमें संतजनोकी संगतजो
है सो वडीसुख दायक होतीहै देखो हमारी संगत

॥

इनको परम दुःखदायक होयगई है गुरुजी दयाके
वश भयेहुये कहतेहैं कि अब मैं इनको दुःखी छो
डकर कैसे जाऊं उचित नहीं इनका दुःख देख कर म
हारा नहीं जाताहै चहताहूं कि मैंभी शरीरको त्या
गदेऊं ऐसे कथन करकर गुरुजी अपने शिष्यों
को बुलायकर राणीका चरित्रजोहै सो सब सुना
यदेते भये तब शिष्यसंत सुनकरके हृदय मे क
लेश मानकर बहुत पछतावने लगे और गुरु

५८
भ
१२

कृपालभी भक्तोंके कलेशसे पीड़नभयेहूये दीन

वंधुभगवानको स्मरकर जिसप्रकार प्रण प्रति

ज्ञा करतेहैं सो आगे कथन कियाजाताहै।२। चौ

पाई। रागीमोर शत्रुवेकारन। विषदेकीन स्ववन

न निजमारन। तोतेभयो मोर प्रणएहा। देवजिया

य देहिं सुततेहा। जोनजियावोंसिय भगवाना।

मैनजहूं तव आपनप्राना। असवचनकहिं संतन

हिठाहीं। लग्यो स्मरण कृष्ण मनमाहीं। मंत्रस्तोत्र

12

गीत गुण नाना। लागे भक्त वैस्णवगाना। अस्तजव

अर्ध दिवसनभ छायना। भये विलोल वाल नव

नयना। देखत चरितलोक समदाई। संतमहंत

जनक ज्ञतमाई। भरि भरि भूरि हरष हगवारी।

मोदविवस तनदसा विसारी। भक्तिप्रभाव वचित्र

निहारत। धन्य धन्य नरनारि उचारत। उम्बोवाल

नव संत प्रवीना। हरषनधारि कोउ निजलीना

करत वदन प्रक्षालन नाहू। भनिभनि मधुर

13

वचन उतमाहू। जनक अंकभरि हिं भराई। नवलवाल मनुछितिपतिपाई। अतिप्रसन्न जग जोरतपानी। बोल्योवदन नम्रमृडवानी। वंयुदार सुतविन भरत तोरे। विनुसंतोषप्रभु अएयमोरे। तुमहूं सरवसुख दायकनाथा। असकहि नयोचरन नृपमाथा। नव गुरु बोलि निकर सिषकाहा। यावत जियत मोर जगराहा। तावत मै ततजहूं नरराई। जाहू तुमहूं निज निज समुदाई। सिषनदेस गुरुवर असपायो।

चलवे हेत चरन सिरनायो। तव असविनय कीन न
रनाई। जाहु संत अव भोजनपाई। नृपवचनअसमा
निसहावा। करिसनान तिन भोजनपावा। दोहा। नव
नरपत धन चरम म्रगाकामर वसन सुहाय। देत
विसर जणसो किये नम्रचरन सिरनाय।४। टीका
कैसाप्रणकिया कि इसराणीने मेरेरावनेके लिये
विषपान कराय करके अपने प्यारे पुत्रको मार
दियाहै तातें अव मेराभी इहप्रण रहा कि भग

वान कृपानिधान इसमाईके बालकको जियादेवैं
और जो कवीभगवान भक्तसुखदान इसकोनहीं
जियावेंगे तोमैभी अपनेप्राणोंको त्यागदेऊंगा इ
सप्रकार प्रणधारकर भक्तप्रधान हृदयमैं कृस्न
भगवानको स्मरनेलगजानेभये और पवित्र
मंत्र स्तोत्र गीत गुणकीर्तन जोहैं सो प्रीती भक्ती
सें गायन करनेलगे इसप्रकार आराधना करते
हूये वैस्नवभक्तको जब आधादिन वतीतहोय

14

गया श्रौर सूरज मध्यानमैं श्रायगया तव भगवान
की कृपासें वालकेनेत्र चंचलहोयजातेभये श्रर्थो
त जीवता होयगया इसश्रदभुत चरित्रको देख
करके सवलोग श्रचरजके वशहोयगये श्रौर
संत महात्माके सहित मातापिता हरषके जल
से नेत्र परिसरत कियेहूये शरीरकी दशासेभी
भूलगये तिससमयका श्रानंदकछु कथन
नहीं कियाजाता तव इसश्रदभुत भक्तीके प्रभा

१९
भ.
१५

15

वकोदेखकर नरनारी सवलोग धन्य धन्य शब्दको
उच्चारन करने गलजातेभये फिर बालक जवउन
नवसंत महात्माने हरषसे अपनीगोदमे लेलिया
और मधुर वचनोसें वडाप्यार कर कर और भली
प्रकार प्रीतीसें मुखपोंछकर पिताकी गोदमे दे
दिया तव राजामानो नवीन अर्थात नयाबालक
पाय करके प्रसन्नभयाहूआ हाथजोडकर को
मल वाणीसे विनती करनेलगा किहे कृपा

निधान स्त्री पुत्र पिता भ्राता संबंधी सेवक धनधा
म इत्यादिकोहैं सो आपके संतोष और प्रसन्नता
के विना मेरेको सब अप्रियहैं अर्थात प्यारे नहीं
लगतेहैं सर्वसुखदायक और सर्व हितकारी मे
रेप्रभु एक तुमहीहो ऐसे कथनकरकर राजाच
रेनापरसीस धरदेताभया तब गुरुजीने आपने
सब शिष्योंको बुलायकर प्रकटकरके सुना
यदिया कि भाई मै जगतविखें जबलग जीऊं

गा तबलग इस राजाको नहींत्यागूंगा अबतमम
ब अपनी इच्छाके अनुसार जहांकी रुचीरखते
हो तहांकोचलेजावो ऐसेगुरूजीकी आज्ञापाय
कर शिष्यजोथे सो जानेको त्यारहोयकर गुरू
जीके चरनोपर प्रणामकरतेभये तब राजाहा
थजोडकर बिनती करनेलगा किहेसंतो अब
भोजनत्यारहै कृपाकरिये और पायकरके जा
इये इसप्रकार राजाकी बिनतीमानकर संतोने

१९

स्नानकिया औरफिरआयकरके प्रीतीसनमान
से भोजनपाया नवराजाने सुंदरवस्त्रधन कंवल
और म्रगछाला इत्यादि सवभक्तोंप्रीतीसेदेकर
और नानासनकार कर कर वारवार चरनोंपरसी
सनाथ करके विदायकरदिये। ४। चौपाई। गुहव
ररहेभक्ति वसताहां। दिन दिन प्रेमनिरत नरना
हां। लगेकरन सादिरतिनसेवा। कायवचन म
नभक्ति अभेवा। असप्रकारकछु कालविहाया।

दंपतितजन रुचिर निजकाया। गयेजंगल हरिधा
म सिधारी। पाछेसंत सुषबनधारी। राज्यवषेक
राजसुतकाहीं। निजकरदेत हरषि मनमाहीं।
वहुरि विदाय होत सनमाना। जगननाथ कहं
कीनपयाना। दोहा। अस प्रकार इहचरितमे
यद किंचन मतिगाव। इहिके सादिर सुनत
नर परम भक्ति पदपाव।५। टीका। तव गुरु
जोथे सो राजाकी भक्तीके वशभये हुये।

५९
भ०
१८
17
१८

नहांहीं वासकरनेभये प्रजापालभक्ती प्रीतीसे
मनवचन कायाकरके राञीदिन तिनकीसेवा
करनेलगा इसप्रकार जवकुछकाल वतीतहो
यगया तव राजा और राणीदोनो शरीरकोत्या
गकर क्रम क्रम रटनेहूये क्रमधामको चले
गये पीछे संतमहात्मानोंथे हो विधीपूर्वक रा
जाके पुत्रको राजतिलकदेकर फिर आपवि
दाय होकर आनंदसे श्रीजगननाथस्वामीके

५९ भ० १८

हरसन को चलेजानेभये ऐसेइह मनोहर गाथा जोहै सोमैनेजैसीक बुद्धीके अनुसार होयसकी ईहांगायन करदेईहै इसगाथाको जो कोई श्रद्धा सनमान पूर्वक श्रवणकरेगा सो हूस भगवा नकी सुंदर भक्तीको अवश्यप्रापत हो जावेगा ४

इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथे भगवद्भक्ति महात्मे मीहांसिंहकृत भाषाटीकायां पंचालदेश भूप चरितं नाम सरगा: ॥

१८

18

अथ जलशेखर देस प्रांतवासी भूपकन्याचरितं। दो

हा। अब अदभुत सुंदर सुखद भक्तिमहातम ग्यान

करहूं यथामति कथन रतिकुसमकमल पदध्यान।

चौपाई। पुष्करदेश प्रांतजेदेसा। तहांवसहिं इक

कविरनरेसा। प्रजापाल हरिभक्ति प्रवीना। परम

उदार परम पथलीना। वैस्नवभक्त संत महिदेवा।

मनवच करम करतनितसेवा। ताकरसुतासील

गुणखानी। वयकशोर हरिभक्ति सयानी। विप्र

५८
भ०
१

संत वैस्नव पदसज्जा। प्रतिदिन करत भावनजिहृजा
जनकतास कछु अवसरपाई। देखिथनग्र एक
छिनताई। पानिगृहण कन्या मनभावा। तहिंसन
सादिर दीन करावा। पतीभवन जवराजकुमारी
गवनी सो संदरव्रतधारी। तहांसंत वैस्नव जनका
हू। परहिं नसपन हष्टि हगताहू। एकदिवस त
वराज किसोरी। पतिसन विनयकरत करजोरी। सो
वैस्नव सजनकाहीं। नाथलाल सा मानसमाहीं।

राजकुवरि अस जवहिं वखाना। नवबोल्यो न्टपम
वन अजाना। कवनसु वैस्नव सुजनकाहीं। हम
इह सुन्यो आजलगनाहीं। राजसुता सुनिचिंता
वेरी। भई मौनमुख हरिहरिहेरी। दोहा। नदनेन
र पतिकुल सकल लोको अकुल आचार। सुन्यो
न श्रुति हरिनामको रटन कलिन कलिसार। १
टीका। अब ओर कुसुमभगवानके चरनोंकी श्री
नीके देनेवाली वडी अदभुत ओर सुंदर सुखदा

८६
भ०
२

एक भक्तीकी पवित्रगाथाजोहै सो कथन करता
हूं हेसंतो आपध्यानदेकर श्रवणकरिये पुष्कर
तीर्थके निकटवरती जोदेसहै तहां एकराजाथा
मकरनामथा सोकैसाकि वडाप्रजापाल और भ
गवानकी भक्तीमेप्रवीन परमउदार और परम
कीतिधीथा मनवचनकाया करके निरवैसव
संतभक्तों और अतथी ब्रह्मणोंकी सेवाकरता
रहताथा तिसके घरमे वडी सुशील गुणोंकीखा

नी और भगवानकी भक्तीप्रीतीवाली जबा अब ।
स्या एककन्याथी सोभी प्रेम भक्तीसे नित्य अनथी
संत भक्तोंके चरनोकापूजनमे वन करतीरहती
थी तब समयपायकरके पिताने एककोई व
अधनमानराजा देखकरके तिसकेसाथ्यातिस
कन्याका विवाह पकायदिया जबसो राजकुमा
री पतीके घरमे आयप्रापतभई तब तहांतिस
का अनथीसंतभक्त वैस्नवकोई सपनेमे भी दे

४८
भ०
३

खिनहीं पश्च तवनोवडी उदासीनसी होयकरके
एकदिन पतीकेआगे विनतीकरनेलगी किहे
नाथ वैस्नव संतभक्तजोहैं तिनकेपूजन करने
की मेरे हृदयमे अभिलाषा उत्पन्नभईहै सोकृ
पाकरके तिनको सन्मानपूर्वक बुलाय पठि
ये मै प्रीतीभक्तीसें पूजन करूंगी इसप्रकार
जव राजकुमारीने कथनकिया तव सो तिसका
मूढपती स्वनकरके कहनेलगा कि वैस्नव को

न और कैसे होते है हमने तो आजलग कानमेभी
नहीं सुने ऐसे पतीके मुखसे वचन सुनकर सो
प्रवीने और सुशीले हृदयमे परमचिंता उखमा
नकर हाय हाय रटतीहुई मोन होयरही तिस
ते उपरांत पतीकी कुलकासव आचार जोदेखो
तो कैसादेखा कि जो किसीभी कुलमे नहींथा
हरीकानाम जो कलीकालविखें एकसारहै और
सहजेहीं उद्धारकरदेने वालाहै तिस ऐसे सुख

दायक हरीके नामको कोईलेना कानमे भी नहीं सुना ।।१।। चौपाई। दयाधरम गनहिंसकदेखी। उपजतास उर शोक वसेखी। असप्रकार कछुकाललिहायो। राजकुंवरि नवसुत उपजायो। सास ससुर पतिवांधवजेते। नामविलोकि हरष जुततेते। प्राणभूतनिज जाननलागे। हमहुं आजसंसुति वडभागे। असप्रकार संवत सरचारी। जववीसो नवराजकुमारी। अवसर एक वालिनिजदासी।

शरणकोलेकर ग्रोर तिनसे ज्ञानउपदेश पायकरवि
धीपूर्वक वैस्नवभेषको धारन करके द्वेषऊरमती
से रहितभयाहुआ अभयहोय करके पृथ्वीतल
परविचरनेलगा इसप्रकार इहवडासुंदर ग्रोर सु
खदायक हंसनीहंस ग्रोर पंथिकके सहितरा
जाकाचरित्रजोहै सोमैने अपनीतुछमतीके अ
नुसार भगवानके चरनोमै चितलगायकरगा
यनकरदियाहै देखिये भक्तोंकाभयहरनेवाले

भ॰
३१

श्रौर भक्तोंकेकल्याण हेतु भगवान सदा भक्तोंके रख
वारे भक्त सहायक श्रौर भक्तहितकारी हैं संसार
मै भक्तोंकेलिये नानाशरीर धारकर गौब्राह्मण श्र
थवीदेवता श्रौरभक्तोंके पालक भगवान अपने
अदभुत कौतुकजोहैं सो करतेचले आयेहैं। ९।
इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथे भगवदभक्तिमहात्तमे भा
षाटीकायां हंसहंसनी चरतवर्णनंनाम सर्गः

मोहोसिंहकृत

अथ वैश्य भक्त चरित्रं । दोहा । नारायण पंकज च
रन विमल भक्ति भव दैन । सो मैं चरित यथा मती
करहुं कथन कछु चैन । चौपाई । पश्चिम दिसा
वितत इक राहा । वैस्य धनसु विदित वइसाहा । वि
नु संतान दुखित चित सोई । सदा रहत चिंता व
स होई । अवसर एक आवत हि धामा । देखत वं
त भक्त भगवाना । धनि विलोकि भजन सनका
रा । करत भक्ति जुत विविध प्रकारा । कीनो विन

९: भ: १

य जुगलकर जोरी। दीननायक कहु इख्यनथोरी।
जैसें तात दीप बिनु गेहा। मोरे अंधकार प्रभु देहा।
तोते नमहुं दीनहितकारी। भनहु मोहि कछु य
तन विचारी। जहितें मिटहिं सदन मम सोगू। उप
जहिं रुचिर पुत्र बिन भोगू। सत्यवचन सुनि संत
उचारा। सुत बिनु बृथा गृहस्थ संसारा। करते रहु
हु संत महि देवा। मन वच करम भक्ति नित सेवा। तो
प्रसाद कछु संसय नाहीं। होहिं प्रसन्न हृसम

नमाहीं। उपजहिं कविरघुत्र नवभवना। असकहि
कौनसंत निजगवना। धनिउपदेसनताम असलेवा
लागेपाकरन संतज्ञजसेवा। असप्रकार कलुकाल
बितन्या। उपजीसदनताम इककन्या। सोरठा। धनि
अनंदमन लीन। संसकारताकरसकल। कविरघु
उसमकीन। दीनउजन अनथीनधन॥ १॥ टीका॥
नाभादासजी कहतेहैं किहेसंतो अब और नारायण
णके चरन कमलेंकी निरमल भक्तीके देनेवाला

भ.
२

2

वजासेंदर चरित्रजोहै सो आपकेआगे यथामतीगा
यनकरताहूं क्योंकि पश्चमदिसामें एकवैसजाती
करके धनीवणअप्रसिद्धहोताभया सो यद्यपि बहुत
हींधनसम्पत्तिवालाथा तद्यपि संतानसेहीन हृद
यमेंचिंताकरके परमदुखी रहताथा तवएकसम
य देवयोगासें विचरतेहुये वैस्नवसंतजोहैं सोति
सके घरमें आयगये तवधनीने भगवानके वैस्न
वभक्तोंकोदेखकर भक्ती सनमानसेतिनका सत्क

२

नकिया और फिर खानपानसे लेकर अनेकप्रकार
कीसेवकाई करके हाथजोड़कर दीनवाणीसे वि
नती करनेलगा किहेसंत भगवान आपकेकृपास
सादसें घरमें धनपदार्थकी कुछतोटनहींहै पर
नरएकहींखटकताहै कि दीपरूपीसंतानकेविना
मेरेघरमें अंधकार होयरहाहै तातेहेसंत उपका
री अब दयाकरके सोईयतनबनाईये कि जिसतें
मेरे घरका अंधेराशोक सबमिटजावे और इस

भ॰ १

महांद्रव्यकेभोगनेवाला आनंदकामूल पुत्रजोहै

सोप्रकाशमान होयगावे ऐसेधनीका कथनसु

नकर संतकहनेलगे किभक्त इहसमयवारताहै

पुत्रकेविना संसारमै ग्रहस्थवृथाहीहै इसकाए

ही उपायहै कि रात्रीदिननित्य भक्तीप्रीतीसे अत

थी साधब्रह्मणोंकी सेवाकरतेरहो इसीतेंतुमको

फलप्रापतहोयगा भगवान कृपानिधान संतसि

वकाईपर प्रसन्न होयकरके तुमको पुत्रदेवेंगे

२

हमारे मनकी अभिलाषासफल होजायगी ऐसेकथन
करकर संतजोहैं सो कुसलकुसलरहतेहुये अपने मा
रगाकोचलेगये और धनीतिनका उपदेशलेकर व
डीप्रीतीभक्तीसे साधवब्रह्मणोंकासेवन सतकार
जोहै सोनित्यकरनेलगा इसप्रकार संतभक्तोंकी
सेवाकरते करते जबकछुकाल व्यतीत होयगया
तव तिसके घरमै एककन्या उतपन्नहोयगई ति
सकोदेखकर प्रसन्नभयाहुआ धनी कन्याकाण

ई० म० ४

4

त्रके समानहीं सव संसकार करकार अनतथी ब्रह्म
णेनंको अनेकप्रकारके दानदेताभया ।२। चौपाई । व
हुरितीन संवतसरपाहू । उपन्योसवन सब्बनतहिआ
हू । जान्योवैस संत पदसेवा । मैरह विदनप्राजफल
लेवा । नवमें अधिकसंत सिवकाई । लग्योपाकरन अ
ज अधिकाई । असप्रकारवहू दिवसविहाये । तोकेस
दन संतइकआये । सोअतिऊविन दीनकजग्राहू ।
दशाविलोकिवैस असनाह । भक्तिमान मानसरन

४

दाया। निगुणवेद इनलीन बलाया। नासहनहमसहो
नहितरोगू। लगपोऽपाय करननिमिजोगू। विधि
वत करत यतन इहिभांती। भयोग्रसाथ संतन्ह
जशांती। नवउरहरि हरषमहाखपागा। साधवव
न ग्रसभाषनलागा। धनीधरमिजस कीनहमारी
नमहुं ग्रनाथजानि रखवारी। जनमरतजीवदान
मोहिदीना। इहउपकार ग्रवयगनकीना। ग्रव
मोरे मानस ग्रसकामा। वसहुं नमारभक्तनितथा

९
भं
५

मा। एककाल भोजनमोहिदेहीं। यथाउचित सेवा
कहुलहैं। साधुवचन सुनिवनक प्रवीना। भक्ति
मानकर जोरतदीना। बोल्योतमहुं नाथसिवकाई
कवनवात असवदन अलाई। मैंतोआपुवचन
मनदेहूं। रामचरन रतिदीन सनेहूं। सुतजुत
सदनसंपतीदारा। दीननाथ इहसकल तुम्हारा।
वसहैं जानिकृविरतिजगेहू। रहहुकरत प्रभुस
दा सनेहू। दोहा। वैसवचन सुनिसंतजस अति

५

अनंदयुतहोय। लागेपाकरन निवासननहि सदनस
कुच सबखोय।२। टीका। तिसतेउपरांत फिरती
न वरषकेपीछे तिसधनीके घरमैवडा सुंदर औ
र सरव अंगोंसहलम पुत्रउतपन्नहोनाभया तब
वैसने हृदयमेजानलिया कि इहसंतोंकीसेवा
का फलप्रापत भयाहै तिसदिनतें वडीश्रद्धा
प्रीतीवालाहोयकर दिनदिन अधिकतें अधिक
हो संतोंकी सेवाकरनेलगा इसप्रकारजब वह

द्वि॰
भ॰
६

तदिन वतीतहोयगये तबएकदिन तिसके घरमें
एकसाधु आयप्रापतभया सोकेसाकि रोगकरके
ग्रसाहुआ वजहीन और उत्कीमरणे प्रयंतहोय
रहाया तिसकीदशादेखकर वैसभक्तजोथासो
परम दयाके वशहोयगया तरतहीं एक च
तर वैदको बुलायकर तिसके रोगकी न
ह्वनीकेलिये यथायोगउपाय जोहै सोकराने
लगा इसप्रकारविधी सर्वक यतन करनेकरने

६

संतका असाध्यरोगजोथा सोथोड़ेहींदिनोंमें नष्ट
न्नहोयगया ऐसेजवरोगकी शांतीहोयगई त
बप्रसन्नभयाहुआ साधुवड़ी मधुरवाणीसे क
हनेलगा किहेधनीपरमी तैनेअनुग्रजानकर
मेरी रक्षाकरीहै मानोमेरेहृदयेको जीवदानदि
याहै इसूतेराउपकारजोहै सोअनंत और अवध
गतहै कि जिसकीकोई अवधीनहीं तातेमेरेम
नकीइही इछाहै कि अवजनम पर्यंततेरेही चर

सेवासकहं दयाकरके मेरेको एककालभोजन
देतेरहो और टहिलसेवाजोवनपडे सोलेतेरहो इ
सप्रकार साधूकावचन सुनकर वैसभक्तहाथजो
डकर दीनवाणीसे कहनेलगा किहेनाथ आपने
इह टहिलसेवाकी वात मुखसे का कथनकरीहै
मैतोमनवचनकाया करके प्रभू तुमारे चरनोका
सेवकहूं औरमेरा पुत्रस्त्री घरवारधन सम्पतीजो
है सो सव आपकाहीहै नाथअपनाचाकर जानकर

आनंदसेवास करिये और मेरेपरसदाकृपादृष्टी
में सनेहराखिये ऐसेपरमहितकेभरेहुये धनी
के वचन सुनकर साधुसकुचसे रहित अभयहो
यकर आनंदसे तिसके घरमैवासकरनेलगा।२
चौपाई।असप्रकार कछुकालविलासा। दिनादिन
बढ़तगयोविस्वासा। भनि भनि वचनमधुरमलव
लालन। सतसमकरत-वनकसुतपालन। पित
समजानि संगसिसुतासा। करतरहत तिनकेलि

९॰ भ॰ ८

8

विलासा। नवरकदिवस पंतनहिंयामा। जसोमस
मानलोक अभिरामा। जानिबविच्र महत्त्वभारी
वैसंतसंजन सनतनारी। गवनेनलहांहरष उरला
ये। करिदरसन नवभवन पराये। नवबालक उ
नकंछितवानी। पितसन भनतगार सवदानी।
मोहिलैचलहु नातपुनिनाहीं। काननकलित म
हूतसवनाहीं। यद्यपिपितवर ज्यो वहुवारा।
नयपिरहो नवालनिवारा। वसोमाधुलेत सि

सकाहीं। आवाजनवहिं गाहनवनमाहीं। देखिग्राम
वनकंचिनकाया। तांकेहृदय उपमतिछाया। हर
हूंवालवधि भूषणपहू। आमविचारिहिंसक ग
तिनेहू। हृदयवज्रकरि आपम अभागी। सिंचक
जियन भोगमखलागी। दायाधरम संतमनखो
ई। निरदयक्रूर सपचवनहोई। धनिउपकार स
कलमठभंगा। विन अपराधवाल मृज्ञअंगा। मा
सोमंट विपुनथलनाहीं। दीनदवाय खलनमहि

८ भ. ५

माहीं। दोहा। भूषण वसन अनादि नहि राख्यो जतनउ राय। धनि गृह आयो आपसद अति अनर्थ सरसाय। २

नवम प्रकार कछु काल व्यतीत होय गया। तव तिस साधुका दिनदिन अधिक ही विश्वास वढता चला गया और सब से वडे मीठे प्यार के वचन उचारन कर कर पुत्र के समान वैश्य धनी के पुत्रको पालता रहा और बालक भी पिता के समान जान कर तिसके साथ नित्य परचया रहता था तव एक दिन तिस। ५

ग्रामसेवाहिरचार पांच कोसपर एकवडाभारीमेला
उतसव होताभया तहांचारो ओरसेलोग समाजजो
है सो अनेक प्रकारका आयकरके जडाहुआथा ति
सवडेभारी उतसवमेलेको जानकर वैसधनी आप
ने पुत्रस्त्री और संतकेसहित आनंदसे तहांचलाआ
वताभया तबभलीप्रकार दरसनपरसन करके
घरकोचलेआये तब बालक फिर पिताकेसाथ
रारका अडी करके कहनेलगा तात मेरेको तहां

ढ़ै॰
भ॰
१०

10

हीं लेचला कि जहांवणविवें नानाप्रकारका लोगस
मान जगहह्याहे ऐसेवालकका कथन सुनकर
पिताने यद्यपि वहुतहीं निवारणकिया तद्यपि से
मिटतानहींभया ऋनकोनिसमाधूके साथतहांको
भेजदिया सोजव वालककोलेकरके वेऊहांवणवण
विवे आयगया तव कंचिन और मणियोकरके
जटित वालकके अमोलभूषण देखकर तिसस
तके हृदयमे उष्टवुद्धी व्यापितहोयगई कि वालक

१०

कोमारकर इसके भूषणलोहैं सो सबउताखलेउ ऐसे
विचारकर सोसाधु हिंसकजो जीवघातीहै तिसकेस
मान होयकर और अधम अभागी हृदयको वज्रके
तुल्यकठोर करकर इसथोडेसे जीवनेके सुखकेलि
ये दयाधरम और सतकरमसे रहित चांडालवनसि
रदय होयकर और धनीकासब उपकार हृदयसे वि
सारकर तिस सुलक्षणअंगोंवाले संदरवालको नि
रअपराधहीं मारदेताभया और फिरतिसके भू

घणवस्त्र सबउतार कर यतनसेकहीं राखकर औ
र नवरत्न पृथ्वीकोखोद कर तिसबालकको तहांव
एकेबीचहीं दवायकरके फिर आपमहांअनर्थी
और अधमपापी धनीकेघरमें चलाआया। चौपाई।
बाल मरमवधकाहूननाना। भयोभासकर जब अ
वसाना। कोलिप्रमंत बनक तबकाहा। पहोनहदृष्टि
बालकितराहा। नाम अधम तब बदनउचारा। अ
र्धदिवसने बालनमारा। देखोमैं नललित सडगा

ता। सुनतवैस मानस अकुलाता। नरतलीन नि

जचेरिवुलाई। सिसअन्वेषण हेत पठाई। वीथन

ठामधाम सवयामा। लागीवोजन ललितलिला

मा। सिसुँकरत विपतवितदासी। मिल्योएक

मारग संन्यासी। स्रावेवदन देखि अकुलानी।

सकितभयोकवनतवस्रानी। चेरिवदन सव क

थासुनाई। संतमरम तवदीन जणाई। साधभे

षजे सदन तमारे। नासविघन हगलावतहमारे

सिसु

९
भ
१२

12

बिलपत रुदन करत सिसुकाहीं। द्वारेओ ननत रवन
तमहि माहीं। दासी मनन चरनसिरनावा। महाराज
मोहि देहु दिखावा। सोरठा। तासु वचन व महोय।
संतदिखायोबालमृत। रुदनकरननवसोय। च
लिआई स्वामिनसदन। ५। टीका। नवबालकके
मरनेका भेद किसीनेनहींजाना नवमरन भ्रम
नहोने पराया नवतिस भ्रमंनको धनीबुलाय
करके पूछनेलगा कि बालक कहांहे मेरेकोदे

१२

खनहीपडा ऐसे धनीका वचन सुनकर सो प्रथम कह
नेलगा किमैंभी इसीचिंतामें हूं आधेदिनके उपरांतसें
मैंनेभी बालककोदेखानहींहै इसप्रकार तिसके म
खसें वचनसुनकर धनीबालककी चिंतामें व्याकुल
होयगया और तरत चेरीक्यादासीको बुलायकर
बालकके खोजनेकेलिये भेजदेताभया तबसोदासी
यतनसे ग्रामके चवचर और गलीकूचे मारगमैंजा
यकर जहांतहां खोजनेलगी। ऐसे बालक बालक

९.
भ.
१२

43

पुकारती और व्याकुलभई फिरतीको मारगमें एक
संन्यासी संतमिलताभये सो तिसदासीको रोवे
हुये गलदेखकर पूछनेलगे कि हे दासी ले तूं कि
सकारणतें व्याकुलहोयरहीहैं दासीनेसव वृत्तांत
प्रकटकरके सुनायदिया संतसुनकरके कहनेल
गे कि तुमारेघरमें साधुभेष एक पुरुषजो रहताहै
तिसने हमारेदेवते वणिकके रोदन विलाप कर
तेहुये बालकको निरदय होयकरके मारदियाऔ

त फिर नहूंहीं माटीमे गढ़ा खोदकर दबायदियाहै
ऐसे दासीने सुनकर संतके चरनोपर सीसधरदि
या और हाथजोड़करकहनेलगीकिमहाराज आ
पकृपाकरके मेरेकोदिखायदीजिये संतमहाराजमा
ने तिसकीविनतीमानकर तरतमायकरके मरेहु
ये बालकको दिखायदिया तबदासीदेखकर हा
हाकारसे रोदनकरतीहुई अपने स्वामीके तरफ
चलीआई।४। चौपाई। धनिमन कालमरण जिमि

६: भ: ५

14

गाथा। कीन्हेकथन वेदिधुनिगाथा। मंदअभक्त ता
थ्रमिसहसाहे। मैस्वामिननिज ह्यानविराहे। भि
दू संतएकमगआवा। तासवाल मतनमोहिदिखा
वा। सुनिअस वचनकैरिमखवताहं। आवा वनक
वालमतनमाहं। खनतधरनि सिरुलीन निकारा
मतकदेखि उपन्योइखभारा। तसहिं दवाय धरणि
तलतासा। आव वनकनिज सदन निरासा। परम
निपुण धृतिज्ञान विचारा। त्रियहिं वदन निजविवि

यथकारा। धीरजदेन बचन मईकहयेो। ष्रियातमार

कवम सुमरलयो। दीजैदोषककवन कवगोई। जसभ

वतवातार्ई नसहोई। दहसेवत संतन सुतलीना।

आजसुषिया संतहरिलीना। इहिकहंभूलिदोष

जनिदेहो। हृथानतरँ आपकीरनिलिहो। भामति

नमहिं उचित अवराहा। हितजनमाति मोवरहहका

हा। जेतमार कन्याहरवदाई। इहिकहं विधिबत

देहुविवाही। आउमसांपथवलहुसियाली। दीजै

९.
भ.
५८

15

वपुष मचनहिमगारी। दोहा। निजपतिकर सुनिव
चनअस भामनि वदनउचार। जोकीजैअसप्राणप
ति तोवडभागहमार। सोरेउरसइईकारप्रभु वातसव
वसुखदान। दीजैकन्यासंतनकहं लीजैसुजस म
हान।५। टीका। नवधनीकेसाथ वालकके मरणे
का प्रसंगाजोथा सोरोयकर सवसुनायदेनेभई
किहेनाथ इसमंद अभक्तने वालकको तरसायतर
सायकरमाराहै मै अपनी आंखोंसे देखआईहूं एक

५८

संन्यासीसंत रसतेमै चलेआवतेथे तिन्होंनेमेरेकोपता
लगाया और पृथ्वीमें दवाहूआ बालकदिखायाहै
इसप्रकार दासीका कथनसुनकर धनी तुरंतति स
अस्थानपर चलाआया तव अपने हाथोंसे पृथ्वी
कोखोटकर मरेहूयेवालककोनिकाला और देख
देख हृदयमें अत्यंतकलेश मानकर फिर नहाही
दवायदिया और निरास होयकरके दासीके स
हित अपने घरको चलाआया तवस्नान विचारमें

६.
भ.
१६

16

प्रवीन ओर धरमधीरजकीनिधी वैसापनी वसीको
मलवाणीसे अपनीस्त्रीको कहनेलगा किहेप्यारी
तेरासर्वलोकमे ऐसाहीथा दोषकिसकेताई दीजे
जैसीहोणीथी तैसी वरतमानहोयगई इहपुत्रसे
वोंकी सेवाकरकर प्रापतकियाथा सो अवसंतने
हीं हरलियाहै प्यारीतूं भूलकरमतकहीं संतप
रदोषधरें ओर तृथाजगतमे अपजसजोहै सोलेवें
स्वधीले अवजोतूं हितचितसे मेराकहामाने तोते

रेको इहउचितहै कि आपनीप्यारी सुखदायक कन्या
जोहै सोभी विधिअनुसार विवाहकरके इसीकोद
दे और आपहमहिम जोवरफहै तिसविषे शरीर
गलायकर महांमारगजो परलोककारस्ताहै ति
सकोचलेचल्लतेहैं ऐसेपतीके मुखसें वचनसुन
कर सोधरमकी मूरतीकहनेलगी किहे प्राणनाथ
जोतुमकदाचित ऐसीप्रभवारताकोकरो तोह
मारे वडेखर्णभागपहैं कृपानिधान इहसुखदाय

९ भ० १८

17

कवारता मेरेकोसरव प्रकार करके सहईकावहै सं
तभक्तकोकल्यादीजै ओर लोकपरलोक मै संद
रजस वडाईजोहै सोलीजै ।५। चौपाई । त्रियसुखह
ततवचनहितसाना । वेसभक्त मानस सुखमाना
तहिप्रसंससि उरविविधप्रवीना । वोलि असंत निक
हनिजलीना । जोदिजगलकर विनयअलाया । जो
मोपै कीजैनिजदाया । तोकल्याइहजवन हमारी
करहुनाथ निजचेरिविचारी । हितजन वेसवचन

१८

सुनिनीके॥ निजअपराधसाधगुनिजीके॥ निदरिआपुधिग वचन

अलाई। रह्यो वैठि मखेलनितकुकाई। मोर अधरम
परम हतकरना। उभय अवधि गतनाहिं नवरना
सोऊमतन दुरलभ संसारा। जहिंउरपर अपराध
विसारा। अनहितदेखिकरतहितजोई। वेदनजो
गाधन्यनरसोई। मैंअब अधम दुरतरतघोरी। सन
मुख सकहु हगनकसजोरी। असविचारिमानस
विलखीना। मरहुं आजनिश्चय असकीना। मर
णनाम उर सुमति मुरारी। वेसभक्त हढभक्ति

निहारी। तासमंतगुरु रूपधराये। वत्सल भक्तत्र
नचलि आये। साधुविलोकिहगनगुरुकाहीं। हृषेराज
नरूलाननदमाहीं। दोहा। दिव्यदरस गुरुबदनिरखे
बनक चरन सिरनाय। पानिगृहणनिजकुवरि कर
दीनहूतंलसनाथ। टीका। इसप्रकार स्त्रीकेमनमें
ववसंतवमानताभया ओर मनमैनिसतशीले
की अनेकशलाघावड़ाई कर कर फिर चरनहींति
स साधूको अपने पासबुलायलेताभया ओर हा

सुनकर

18

घबराकर बड़ीदीनवाणीसे विनतीकरनेलगा कि
हे संतकृपाल मेरेको अपनादासजानकर दयाकरि
ये और इहमेरीकन्याजोहै इसकोवरकर अपनेव
रनेकीचेरीकरिये ऐसेवैसमझके मुखसेपरमहि
नके वचनसुनकर सो असाधु अपने अपराधको
हृदयमै समझकर अनेकप्रकारके निरादरसेधिग
धिगउचारकर अपनीनिंदा करनेलगा और लज्जा
के वशनीचेमुखकरके मनमै कहनेलगा कि मै

८.
भ.
१५

राजछत्रधारीका अधरम और इनउपकारियोंका स्व
धरम दोनोंकीकोई अवधीनहींहै सोई पुरुषसंसा
रमेंधन्यहैं और वंदनकेयोग्यहैं किजोपराये अपरा
धको विसारदेतेहैं और अनहित करनेवालेके सा
थ सदैव हितहीं करतेहैं मैं अधम अभागी और
पापीअब इनके सनमुख नेत्रोंकोकैसेकरूं किजि
नोंने अपने सरल और साधु सुभावसे मेरेमस्तक
नर्थ और अनहितको हृदयसें विसारहींदियाहै.

19

१८

अवउचितहै किमै विषखायकरमरजाऊं जीवनतोइन
को [illegible]मखिनादिखाऊं जबइसप्रकार तिससाधूने अ
पनेकरमकी हानीगिलानी मानकर मरणानिश्च
यकरलिया तब तिसके प्राणोकीहानीविचारकर
और वैसभक्तकी भक्तीके वशहोयकर भक्तहित
कारी भगवानकृपानिधानजोहैं सो तिससाधूके
गुरूका भेषधारकर तुरतहींचले आवतेभये त
बसाधूगुरूको आवतेदेखकर मानोलजाके समु

इमैइवजातभया जवगुहजीपाम आयगये तवति
नकादिअरूप देखकर वैसभक्तने वशीदीनतासेव
रणेंपरप्रणाम करकर ओर हाथजोडकर कन्या
के विवाहका वृत्तांत जो था सो सब सुनायदिया। ६
चौपाई। वैसकथन सुनि कृपानिधाना। अतिप्रसन्न
मनवचन वखाना। इहितेंधरमज्ञानसंसारा। नहिंन
वैस तवभलोविचारा। देहुसुता इहिवेग विवाही।
ववतहिंवैस चरनसिरनाई। बोलितवचन अपरोहितलीना
२०

यथाउचित विधिवत सवकीना। लाजाहोमसमय न
बवानी। गुरुकपाल असवदनवखानी। देवेहेतग्र
ह्लतिसहाई। बोलह्लवेगकुवरिवरभाई। बांधवडगवि
न स्वनन गुरुकाह्ला। लागेरुदन करन सवह्ला।
देहिंग्रह्लतिकवन अवग्राई। ह्लनिलाजित उलह्ला
पछुताई। नवकपालगुरु अंतरजामी। बोलेवदन
स्वेदहितवानी। सजचविलापतजहुवमसारी
ग्रावत अवहिं अनज सकुमारी। कृपानाथ जवव

दन अलाये। अनंतलोकमानस विसमाये। मनउ

एक नव काननमाहीं। देखत भये बैस अनकाहीं

लीनेसंगहरष बसगवना। आवालतवनकवरभव

ना। सिवहिं विलोकि लोक समुदाई। लागेसाधु

साधु अबगाई। सवन प्रणाम चरनगुरुकीना।

लाजाय्रहनिवालनवदीना। अमप्रकारजव भयो

विवाहू। नवनिजतियहिं बैस अमाहू। दोहा। का

हाकियौं मनन्हइहू कियौं स्वपनभयोमोहि। प्रिय

संतनसेवाकिधौंआजसफलमगहोई । ७। टीका ।
नव भगवान कृपानिधान निसवैसका वचन स
नकर परम प्रसन्न होय करके कहनेलगे किहे
भक्त इसते अधिक संसारमे और कौन धर्महै इ
हतमने वडाशुभ मंगल विचाराहै इसमाधूकोक
न्यामोहै सो विवाह करके देदेवो नवैसभक्तने
चरनोपर सीसनायकर तुरतंही अपनोहितको वु
लायलिया और विधीवत जोजोकरनाथा सो सव

किया जबलाजा होमका समयआया तबगुरुहकृपा
ल कहनेलगे कि अब अहुती देनेकेलिये कन्याके
भाईकोल्यावो ऐसेगुरुजीके मुखसे वचन सुनकर
सब बांधव परम कलेशासे रोदन करकर कहने
लगे कि दैव अब कौन उपायकरें बालक कहांसे
ल्यावें इससमय अहुती कौनदेवेगा तब डुलहाजो
साधुथा सोभी लज्जाकरके आकुलभयाहूआ हृ
दयमें पछतावताहै इनमें गुरु भेषधारी अन्तर
नें

२२

22

९ भ २२

ज्ञामीभगवान तिनसबका कलेशबिचारकर परम
तत्व श्रोर हितके देनेवाला वचनजोहै सो कहते
भये किभाई तुमसबलोग अपने हृदयकी चिंता
कोत्यागदेवो भगवानकी कृपासें कन्याका सुंदर
आतामेोहै सो अवीआय जाताहै जब इसप्रकार
दीनबंधुने कथन किया तबलोग सुनकरके स
ब अचरजके वशहोयगये कि इहक्या कहतेहैं
इतनेमे एक मानुष्यवणसेचला श्रावताथा सो

९.
भ.
२२

मारगमै जिसबालकको देखकर और पहिचान
कर हरषसे ततकाल वैसधनीके घरमैले आया
तब बालकको देख करके सबलोग प्रसन्न भये
हूये साधुसाधु शब्दको उचारते और गुरुजी
के चरनोपर सीस धर धरकर प्रणाम करनेल
गे फिरबालकने विधिपूर्वकलाजा प्रहुनीजोहै सोद
ई इसप्रकार जबविवाह होयगया तबवैसभक्त वेड़ ह
रष उतसाहसे अपनी स्त्रीको कहनेलगा किहेप्यारी

२३

23

रहहमको आज गुरूके मिलनेका आनंदको प्रापत भयाहै सो रहस्यनतहै कि अथवा स्वपनहै कि साधसंगतकी सेवाकाफल प्रकट भयाहै। चौपाई। गुरुकृपाल तवमोहि विदाया। हांनि आसवैस चरनसिरनाया। करिमनकार विविधविधिसेवा वैसविदायकीन गुरदेवा। सोतनवसंतसकुचवस होई। बालकवसन आभरनजोई। ल्यायसकल मानस विलखाई। तिसहिं दीननिजकर पहिराई

ढ़ै०
भ०
२२

बोल्योवैसभक्तसनवानी। मैइहवध्योवालइनपानी
महितैंभयोविपुलग्रपराधू। तुमझहकृपालभक्तन
वसाधू। वैसभक्ततववदनउचारा। संतनकछु ग्र
पराधहमारा। होनहार संतनिवलमाना। तुम
हिं दोषकसदेहंसुजाना। ग्रसकहिभक्त सहित
परिवारा। तजिसंसयग्ररु कपटविकारा। दिनदिन
ग्रधिक प्रेम वसहोई। भयोप्रलीन भक्ति हरि
सोई। ग्रसप्रकारवइह चरित सुहावा। मैसंतपत

२२

23
—
2

वदनकछुगावा। देखहुभक्तपालभगवाना। दीन
भक्तिवसवालजियाना। सोरठा। भक्तिअरथकहे
होय। नहिंप्रसाध संसारिकहु। तोते प्रसजिय
जोय। करहुभक्तिभगवतप्रीये। ८। टीका। नव
गुरहुकाभेषधारेहूये भगवान कृपानिधान जोये
सो विदायमांगतेभये वैसभक्त सुननेहीं तत
काल अनेकप्रकारकी सेवासतकार करकर
और बार बार सवपरिवारके सहित चरनोपर

ह०
भ०
२४

सीसनायकर मायाकरके मोहितभयाहुआ आनं
दसे विदायकरदेताभया नववेसंत वैसभक्तका
जामाताहृदय मे वडासंकोच और लज्जामानकर
वालकके सव भूषणवस्त्र कि जोमारनेके समय
उतारकर राखेथे सवल्यायकरके अपनेहाथ
सें पहिरायदेताभया और फिररोयकर वैसभ
क्तके आगे कहनेलगा कि नाथमै चोर अपराधी
और महा पापकी खानीहूं कि जिसने इस निरदो

२४

स्वालकको अपने इनसायोसे मारदिया यद्यपि मेरा भला किसी प्रकारभी होनेवालानहींहै तथापि त मउदार महांभक्त और साधुदयाकी मूरतीहो मेरे अपराधको क्षमाकरो ऐसेसुनकरके वैसभक्तप सन्न होयकर कहनेलगा किहे संतमहात्मा त माराकछु अपराधनहींहै और क्षमारेका मै कैसे होयदेऊं इहहोनहार भावीजोहै सो संसारमें वडी प्रबलहै इहकिससेंभी मिटतीनहींहै ऐसेकथन

९० भ० २५

25

कर कर सोवैसभक्त परिवारके सहितसव कपट विकार और संसय भ्रमको हृदयसे त्यागकर केवलभगवानके चरनकमलोंकी भक्तीजोहै सोई आधारकरलेनाभया इसप्रकार इहगाथा मैने कुछसंक्षेप करके गायन करदईहै देखियेभगवान कृपानिधान कैसेभक्तोंकेवशहैं किअपनेभक्तकामराहुआ बालक दीनवंधूने आयकर तरनजियायदिया और लोगोंमे अपनीभक्तीका सुंदर

प्रभावजोहै सोविस्तारनकिया तातेंभक्तीमान ग्रंथ
को संसारमै कुछभी असाध और दुरलभ नहीं
है सवसुगम और सहजहै ऐसेविचारकर और
सवफलको त्यागकर केवलभगवानके चरनो
की भक्तीजोहै सोई आधारकरनीचाहिये दीनाना
थको संसारमे भक्तीही प्यारीहै और भक्तीपर
ही प्रभू रीझतेहैं। ८। इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथे
भगवदभक्तीमहात्मेभाषाटीकायांवैसभक्तचरि

मीहोसिंहकृत

दे. भ. २८

नवरणने नाम सरगः ॥

28

ग्रथभवन चौमानचरितं। दोहा। इक्कनहोत नहीपा
नकरि हरिजनभक्तमलिंद। नलनि वागविकस
नकहूं प्रकटभक्ति मकरंद। चौपाई। पश्चिमदेस
विदत अभिरामा। गरचतनाम सुभग इकठामा।
नहांसहित निज सकलसमाजा। कुलभक्त इक
भूपविराजा। अनथिसंतगेयन महिदेवा। सादिर
करनरहत नितसेवा। तांकरपक सुमति गुणखी
रा। सुरवीर अनिनायकधीरा। माननीयसेवक।

६। भ० १

विस्वासा। भुवनस्रगींस नाम अमतासा। हठि चौ
भानविदत जगजाती। सेवनस्वामिनिरतदिनराती
न्रपतिएकदा कानन माहीं। गवनकीन स्रगपान
नकाहीं। वेगवंनवरतुरग अरूफा। सरसंधानि
धनुषनिजगृफा। हनिस्रगव्याघ्र विपुन नरराये
मंदमंद जवसदन पराये। अकसमात काननक
ल नयनी। निकसतबली गरभ वति अयनी। भु
वनसिंह ज्वत भूपप्रधाना। तासुविलोकि वाजि

चपलाना। चलेजगल नहिपाछिलधाये। सोम्र गनीकरदम चलआये। धसीग्रसक चरन ग्रज लागी। न्टपतिप्रहारि खडगनिजपानी। कीनसिंह द्वंड नतकाला। निकसतउदरतासुजगवाला।
दोहा। परेधरणि ग्रसदेविहग भुवन सिंह ग्रकुलाय। धुननसीस पछतातउर सदन न्टपति जुत ग्राय॥ ॥ टीका। नाभादासकहतेहैं किहेसंतो जिसके पानकरनेसें हरीजन ग्रर्थात हरीभक्त।

तिस

धर्म.
२

भ्रमरेजोहैं सो अज्ञायकरके मस्तहोजातेहैं मैंकम
लरूपी वाणीको विकासमान अर्थात प्रफुल्लत
करके ऐसाभक्तीरूपी सुंदर मकरंद जोहै सो प्र
कट करताहूं पश्चमदेस जोप्रसिद्धहै तहां गारव
ननाम अर्थात गढ़्वतीउ करके एकउजागर अ
स्थानहोताभया तिसविखे अपनेपरिवार और स
वसमाजके सहित एककुलभक्त राजानिवासक
रताथा और नित्य अनन्यी संतगौब्राह्मणकी सेवा

२

भक्तीमैलीन रहताथा तिसराजाका एकवडागवुद्धीमान
गुणोंकीनिधी सरवीर सेनापतीथा सोराजाके आगे
वडामान विस्वासरावनाथा औार भवनसिंहनाम क
रके चुहाणजाती प्रसिद्धथा अपनेस्वामीकी सेवामे
रात्रौदिनलीन रहताथा नवएकसमय राजाजोहैसो
वणविषें शाकारखेलनेको जाताभया तहांवडे चंच
लचपल औार तीव्रवेगवाले घोडेपर सवारभये रा
जाने अपने धनुषके छुटेहूये वाणोंसे वहुतहीसिंह

सहजे

९१ भं. २

आदिस्रगोंकोमारकर फिर जब मंदमंदगतीसे काम
हूने लौटेचले आवतेथे तब अकसमातहीं बणसे ए
कसुंदर नेत्रोंवाली हरनीजोहै सोनिकलपडतीभई ति
सकोदेखकर राजाओर भवनसिंह इहदोनोहीं घो
डयोंको चपलकरके तिसहरनीके पीछे लागचल
नेभये ओर मृगनीभीतिनको देखकर भयके व
शभईहुई मानोपवनके समान उछलतीभई ज
व धावती आवतीकरदम मुनीके अस्थानके पास

आयघुङ्गवी नवनहाकुङ्क कीलमीजो आयगई तिसमें
हृदनीहृई चारोंहीचरनोंसेंधसगई और असल्कहो
यकरके फसगई इतनेमें राजाने आयकर और ख
ङगचलायकर तिसकोदोखंडकरदिया नवहरनी
जोगरभवनीथी तरनहीं तिसके पेटसेदोवञ्चेनिक
लकरवाहर पृथवीपरआयपरतेभये तिनकोदेख
कर भवनसिंहनो दयाकीमूरतीथा हृदयमेंप
रमउखीहोयगया और वार वार सीसफेरकर प्र

दी०
भ०
४

नेकप्रकार पछतावताहूआ राजाकेसहित घरमैंव
लाआया॥ ॥ चौपाई। नवनैं उपजिपरमउरदाया। उ
रनेहेषहिंसादिविहाया। आयसतनजनदाकह असिधारी
प्रभभरतनानिज हृदयविचारी। करतनृपहिं उपदे
सस्रहावन। हरिपद पंकज प्रीति बढावन। अस
नितकुलभजनरतनासा। गयेकछुक जबदिवस
बितासा। नवकपटी बांधव मिलिसारे। नृपसनम
ख असहेष उचारे। महाराजनवलखिहुनभेवा। प्र

४

रतकरत कपटजनतसेवा। बांधेकमरदारुकरवाला।
अभिमवि रहतकवन मतवाला। आयुधदारु द
लनअरिकाहीं। कससामर्थ समरमहिमाहीं। अ
वसरपरे होहिं पछतावा। असतिन नृपहिं देष
समुझावा। मंदनकथन सुनत नरराई। भनत
वचन मानस विसमाई। मैदेखे नयनन निजज
वहीं। असप्रकार कछु दिवसविहाये। नवउप
वन देखन नृपआये। भवनसिंह जनमत स

इहतव कथन सत्य जन तवहीं ॥८

दी॰ भ॰ ५

महाया। लिये संग विहरत नरराया। तहां कजलि डमदेखि रसाला। तरत प्रहारि खड्ग महिपाला दोहा। छेदत कौतक कदलि तरु राजि सभा नृपजा य। भृतगण सब कहं वदन अस शासन दीन सु नाय। मै का दोजस कदलि डमन स तम निज ति जजाय। खड्ग प्रहार तन छिप्र छिदि मोहि दिखाव हु लपाय।२। टीका। तवतें भवन सिंह के हृदय मे परम दया उतपन होजाती भई और कपट द्वेष

५

पापहिंसाइत्यादि अधर्म सवत्यागकर स्वामीकीसि

वकाईके नमित्त लोहेकी तलवारको तजकरति

सकेवदले लकडीकी तलवार धारन करलेताभ

या ग्रोर रात्रीदिन नित्यराजाकोभी एहीउपदेश

करतारहता किहे प्रजापाल दयाधरमके सहि

तहोयकर भगवानके चरन कमलोंमै प्रीतीक

रनी संसारमै एहीजीवनेकालाभहै इसप्रकार

भगवानकी भक्तीमै लीनभयेहूये तिसकोकछ

द। भ। ६

समय वतीतहोयगया नवनिसके बांधव सरीकजो
थे सो देषसेराजाके पासजायकर कहनेलगे किम
हाराज आपने कुछजानानहीं है इहभरतभवनासे
हनेहै सो प्रभलमारी कपटके सहितसेवाकर
ताहै प्रथम रात्रीदिन कमरमे काठकी तलवा
रबांधकर दीनानाथ आपके सनमखोस्थित र
हताहै देखिये इह सेवकोंकी कौनरीतीहै नाथ
काठकी तलवाररखणेमे शत्रुके घातकरनेकाक

६

6

होसामर्थ्य होयसकतीहै इहतोकेवल कपटहींहै समयपड़े परपछ्तानेके विना और दूसरीवातन हींहै ऐसेतिनइन्होंने हेषकेवचन कथनकर क र राजाके चित्तमे भ्रमडालदिया परंतभूप स्नन करके कहनेलगा किभाई मे इसवारताको ज वलग अपने नेत्रोंसें नहीं देखूंगा सत्यनहींमा नूंगा इसप्रकार जव कुछदिनवतीत होयगये तव एकदिन सव सेवकसमाज साथलियेहूये

९१ भं०

राजाबागके देखनेकोचलाआया तहाँविचरते वि
चरते भवनसिंहके सहितसबसेवकोंके देखते
राजाने एक कदली अर्थात केलेके वृक्षको ख
ड्गकाप्रहारदेकर काटडाला और फिर तहांहीं
बागमें सभा सजायकरके बैठगया तब अपने
संपूर्ण भृत सेवकोंको आज्ञादेताभया कि जिस
प्रकार तलवार मारकर मैंने कदली वृक्षको
काटाहै तैसेहीं तुम सब सेवक भी अपनी ख

पनी तलवारसे कदलीहदोंको काटकर और
स्थापकर मेरेको दिखातेजावो ॥ ४॥ चौपाई । त्रप
नेदेस सुनिसुतसमुदाये । छेदन खंभ कदलिन
हल्याये । भवनसिंह विनोवसुभारी । हृदय सु
मरण लागगिरधारी । मोरकृपालमान अपमा
ना । तोर अधीन आनभगवाना । असहरि जल
ज चरननसिरनाये । हरिभरोस हरिभवन सिधा
ये । कदलीखंभ निकट तबजाई । सुमरिहृदय

रा॰
भ॰
८

निजभक्तसहाई। कीनप्रहारखड्गनवनासा। भाष
तीतजन नडितप्रकासा। भूपसमेत त्रास वितदीने।
निजनिज नयन नमीलनकीने। कछुककेवर पाछिल
जवबोल्यो। नवनर नाथवदन असबोल्यो। इह
नवकहा भवन स्वगराई। खड्गअमोल लालित
वरपाई। रामनिजननहं दमकडलिवारी। मोहिदि
खाइ वेग हितकारी। सासन मानिभवन स्वग
राया। रपहिं दिव्यवर खड्गदिखाया। अदभुत

८

देखि भूप बिसमायो। परमकोपवस वचन बखा
नेयो। म्लेछमंदमति अघममलीना। मोहिसन क
पनद्वेष लवकीना। तिनकहं सनम्लेछबोलिनरे
सा। कोपकीन बिसकार बसेखा। दोहा। नवकर
जोरि बिरोधिजन नृपसन बिनयउचारि। इहिनिश्च
यश्वरित कुटिल दारु खङ्ग प्रभधारि। ३। टीका।
नवराजाकी आज्ञापायकर संहर्ण म्लेछसेवक जा
यकर और खड्गोंके प्रहारदेदेकर कदलीवृक्षोंक

९। भं० ५

कोकाटकाटकर राजाकोदिखायदेनेमये भवनासिं
हकीतलवारजो काठकीथी तिसनेंवडा शंकितआै
रचिंताकेवशभयाहूआ हृदयमें गिरधरभगवान
का स्मरण करनेलगा कहताहै किहेदीनबंधु
आजमेरा मान अपमानजोहै सो तुमारेहीं आधी
नहै राखियेअथवा नाराखिये ऐसे कथन कर
कर भगवानकृपानिधानके चरनकमलोंको
प्रणामकिया और फिर हृदयमें तिनचरनोंका

हीभरोमारावकर भवनसिंहभीवलपश्नेभये
नव कदलीहलकेपास आयकर औार भक्तपाल
भगवानको स्मरकर ननकालय्यानसे खैंचक
र खङ्गका प्रहारजोकिया नोश्रेसे प्रतीनहूआ
किमानोविजली का चमतकार पश्हैे तिसके
भयसे राजाके सहित सवलोग अपने अपने ने
त्रोंकोमूंदलेनेभये फिर कछ्कदेरके पीछे जव
नेत्रोंको खोललेनेभये तव राजाआचर्जहोय क

द०
भ०
१०

रके कहनेलगा किहेभवनसिंह सत्यकहो इह
ऐसी अमोल और बिजलीके प्रभाववाली खड्ग
जोतलवारहै सो तैनेकहांसेंपाईहै इसकोनिकाल
कर मेरेकोदिखावो और इसकीप्रापतीका प्रसं
ग सुनायकर मेरेहृदयका संदेह मिटावो तवस्वा
मीकी आज्ञामानकर भवनसिंहने सोदिव्यतल
वार तरतहीं ल्यायकरके दिखायदेई तिस ऐ
सी अदभुततलवारको देखकरके राजाअचरज

१०

के वशहोयगया श्रौर परमकोपसें कहनेलगा
कि देखोइहकैसे महाअधम श्रौर उष्टमंदमती
लोगहैं मेरेसाथ्यत्नमाराकछनांही हेष आयकरके
कथनकरदिया नवराजाने तिनकोमनमवे उ
लाय करके कोपकेवचनोंसे वहुतहीं त्रिसका
रकिया फिरभीवे हाथजोडकर विनतीसे कह
नेलगे कि महाराज आपकाकथन सवसत्य
हींहै परंतु कृपानिधान इसधरतने तोनिश्च

दः
भ.
॥

करके काठकी तलवारही धारनकीहुईहै।१। चौ
पाई। संभ्रम हृदयभूपतके होई। नहितेलीन खेउ
गकरसोई। ताहविलोकि चकितचित भयऊ।
कारणकवन नृपति असकहयेऊ। भवनसिंह
नव वदनउचारा। इनकरकथन सत्यप्रभुमारा
नवके दिवसनाथ वणमाहीं। गयेतुमहुं मृगया
ननकाहीं। एनीवधीगार् भवतिजोई। निकसे उ
दरतास सिसदोई। तिनहिं विलोकि उपजिमोहि ॥

हाया। कांपनलगी त्रासवसकाया। नवतेंमै आयुध

निजधारी। नाथनोर सिवकाई विचारी। बांधेहाथब

उगाकटिराया। कुसमसरोज चरन मनलाया। जवन

मारसासन प्रभुपावा। छेदन कदलिखंभ प्रकुला

वा। नवकरि कुसम चरनप्रभुध्याना। कीनप्रहार

खउगनिजपाना। जान्योनहिंन मरमकछुराया।

नउतप्रभावदाह अतिपाया। भूपमहनत तोकर

असवानी। अतिअनंद मानस निजमानी। दोहा

लगेपासराहन वदनतहि नमहूं धन्यजगमाज । भ
येसहायक जाहरहि अवसर त्रिभुवनराज । ४ ।
टीका । ऐसे तिनकाकथन सुनकर राजाके हृद
यमे फिरभ्रमहोयगया तव भवनसिंहके हाथसे
तलवारलेकर देखनेजोलगा तोवे अवरूपकाठ
कीदेखपडी राजा अचरजके वशहोयकर पूछने
लगा कि भवनसिंह इहकौन कारनहै तवसोभ
गवानका भक्तहाथजोडकर विनतीकरनेलगा

१२

किह्रुपानिधान इनकाकथन सबसत्यहै निसदिन

प्रभूतम वणविखें शकारखेलनेकेलिये जोगयेथे

तो करदम मनीके अस्थानकेपास कीलमैथसीहू

ई गरभवती हरनीको आपनेखेडगका प्रहारदेक

र दोखंडकरदिया तहांतिसके पेटसेंदोवच्चेनिक

लकर पृथवीपर तडफतडफ करमरगये तिनको

देखकर नाथमेराशरीर कांपडठा और दयाजो

है सोरोमरोममैं प्रवेशकरगई तवतें मे भयके

द॰
भ॰
१३

वशहोयकर दीनयाल अपने शास्त्र सवत्यागदिये
और आपकीसेवाके विचारसे केवलइसकावकीन
लवारजोहै सोधारनकरलेई और भगवानके चर
नकमलोंका आधाररावलिया जिसदिनस्वामी न
मारी कदलीखंभ काटनेकी आज्ञाजोभई तव मै
कावकेभरोसेपर हृदयमे कदरायगया और प
छतायकर व्याकुलहोयगया परंतुफिर धीरजधा
रकर हमभगवानके चरनोकाध्यान करके क

13

१३

दलीथंभको खड्गकाप्रहारकरदिया तबकृपानिधा
न कुछभेदनहीं जानागया इसकाबकी खड्गसें
एक बिजलीकाप्रभाव और चमत्कारहीं निक
लतादेखा इसप्रकार भवनसिंहकेमावसें वचन
सुनकर राजारोमरोम प्रसन्नहोयगया और उनें
कप्रकारजिसकी शालाघावडाई करकर कहने
लगा कि अहोभवनसिंह तुमधन्यहो जिसकीऐ
से समयविखें तीनलोकके नायक जडनाथप्र

दो॰ भ॰ १४

गवानने आपसहायताकरी।४। चौपाई। नवसम

कवनआन वडभागी। जहिपद पदम कमलअनुरागी। वाकुजनम नवसफलसुहावा। आनसुजस

संस्वतिअसपावा। अवतें नमहूंभवन सगराई।

परिहरिमोर सदनसिवकाई। वैठिअचल निजभ

वनसहायन। करहुरमापति गुणगणगायन।

मैमनवचन करम सिवकाई। करहुंभक्त नव स

दन सहाई। जवकछु नमहिं होवमनकामा।

१४

नवमोहि भक्तदरस अभिरामा। देनरहहु हितजा
नि सहावा। असप्रकार जब नृपति आलाला। भव
न सिंहतव सदनसिधाये। लोकविलोकि चरित
विसमाये। अस इहभक्ति महातमभावा। मैनि
न अलप यथामतिगावा। भक्तउरघ कर संसति
माहीं। इनतह संत दुरलभ कछुनाहीं। दोहा।
जबलगरहे सजियतजग सिंह भवन चौभान
रहे निरन्तर रटतनित हरिविमल गुणगान

दी।
भ॰
५

ग्रंतलीनसा॰ञ्जगति चरिततास ग्रससोय। करि गायननरभक्तिव्रत ग्रनहूंनरतनभवसोय।५। टीका। फिरराजाकहतेहैं कि तेरेसमान ग्राजह सराकौन वडभागीहै जिसकोभगवानकेचरन कमलोंमे ग्रेसी हृढभक्ती ग्रोर प्रीतीहै भक्तते राजनमभी सफल ग्रोर तूं संसारमे सुजसका पात्रहोयगयाहैं ग्रवतें हेप्यारे तूं मेरी सिवका ई सवछोडकर ग्रोर ग्रचल होयकर ग्रानंदसे

15

१२

अपने घरमैंबैठ और भगवानके गुणगणोंहूं
सोगायनकर मैंआप मनवचन कायाकरके न
होघरमेंही तेरी सर्वसिवकाई करूंगा तबतेरम
नको अपनीकुछ इछापूर्णहोवे तबतेंमेरेको
दरसनदेजायाकर इसप्रकार जबवेंहितके व
चन राजाने उचारनकिये तबभवनसिंह प्रणा
म करके हर्ष हर्ष रहतेहूये अपनेघरको
चलेगये और इसअद्भुत कौतकको देखकर

८। भ· १९

लोगसव अचरजके वशहोयगये नाभादासजी कह
तेहैं किहे संतो ऐसे इह भक्तीका महातम प्रभाव
जोहै सोमैने यथामतीकुछ गायनकरदियाहै भ
क्तिमान पुरषको संसारमे कुछदुर्लभनहीहै सो
भवन सिंह चौभानजवलग संसारमे जीवतरहे
तवलग कृस प्रमातमाके गुणगणजोहैं सो प्री
तीभक्तीसें नित्यहीं गावतेरहे और जव शरीरको
त्यागा तव कृस्नभगवानकी कृपासें कृस्नरूपको

16

हींप्रापतहोयगाये ओर तिनकीभक्तीका चरि
त्रजोहै सोतिसकोआजभीश्रद्धा प्रीतीसे लोग
गाय गाय कर संसार समुद्रसे पार होतेजाते
हैं।५। इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथे भगवतभक्ति
महातमे भाषाटीकायां भवनसिंह चरित
वरणनं नाम सरगः ॥ ॥

९१ भ० १८

मी० कोंसिंहकृत



17

अथदेवाजीचरित्रं। दोहा। करहुंकथन अब सुखद
सुभ भक्तिमहानमथान। स्रोतनजनमन सुनत
जहि उपजहिं प्रीतिमहान। चौपाई। गढ़चैतोडक
रजेछितराई। एरवकथा जासु कहुगाई। सूरति
नाम भवन भगवारी। नहिपूजनहित विप्रपुजा
री। देवाजीअसनाम सुहाया। भक्तिमान नृप भ
वन विठाया। सोउज नृप सासन अनुसरहीं। ती
नकाल प्रभु पूजनकरहीं। आइभूप उठि प्रात

सनाना। करि निजनित्य नेमसनमाना। चाहभ
वन नारायणआई। करतप्रणाम नम्रसिरनाई।
राजकाज परहोत बहोरी। असवन नृपति प्रीति
नितजोरी। हरिप्रसादसब विप्रउनारी। देतश्रीव
नरनायकउरारी। अतिअनंद जनछितपनहोई।
धारतकरि प्रणाम सबसोई। एकदिवस नहिविप्र
प्रवीना। ललित इकादसि करव्रतकीना। द्वादसि
दिवस प्रात हरषाई। करिमज्जन भगवनसबदाई

सोऊप्रसाद हविर हरिमाला। जानिय्रगमन विल
ममहिपाला। रविविप्रनिज्ज कंवलगाई। तोलोग्र
ए भवनळितराई। उज्जवरसो प्रसाद भगवाना। दी
नोजाय न्टपहिं सनमाना। जवनरेम हरिसृज ग्र
नरागा। करन निधानकंठ निजलागा। उरपो
नाहि स्वेन कवदेखा। न्टपसंदिगाथ रिसकि प्रवेस
खा। दोहा। वोलेणकाउज हरुभये चतुरवाहु भग
वान। जोरहमाल प्रसादप्रभ भयोकेससितभान

६२
भ०
२

टीका। अबमै ओर भक्तीकाअद्भुत महातमजोहैसो
कथनकरताहूं कैसाभीमहातमहै किजिसकेश्रव
णकरनेसें श्रोताजनोके हृदयमै भगवानके चर
नोविषें प्रीती उपज आवतहैवेही चतौडगढका
राजा कि जिसकी पूर्व कथागायन होचुकीहै ति
सकेघरमै चतरभुजभगवानकी मनोहरमूरतीथी
तिसमूरतीके भजनसेवनकेलिये राजाने एकब्रा
ह्मणपुजारी वडाभक्तीमान देवाजीनामकरके।

गा था इह आप्या सो प्रजापालकी आज्ञा अनुसार भ
गवान कृपानिधानका तीनकाल वडी प्रीतीभ
कीसें भजनकरताथा और आपराजा प्रातःकाल
उठकर और सोचस्नान करकर अपना सवनि
त्यनेमकरता और फिर भगवानके भवनमें आ
यकर दीनभावसे प्रणाम करकर तिसतें उपरां
त न्यायकरके अपने राजकाजमें तनपरहोजाता
था ऐसेनिमराजाने एक्रीव्रतधारनाकिया हूआ

द्वा॰
भ॰
३

3

या और जबभगवानके भवनमें आवता तब दे
वाजी दीनबंधू परबठेहूये पुष्पोंमेंसें एकपुष्पमाला
लेकर राजाकोप्रसादकी रीतीपरनित्यदेदेतेथे और व
राजाप्रणामकरके आनंदस्वभावसे अपने कंठमें
धारनकरलेताथा एकदिन देवाजीने एकादशी
काब्रतधारनकिया हूआथा और द्वादशीकेदिनप्रा
ताकालउठकर विधीपूर्वक भगवानका पूजनकि
या राजाके आवनेमें कुछदेरजो होयगई तोवे दी

नानाथकी प्रसादमाला देवाजीने अपने कंठमे
डालराखी इतनेमें राजाजोआयगया तोतिसने
वेमालाउतार करके वडे सनमानसें प्रजापा
लकोदेदेई राजातिसमालाकोलेकर जवअपने
कंठमे धारन करनेलगा तवउसमे एकसेत के
स का विड़ावाललिपटाहुआ राजाकोदेखपडा
तवतोवडाअधामिक चितहोयकर कोपसे देवा
जीकोकहनेलगा कि ईसलण का चतरभुज

९२
भ
४

4

भगवान कृष्णहरि होयगये हैं जो इह मालामे लिप
टा हुआ सेतनके सम प्रकट भया है ॥१॥ चौपाई। असआ
देस बचन नरराया। जब अमरष बस उन्हहिं सुना
या। तब संकित त्रासत असबानी। नृपकहं ऊजबर
बदन बखानी। धाता करन्ह बिधाता होई। नृपति
न होहिं हृदक सम सोई। इह कच स्याम होत सित आ
ई। सेनहूं भूपति थिर न रहाई। तब नरनाथ सुनत
अस काहा। आन अमल पउज नहा दासि राहा। आव है

कालिभवनभुजचारी। निजनयननसबलेहुनिहारी

अबमैनाथविप्रनिजगेहा। पारनकरहुं रुचिरखत

एहा। देवानीहमनिकथनभुआला। मान्योउरनिज

ज्ञामविसाला। कहतकालिगतकवनहमारी।

हेहिंकृपालभक्तभयहारी। अमप्रकारचिंताम

नलीना। उजवरअन्नसलिलनजिदीना। निजअप

राध सहदयविचारी। कहतशरणअबदेवतमा

री। मातमोरसिवमअपमाना। करहिंअबपप

९२
भ०
५

भूपभगवाना।अवभरोसविनुत्रिभवनसांई।म
हिअवलंवआनकछुनाहीं।असहउजरतनिविरा
तआहारा।हृदयहमतिनिजभक्तउवारा।रहेसि
भवनचतरभजसोई।विगतअर्थज्ञामनिजवहोई
नवभगवानस्वपनतहिदीना।उठहुविप्रममभ
क्तप्रवीना।भोजनकरहुशोकजियखोई।कथन
तमारसत्यसवहोई।प्रातलेहुनिजनयननिहारू
मोरेसीसकेसमितचारू।दोहा।तनउजसोचवसे

५

कोचनिजनरूपकहूंदेहूदिखाय। जोपैहोहिं प्रसन्नमम नभक्तिमान लखिराय।२। टीका। इसप्रकार जब कोपसे राजानेब्रह्मणकोकहा तब भयसे संकित चित होयकरके देवाजी कहनेलगे किहेराजन विधाताका जोविधाताहे सोमहदकैसनाहे अब स्याकेअनुसार इहसंसारकेसबजोहैं सो स्वतहोजाते हैं ओरवेसेतभी फिरथिरनहीं रहतेहैं तबसुन करके राजाकहनेलगा किहेब्रह्मणआजहाद

८२ भ॰ ८

शीजोहै सो योगीहै इसलिये आजमै जाताहूं और क
लको प्राताकालहीं आयकर अपने नेत्रोंसे सबदेख
लेऊंगा। अबघरमै जायकरके व्रत पारनकरताहूं
ऐसेकथनकरकर राजाचलागया और ईस्वरदेवाजी
परमचिंताकेवश होयकर हृदयमै कहतेहैं कि
हे भक्तहितकारी भगवान अबकलको राजाके आ
नेपरमेरी कौनगतीहोवेगी और मै क्यादिखाऊंगा
प्रभूतमोरकेशालो स्वतनहीहैं इसीचिंतामैमगए

८२

भयेहूये देवाजी अन्न औरजलकाखान कुछनहीं
करतेभये वार वार एही कहतेहैं किहेदीनबंधू रा
जा आर्तकाल आयकर मेरा अवश्य अपमानकरेगा
तांतेप्रभु अव तुमारेही चरनोकी शरणहै और क
पानिधान तुमाराही भरोसाहै इसप्रकार भूखाप्या
सा रानीके समय भगवान को सुमरताहूआ तहां
भवनमैहीं पडरहताभया तोजव आधीरात व
तीतहोयगई तव भगवान भक्तसुखदान तिस

को स्वपनेमै प्रबोधकरनेलगे कि हेमेरेभक्त तुम उ
ठो और आनंदसे भोजनपावो तुमाराकथन जो
है सो सबसत्यहो जावेगा प्रातःकाल उठकर अपने
नेत्रोंसेमेरे केस सबस्वेत देखलेने तुमअपने हृद
यकासोचसंकोच सब त्यागकर मेरे सीससे मुकट
उतारकर राजाको स्वेतकेशोंकादरसन करायदेना
तिससमय आपहीं प्रजापालनेरेको भक्तिमानजान
कर प्रसन्नहो जावेगा।२। चौपाई। उठोदेखि अस

स्वपन पुजारी। ग्रायोप्रात भवनभुजचारी। कलि
नकीट प्रभुसीस उठायो। कचसितवाह हुउवत
पायो। बलकभक्त विरदप्रभुलेखी। हरषत हृद
य विप्र अवसेखी। बारंबार दंडवतहोई। करतप्र
णाम युक्त करदोई। अहोकवन प्रभुमम संसारा
दीननाथ दीनन रखवारा। मोरकुटिलकर जहिंभ
गवाना। राखीग्राज पैज सनमाना। ग्रसकहिवि
प्रमोदमनछावा। करिपूजनभगवानसुहावा।

९२
भ०
८

8

बहुरिसभक्ति मधुरफलल्याई । हरिहिं प्रथमभैनैवेद
लगाई । पाछें आपु विप्रकछु पायो । नौलो नरपति
भवनहरिआयो । जुगवर लिये संग समुदाई । वैठो आदे
व चरन सिरनाई । नवदेवा जी गिरा उचारी । लेहो अब
नरनाथ निहारी । जवा किहउ मनुज हरसेवा । देव
न देव चतुर्भुज देवा । सुनत भूप तोकर असवानी । उ
ठो रोष मानस निजमानी । सुरतिदेव चतुरभुजके
री । जवनरनाथ हगन निजहेरी । दोहा । भयो चकत

चिन लकत हग कचसित सीसमरारि। संभ्रमसोच
नलाग नप अदभुत हदयविचारि।२। टीका। तव
इसप्रकार स्वपनदेखकर देवाजी पुजारीजोथे सो
उठ करके अपने आसनपरवलेआये और प्रा
तःकालहोते चतरभुज भगवानके भवनमेंचले
आये तहांदीनवंधुके सीसमेंमकट उठायकर जो
देखनेलगे तोकृपानिधानके केसहूउवत सब
सेननहींपाये तवभगवानका भक्तरक्षक और भ

९२ भ. ५

कृपालविरदजोहै सोसत्यजानकर हरषकेवशभ
येहूये देवाजी वारवार दंडप्रणाम कर कर श्रोरदी
नगतीसे हाथजोडकरकहनेलगे कि ग्रहो प्रभूके
समान संसारमै दीनानाथ श्रोर दीनोकीरक्षा कर
नेवाला हमरा कोनहै किजिसकृपासिंधूने मेरेजै
से कुटिलकपटीकी पेजरावलेई श्रोर अपमान
से वचायलिया श्रेसेकथन कर कर फिर प्रीती
भक्तीसे भगवानका पूजनकिया श्रोर सुंदर मधु

५

रफलोंका नैवेद्यजोहै सो प्रथम क्षपानिधानकोल
गायकर पीछे आनंदपूर्वक कुछआपभीपायलि
या॥ इतनेमें राजाभी वल्लभोंकासमाज साथ
लियेहुये तहांआयप्रापत होताभया और भग
वानके चरनोंको प्रणामकरके वैठगया तबदे
वाजी कहनेलगे किहे नरनायक क्याहेराजन
अवतुम आयकरके देखलेवो देवोंकेदेवचत्र
भुजभगवान हुजेहैं कि जवा अवस्याहैं ऐसे

६२
म.
१०

10

तिनकावचन सुनकर राजाहृदयमें क्रोधकरके उ
ठखड़ाभया ओर चतुरभुजदेवकी मूरतीकेपास
आयकर जब देखनेलगा नवहीनवधूके सीसके
सुंदर केसजोहैं सो सब खेनहीं देखपड़े इस अद
भुत कौतुकको देखकर राजावडेभ्रमके वशहो
यकरके हृदयमें सोचनेलगाजातनाभया।१। चौपा
ई। सबकहं लागदिखावनराई। नवदेवा प्रभुकी
ट उठाई। भलहिं प्रकट करिदीन दिखरावा। सब

१०

कर हृदय असंभव छावा। तव निज कर हरि सीस
नरेसा। लीन उखारि जुगल सित केसा। कचन
मूल स्रवत भुजचारी। चली रुधिर सरिता इत
धारी। ता सह विलोकि भूप भयमाना। उन्ह हिं जो
रि कर वचन बखाना। महा मंद मति निपट असा
धू। मोहि ते भयो विपुल अपराधू। जो संदेह वि
बस जड़ भारी। कच बकु पायतन लीन उपारी
तास खेद आणि तड़ जनराई। दीन घाल कर बल्पा

८२ भ. ।। १

वहाई। सोमोहिदेखि परम दुखलागेउ। जासुनह
दयधीर डुनभागेउ। इहअपराध मोहि हितकारी
नमकुंकहु दुजनाथनिवारी। जानिसुगाधमोहि
होहुसहाया। करहुकृपालविशवरदाया। प्रभुपें
वरति मंद मतिमोरी। करहौंविनय जुगलकर
जोरी। श्रीगणनदवत देवभुजचारी। होहिंनिरोध
विशवव्रतधारी। आरतदीन ववन सुनिराया। दुज
वरवरत होत वसदाया। सनमरखजाय देवभगवा

।।

ना। नमतजोरि जुगलनिजपाना। कहहुकृपाय
सिंधुजनरंजन। भक्तबछल भवभीत विभंजन।
भूपअज्ञानमूढ़मतिहीना। जासनाथ अनुचितअ
सकीना। भ्रमवसप्रभु प्रभावविसराई। लागक
रनमीत्राजकुआई। दोहा। अवप्रतक्ष करुणाय
ननदेखिविहगन प्रभुताई। सोअनुचित उर गुनत
निज सकहिं नसतनमुखआई। यद्यपिकीन अ
साधुनृप प्रभु अपमान नमार। तद्यपिविदनहक

६२
भं०
१२

पायतन त्वजनन हकनिवार । कीजै छमा दयानिधी
हमसचरन निजजान । विप्रवचन सुनिकान भये
कोमल कृपानिधान ।४। टीका। फिरभगवानके
सुंदर सेवनकेस जोथे सो राजासबको दिखावने
लगा। तबदेवाजीने दीननाथके सीसमे मुकट
उठायकर भलीप्रकार सबको खेतकेशों कादर
सन कराया दिया हस अद्भुत भगनको देखकर लो
गसब अचरजके वशहोयगये तब राजानेमुराख

12

नाई करके अपनेहाथसे चन्दरभुजप्रभुके सीससेंदो

स्वेतकेस उखाड़लिये जबरहू अन्तर्धानकिया तबत

रतहीं तिनकेसोंके मूलसें एक सुन्दरमहधरकीधा

राजोहैहै सो चलपड़ी तिसकोदेखकरके राजाभयसे

व्याकुलहोयगया ओरहाथ जोड़कर देवाजीके आ

गेविनती करनेलगा किहे भक्तमै मंदमती ओर

महामूढ़ अमाधगवारहूं कि जिसने भ्रमके वश

होयकर भगवान कृपानिधानके सुंदरकेसजोहैं

८९
भ०
१२
13 त

सोउसकोउलिये और घोरअनर्थकिया देखोतिसीके
दश्रमसेंदीनवंधुके सीसनेंरुधरकी धारावहीचली
जातीहै इसअनर्थको देखकरमैंपरमडरवीहोयगा
याहूं और भयकेवशहोयकर मेरे हृदयमें धीर
जभीछूटगयाहै अव इससमय मेरे इसअपराध
के निवारणको हे हितकारी देवाजीतुमहीं साम
र्थहो मेरेकोमूढजानकर दयाकरके मेरीसहाय
नाकरो दीनानाथके आगे अनेकप्रकारकीविन

नीसें मेरीजडता ओरमंदता कथन करकर इस
चलतीहूई रुधरकीधाराकी शांतीकरवाईये इ
सप्रकार राजाकेमुखसेंदीन वचनस्रुनकरदेवा
जीतरतदयाके वश होयगये ओर भगवानके
सनमुखजायकर हाथजोडकरके दीनभावसे
विनतीकरनेलगे किहेकृपासिंधु हेसंसारका
भयहरकरनेवाले हेभक्तसुखदाय भगवान
इहराजाजोहे सोप्रभुआजानहे कछजानता

क

दृ०
भ०
१४

नहीं औरमफवुड़ीकाहीनहै किजिसने इहयन
चित अपराधकिया भ्रमकेवशहोयकर जद प्र
भूकेप्रभावको विसारकरके पीडाकरनेलगा
सोअवदीनघालकी प्रतत्प्रभुताको देखकर ति
स अपनेअपराधको हृदयमें विचारकरके प्रभू
तुमारे सनमुखनहीं आयसकताहै हेकृपानि
धान यद्यपि इसअसाधराजाने तुमारावुहत
हीं अपराधकियाहै तद्यपि दीनघालतुम सदै

१४

14

व ञ्चकनिवारणहो अर्थात सेवकोंके औगुणोंको
वरवसनहारेहो कृपाकरके इसपरक्षमाकरिये प्र
भुइह आपकेचरनोका सेवकहै इसप्रकार जवदे
वाजीने विनती उच्चारन करी तवदयाकीनिधीभ
गवानसुनकरके तरतही कोमल अर्थात प्रस
न्नहोयगये।५। चौपाई। श्रीगणनथारि इवततत
काला। भईनिरोथ दीन प्रतिपाला। विप्रस्रष्ट
नव वदन वखाना। जाहुभवन अव नृपति

सोच

दूर
भ॰
१५

सुनाना। सुनतभूप सहिमाचलिआयो। दुख्यतवि
कलँजियख्यायो। सेज्जासजनतसयन जवकीन्यो। वि
पतपसिसपनेनलवचीन्यों। भनतवदन अपसप्रकट
उचारी। सुनहुनाथनरवातहमारी। अवतें देवच
तरभुजपहा। चलेनरिंदतजनतवगेहा। तोरराज
सवसंपतिभारी। लेहिंमलेछछीन न्टपमारी।
स्वपनविलोकितरत अपसराई। उठ्योलीननिजस
चव बुलाई। दीन्योसकल वृतांत सुनावा। सत्पजा

15

१५

नितहिसीसपुनावा। सोचतखनतचरन सवधरनी
भावीदैव सवलसखवरनी। असप्रकार कलुका
लविहायो। नवदलीसदलगरजनआयो। देसनरे
सहरतसवतासा। कीनप्रचलित साहअनसासा।
सोपुजकमूरतिहरिकाहीं। अंतरवेधिदेसकलमा
हीं। लेतजननजनगयोसिधारी। अजहूंललित
मूरतिभजचारी। गोकलमाहिं विराजतसोई।
वितविस्वजानत सवकोई। असरहचरित चारु

६१
भ॰
१९

16

मनभावा। मैकछुवदनसंतजनगावा। दोहा। सम
नसकलसंसयदमनदुरतदोषअज्ञान। सरसकर
नभवभक्तिवरचरनकंजभगवान। ५। टीका। सो
हयरजोलहूकीधारादीन वंधूकेसीससेचलरही
थी नरतहीं शांतीहोयगई नवदेवाजी राजाकोक
हनेलगे किहेप्रजापाल अवनमप्रणामकरके
अपनेघरकोजावो नवराजादेवाजीकी अज्ञापा
यकर प्रणाम करके नरन अपने ॥

घरकोचलाआया परंतुखानपान कुछनहींकिया
सोचके वश व्याकुलचितभयाहुआ आयकरकेसे
जापरसोयगया तब स्वपनेमें एककोई तपसीआ
इ एराजाको प्रकट करके कहनेलगा किहे न
रनायक अब इहचवररभजभगवानजोहैं सोतेरे
घरकोत्यागचलेहैं और तेराराज कोस संपती
और सवसमाज इहसव मलेछआय करकेछी
नलेवेंगे ऐसेस्वपनकोदेखकर राजा तुरतउठ

खडगभया ओर मंत्रीकोबुलायकर सबहतांतसूना
यदेताभया तबमंत्रीप्रवीनसतप्रज्ञानकर सीसफे
र फेर पछतानेलगा ओर भी सबसेवकसयाने
सोचकेवस पृथवीकोनखोंसे खनते ओर क
हतेहैं कि अहोदैवभावीवडी प्रवलहै इसप्रका
रजवकछ समय वतीतभया तब दल्लीकेवाद
साहकादलजोलस करहै सोराजकरके आ
यगया ओर राजाका सबराजदेस छीनकरके

५२
भ०
५८
17
18

वादसाहकी अज्ञानरहांतहांप्रवलिनकरदेई
सोपुजारी भगवानकी तिस वज्रभजमरती
को अंतरवेधीदेसमैंलेगया अवसोहरीकी
मूरती सबलोगोंकोविदतहै कि गोकलमै
विराजमानहै इसप्रकार इहचरित्र मैनेहेसं
तजनो आपकेआगे गायनकरदियाहै इहकै
साभीचरित्रहै कि सरव उलदोष ग्रोर संस
य अज्ञानके नासकरनेवाला ग्रोर संसारमै

९२
भ.
१८

कृष्णभगवानके चरन कमलोंकी उत्तमभक्ती
जोहै तिसको हृदयमै अधिककरके उतपन्न
करनेवालाहै ।५। इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथेभ
गवदभक्ति महात्मे भाषाटीकायां देवाजी
चरित वरणनं नाम सरगः ॥

18

मीहांसिंहकृत

१८

अथकबीरचरित्रं। दोहा। नारायणपंकज चरन
विमल भक्तिवरदयन। सोमैकथाजथामती
करहुंवदनअवगायन। चौपाई। पूर्वजनममंसवति
गुणरासा। रतवेदांतशास्त्रअभ्यासा। भयोएकड
जज्ञानवसेखी। जासमकलजगमिथ्यालेखी। क
रमकृतअदीनसवत्यागी। केवलपुत्रपनतिहित
लागी। चित्रकाविकारजपरहोई। निननिरवाहक
रनउजसोई। अवसरएकसत्रकरलीन्यो। तंतवा

५८
भ०
१

हगवनगृहकीन्हा। तेनिजकरम निपुनप्रतिराहा
नाकरविप्रवदनग्रसकाह्ना। रचहैमोरवसनलव
मीती। मीनवविचविचत्रनरीती। वारवारग्रसता
सग्रलावा। ऊनवरवङ्गहिसदननिजग्रावा। ग्रा
वतग्रसैसाकठिनरुजतेहा। भयोऊविनव्याकुल
ग्रतिदेहा। पैउजवरउरसोचनथोरा। विगरहिं
रुचिरवसनजनिमोरा। जोमैहोतसदननहिं।
माहीं॥ लेनसधारि वसननि जकाहीं॥

ग्रसप्रकारग्रंबरउरग्रासा। उनकहंप्रबलरोगगन्बर
ग्रासा। म्रतबसभयोदिवसकछुपाई। छूटीनव
मनवासनाछाई। तंतवाहकरसदनसुहावा। सो
ग्रालयकरमवसग्रावा। तवपितुमातप्रीतिनिजतन
लालन। दिनदिनलागकरनतहिपालन। धरेउ
नामतहिकविरकवीरा। रूपसीलगुणनिपुणमति
धीरा। बालकालबालकजनसंगा। बालविला
सकरतबहुरंगा। हरहिंदेखिसंतउनग्रावत।

५८
भं०
२

2

नम्रतसीसधरनिधरनावत। ष्ठरवजननमतास्त
निजसोई। रह्योसमरगनविसरयोसोई। नि
जकुलकरमवैलवनराई। जनकरवचनसवदी
नसिखोई। यद्यपिवसधरमनिँजोई। लागपोकरननि
षुणवनहोई। नद्यपिजगाश्रमारजियजानी। रहावि
रक्तजनहुहृफ्तानी। असप्रकारकलुकालविहावा
पकदिवसतंतोकेउरआवा। शिवपुरिकवन प्रवस्था
सचाहू। जोमोहिरामभंजसहवेसाहू। कविउपदेश

ज

२

उदयिसंसारहिं। करनथारवनपारउतारहिं। अस
विचारिमानसहरषाई। आवासंतनसरणसुखदाई
दोहा। देख्योतहांकवीरजनरामानंदप्रचार। हर
हिंतेजगजोरिकरनम्रतविनयउचार। भन्योसंतस
ज्जनसबद जननजगतप्रदकाम। दीनदयानिध
चरननवमोरी दंडप्रणाम। मैकुविंदलघुजातिज
नलखिद्रुसारसंसार। सारसरणसंतननगुनन
प्रवआवागवहार॥१॥ टीका। अवमै और श्रीना

रायणदेवके चरनकमलोंकी निर्मलभक्तीकेदेने
वाली पवित्रगाथाजोहै सो कथनकर्ताहूं हेसंत
जनो इसकोकृपासेध्यानदेकर श्रवणकरिये पू
र्वजनमविषें जगतमें एक वेदांतशास्त्रके अभ्यास
वाला और ज्ञानध्यानमें परम प्रवीनब्राह्मणहोता
भया कि जिसने संसारको असार अर्थात मिथ्या
जानकर सब कर्म कर्तव्यजोहै सो त्यागदिया के
वल ही पुत्रकी पालनाकेलिये कुछकचित्रकर्मका

कि चित्रकारी करकर तिनकी उपजीवका कानिरवा
हकरलेताथा एकसमयवे ब्राह्मणवडासँमहीन
स्त्रलेकर तेन्हवाह अर्थात जलाहे केघरमैचला
गया सोजलाहा अपनेकर्म कातब्रमै वडाप्रवीन
था तिसको ब्राह्मणकहनेलगा कि भाई मेरेइस
स्त्रकावस्त्रनं अपनीचतराईसे वीचवीच संदरचि
त्रराखकरवनायदे ऐसेवारवार तिसकोंसम
कायकर ब्राह्मणजोहै सो अपने घरमैचलाआ

यानवज्वरमै आवतेहो तिसको वडेभारी कठिनज्वर
नेग्रसलिया तिसतें शरीरकरके वहुतव्याकुल औ
र दुःखीहोयगया परंतुतिसकाध्यान अपने तिस
वस्त्रमैहीं जुडारहा किमेरावे वस्त्रविगडनाजावे
जोकदाचितमै आपतिसजलाहे केघरमैहोता
तोअपने वस्त्रकोकवीविगडनेनहींदेता सुधार
लेता इसप्रकार वस्त्रमैहींध्यानजुडेहूये ब्राह्मण
का तिसप्रवलज्वररोगने ऐसाजीनलिया कि अ

नको एकदिनकालकेवशहोयगया अर्थात मर
गया और वेवस्तमें जो तिसकीवासना जगीहुईथी
सोनहींछूटतीभई तिसतें आलब्धकर्मके आधी
नहोयकर ब्राह्मणजलाहेके घरमैं आयजनम
धारताभया नवमातापितादेखकरके प्रीतीके
सहितदिनदिन वालककीपालनाकरनेलगे औ
र नामतिसकासुंदर कवीरधरदेतेभये सो रूपसौ
लक्षणकीनिधीवालक अपनीवालअवस्थामैं ।

७८ भ० ५

5

वालकोंकेसाथ वालक्रीडा और वालविलासकर
तारहता और जोकहीं साधब्राह्मणको आवतेदे
खता तोहरसेही पृथ्वीपरमाथाधरकर प्रणाम
करदेता तिसकोअपने पूर्वजन्मकास्मरणभी
जोंकासोंवनारहा कुछविस्मरानहीं जवस्यानाभ
या तवपिताने अपनीकुलकाकरम कर्तव्यजोहै
सोप्रीतीपूर्वक सवसिखायदिया कवीरयद्यपि
अपनेवंसकाधर्म अर्थात वस्त्रकाबुणनारचना

५

वशीवतताईसें करनेलगा तद्यपि ज्ञानविचारके
प्रसाद जगतको असत्यजानकर चित्तमेंविरक्त
हीं रहताभया इसप्रकारकुछसमयवतीतहो
यगया तबएकदिन तिसकेहृदयमें इहसंक
ल्प उतपन्नभया कि शिवपुरीजोकाशीहै ति
सविखें ऐसाकोन उपकारकीनिधीसंतमहात
माहै कि जोमेरेकोसर्व शास्त्रोंकेसार राममंत्रका
उपदेशकरके इसमहांविकट संसारसमुद्रसे

करनधारवत अर्थात मलाहकेसमान पारउतार
देवे ऐसेविचारकर हरषैमगणभयाहूत्रा क
वीरसर्वसुखदायक औरभयभ्रमकेनासकरने
वालीसंतोंकी शरणजोहै तिसकोचलात्र्याया।
तहांत्र्यावनेही कबीरने रामानंदजीका अतसेप्र
भाव औरप्रचारदेखा तवहरसेही दोनोहाथजो
उकर दीनवाणीसेविनती करनेलगा किहेसं
तउदार दीनसुखदायक औरदीनजनोके मनोर

थसफलकरनेवाले हेदयाकीनिधी अवमेरीनमारे
चरनोपरदंड प्रणामहोवे नाथमैकुविंद अर्थात
वहबुणनेवाला नीचजाती इससंसारको असार
जानकर श्रोर संतक्रपालनमारीहोशरणको
साबविचारकर अपने उद्धारकेलिये नमोरेद्वारपर
चलाआयाहूं ।।१।। चौपाई। वेसवभनेकथनसुनिता
सा। कवननामनवकहांनिवासा। कासीवसहूंदे
वसरितीरा। दासचरननवनामकवीरा। गुरुरामा

७८
भु.
७

7

नेददीनसहाया। तांकीशरणसंतनमैआया। अवप्रसा
दगुरुदीनसनेहू। मांगहूंतरणउदधिभवपहू। सं
तसननतअसतांकरवानी। बोलेहृदयहासमसवठानी
जोमलेछवपकरकछुछाया। सोनोहिकरहिंवदन
कसमरूपा। अससउपदेशज्ञानमतगूढा। तजहैहोहा
रसदननिजजाहू। मारवननरवैसमवकाहू। सुनि
कवीरसंतनकटुवानी। आवासदनआसउरमानी
हमरदिवसवहुरिनिनपासा। जायसर्ववनवचन

लेतनकवहूंजनन
हखदाया ४

७

प्रकासा। नवहूंनकीनसंतनसईकारा। भुनिनिरास
श्रावानिजद्वारा। पैनहिंहृदयहरनजड़ताई। नमो
नसंतनसरणसुखदाई। असप्रकारकछुदिवसँरा
न्यो। नवइकसंतसीलनिधिजान्यो। नहिपैंजायज
ऋजुगपानी। करिप्रणामअसविनयबखानी।
हेप्रभसंतदीनहितकारी। भनहुयतनकछुहृद
यविचारी। गुरुरामानंदहरणकलेसू। कसमो
हिकरहिंमंत्रउपदेसू। जोमेविकटसिंधुभवमा

९८
भं.
८

रा। गुरुप्रसादउतरहुंप्रभुपारा। संतकबीरसुनतमन
उछ्यागा। गुरुवरचरणप्रेममनलागा। अतिप्रसन्न
दायारसपागे। हरषिवदनअसभाषणलागे। जो
जनप्रीतिकुविरहविलोरे। रामानंदवनहिंगुरुमो
रे। श्रीमुखविमलमंत्रउपदेसु। करहिंघालभव ह
रनकलेसु। तोमेकरहुंकथनइकतोही। सुगमउ
पायकुरोजिमिमोही। दोहा। सेषनिसानकित
जिमदन सोआवतमतिधीर। करनहेतमज्जनस

दितविमलदेवसरितीर। नमकीजानिसिँजनदहि
रहारलगिनाम। तेपैंनिकसन यरहिंपगगुरुबर
ज्ञानप्रकास। सोकछुखेदविचारितव प्रभुदायाव
सहोय। रामरामअसरटहिंसबनव आधारसोय
पायश्छतमनमंत्र बरकरहगवनगृहकाहिं'वि
नरहिआनसपतनमोहिजानिपरनकछुनाहिं।२
टीका। नवरसप्रकार तिसकाकथनसनकरवै
सवजनकहनेलगे कितेरकानामहै औरकहा

सपन

जन

भ० ५९

निवासकरताहैं वेकहनेलगा किमैकासीमे गंगा
जीके किनारेपर वासकरनेवाला कवीरनामकर
केसंत भक्तोंकेचरनोका सेवकहूं दीनसनेहीऔ
र दीनसहायक गुरु रामानंदजीजोहैं तिनकी
शरणागतआयाहूं और तिनकीही कृपाप्रसा
दसें अब महांविकट संसार समुद्रजोहै तिसको
तरनेचहताहूं ऐसेतिसकीवाणी सुनकर वै
स्नवजन सब हासी कर कर कहनेलगे किजो

दीनसुखदायक और कृपानिधान गुरुरामानंदजी
मलेछकेशरीरकी कवीछायाभीनहींलेने होनेदे
कोहे मूढ ऐसा गूढज्ञानकैसे उपदेशकरेंगे म
दउठो ईहांद्वारसे चलेजावोनहीं तोअवीआयक
रके कोई वैस्नवमारपीटकर निकालदेवेगा ऐ
सेसंतोकी कटु अर्थात कडवीवानी सुनकरके
कवीरउदासहूआ अपनेघरकोचलाआया जब
दूसरादिनभया तबफिर नहांजाय करके तैसे

५८
भ०
१०

10

हीं कहताभया संतोंनेफिरभी कुछ हृदय मैं न
हीं राखा अंत निरासहोय करके घरको चलाआ
या इसप्रकार यद्यपि तिसकानिरादरभीहूआ त
थापि तिसनेसंतो की सुखदायक शरणकोजाना
जोथा सो नहींत्यागा ऐसेजवकुछदिन वतीतहो
यगये तब एकसुशीलसंत जानकर और तिस
केपासजायकर दोनोंहाथजोडकर प्रणामकरकै
दीनवाणीसे कहनेलगा किहेसंतहितकारी अब

१०

इयासेविचार करके उपायकहा किदासजनोके डुष
कलेशहरनेवाले गुरुरामानंदजी मेरेकोकैसेमंत्र
उपदेशकरेंगे किजिसतें मै तिनके प्रसादसें इस
महांविकट संसारसमुद्रसें सहजेहींपारउतरजा
ऊं ऐसेकवीरकी वडीकोमल और गुरुजीके चर
नोमे प्रेमभीनीवाली वाणीसुनकरके संतजोहे
सोदयाकेवशापसन्नभयाहुआ कहनेलगा किहे
भाई जोकदाचितनेरेचितमे इहरुचीअभिलाखाहै

७८
भ॰
॥

किस्वामीरामानंदजी गुरुहोयकर और अपना शिष्य जानकर मेरेको मत्र(वसे) मंत्रउपदेशदें तोइहवारताव ऊंअगमहै परंतु मेरेकोएकउपायकरनाहै किजि ससेतेंअपनेमनवांछित फलकोअवश्यपायलेवें गा सोक्याहै किकछुशेषरात्रीलेकर अर्थात कुछ घोडीसीरात रहतीपर गुरुरामानंदजी घरसेनिक लकर गंगाजीकेकिनारे स्नानकरनेकोजातेहैं तमऐसाकामकरो किरात्रीको तिनकेघरकेद्वारको ॥

क

दलीजमै आयकरकेसोयरहो तोजब ज्ञानके प्रकाश
करनेवाले गुरुकृपाल गंगापरजानेकेलिये अपने
घरसेनिकलैंगे तोद्वारकीदलीजमै सोयेहुये तेरेपर
तिनकाचरनजोहैसो अवश्यपडेगा तिससेंतेराकुछ
खेदविचार कर दयाकेवशभयेहुये गुरुजीमुख
से रामरामशब्द उच्चारणकरनेलगजावैंगे तबतु
मसोई रामनाम हृदयमे आधारकरकर और अ
पनी मनवांछितकामनाको पूरणजानकर तुर

५९
भ०
१२

12

नचरकोचलेजाना इसतेंविना नमारेमनोर्थको स
फलकरनेवाला यतनमेरेको ग्रोर कोई देवनहीं
पडताहै।२। चौपाई। मुनिकवीरतनाकर असकाहा।
करिप्रणाम संजुत उतसाहा। बोल्योतमहुं प्रथम
गुरूमोरे। वंदहूंवारवारपगतोरे। जोमोहिहारनहृ
दयकलेसू। असनवकीनसंतउपदेसू। विविधप्रसं
सिवदनमतिधीरा। करिप्रणामतववचल्योकवीरा।
अवसरपकपरवातिथिपाई। सुंदरस्वामिसदननिसि

१२

भाई। सोयोहाटदहिरमनलागी। रामसंतडनकेंविन
रागी। गुरुसपर्शपदजाविनजांके। देखनरजनिस
विरहगयांके। नवनिसिशेषसुखदजनसजन। गु
रुवरकरनदेवसरिमजन। क्रमानिलादिलालिन
करलीने। निकसेरामचरनचितदीने। नाचनहार
चरन जवधरयौ। सोउरजनकवीरपरपरयौ। रूच
कनरघुवर रामउचारन। गवनेस्वामिहरनउरव्या
रन। हगमसिडकरि संस्तनिस्वारथ। जनकवीर

५८
भ॰
१३

13

तवभयोक्तनारघ्य गुरुमावेरामममंत्रअसपाई। करिप
एगमनिजचल्योसिधाई। आवतसदनभक्तिमनली
ना। मद्रमालभूषनतनकीना। रटतसुरामममंत्र
जगसाहू। वन्योललिनवैस्नवव्रतधाहू। तासुविलो
किपरममनमाखे। वैस्नवसकलहेषअभिलाखे
दोहा भनेअधममतिहीननव इहुआचर्णीकसकीन
तिलकमालमुद्रादिसजिकपटभेषधरिलीन ॥१
टीका ॥ ऐसे तिस संत हितकारीका ।

१३

कथनसुनकर कवीरवडेहरषउनमाहसे प्रणाम
कर कर कहनेलगा किहेसंत कृपाल तुमनेमेरे
पर अनंत उपकारकियाहै जोहृदयके सवकलेश
दुखहरनेवाला इहसुंदर उपदेशदियाहै मेरेप्रभु
सगुरुप्रभू तुमहीं हो अव तुमकोमेरी वार वार दं
डप्रणामहोवे ऐसे अनेकप्रकार शलाघा करकर
कवीर चरनोपर सीसनायकरके आनंदसे घरको
चलाआवनाभया तवएकदिन सुंदरपरव औरसु

५८
भ०
१५

14

भक्तिथीपायकर रात्रीकेसमय गुरुरामानंदजीकेघ
रपरचलाआया औरहृदयमै राममंत्रकी उनकेवा
अभिलाखावाला भयाहूआ तिनकेद्वारकीदली
जमैलेटापडरहा तहांगुरुरामानंदजीके चरनके
स्पर्शकी इच्छावाले कवीरके नेत्ररात्रीभरनिद्रा
केवशनहींहोनेभये तिनके आगमनकोदेख
तेहीथ्यकतहोयगये जवकुछशेष अर्थात्थोडी
सीरात पीछेरही तव सज्जन सुखदायक और दी

१५

नहितकारी गुरुकृपाल कुशातिलादिहाथमें लिये
ग्रोर भगवानके चरनोंमें चितदियेहुये गंगाके स
नानकरनेको घरसे निकलकर चलपड़नेभये जब
द्वारकी दलीजके बाहर चरनधरतेवे कवीरके
हृदय ग्रर्थात छातीपरपड़ा तुरतजिसका खेदवि
चारकर दीनोके दुखहरकरनेवाले गुरुरामानंद
जी ऊचककर मुखसें रामराम उचारतेहुये ग्रागे
को चलेगये तवकवीर ग्रपने मनोर्थको सहजेहीं

७८
भ.
१५

सिद्धकरके जगतमै कृतार्थहोजाताभया गुरुजी
केमुखसे राममंत्र पायकर प्रणामकरके नरतव
रकोचलाआया तहांआयकरके भक्तीमैलीनभ
याहुआ सुंदरतिलकमालामुद्राजोहै सोधारले
ताभया और संसारमै निस्सार राममंत्रकोजप
ताजपता वडेउत्तमव्रतनकेधारनेवाला वैसवभ
कृवनगाया नव ऐसेतिसकी उत्तकृष्टा अर्थात
उत्तमताई औरभक्ती आचार देखकरके संपूर्ण

१५

वैस्नवों के मन मैं द्वेष उतपन्न होय जाता भया और को
पके वचनों से कहने लगे कि अरे अधम बुद्धी के ही
न मूढ इह तेरा कौन आचार धर्म है कि हथा ही तिल
क माला मुद्रा धार कर कपटी वैस्नव मन बैठा है
जड देखेतो तेरे को कैसा दंड देते हैं। १। चौपाई। तव
कबीर उर भक्त उवारे। भेष टेक जग राखन हारे। स
मरत भयो वदन मृदु वानी। मन ही संत ज्ञान गुण
खानी। रामानंद मोर गुरु देवा। जहि प्रसाद जन सेव

७८
भ.
१९

तिलेवा। राममंत्र मंत्रलखवेकरना। वेसवपरमकी
नआचरना। सनिकवीरमखववचननवीना। गुहम
नजाय कथन तिनकीना। तेअनविनसनि हृदय
निसाये। जनकवीरइतलीनबुलाये। करिकारितास
विविधविसकारा। भनेस्वामिजनकोपअपारा। अरेम
कमति अधममलीना। मेजफतोहिमंत्रकवदीना
इहकस मखाकीन चतराई। तवकवीर चरन
नसिरनाई। भनोकथन कछु अनविन मोरा

16

१९

दमहूनाथजनसेवकतोरा। नवकररयनशेषनि
सिषाई। प्रभुसनानहितचलेसिधाई। मैनिजसफ
लमनोरथहेतू। रह्योसोयतवदहिरनकेतू। मोरेव
कुवरनप्रभुधरयो। रामरामनववदनउचरयो।
जनग्याधारसोऊकरिलीना। अमउपदेशमंत्रप्रभु
दीना। दोहा। स्वनिस्वामीग्रसकथनतहिसोस्वमणि
उरकीन। सत्यवीनउपदेशनिज भयेहरषसुखलीन ४
टीका। इसप्रकाररवैसव संतोंकाकथन स्वनकरक

भ. ८८

वीरजोहै सो जगतमै भेषकीलज्जाराखनेहारे औ
रभक्तजनोकेरखवारे नंदडुलारेभगवानको स्म
मरकर वडीकोमलवाणीसे कहनेलगा किहे
ज्ञानगुणनिधान संतजनो स्वामीरामानंद जीजो
हैं सोमेरेगुरदेवहैं किजिनकेप्रसादतें मैने सं
सारमै सर्वसुखोंकेदेनेवाला तारकराममंत्रग्रहण
करकेइहनिरमल वैस्नवधर्मजोहै सोधारणकियाहै
ऐसेकवीरकावचन सुनकर वैस्नवहृदयमेवडाआश्चर्य

१८

17

मानकर तुरत जायकरके गुरुजीकोसबप्रसंग सु
नायदेतेभये तबस्वामीसुनतेही कोपसेलालवरण
होयगये औरततकालकबीरको बुलायकर अनेक
प्रकारका तिरस्कारकरकर कोपकेवचनोसेहीं क
हनेलगे किअरे मूढमनीहो अधममलीन जड
कहो मैनेतेरेको मंत्रउपदेशकबदियाहै इसतेने
मुखा अर्थात झूठीका चतुराईकरीहै इसप्रका
रगुरुजीके मुखसेवचन सुनकर कवीरकहाथजो

१८
भ.
१८

18

इकर विनती करनेलगा किहेकृपानिधान मेरा कुछ अयोग्यपसाकथनहै आप कृपाकरके मे वककोक्षमाकरिये नवकीराझीमे कुछथोडी रातरहती जानकर आपस्नानकोजानेकेलि ये घरसेवाहरजोनिकले तोमैअपने मनोर्थ के सफलकरनेको प्रभू तुमारे द्वारकीदलीज मै पडाहूआथा तहांदीनवंधू तुमाराचरन मे रेवक्ष अर्थात छातीपरजोपडा तोतिसतने मे

ताकुछखेदमानकर आपने रामराम शब्दउचारण
किया दीनदयालमैंने सोइसुनकर अपनेहृदयमैं धा
रनकरलिया इसप्रकार कृपासिंधु तुमने मेरेकोमं
त्रउपदेशदियाहै और मैंआपकासेवकभयाहूं ऐसे
कबीरकाकथनसुनकर गुरुरामानंदजीने आपने
हृदयमैं स्मरणविचारजोकिया सोअपनेउपदेश
का सत्यजानकर परमहरष औरसुखको प्राप्त
होजातेभये।४। चौपाई। नानहरन उखंडरतकलेस

जोनवलीन सोरउपदेसू। तांकेभजहुकपटभ्रमत्यागी
संतनहोहुभक्तिअनुरागी। रामभवतारकजगजोई। मि
लेग्यासुलभतोरेसुनसोई। जवगुरदेवकीनअसदाया।
नवविलोकिवैसवसमदाया। वनेमीनसवद्वेषविहा
ई। जनकवीरचरननसिरनाई। आसिषलेन सद
ननिजआवा। रामचरनपंकजमनलावा। भक्ति
प्रसाद भक्त भगवाना। भयोविदतसवलोग म
हाना। निजकुल करम करत संसारा ॥

१८
भ०
१९

19

१५

पालनभक्तजननिजनदारा। अवसरएक सुसैनक
वीरा। विरचनवीरहुविरमतिधीरा। नासुनगरवे
चनजबचलयो। नवइकहुइविप्रमगमिलयो। वि
घनसीतनवसकंपनदेह। वसनविलोकिहगनअ
सनेह। नमनतउविनदीनमखवानी। वोल्योजक्त
जगलनिजपानी। देविसिथलमम कंपनगाता।
जोउपकारकरहुतुबदाता। तोइहचारुचीरमोहि
देहो। दीनउविनआसिखअवलेहो। उजआरनजव

वचनप्रलापा। सुनतकबीरभयोवसदाया। ताकेनि
कटजायगतधीरा। दीनविदावियर्थनिजचीरा। देखि
विप्रनववदनउचारा। जोतुवकीनभक्तउपकारा।
तोइहदेहसकलपटमोरे। रामप्रसादइमनफल
तोरे। लोकसुजसपरलोकवडाई। नवकबीरमान
सहरषाई। तासुसकलपटनतलणदीना। लगेपा
करनवनिसोचप्रवीना। आजमोलविनवसनया
होरी। रहहिं व्याधिनजननी तियमोरी ॥

20

छूटेजाहुंकवनविधिमोहा। रहोभीनवसमोचवनप
हा। इतकवीरउरविंततसोई। उतआगमनप्रतीतन
होई। लघ्यनविकलपतनिजतमाता। तवभगवा
नभक्तजनत्राता। दोहा। विप्रसरूपअनूपधनविन
जतसदनकवीर। आयेप्रणतारतहरनधरनजनन
उरधीर। बोलिनिकटतहिजननिप्रभवँनप्रबोधन
कीन। इहधनलेहु कवीरमहिनिवाहँनदीन
सोगावसोकछुकाजवसआनबोरमतिधीर। अस

५८
भ.
२१

21

निनकहंसमकायकृतमयेल्पनजउवीर।५।टीका
फिरगुरुजी कहनेलगेकिहेपुत्र ग्रवतैनेजषकले
श और पापोंकेनासकरनेवाला मेराउपदेशजो
लियाहै तोतिसकोहृदयका सवकपटभ्रमत्या
गकर निरन्तरहोयकरकेभज और प्रेमप्रीतीवा
लाहोयकर भक्तीमेहत्पहो इहजगतमैपरमप
वित्र तारकमंत्रजोहै सोउत्रनेरेकोवडाह्मगम ओ
र सहजहीं प्रापतहोयगयाहै जवइसप्रकार गुरु

२१

रामानंदजीने कृपाकरकेकहा नवलिनकीदयाह
हीदेखकरके वैसवनोष्ठे सोसवद्वेषकोत्यागक
र मित्रभावसे आनुगृहकरनेलगजानेभये तिस
नेउपरांत कवीर गुरुजीकेचरनोपरसीसनाय
कर और सवसंतोकोवंदनाकरकर आसीसा
पायकरके रामरामरटनाहूआ घरकोचलाआ
या नवनैदिनदिन अधिकहोभगवानकृपानिधा
नके चरनकमलोंमै सनेहकरकरभक्तीके प्रसा

८८
भ०
२२

इसें भक्त प्रधान होयकर सबलोगोंमें उजागर हो
जाता भया और नित्य अपनी कुलका करम कर कर
माता और स्त्रीकी पालना करता रहता एकदिन क
बीर एक वस्त्र त्यार करके तिसके वेचनेके लिये न
गरको चला जाता था तब मार्गमें एककोई वृद्ध
और दीन दारिद्री ब्राह्मण तिसको मिल पड़ा सो के
साकिसी तरसे व्याकुल भया हूआ थरथर कांपरहा
था कबीरके पास तिसने वस्त्र जो देखा तो वर्ड दुःखकी भरी हूई

२२

दीनवाणीसे हाथजोड़कर विनतीकरनेलगा कि
हेदातामेहड औरसिथलशरीर सीनकरके व्या
कुलभयाहूआ थरथर कांपरहाहूं तेउपकारकर
के इहअपनावस्त्र मेरेकोदे और मेरेडखीदीनकी
सुंदर आसीसाजोहैसोले भगवानतेरा लोकपर
लोकमेभलाकरेगे ऐसेतिसकी वडीदीन और उ
खकीभरीहूई वाणी सुनकरके कवीर तरनदया
केवसहोयगये ब्राह्मणकेपासजायकर तिनका

23

लग्याथावस्त्रकाडकरकेदेदिया तवब्राह्मणतिस
वस्त्रकोदेषकर तैसेहीं दीनवाणीसे कहनेल
गा किहेदाता जोतैनेउपकारकियाहै तोइहसव
कासववस्त्र मेरेकोदे तेरेकोभगवानकी कृ
पासे उसकाअनंतफलप्रापतहोवेगा औरइतं
लोकमेवडेसुजस और वडाई कोपावेंगा जव
इसप्रकारब्राह्मणनेकहा तवकवीरने तिसकोसा
राहीवस्त्रदेदिया पीछेहृदयमैविचारकरनेलगा

किश्रहोवरमे अन्नमात्रतोकुछभीनहीहै इसीवस्त्र
के मोलसे निरवाहहोताथा आजमाता और स्त्रीकी
भूखसे कादशाहोगी अबखोली ह्रायघरमेकैसे
जाऊं और तिनकोजायकर क्यादेऊं इसीसोचमे भ
यभीतहोयरहाहै ईहांकबीरका ग्रेसेचिंतनकरना
और उहां भूखसेव्याकुलहुई स्त्री और माता तिस
के आगमन अर्थात आवनेका मारगदेखरही
हैं इसप्रकारतिनका कलेशदेखकर भक्तोंकीर

५८
भं०
२४
24

ह्याकरनेवाले शरणागतपालक और भक्तोंकेहृदय
कोधीरजदेनेवाले भगवान ब्राह्मणका वेशअनूप
रूपधारकर तुरततिसके घरमेंचलेआवतेभये त
वकवीरकी माताकोपासबुलायकर कहनेलगे
किमाई तेरेपुत्रकवीरने मेरेकोतुमारे निरवाहके
लिये इहकुछधनदियाहै सोतुंले औरवेआपकिसीकार्जकेलि
ये कहींऔरठौरगयाहै थोड़ेदरकेपीछेआयजाताहै ऐसे
तिसकोसमझायकर औरवेधनदेकरक्षपासिंध तहांतेअंतरधानहोयगये। ५। २४

चौपाई। नवपुरकवलोगनसुनिपावा। गयोकवीरसद
ननहिआवा। कोजनतासुयतनहवकीने। आयेसक
ल संगनिजलीने। भेनदीनयन नमहंपठाये। आपुन
भवन कवन हितआये। नवकवीरमानसनिजजाना
रहकीन्यो कौतकभगवाना। मोरविलोकिविदश्रम
स्वामी। भयेसहायजननअनगामी। अहोसत्यभगवा
नसहाये। वतसलभक्तवेदस्तुतिगाये। आजयधन्यइ
हसंवतिमाता। जहिंइनहगनदरस सुखदाता। पा

७८ भ. २५

25

बाहुबलउदंडभवभारी।असकवीरमखविगिराउचारी।जे
धनकृपासिंधुहरिदीना।तेविभक्तसंतनकहंकी
ना।निजकुलकरमसकलपरिहरयो।रामसरोज
चरनउरधरयो।सरवविस्वपालकभगवाना।अ
सब्बाधारभक्तउरठाना।सुनतविप्रभगवनधन
दीना।तहिपैंआय कथनअसकीना।अरेकवीरसदन
नबहरी।काहसंतदीमोधनभूरी।वृथाविभक्तकोन
सबकाहीं।हमकहंभक्तदीन कसनाहीं ॥

हमहुलेवहठजननिजभागा। नवकवीरउरमोचनला
गा। अवतोनहिंन सदनकछुआना। इननेंछुटहिंदे
व कसमाना। उरपनलजितभवनतजिसोई। तुमेजा
यचिंतावसहोई। तुजगएभयेहारथिरनासा। कव
कवीर आवनउरआसा। दोहा। नवभगवन वतसल
भक्तधृतवीरकलरूप। आयलेनथनसदनजनहरन
त्रासभवरूप। ६। टीका। नवनगरके लोगोंनेसुना
जोकवीर घरसेकहीं वाहरगयाथा फिरनहींआया

क

५८
भ०
२६

28

नवलोगतिसको खोजकरवडे यतनहठसे साथकर
केलेआये और कहनेभये किभक्तनमने घरमेधनमे
जटिया आपकोंनहीं आयेथे इसप्रकारधनकीवात
सुनकर कवीर हृदयमे जानगये कि इहकौतुकतो
भक्तहितकारी भगवाननेही कियाहै मेराश्रम और
कलेशदेखकरके कृपासिंधुसहायकभयेहैं अहोभ
गवान सत्यकरके वेदपुराणोंने भक्तवत्सल गायन
कियेहैं आजजगतमे इहमेरी माताधंनवडे उदयभागें
वालीहै

२६

किजिसने अपने नेत्रोंसें संसारके पापकलेशोंके ना
सकरनेवाला सर्वसुखदायक भगवान कृपानिधा
नकादरसनपायाहै ऐसेकथनकरकर कबीरजोहै
सोवेभक्तपाल कादियाहूआ धनसव अन्तर्थीसाथ
ब्राह्मणोंकोबांटदेताभया और अपनीकुलकाक
र्म धर्म सबत्यागकर केवल रघुनाथजीके चरन
कमलोंको हृदयमैधारकरके जगतपाल रघुनं
दनकेही भजनस्मरणका आधारकरलेताभया

८८
भं०
२८

नवनगके और और ब्राह्मण भगवानके दिये हुये तिस धनको हणकर भक्तसहके पास आयकर कहने लगे कि हे कबीर हम ने सुना है जो तेरे को किसी संत ने दया करके बहुत सा द्रव्य दिया है सो तैने हमयाही सब को बांट दिया है अरे भक्त हम को क्यों नहीं दिया इहतैने क्या अपजस लिया है भाई हम तो हठ करके भी अपना भाग अवश्य लेलेवेंगे ऐसे तिन ब्राह्मणों का कथन सुनकर कबीर हृदय में चिंतन करने लगा कि अब

27

२८

तोघरमै श्रोरथननहीं है देवइनसें मेरेप्राण केसेछुटें
गे तबतिनकेभयसेलज्जा श्रोरचिंताकेवशभयाहुश्रा
कबीरकहीं निरजनश्रस्थान विखेंजायकर छिपर
हा श्रौर ईहांब्राह्मण लोगश्रायकर तिसके द्वारे
मेस्थितभयेहुये देखरहेहैं किकबीर घरमे क
बश्रावताहै तबश्रपनेजनकी हानीविचारकर
इससंसाररूपी कूपकाभय हरकरनेवाले भ
क्तवत्सल श्रोरदीनहितकारी भगवान कबीरका

५८
भ०
२८

28

रूपधारेरूये धनलेकरके नरनतिसके घरमैवलेश्रा
वतेभये।६। चौपाई। इनउनफिरनवहूरिभगवाना।
होनहारपिरभक्तसुजाना। लगेदेनधनविप्रनरू
रा। कीनश्रभिषेसवनकरहरा। सोजवगायेसुजस
गुणगाते। नवभगवानभक्तजनज्ञाते। यरिनिजवि
प्ररूपश्रभिरामा। रहेसोकवीरलपतजहिंवामा। तहं
श्रायप्रभुभाषणलागे। कान्हवईहांकरनवडभागे।
नोरेभवनइश्यसंभारू। होनविभक्तभक्तबतधारू।

देवढ्ढकसनजायअसमोभा। चल्योकवीरस्हननतमन
लोभा।भवनभूरिरवनाहरगदेखी। चरिनचाहककढु
जाहिंनलेखी। धन्यकवीरस्हजसअसगाई। लियेजा
नधनढजसम्हदाई। नवढ्ढंकवीरजानिजियलीना।
इहचरित्रमेरेप्रभुकीना। मोहृस्हजसदीन्योजगभा
री। करिकैसनककअसभक्तउवारी। स्हननलोगअसया
मवसैया। देनकवीरविपुलधनभैया। जाचनहेतस
कलमिलिआये। नवकवीरदेवेन अकुलाये।भयो

५८
भ॰
२९

29

विभक्तजवनधनराह्हा। दैवअजामकरहूंअवकाहा
असविचारि बिलपनअधीरा। भयोनजननिजसदन
कबीरा। एकबारवधुकरगहिपानी। लागेपान्टनकर
न स्तखमानी। देखिअसंतअधमअगरासी। लागेक
रनसकलनहिहासी। साधुसंतजनहगननदेखी।
करनसोचउखमानिवसेखी। वहुरिअसंतसंतजन
होई। गवनेरागहेषवसहोई। नवउनमनवारतिय
संगा। जनकवीरन्तपहारउमंगा। दोहा। आवादरस

२९

नकरन न्दपभक्तोवदनधुनिमाथ। भाविह्नपनक
वीरकक्षु गस्नोवारवधुद्दाय। नवकवीरन्दपद्दार
स्थिर देहिविमलवरवारि। करिह्नरवमवेलागड
त अंजलिभरभरडारि।७। टीका। नवप्रथमड
पर उपर फिरकरके फिरभक्तपालभगवान अ
पनेभक्तके भेषमे तिसकेद्वारपर स्थिनहोयक
र अनथीब्राह्मणोंका धनदान देदेकर सबके
हृदयका मनोर्थहरणकरनेभये सोसाथवस्त्र

७८
भ०
३०

30

गजवधनको पायकरप्रसन्नभयेहूये अनेकप्रका
रका सजसगायनकरते करते आपने आपने चले
गये तव भक्तजनोंकी रक्षाकरनेवाले भगवानव
डासुंदर ब्राह्मणकारूपधारकर जहांकवीरत्न
पतभया हूआथा तहांजायकर ऐसाकहनेलगे
किहेवडभागी तूंईहांकाकरताहैं तहांतेरेघरमे
तोसाधब्राह्मणोंको प्रसन्नकरकर और मुठीभरभ
रइन्नदिया जाताहै भक्तने तिसशोभाकोजायकर

३०

कोंनहीं देखताहैं ऐसे भेषधारी ब्राह्मणकावचन
सुनकर तिसरचनाशोभाके देखनेकालोभीभया
हुआ कबीर निरभयहोयकरके तुरतचलपडता
भया घरमैंआयकर तिसरचना औरशोभाकोद
खकरबडे अचरजकोप्रापतहोयगया कुछको
नकलखोनहींजाताहै धन्यकबीर धन्यकबीर ऐ
सासब्द गायन करतेहुये साथब्राह्मणधनलि
येजातेहैं तबकबीर अपनेमनमैंजानगया किइ

क० भ० ३१

ह चरित्रमेरेही प्रभूनेकियाहै औरदीनबंधूने मेरेको
संसारमे सजसबडाईदियाहै इतनेमेंग्रामांकेलोग
सुनकरके कि भैयाकबीर धनवांटरहाहै मांगने
केलिये सबधावनेचलेआये तबतिनकोदेखक
रके कबीर व्याकुलहोगया औरहृदयमे विचारक
रनेलगा किधनजोथा सोतोसबबांटागया अबघर
मेकुछभीनहींहै देवइनकोकहांसेदेऊं औरमैका
यतनकरूं इसप्रकारचिंतनकरकर भयऔरहा

३१

नीकामारा कबीर घरकोत्यागकर विरक्त अर्थात
बाउलाबनगया और एकवेस्याका हाथपकडकर
तिसकेसाथनिरलज्जभयाहुआ नृत्यगायनकरने
लगजाताभया तब अथमनष्ठपापकीखानी अ
संतलोगजोथे सोतिसकोदेखकरके सबहासी
करनेलगपडे औरसाधु संतबडे उत्तमपुरषजोथे
सोतिसकीदशादेखकर बडेडखसोचकोप्राप
तहोजातेभये तिसतेंउपरांत फिरसंत असंतदोनो

७८ भ॰ ३२

32

हीं हरषहोकेवशभयेहुये अपने अपने घरोंकोच
लेगये नवभक्तीमे उनमनभयाहुआ कवीरजिस
वेस्याको साथलियेहुये अभयहोयकर राजाके
द्वारमे चलाआया राजादेखकर और सीसफेरक
रकहनेलगा किदेखो इहकवीर नोअवशप बाउ
लाहोयगया जोइसवेस्याकाहाथपकडाहुआहै
नवकवीरराजाके द्वारमे निर्मलजलका कुंडदेख
कर तहांसे सर्वदिसाकीवोर मुखकरकर और

अंजलीभरभर करजलसींचनेलगा। ८। चौपाई।
नवरूप भयोवदन समकाई। इहकाकरहु भक्त
चतुराई। सनिकवीर असभूपविलासा। बोल्योव
दनवचन निरत्रासा। अवइहिसमययसनहु नर
नाहा। जगननाथ पावन परमाहा। नारायण
करपावकराहा। तासचरन तपलोदनदाहा। मै
नहिंशांतिकरनहितकीना। इहसुयतनकलुभू
पप्रवीना। सुनतनरेसहृदयविसमाये। नहिंहह

५८ भ. ३३

नहुनदीनपठाये। तिनकुंजायप्रजकजनपासा। भू
पकथनसबवदनप्रकासा। नपतोदनपबनापग
जारा। भन्योमरमप्रजकनवसारा। जनकवीरहुत
सिंचनवारी। पचकतापपगदीननिवारी। हूतन
आयभूपसनवाचा। नाथकवीर कथन सबसा
चा। इतउनदहूनठौरप्रकटाये। धन्यकवीर भक्त
जगआये। भूपप्रभावदेखिहगपहू। गवन्योज
नकवीरकरगेहू। जान्योसिउभक्त भगवाना।

33

३३

मिदेोक्तनरकमोहयअभिमाना। नवकवीर संजत
अनुरागा। करिसनमानमधुरमृदुवागा। बोल्यो
आजधन्य जगमोही। तापरधन्यधन्यनृपतोही।
जोमोमेनिरधनजनगेहू। धारिचरननवदीनस
नेहू। भलोकीनसबलोगउजागर। कहियेअ
बनैरसगुणनागर। कसआगमनदीनगृहतोरा
अनुचितकीननाथबरजोरा। मैकबीरजनदास
नमोरा। पठोनबोलिलिलनिजहोरा। सुनिन

५८
भं०
३४

34

प्रेमअमसकोमलबानी। बोल्योबदनजलजजगपानी।
भक्तप्रभावतोरजगभरयौ। मोहिअजानकछुजानि
नपरयौ। सोउरविषयमोरजछनाई। तुमहुसंतस
जनसुखदाई। दोहा। अबमोरेकछुकरहुनव भक्त
कथनशिवकाई। जोमैसेवनलेहुंजगानिजअभिष्ट
फलपाई।९। टीका। तबराजादेखकर और सभका
यकर कहनेलगा किहेभक्ततुम इहक्याचतुराईक
रतेहो जैसेराजाकाकथनविलास सुनकर क

वीरनिरभयहोयकर कहनेलगा किहेराजन अव
इससमय जगननाथपुरीमें भगवानकापाचक अ
र्थात भोजन वनानेवालाजोहै तिसकाभानकी तप
न पीछेसें पाउं जलगयाहै सो मैंनेतिसकी शांतीके
लिये हेप्रजापाल इहकुछयतनकियाहै तवराजा
सुनकरके वडेअचरजको प्रापतहोयगया औरति
सवारताके सतजाननेकेलिये तुरतअपनेहलनज
गननाथ पुरीमें भेजदिये तिनहलनोंने तहांभगवान

भ०
३५

35

केषजनोंकेपास जायकर राजाका कथनजोथासो
सवकहसुनायदिया तवषजनोंने सहननेहीं कहिदिया
किभगवानका पाचिकजोभोजन वनानेवालाहै
तिसकाचरन भानकीपीछसे सन्पकरकेजलगया
था परंतु कवीरने वडीसहायताकरी किततकाल
जलसिंचन करकर तिसकेचरनकी तपतकोदूर
नहीं शांतीकरलिया इसप्रकार सुनकर औरहू
तोंनेआयकर राजाकेआगे सव सपष्टकरकेसुना

यदिया किमहाराज कवीरजीका कथन सबसांचा
है और इहभक्तप्रधान जगतमैधन्यहैं देखियेईहां
जहां दोनोठौरप्रकटहोयकरके अपनाप्रभावजोहै
सोदिखायाहै नवराजाइसप्रदभ्रुतको सुनकर
और महाप्रभावदेखकर नम्रभावसे तरत क
वीरकेघरचलागया औरप्रणामकरकरजानलि
या किइहतोपरँसिद्धभगवानके इष्टभक्तहैं हृ
दयकाअज्ञान औरमोहभ्रम कनरक इत्यादि स
म

५८
भ.
३६

36

बसिटगया ऐसे राजाको देखकर कबीरप्रेमसे बड़ा
सनमानकरकर मधुरवाणीसे कहनेलगा किआ
जजगतबिखेमेधन्यहूं तिसपरहे प्रजापालनमभी
धन्यहो किजोमेरेजैसे दीननिरधनके घरमै चर
नधारकर प्रभूतमने भलीप्रकार सबलोगोंमै
उजागरकरदिया औरजगतमै मेरेकोसुजस
कापात्रबनायदियाहै अबहेगुणप्रवीन राजन
कहियेकिइसदीनके घरमै कौनकारण आग

३६

मन अर्थात भावनाहुआहै नाथ इन्होंनेआपनेव

डाअनुचित और जोरावरीकरीहै क्योंकिमैनेमा

रादासपुथा नहांआपनेघरकेद्वारमेंही क्योंनहींउ

लायभेजा ऐसेकबीरकी वड़ीकोमलवाणीसुन

कर राजाहाथजोड़कर कहनेलगा किहेभक्तप्र

धान तुमाराप्रभावजो जगतमें प्रगटहोयरहाहै

मैंअजानतिसके जाननेकोसामर्थ्य नहींहोयस

का सोमेरेकोइसविषय औरजप्रमतीजानकरन

५८ भ॰ ५८

37

मसंतउदार और सज्जन सुखदायकहोतुमाकरो
औरआगेअपना सेवकजानकर कृपाकरके आज्ञा
आज्ञाकरिये किजोमैआपकी सेवाकरकर अ
पनीमन वांछितकामनाकोपायकर संसारमैस
फलहोऊं ।९। चौपाई। कामागहंसुखभूपतिधीरा
चलहिंहारसंसारकवीरा। हरिमानहराससकलमथेना
न
कवनभरोसराखिउरलेना। हानिआहतनकजीव
जगजेहू। रेहिंनथरन नाथ थिरनेहू ॥

५८

नौतेअसविचारिगुणधामा। हृदयमोरकछुनाहिं
नकामा। केवलरामनामआधारा। भूपसवेद
मोरेसंसारा। नमहुंजानिजियहविरनदेसा। भ
जहुरामसवहरनकलेसा। भूपसननतमसउवच
नसुहावा। ब्रह्मानंदजनहुंपदपावा। ज्ञानमगगए
निजभवनसुखारी। करिप्रणाममपगावलोसिधारी
सकललोगनिजनगरबुलाई। असमसामसननरपदी
नसुनाई। भक्तकवीरमोरप्रियनेहू। नासनकरव

८८
भ०
३८

देषजननमेंह्र। सोरिठमोर दंडअधिकारी। स्वनिन्दपक यननगरनरनारी। जनकवीरसनद्वेषविहाई। लागेकरन रुचिरसिवकाई। दोहा। अवसरपकसुधीरमतिजनकवीरतनिधाम। तीरथयाजामंगलविगवनह्रस्सकलग्राम।।९०। टीका। नवकवीरकहनेलगे किहेवडी ओर धीरजकेधाम राजनकहोमेक्यामांगू इहकवीरभी ओर संसारभीसवचलनेवालाही देखपडताहै जहांलगनेचोंका विषयहै

38

अर्थात जोजोदृष्टीमेआवताहै सोसबमिथ्याहीभास
रहाहै तांतेकिसकाभरोसा राखकरक्यामांगूं और
कौनआज्ञाकरूं इहहतीअहती अर्थात जीवका अजीवका
वालेजीवजोहैं सोतेदोनोहीथिर रहनेवालेनहींहैं
असेविचारकरेहै पृथीपाल मेरेहृदयमे कुछभीका
मनानहींहै केवलरामनामजोहै सोईमेरेकोआधा
र और सुखदायकहै मेरारामनामकेविना संसार
मे औरकोई भरोसानहींराखनाहै हेराजन नम

८८ भ० २५

भीयैसेजानकर सर्व कलेशोंकेहरनेवाला रामना
मजोहै सोईहृदयमें आधारकरलेवो औरतिसको
हींभजो इसप्रकार कबीरकाकथन सुनकरराजा
मानो ब्रह्मानंदपदकोप्रापतहोजाताभया ज्ञानके
सुखमेमगणभयाहूआ भक्तप्रधानकेचरनोपर
वारवारदंड प्रणामकरके अपनेघरकोचलाआया
तहांनगरके सबलोगबुलायकर आज्ञासुनायदेता
भया किभाई इहभगवानके परमहंसभक्तकबीरजोहैंसो
मेरे। २५

39

ग्रनसे करके ग्यारे हितकारी हैं तिनके साथ कदावि
नकोई भूलकरकेभी वैरद्वेषकरेगा सोनिश्चयक
कैं मेराशत्रुहोगा ग्रोर प्रथम मेरेहाथसे भलीप्र
कार दंडकलेशपावेगा ग्रैसेराजाकी ग्राज्ञासुन
कर नगरकेलोग नरनारी सबकपटद्वेषको त्या
गकर साधुसरलचित्तहोयकरके प्रीतीभक्तीसें
कबीरजीकासेवन सतकारकरनेलगे तबएक
समय सुमती ग्रोर धीरजकाधाम कबीरबरको

७८
भ०
ध०

40

आगाकर याइलोगोंके साथमिलकर संतभक्तोंके
हृदयको आनंद देनेवाली सुंदरस्थलपुरीजोहैति
सकेदरसनको चलपड़ताभया।१९। चौपाई। मथु
रादेखिललितमनभावन। कियोहस्तनापुरपुनिआ
वन। तहांसिकंदरनामकसाहू। विदतप्रतापपनर
एनिजिमिनाहू। जनकबीरहरिभक्तसुहावा। तहियभाव
जवलोगनपावा। इरजनवदनसाहमनआई। लागेभक्तदेष
नफगाई। महारानलजुजानिकविंहू। वमोभक्तकैसवजगनिंहू।४।

संतभेषधरिलोगनकाहीं। वंचितअधमअगमसनवना
हीं। साहसनतउरजनअसवानी। पठेहुतदासकहए
रिसमानी। जोनअवअसवदनप्रकासा। तोतवबं
धिभजनडुततासा। ल्यावहुममसनमुखनसगोही
देखहुंकवनभेखमनतेहीं। अतनदेशभूपतअस
पाई। अनेककवीरनरतच्छिगआई। चलदलीस तो
हिवोलिपठायो। हमहूंवेगअतनधावनआयो। जो
नचलहु तवसासनपाई। चलवलेनहमबंधनलाई

५८
भ.
ध।

41

सुनतसंतनभ्रमकथनकबीरा। बोल्योविगतज्ञामम
तिथीरा। गुरुप्रसादवेदनचुनहोई। विचरतहमकुंज
गतभ्रमखोई। मोत्तमारबंधनकसभाई। देखवब्रह्म
दलीसफिगजाई। भ्रमकहिअभयपक्षलसखवदाते। स
मरनचलेभक्तिमदमाते। दोहा। जातसाहसनमुखव्य
वलजनहंथंवयियरहोय। ननगनमानसमौनधृतभ
क्तसकुचवितहोय।।१।। टीका। नवसुंदरमनभावन
मथुराउरीका सबदरसनपरसन करके फिरविचर

तेविचरते हस्तनापुरजोदिल्लीहै तिसविखैश्रायश
पतहूथे तिसँमयतहां सूरजकेसमान वडेप्रताप
वालातेजसीसिकंदरनाम करकै वादसाहराजक
रताथा श्रोरईहांभगवानके वडेहफभक्तज्ञानध्या
नकीमूरती कवीरदासजोथे तिनकाप्रभावभी सू
रजकेसमान उदयहोयकरके नगरकेसवलोगों
विखैंफैल जाताभया तवउष्टजनजोथे सोभक्त
प्रधानके ऐसेप्रभावको सहारनहींसके वादसा

५८
भ०
५२

42

हके पास जायकर हैष के वचनों से कहने लगे कि महाराज देखिये इहनी चजानी जलाहा और महा अधम निंदक जो है सो हथारी वैसव भक्त वणवे ठा है और मफ संत भेष धारकर जगत मे लोगों को छलता फिरता है जद इड रमती को हृदय मे तमा रा ञास रिंच कभी नहीं है ऐसे तिन दुष्ट जनो का कथन सुनकर कोप से भरा हुआ सहन बनति सके ल्यावने के वासते हुन भेज देता भया ।

तिनकोकहाजोकदाचित नहींआवै तोअधमकोफ
ंदबांधकर मेरेसनमुखलेआवो इसप्रकारआज्ञाके
वशभयेहूये हूतनगरत कबीरकेपास आयकरक
हनेलगे किहोभक्तचलतेरेको बादसाहनेबुला
याहै हमहूतनजोहैं सोधावतेचलेआयेहैं जोकदा
चितत्ं आज्ञामानकरनहींचलेंगा तोहमतेरेको
जोरावरीसे बांधकरलेजावेंगे ऐसेहूतोंकाकथ
नसुनकर धीरज औरक्षमनीकेधाम कबीर

७८ भ० ५३

43

जी निरसंकअभयह्वोयकर कहनेलगे किहो
भाई हमनो गुरुजीकेप्रसादसे संसर्णभ्रमवंध
नोंकोतोडकरनिरभय ह्वोयकरके जगतमैविच
रतेहैं अवसोतमाराबंधन कैानश्रोरकैसाहै
चलोतोहम दलीसकेपासचलकरके दाखलेते
हैं श्रेसेकथन करकर श्रोर अभय ह्वोयकर भ
क्तीकेमदमैमगनभयेहूये कवीरभक्तसुखदाय
क श्रोरभक्तसहायक भगवानको स्मरतेहूये

५३

चलेआये तहां साहके मनमावेआयकर अचलओ
र निरसंकहोयकरनानेप्रणामकिया और ना
कुलकहासुना मौनधारकरमाने। थंववनस्थिर
होनातेभये।।११। चौपाई। देखिमसविवजन वदन
उचारे। अरेअभक्तमंदमतिवारे। साहदलीसवि
दतसंसारा। तवनअधमकमकीनतुहारा। इन
करभक्तसंतसमदाई। आवनहारनेमसिरनाई।
होहिंसकलकरजानतलोयू। प्रजापालजग

७८
भं॰
४४

44

वंदनजोगू। तिनकर सुनतकथनजफलाई। बोल्यो
जनकवीरसुसकाई। कौसैकवनसाहतुमकीन्यो।
कवनप्रणामकहततुमजीन्यो। पायप्रवरअनभ
वगुरदेवा। एकब्रह्मवियवीचनभेवा। इतउतरम्यो
गामसुवठामा। करहुंकवनकरदंडप्रणामा। अ
सअहैतवचनसुनिसाहू। बोल्योअनलकोपजु
नुदाहू। कापरकफुरकथनकसकीना। निज
लघुताईपरननहींचीना। साहिववन्योदरपरन

४४

रूपा। करनकथनकमस्यनभवरूपा। अवहिंमंदरति
कमलनवनराई। बोलि[illegible]नरतभ्रनदीनरनाई। नवकट
चरनकरननिजहाथा। सठकरवांधिवेगरजसाथा।
भ्रमनअगाधजमननलनाई। दयअघानडुतदेहुव
हाई। भ्रतननगहितसासनअसमाहू। डासोवांधिउद
कगनथाहू। स्मरनकृस्नजननहितकारी। भयो
भक्तवंधनछुनवारी। विनप्रयासरविनंदनिनासा।
वहिरवारिनटदीननिकासा। रामकृस्नमुखवरटन

45

कवीरा। चल्योजातजमुनाजलतीरा। म्हतनविलोकि
वेगफिरिआहा। जायह्वतांनवदनउमतकाहा। महारा
जमठचोरखिलारी। जाननइंद्रजालविघमारी। दोहा
ह्मयद्यपिसंजनतयतन जफकरचरनवंधाय। भवर
भीमजमुनाफहोतसो नदपितटपाय। ९२। टीका
नवमंत्रीजन अर्थात वजीरदिवान देखकरकेकहने
लगे किअरे अभक्त मंदमती इहदिल्लीपतमहाप्र
तापी सर्वजगतमेप्रसिद्ध अधम ऐसेस्वामीको तेने

जढताका

कोंनहींप्रणाम वंदनाकरी इनकेद्वारपरतोभक्त
संतसाधसवत्र्यागकरके दीनभावसे सीसनावते
हैं मूढइहतो सवकोई जानताहै किप्रजापालज
गतमै सदैववंदन योगपहोतेहैं इसप्रकारतिन
काँभराहुआ कथनसुनकर कबीरदासजीसुस
क्यायकरकहनेलगे किसुनोभाई कौनमेकौन
साह कौननम और कौनप्रणामहै जिसकोनम
कहतेहो हमतोगुरुमहाराजजीकेदियेहूये उत्तम

५८
भ०
५६

अनुभवज्ञानसे एकअद्वैतब्रह्महींजानतेहैं किजिस
विवेहमराकोईभेदनहींहै ईहांऊहां सर्वठोरमेरा
महीं परिपूर्णहोयरहाहै औरघटघटकेविषे
रामहीं रमाहुआहै मैंकिसकोंदंडप्रणामकरूं
ऐसेअद्वैतके वचनसुनकर किजिसमेंहमराम
हीं एकहीब्रह्महै साहनोकोपसें अगनीकेसमा
नलालहोयकर कहनेलगा किअरेविमुख ना
स्तिक मंद इहतैंनेक्याकथनकियाहै अधमनेरेकोअपनीलज्जा
नीचजातीजोहै। ५६

4.6

मोज्ञाननहींपड़ती हुंकारकेवशहोयकर मूछितं
साहिवपरमेश्वरवनगया श्रोरवड़ाभारीमूछित्ता
नकथनकरनेगगयाहैं जफदेखनोनेरी श्रवीस
वचनगई निकलपड़तीहै ऐसेकहताही साह
श्रपने नौकरचाकरोंको श्राज्ञादेताभया कि त
म इसमंदके हाथपाऊं भलीप्रकार कसिनवांधक
र फिरलिजायकरके जमुनाके वड़ेभ्रमनवाले
गहरे श्रगाधजलमें फेंककरवहायदेवो तवचा

५८ भ० मा०

47

करोंनेसाहकीआज्ञा अनुसार हाथपांऊंसें तुरतवां
धकर और निरदयहोयकर भक्तप्रधानको जमना
के अगाधजलमें प्रवेशदेदिया नाभादासकहतेहैं
हेसंतो जिसपुरषके जगधीसआपरखवारेहैं ति
सको संसारमें कोनमारनेहाराहै कृसकृसरट
नेहूये कबीरकाजमनाकेजलमें पडनेही वंधन
जोथासोतुरतटूटगया और यतनकेविनासहजेहीं ह
रिप्यारीजमनाने तिसकोततकाल जलमेनिकालकर

बाहरकिनारेपररखदिया तबरामकृस्न रामकृ
स्नउचारणकरताहुआ कबीरआनंदसे जमनाके
किनारेकिनारेचलाजाताहै इसप्रकारतिसकोबा
दस्याहकेचाकरदेखकर अचरजकेवशभयेहुये
स्याहकेआगे जायकरकहनेलगे किमहाराज इह
कबीरतोकोईबडाचोरखिलारी देखपडताहै और
जन्त्रइंद्रजाल मंत्रतंत्रइत्यादि नाटिक सबभलीप्र
कारजानताहै हमने यद्यपि बहुतनहीं यतनसेंहा

भ॰ ५८

घपाऊंवाधकरजमनाके वडेभयानकभ्रमनवाले अगा
धजलकेवीच डालदियाथा तद्यपिवे तैसेहीजोकातों
निकलकर जमनाके किनारे मंद मंदगतीसे आनं
दरुर्वकचलाजाताहै प्रभूकुछजाननहींपडता कि
कपटीने कौनछलचरित्रकियाहै। १२। चौपाई। ति
नकरहेषकथनअसकाना। माहसुननसोचनवि
समाना। भनेयाप्रवंडअनलरविनाहू। करहुथरत
धरनकरदाहू। भनअनमासलेननतनकाला। कीन

48

प्रचंडप्रबलनवज्वाला। साधुकपटगगनभक्तकबीरा

ह्मगरनक्कस्हस्नजनपीरा। धावनधसोभरतनहंका

री। वदनविविधदुस्वचनउचारी। ल्यायमहानलवं

दुमकारा। रामभक्तउरजनगहिडारा। तांकेहोनबा

रवनज्वाला। जांकेरामकृस्नरखवाला। देखोप्रान

यमनजवआये। जनकवीरहरिभक्तसहाये। वैठेभ

स्नध्यानरतरागे। कृस्नसरोजचरनमनलागे। उरज

नदेखिमाहसनजाई। भनेनाथपावकप्रधिकाई।

५८
भ॰
४९

49

कौनककीन स्यंवननेह्रा। वैठ्योभस्ससावधनदे
ह्रा। स्तनिदलीसदाहस्णरिसकीना। भ्नतनकवन
सासनश्रसदीना। मनगायंदवेगश्रवप्रेरो। करङ्ग
विदलनवभरवजफकेरो। भ्नतनलेनश्रससासन
साह्र। वांध्योरामभक्तदलणताह्र। करिकरालक
टसनभरवडारा। प्रेरिवदननिजविविधप्रकारा।
नवगौनैदकहं भक्तकवीरा। भागतीनमरगराजशरीरा। उप
नधरनवरननहिंश्रागे। विकरनवलोविकलगजभागे

देष

नोलेपसोहइहिसबकाहीं। भक्तकवीरहुपस्नगसाईं

भावनभेषँस्नगराज्। उड्योकंपिसबसाहससमाज्।

ग्रसथनंतहगदेखिवभाउ। नजनदेषउरमतिनिव

नाहू। दोहा। करिप्रणाम नमत चरनविनय की

नकरजोरि। सकईनजानि कृपायतन नवप्रभा

वमतिमोरि। निजजफनावस कीनकछु कथनव

चनउरदीन। सोमहिहतमहुकृपायवन जनप्रसं

ननिजचीन। यद्यपिपमननिसरगतेंकीनकुमति

५८ भ० ५०

अपमान। तद्यपिद्धकलिवरण तवसंतभक्तभगवान
टीका। तवतिनकाद्वेषकाभराहूआ कथन सनक
रके साहहृदयमे अचरजमानकर वडेकोपसेइह
आज्ञादेताभया कितममहा प्रचंडअगनीरचायक
र इसधूरतकपटीको तिसविखेडालकरके भस
मकरदेवो इसप्रकार आज्ञापायकर तिनमले
छोंनेतरत महाप्रबल अगनीको प्रचंडकरदिया
फिरसरलसाधु तिसकपट और रामभक्त कबीर ५०

50

जोथा तिसको कासकस्सम रतेहुये को उष्टोंने
कोपसेजायकरके पकडलिया और वडेनिरादर
केउरवचन वोलवोलकरल्यायकरके तिसमहा
प्रचंड अगनीकेवीचडालदिया अवदेखिये किअ
पनीवोरसेतो मंदमलेछ भक्तप्रधानकोभस्म
ही करचुके परंतुजिसकेरामकृस्नरखवारेहैं
तिसकेदगधकरनेको अगनीकोंकरसामर्थ्य
होसकतीथी वेतोतिसको सीतलजलके समा

५८
भ०
५१

नहोयगगई जवप्रातःकालहोते उसमलेच्छ आयकर
के देखनेलगे तोकाचमत्कारपाया कि रामभक्त
कवीरभगवानके चरनकमलोंके ध्यानमेलीन औ
रप्रेममेमगनभयेहूये आनंदसर्वक तैसेहीं सीत
लभसमकेवीच वैठेहूये शोभादेतेहूं तवअचरजके
वशभयेहूये मलेच्छ फिरजायकर वादसाहकोकह
नेलगे कि प्रजानाथवेच्छलिया तोअगनीके महा
प्रभावकोभी अपनेकौतकसे मिटायहूये औरशो

५१

नीकियेहुये तहांभसमकेवीचहीं सावधानहोयकर

वैठाहुआहै ऐसेतिनका कथन सुनकर लज्जितभ

याहुआ साह फिरपरमकोपकरके आज्ञादेताभया

कि प्रवलमवेग जायकर महांक्रूर और मन्तहस्ती

जोहैं सोइसपुथमपरपेरों और तिनके दांतोंसे इस

सुरतकाशरीर विदलन करवायडालो अर्थात वि

रवायडालो तवसाहकी आज्ञासेतिनपापियोंने फि

रकवीरभक्तको वांधलिया और निरदयहोयकर

५८
भ०
५२
52

त्यागकरके महांमस्तहस्तियोंके आगेडालदिया
और वारवार वोलकरतिनको मक्षप्रधानपरप्रेरने
लगपडे जवतिनके प्रेरेहूयेहस्ती मारनेकोआगे
वढे तोरामभक्त कवीरतिनको महांभयानकमृग
राजजोसिंहहै सोप्रतीतहोताभया तिसकेभयसे आ
गेचरननहींधरसकेत्रासकेवस वडाचिक्कारशवद
करनेहूये व्याकुलहोयकर सवपीछेकोभागगये ३
तनेमेंसवलोगोंको कवीरजीसिंहरूपहीं देखपडतेभये

ऐसे महा भयंकर रूपको देख करके साहकाजित
नासमाजथा सो सब थरथर कांपउठा इस प्रकारसे
सभक्त कबीरका अनंत प्रभाव देखकर बादसाह
हृदयकी डरमती और द्वेषको त्यागकर दीन हो
यकरके चरनोपरगिरपडा फिरहाथ जोडकर नम्र
वाणीसे विनती करनेलगा कि हे संत कृपाल इह
मेरीदीनकी जडबुद्धी जोहै सोनाथ तुमारे अनंतप्र
भावको जाननहीं सकी मैंने अपनी जडताकेव

शाहोयकर प्रभुतमकोकुछ्यनुचित वचनबोल
चुकाहूं सोहेदयाकीनिधी हेउदार मेरेकोअसंत
मूढमतीजानकर आपकृपाकरके क्षमाकरिये
नाथ यद्यपि मलेछसुभावसे इसमंदमतीने आ
पका अपमाननहींकियाहै तद्यपि हेसंत भगवानन
मस्तैदेव दुकनिवारण और क्षमाकरनेके योग्यहो
मेरेँक्षमाहीं करिये ।१३। चौपाई । सुनिदलीस
प्रेमकथन कवीरा। बोलेगिरामधुर मऊधीरा ।

संतनिउभयमानअपमाना।गुरुप्रसादमहिपकस
माना।रागद्वेषनिंदादिवडाई।हमरेसदाएकरसभाई
सुखदुखहानलाभसंसारा।जियनमरनअविचार
विचारा।निजपरऊवनीचहमकाहीं।भासतएक
ज्ञानहतिमाहीं।कहिकरभयोमानअपमाना।तव
कसहूथादोभउरठाना।साहूसननतमानसहूरषाये
वंदिभक्तवरकीनविदाये।सुमरतकुसलहरनजनपी
रा।आयमदननिजभक्तकवीरा।दिनदिनअधिकम

५८
भ
५४

54

क्रिअनुरागा। पदसरोजभगवनहफलागा। क्रम
स्मरणभजनगुणगाना। करतसदनकछुकाल
विताना। समयएकसिवनगरनिवासी। करनभये
तंकर असहासी। आजकबीरभक्तआगारा। होहिं
विभक्तकविरभंडारा। जहंतहंनगरग्रामसबचीने।
उनगणसंतनिमंत्रणकीने। उनकबीरगवनोकहूं
काजा। जसोअजनरइतसंतसमाजा। सिषविलोकि
मानसअकुलाना। नवप्रभभक्तवतसभगवाना।

जनकवीरथरिहूपसहाये। भक्तटेकराखनहितआ
ये। दोहा। ललितकोटिव्यंजनविमलविरचनदीन
सनेह्र। अटभनकौतककरनहित ठाढिअजरजन
गेह्र। सिषकहंधीरजदीनप्रभनजहवतसकदरा
ई। अवकीनेविनअसनमनअनथिसंतजनजाई। ५
टीका। इसप्रकार दिलीपनका कथनसुनकरक
वीरजोहैं सो वडीमधुर और कोमलवाणीसेकह
नेलगे किहेप्रजापालगुरू महाराजकीकृपासे

५८ भ. ५५

55

इसें संसारमैंहमकोमानअपमान रागद्वेषनिंदावस्त्र
ई सबएकसमानहै और सुखदुःख हानलाभ जी
वनमरन चारविचार अपनाविगाना ऊचनीच इ
त्यादिजोहैं सोभीज्ञानदृष्टीसे सदानन्दरूप एकरूप
हीभासतेहैं किसकामानअपमानभया तुमसमर्थ
दीनाथ हृदयमैंकोंहत्याही क्षोभमानाहे ऐसेभ
क्तप्रधानको परमहित और सुखकेदेनेवालीवा
णीसुनकरके दिल्लीपतपरम आनंदको प्राप्त

होगगया और वार वार चरनोपरसीसधरकर
वडेआदरसनकारसे विदायकरदेताभया तव
कुलपरमात्माको सुमरनेहुये कवीर आनंदपू
र्वक अपने घरविषेंचलेआये तवतें भगवान
के चरनकमलोंमेंप्रेम औरभक्तीकाप्रभाव दि
नदिननित्यनयाहीं वढताजानेलगा औसेजग
वभगवानकृपानिधानके भजन सुमरण औ
रगुणानुवादगातेगाते कवीरको कुछसमय

७८
भ०
५६

वनीतहोयगया तवकासीपुरीकेहेषीलोगमिल
कर भक्तसरूपके साथहासीकरनेभये तिनजकोंने
क्याकियाकि जहांतहां साधसंत अनथीब्राह्मणों
को निमंत्रण अर्थात नेउतापठायदिया किकलको
कबीरके घरमैबडाभारीभंडाराहोगा तुमसबसंत
ब्राह्मणक्रपाकरके तहांचरनधारियो औरभक्तउ
नमके घरकोपवित्रकरियो जहांजबभ्रातःकाल
होते कबीर किसीकार्जकेनमित्तकहीं वाहरचला

56

५६

गया नवईह्नांपीछेतिसकेघरमै संतर्ब्रह्मणोंकासमा
जनानाप्रकारकाअाय ज्ञ्इताभया नहांतिससंतस
माजको देखकरके कबीरकाशिष्यजोथा सोव्या
कुलहोयगया तवभक्तवत्सल अौर भक्तसहा
यक भगवानभक्तकीटेकराखनेकेलिये तुरत
कबीरकारूपधारकर तिसके घरमैचलेत्र्यावतेभ
ये अौर अंतःपुरमेस्थितभयेहूये दीनसनेहीभगवा
न अपने कौनकसे अनेकप्रकारके सम्मतके स

५९ मं. ५८

समानदिव्य व्यंजनरचायकर अद्भुत चरित्रकर
नेकेलिये कवीरकेआज्ञलभयेहूये शिष्यकोधी
रजदेकर कहनेलगे किहेपुत्र अवकदराई को
त्यागि और सावधानहो देखनामतकोई अनथीअ
त्यागि साथसंत मेरेघरसे भोजनपाय विना
भूखा चलाजावे सव आनंदपूर्वक भो
जन पायकरजावें। ४ ॥ चौपाई। असक
हिकृपासिंधु भगवाना। भक्त अजर निज।

57

कौतुकनाना। पाकपद्मसुवर्समसमस्तविदाई। सबकहं
सादिरदीननिमाई। अनयिसंतउजनहंद सहहाये। क
रिप्रणामप्रभुनिकीनविदाये। चलेसकलनिजनिज
अस्तवरनी। धन्यकवीर धन्यतुवकरनी। देखहु
भक्तिविवसभगवाना। तजिवैकुंठ ललितनिजधा
मा। भक्तअजर मेटनि श्रमपाई। कीनचरित्र अ
द्भुतप्रभुआई। उदयकीनजिमिसंस्तनितरनी।
स्रुत्तसजस भक्तनिजकरनी। तांतेरामभक्तिज

58

गभाई। सरवसुपरथसाधनसुखदाई। भक्तिपुरषक
हं संस्तनिमाहीं। सकलसुलभदुरलभकछुनाहीं
आयेनवकवीरनिजगेहू। अंत्रध्यानभेदीनसनेहू
सुनवतदेखिसदनउनसाहा। सिषकहंबोलिवदन
असकाहा। आजभवनलावन्यनसारी। जानिपरतक
छुमंगलवारी। वीत्योकवनमोदसुतनगेहा। करहुक
थनअचरनकछुपहा। सुनतवदनसिषवचनउचारे
नाथकवनभ्रमभयोतुमारे। अवहिंअनेकपाकविरचाये

बिप्रबृंदसबदीनजिमाये। कीनललितकौतकमन
हरना। अबकसश्यामिकवचनउचरना। सुनतक
वीरज्ञानिजियलीना। इहकौतकमोरेप्रभुकीना।
धनधनउदयभागसिषपही। जासहगनभक्तिदीन
सनेही। देवेसकललोकसुखदाना। तापरधर्म
मोरजगगाना। जहिअनरूपवननछविछाये। बत
सलभक्तभवनममआये। असविचारिउरमरमउ
रावा। सिषहिंवदनमउवचनअलावा। वयपनवि

५८ भ॰ ५९

षनविषयनविननकोरे। भयोनाननिश्चयभ्रमभोरे। अ
वसननदेहूपाककछुलाई। नोमैहोहुंस्वस्यचिनपाई
गुरुमुखवसननवचननलकाला। सिषविरचननकोन
कनउपाला। दोहा। अमनसरससहशसुधाजेक
छुशोषरहान। गुरुपंअावाहरषिजनप्रीतिभक्तिसन
मान। ५। टीका। असेशिष्यको समुझायकर कृ
पासिंधुभगवान भक्तके अंतःणमे अपने कौनक
से नानाप्रकारका अमृतकेसमान भोजनजोरचा

५८

हूआया सोसबकोबडीप्रीतीसेनमानसे जिमायदे
नेभये जबअनथीसाधब्रालणभोजन पायकरप्र
सन्नहोयगये तबफिरप्रणामकरकर आनंदसे
सब बिदायकरदिये सोधन्यकबीर श्रोर धन्यक
बीरकीकरनी इसप्रकार सजनसगानेहूये श्रप
नेश्रपने सब चलेजातेभये नाभादासजीकहतेहैं
किहेसंतोदेखिये भगवानकृपानिधानने भक्ती
केवशहोयकर अपनेवैकुंठधामकोत्यागा श्रोर

५८
भ
५

भक्तकीअंऊ.एभ्रमीमे आयकर वअभ्रमपायकर
कैसा अदभनकैानकाकियाहै जोनिसकीकरनी
अार सजसभभावको स्रजकेसमान संसारमेउ
दयकरदियाहै तांनेइहरामभक्तीजोहै सोजगत
मे सर्वसुखदायक अारसर्व अर्थीकेसिद्धकरने
वालीहै भक्तीमानपुरषको संसारमे कछुडरल
भनहीहै भगवानकीकृपासे सवसुगमअोरस
हजहै इतनेमे जवकवीर अपनेघरमेआये तव

60

भगवानतुरत अंतरध्यान अर्थातलुपतहोयगये
तहांघरमै यज्ञके समान उतसाह देखकर कबी
र अपने शिष्यसे पूछनेलगे किहेपुत्र आजघर
कीशोभा कुछमंगलवालीदेखपडतीहै सत्यकहो
ईहांकौन आनंदउतसव होयचुकाहै मैदेखकरब
डे अचरजको प्रापतहोयरहाहूं तवसुनकरकेशिष्य
कहनेलगा किहेनाथआपको इहकौनभ्रमहोयगा
याहै तमनेनानाप्रकारके भोजनखायकर अबी

५८ भ. ह.

61

अपनेहाथसे अनेक अनर्थीसंत ब्राह्मणजिमायक
रविदायकियेहैं औार मनकेहरनेवाला वडाअदभु
त कौतककियाहै अवआपइहकैसे आमिकवचन
उचारणकरतेहो किइसमै कौन मंगलउतसाह
भयाहै नाथतुमारे इसकथनसे मैभीवडे अचरज
को प्राप्तहोयगयाहूं तवकवीरहृदयमे जानग
ये किअहो इहचरित्रतोमेरेही प्रभूनेकियाहै आज
जगतमे इसशिष्यकेवडेपूर्णभागहैं किजिसनेसंपूर्णलोकोंके

सुखदायक और पालकभगवान नेत्रभरकरदेख
लियेहैं तिसपरइहमेराशरीरभीधन्यहै किजिस
कारूपधारकर भक्तहितकारीभगवान मेरेघर
मेचलेआयेहैं इसप्रकारहृदयमे विचारकर औ
र भेटकोछिपायकर कबीर अपने शिष्यको व
डेमधुरवाणीसेकहनेलगे किहेपुत्रमे अनसेकु
रकेभूखा औरप्यासा व्याकुलचित्तजोहोयरहाहूं
इसतें मेरेको सत्यकरके भ्रमहोयगयाहै क्योंकि

७८ भ॰ ६२

62

भूषण्यासकेमारे बुद्धीजोहै सोस्थिरनहीं रहतीहै ७
२४ कुछ औरकाऔरहीं बकनेलगजातीहै तातेअब
हे७चन्द्र शीघ्रहमेरेको कुछभोजन लायकरकेदे
जोमैंतिसको पायकरके स्वस्थचित्तहोऊं और अप
नेआपकीस्मरनसंभालूं ऐसेगुरुजीकेमुखसेवच
नसुनकर दीनबंधुभगवानका कौनककेसरवाहूआश्र
मनकेसमानसुंदररसवालाऊंछभोजनवनाहूआजोथा सोपू
र्वकभक्तिप्रीतीसे लायकरगुरुजीके आगेराखदेताभया

१५५

चौपाई। पायकबीरकृतार्थभैयौ। आपनआज
जनमफललैयौ। तबउरजननसतजननसमुदाई।
लेकरनसबहमसबजाई। तबभगवानभक्त
हृदैचीन्यो। जरिप्रबंतउजसंतनदीन्यो। खट
रसप्रसूनअमियसमनाना। तमससमानज
गतमहूँसुजाना। सदनतोरविनसम्मतिपा
ये। विप्रहंदहमकोलिपठाये। यद्यपिकीनवि
धलअपराधू। तद्यपितमहुभक्तसबसाधू। स

५८
भ·
६२

निकवीर अस बदन उचारा। धन्य तुम्हार जनन मम संसा
रा। जहिं उद्योग सदन मम दीना। अगनित उजन अ
मल अभिकीना। मैं जान्यो उपकार तुम्हारा। दीन
सुजन सम हि संसृति भारा। आनत महुं जग बंद
न जोगू। हरसे जिन हिं हरन भव सोगू। सुनिक
वीर करक थन सुहावा। उर जनन सुजन नसवन
सुख पावा। विविध भांति मुख अस तव तिगाये।
निज निज सदन हरष जन आये। धावि चरन उर ति

63

भवनराजे। जनकवीरनिजभवनविराजे। कुलम
मणिकरतकलगाना। असप्रकारकछुकालसराना।
एकदिवसनरिसदनसुहाई। कलाप्रवीन वारत्रि
यआई। नृत्यगीतगुणरूपरसीली। मनहुंमानति
यमदकटीली। करिप्रणामनंमनकरजोरी। कर
नवदनकछु विनयननथोरी। महाराजमानसहवि
मोरे। कछुदिनवसहुंसदनसुभमोरे। गीतनृतनि
ननवलसनावहुं। करिविलासबहुभांतिरिझावहुं

न

५८
भ.
६४

64

नाकरगिरा स्रननप्रियजीकी। देखिवहूपलावन्यननी
की। दोहा। अमोललिनम्रगलोचनीपिकवैनीमहिना
हिं। न्रत्यविलासनगीतरतिग्रतिकलीवरनमाहिं ।।८९
टीका। नवकवीरतिस भोजनकोपायकर ग्रपनेग्रा
पको क्रतार्थ माननाभया किग्राजजगतमेमेराज
नम सफलहोयगयाहै नहांडवजन ग्रौर सज्जन
जोथे सो सब कवीरजीका ग्रनेकप्रकार स्रजस
ग्रौरवडाई करनेलगे किनमनो भगवानके ।

५४

सत्यकरके हे भक्त हे नमारा प्रभावकहो ल
गकथनकियाजावे कि जिन्होंने अन्नंनहीं संनब्रा
ह्मणोंको खटरसकेसहित अमृतकेसमान ना
नाप्रकारके व्यंजनभोजनजिमायेहैं हे भक्त प्रथा
न तुमारेसमान जगतमे तुमहींहो और हमरा
कोई नहींहै देखोहमनेजवनाकरके तुमारीस
म्मतीके विनाही ईहांतुमारे घरमेंअनगिणत
साधब्राह्मणोंको भोजनकेलिये बुलायलिया

65

मोसहहमारा अत्यंत अपराधहै तुमसंतउदारशो
रत्नकनिवारहो हमारे इसमहा अपराधको दया
करकेक्षमाकरो ऐसेतिनका कथनसुनकर कवी
रकहनेलगा किहेभाई तुमधन्यहो औरधन्यजग
तमेक्षमावानजनमहै कितिनके उद्दमसे मेरेदीनके
घरमे अनेकहीं अनथीसंतब्राह्मणोंनेभोजनपायाहै
हेहितकारीजनो तुमनेतो मेरे परअत्यंतही उपकार
कियाहै और जगतमे मेरेको बडाभारीसुजसदियाहै

आजतमनो संसारमैं वंदनाकरनेके योग्यहोकि
जिन्होंने सर्वकलेशोंके हरनेवाले तीनलोकके
नायककादरसन पायलियाहै इसप्रकारकवी
रकाकथन सुनकर उत्तम और सज्जन जोथे
सोसबपरमसुखको प्राप्तहोयकर सुखसे
अनेकप्रकार शालाघावडाई करतेहुये आनं
दपूर्वक अपने अपने घरोंको चलेआये और
इहां भवनोकेपतीभगवानके चरनकमलोंको

५८
भ
६६

66

हृदयमै धारकर कबीरदासजी अपने भवनमै वि
राजमान रहते भये तहां हरुम परमात्मा को समरने
भजते जब कुछ काल बतीत होय गया तब एक दि
नतिन के घरमै गुणकला प्रवीन नृत्यगायनमैव
डी रसीली और रूपमै रती जो कामदेव की स्त्री है
तिसको लज्जा देने वाली एक वेस्या आय प्राप्त भई
सो बडे दीन भाव से प्रणाम करके हाथ जोड कर वि
नती करने लगी कि हे स्वामीजी मेरे हृदय मै अनेक

५६

करके इहरुची अभिलाषाहै कि कुछदिनपर्यंतआ
पके संदरघरमे निवास करके नाथतुमकोनित्यन
यान्तत्र औरनित्य नयागायनजोहै सो सुनाऊं और
अपने गुणप्रभावसे कृपानिधानतुमको भलीप्र
कार रिझाऊं ऐसेतिसकी वडीमधुरप्यारी वाणी
सुनकर और रूपकीमनोहर शोभादेखकर कवी
रकहनेलगे किहे मृगनयनी हेकोकलावयनी
संदरी मै अपनीकहताहूं किमेरेको इसनृत्यऔर

५८
भ·
६७

67

गायनमै कछुप्रीतीरुचीनहीं न्हसन्यकरकेजान
नोमैइनवातोंमै कलीव अर्थात नपुंसकहूं। ९ ।
चौपाई। पैनवहितविचारिमनमाहीं। करहुंकथनभा
मतिनहिकाहीं। मदनमोरमरुप्रमरतिचाहू। श्रीह
रिहरनभीनसंसाहू। नृत्यगीनरुचिरीनसुहावन
प्रभुपैंजायरुचिरमनभावन। करिकरिललितभा
वचनराई। दीननाथकहंलेहुरिझाई। होहु वि
कटभव वारय पारा। अस कवीर जव वदन।

५६

उचारा। सोआनंदसर्वकअनरागी। नहांनिवासकरननिजलागी। लेतललितकरहरषनवीना। रामसरोजचरनमनलीना। निरततनवलभावविधिनाना। गानमधुरस्वरतानतराना। दीनघालकरभवनमह्लावा। रहततनवलनितउतसवछावा। करनमङसत्रिभवनपनिसेवा। नामधामिषृहचिरनिजलेवा। एकदिवसनिकसानिअकेली। वधूवारकाननअलवेली। देखनसवननिउणतनकाला। भईल

५८
भं
९८

पनङ्गनहूप रमाला। लोकविलोकिचरितविसमा
ये। कहूत मरम कछुजानिनपाये। कियोदेवकिन्न
रनियपहू। आईजनकवीरकरगेहू। असप्रकारमा
नसविसमाये। निज निज सदनलोग सवआये
बौल्लिनिकरसिखनगरपठाये। नवकवीरकछुअ
वसरपाये॑। सवसनकरहू कथन असजाई। सगी
करणतीरथनटभाई। आजकवीरजवनजगि रा
ना। करहिं ललित निज लोकपयाना ॥

68

बौल्लिनिकरसिख
नगरपठाये॥

गरुडासनालेनसिषघाघे। दीनसकलभरमरमजणा
घे। अवरजमहनतलोगसवञाघे। नवककीरअस
वदनअलाघे। मैलोगंगगपारअवजाघे। इहपरिह
रहुंजगिरनिजकाघे। जोजगमत्पभक्तिभगवाना
नरणविकटभवसिंधुमहाना। दोहा। नोघघपि
इहमगाधमहि संखनिरोरवदाई। नघपिभक्तिश
सादमे होहुंग्रजमरनपाई। ९। टीका। परंतहे
हगीलनेगाहिन विचारकरके नेरेगनीकुछक

रहताहै किमेरेउरमै श्रीपतीभगवानकी मनोहर
मूर्तीजोहै तिसकेआगेतहू जायकर नानाभावश्रोर
चतराईसे सुंदरमनकोभावता नृत्यगायन कर
कर अपने गुणप्रभावसे दीनानाथकोरिझायले
ऐसेभक्त हितकारी भगवानको प्रसन्न करकर
इसमहाविकट संसार समुद्रसे सहजेहीपारहो
इसप्रकार जब कबीरजीने प्रसन्नहोयकरकहा
तबप्रेमके वशभईहुई वेस्या आनंदपूर्वक तहांसे

निवासकरनेलगी श्रौर हाथमैनित्य सुंदरवीनाधा
रकर भगवानकेचरन कमलोंमैचित्तजोडेहुये न
येनयेभावसेन्टत्य श्रौर मधुर मधुर स्वरसे गान
तान श्रालापन करकर दीनद्यालकोरिझावती
रहती तिससें भगवानके भवनमै दिनदिननित्य
नयाही उत्सवमेलावनारहताथा ऐसेतीनभव
नकेनायककीसेवा करती करती सोवेस्याअपने
मनवांछित श्रर्थकोसिद्ध करलेतीभई एकदिन

५८ भ० ६१

वेलख्वड भागन चरसे अकेलीही निकलकरलो
गोंके देखते देखते वणकेमारगकोचलीजातीथी
नवकाअदभत चमतकारभया किवेरूपकीनि
धी सवकेदेखते नहांही नरतलमेहोयगई इसको
तकको देखकर सवलोग अचरजकेवशहोयगये
औरपरस्परकहनेलगे किभाई इहचरित्रओरभेदहम
को कुछजाननहींपडाहै कयाजाने इहकोई देवकि अ
पवाकिन्नरस्त्री आकाशमेंवायवीनलपरकवीरकेघरमे ५८

70

आईहुईथी इसप्रकारसबलोग अचरजकेवशभये
हुये अपने अपने घरोंकोचलेआये नवकबीरने
कुछसमयपाय कर अपनेशिष्योंको समझायक
र नगरमेंभेजदिया कितुमसबको सुनायदेवोहे
भाईमणीकरणकापर शरीरकरके हुडभयाहुआ
जोकबीरहै सोआजतिस हुडशरीरको छोडकरअ
पनेलोककोचलाजावेगा जोकिसीनेदरसनमेला
करनाहोतोचलेआवो ऐसेगुरुजीकी आज्ञापाय

५८ भ० टीका

करशिष्योंने जहांतहांनगरमे इहभेदसबकोसुनाय
दिया तबलोगबड़ा अचरजमानकर सबधावतेचले
आये तिनकोदेखकर कबीर कहनेलगे किभाईमे
तो गंगाकेपार जायकरके आज इस हडशरीरको
त्यागूंगा जोजगतमे इसमहाविकटसंसार समुद्रसे
पार उतारनेवालीभगवानकी भक्तीसत्यकरकेहै तो
यद्यपि इहमगधभूमी संसारमे नरकके देनेवाली
है तथापि भक्ती के प्रसाद [illegible] मे तहां १

५१

71

शरीरकोत्यागकर अवधपमोक्षकोप्रापनहोत्भाऊं
गा।९। चौपाई। जातिमलेछविदतवहुवोरा। रहो
करमसभवैस्तवमोरा। होवसिसंसकारकसदेहा।
यातेहृदयगुणननिजपहा। करहुंभूतनिजभूतन
लीना। संसकारगतहोहुंप्रवीना। अगुणब्रह्मस
नजोतिजउाई। लेहुंविमलसंततपदपाई। प्रदभूत
हुनतलोगविसमाये। भक्तचरितदेखनहितआये
भूरिभीरसंज्जनमतिधीरा। नहांआयजवभक्तकवीरा

७८ भं. ७२

72

सोयकरनवधुवसनअक्षादिन।लागेजनकजोगनि
जसाधन।लोगनसनअमकरहातुकाई।जगलदंड
पाछिलतवआई।करहु मोरअविलोकनकाया।
जानिपरहिंकछुभगवनमाया।जगलदंडअसज
वैविहायो।नवसामीप एकसिषआयो।सकुविन
वसन वउष गुरुकेरा।करननिवारिहगनजवहे
रा।छूछेपसोवसनविनदेहा।देखिचरितसवश्र
दभनपहा।चकितनरसन नरदसनदवाये।सायुसा

प्रमवबदनग्लाये। ग्रहोभक्तसिरमोरसुहाये। ग्राज
कवीरभक्तजगग्राये। सुश्रसुजसगुणगणसुखगाते।
चलेलोकनिजनिजविसमाते। इहकवीरकर ग्रदभु
तसोहा। चरितवविचत्रविमलमनमोहा। कोसामर्थ
कथनकरणहा। कहांकुविंदजनमअलनेहा। कहांग्र
गमसुनिजोगिनकाहीं। लीनलखिनगतिसंतनिमा
हीं। भक्तिप्रभावविदतइहजाना। देखहुभक्तिविव
सभगवाना। कानकरहिंसंमारसुहावा। काननशव

७९
भं॰
दी॰
७३

73

त्रिविक्रमफलपावा। प्रथमगृहरखगोप्रमुखग्रहारी।
नीचनिरखायववारत्रियनारी। आनकिरातकोलवण
चाहो। चरमकारवविदासहुवाहो। दोहा। नहिंमान
नकरहुणाघतन प्रथमजुवसंसार। भक्तिप्रेमप्रभुक
हं प्रियेपरिहरिविचारविचार। सखसिद्धिप्रदकलपत
रसरसभक्तिभगवान। तांतेपरिहरिभक्तिप्रसभजि
यनसंसतत्तिआन।।९६। टीका। फिरकहतेहैं किमैम
लेछजातीकरके चारोवार प्रसिद्धहं और करममेवा

६३

वैस्नवरहा इहशरीरका संसकारजोहै सो कैसेहो
वै इसतेंमैहृदयमै विचारकर यहीसिद्धकिया कि
प्रवभूतजोनतहैं सोतमेंमैलीन करकर संसका
रसेरहितहोजाउं और निरगुणब्रह्मकेसाथ जोनी
जजाय कर निरंतरकरके निरमल पदविखेंजाय
समाउं इसअदभुतको सुनकर लोग अचरजकेव
शभयेहूये भक्तप्रधानकाचरित्र देखनेकेलिये
सबचले आवनेभये ऐसेजबवडी भीरभारकेस

हितभक्त कवीरजी तहांआयगये तवशरीरपरव
स्त्रडालकर और सोयकर अपनीजोगकीजुक्तजो
है सोसाधनेलगे तिससमयलोगोंको सुनायदि
या किभाई तमदोघडीकेपीछे आयकर मेरेशरीर
को देखना तव तमको जोकुछ भगवान
की मायाहोगी सोप्रगट जानपडेगी इसप्रका
र जवदोघडीवतीतहोयगई तवलोगोंकाभेराहुआ
एकतिनका शिष्यजोथा सो पास चला आया।

७४

और संकोच से अत्यन्त ह्वआ जब हाथ में वस्त्र को उठा
यकर देखने लगा तो क्या देखता है कि खाली वस्त्र
ही पड़ा है गुरु जी का शरीर नहां नहीं है इस अद्भु
त कौतुक को देखकर लोग सब अचरज को प्रा
प्त भये हुये दांतों के तले जिह्वा को दबाय कर फि
र साधु साधु शब्द को उच्चारण करने लग जाते भ
ये और कहते भये कि आज संसार मैं सर्व भक्तों
विषे प्रधान प्रथम गिणती वाले सत्य करके क

वीरहींपायेहैं इसप्रकारकरनेहुये लोगसब आप
ने अपने घरोंकोचलेगये ऐसेकवीरजीका बड़ा
अदभुत मनके मोहितकरनेवाला चरित्र और
भक्तीकाप्रभावजोहै तिसके कथनकरनेकोको
नसामर्थ होसकताहै देखिये कहां कुविंद अर्था
त नीचजुलाहेके घरमें तिसका जनम और कहां
जगतमेंमुनी और जोगीजनोंका दुरलभगतीजो
है तिसकोप्राप्त नहोना हेसंतो इहतोकेवलभक्ती

काहींप्रभावहै इसभक्तीकेवशहोयकर भगवान
संसारमै क्यानहीं करतेहैं सबलोगोंमैप्रसिद्धहै
किवणविखे शवरीभीलनीकेफलखाये औरवि
दुरकासागभीपाया वेअधमगृद्धपंखी किजोनित्य
मांसकेहीखानेवालाथा सोतारा नीचनिखाद औ
र गनका इत्यादिकाभी उद्धारकिया और अनेकको
लकिरातभीलजो वणमैं विचरनेवालेथे कृपासे
धूने सबको पारउतारदिया रविदासचमार औरस्त्र

जामिल आदियों को भी अपने परम धाममें निवासदे
कर संपूर्ण जगतमें उजागर किया भगवान तो पानि
धान जोहैं सो संसारमे चारविचार ऊचनीचकोई न
हीं जानतेहैं तिनको तो केवल प्रेम और भक्तीही
प्यारीहै दीनानाथ निरन्तर करके भक्तीपरही री
झतेहैं यह भक्ती जोहै सो संसारमे कलपवृक्षके
समान सर्व अर्थोंके सिद्ध करनेवालीहै तातेऔ
र सबसाधनाको त्यागकर हितचितसे केवल

77

८८
भ॰
१३८

भक्तोंकोंहीं आधारकरना चाहिये।१९। इतिश्रीभ
क्तविनोदग्रंथे भगवद्भक्ति महात्नमें भाषाटी
कायां कबीर चरित्नबरणनं नाम सरग्गः

मिहांसिंह कृत

कोकहनेलगी किहेब्राह्मण प्रातःकालईहांतेरेकोजो
गंगामाई प्रसाददेवेगी सोतें आनंदपूर्वकपायकर
और घरमैंजायकर वडीप्रीतीसनमानसे रविदासभ
क्तकोदेदेना ऐसेब्राह्मणरात्रीके समय स्वपनदेख
करके प्रातःकालअपने सवसंगीसाथियोंको सुना
यदेताभया तिसतें उपरांत श्रीगंगाजीकेकिनारेपर
जायकरके हरिद्वारमैं प्रणामकरकर निरमलज
लविखे स्नानकिया फिरभक्तप्रधानकेदियेहूये

७७ होतोइंगीफललेकर हाथ्यजोडकरके वशीदीनवाणी
भ. सेंविनतीवडाई करनेलगा किहे अंवेहेजगतमें पा
६४ पीअनोकेउद्धारकरनेवाली हेदेवगंगे हे संकरके
सीसमें विराजनेवाली हेआनंदकीमुरती हेदीनज
नोपरसनेहकरनेवाली हेअनंतीकिजिसकाकोईअंतन
हीं हेसुंदरकीतीवाली हेसुभकांतीवाली हेवरकीदाती
हेनिर्मलजशवाली हेदेवअदेव ओरसर्वचराचरजीवोंकी
रक्षाकरनेवाली हेसंसारमें संतभक्तोकेभयहरकर्नेवाली

६४

हैनीनलोकके उपदोषनिवारणेका सामरथभाभीर
थीमाई हेजगजननी तेरेचरनोका सेवक ग्रौरतेरा
वनधारी दृढभक्त रविदासजोहै तिसने इहदोधंगी
फलमेरेकोदियेथे ग्रौरकहाथा किभाईनं मेरीवोर
सेश्रीगंगामाईके चरनोका दीनभावसेप्रणामक
रके इहफलजोहैं सोनवेदनकरदेना ग्रर्थातदेदेना
ग्रौर मेरीवहुतवहुतविनय प्रार्थनाभीकरना सो
हेमातगंगेमैं सत्यकरके कहताहूं किवेतेराभक्त

७८
भं०
६५

रविदासजोहै सोमातानेरेदरमनकी अत्यंतअभिला

षारखताहै परंतुआकरे वृद्धेपेकाअवसाहुआ शरी

रअतसेकरके दीनऔरवलहीनहोयरहाहै यद्यपि

अंवे नेरेदरसनकेलिये निसनेवहुतसी यतनहठकि

या तद्यपि जीरणहुइशरीरजोथा सो मारगकेनिवा

रणेकोसामर्थनहीं होताभया और सियलभयेहु

ये सवअंगभी कंपायमानहोकरकदरायगये अ

धीनकायरहोयगये इसतेंहारकरके दीन औरअ

शक्तिभयाहूआ रविदासहेपतितउद्धारनी चरणमे रहिगयाहै माताने वेश्रागे वहुत वहुत विनती श्रोर वारवार प्रणाम कियाहै इसप्रकार श्रासनके मुखसेभक्तकी प्रार्थना सुनकर तीनलोक तारनीके दोनोहाथ किजिनमै शोभादेनेहैं रतन मणियोंकरके खचितभयेहूये मनोहर कंकण भक्तरविदासकी भेजीहूई भेटाकोमांगनेहूये तरनगंगाके जलसेवाहर निकलश्रावतेभये।

७७
भ०
६६

66

तबब्राह्मणतिनको देखकरके हरषसेंनरनदेनोपुं
गीफलनोसपारीछे सोगंगामाईके हाथोंमेदेदे
नाभया तबवेअपनेभक्तका सनमानराखकरति
समेलाकोलेनेहीं नरनलखपनहोयगये फिरथो
ड़ीदेरकेपीछे भक्तनोकेहृदयके दुखकलंक
औरदारिद्रोंकेनासकरनेवाला गंगेमाईनेअपना
एकदिव्यकंकणजोहै सोहाथवाहरनिकालकरके
तिसब्राह्मणकेसनमुखडालदिया तिससमय इह

प्रतीतहुआ किमानोवशीदसकवसकसे किनली
नेचमनकारमाराहै नवआलणदेखकरके अवर
नको प्रापतहोयगया औरतिसकंकणको संपू
र्णजगतकापन जानकर प्रणामकरकर वडेस
नमानसे लेकरके आनंदसे घरकोचलपडताभ
या।१८। चौपाई। लोकविलोकि चरनविसमाये।
उनहगगहरष नीरभरिआये। भनतप्रसादकविर
इहगंगा। सकलदोषडरवसंसतनिभंगा। सादर

८८
भ.
६८

देहुंभक्तवरकाहीं। करनविचारविषमनमाहीं। आ
यदासुरविसदनसुहावन। दीनललित कंकणमन
भावन। भक्तदेखिवरभूषणसोभा। तीनलोकमनत
मानसलोभा। करिप्रणामसादिरगहिपानी। लि
योबढायसीसतखवानी। सजलनयनगदगदश्रु
नुरागा। हरषत निरतकरन कललागा। दि
व्यकरन कंकण श्रीअंगे। हननलोग मन
मोदउमंगे। आय सकल देखन नरनारी।

६८

भक्त भवन भा उत्सव भारी। विमल भक्ति बर विदा स
सुहाई। निज निज सदन प्रसंसत गाई। गरुड विनोद क
रहित पतरानी। देखन आई सुनत बिसमानी। भक्त
दिखायद दीन छबि सोहन। जटित रतन कंकण मन
मोहन। दिव्य विलोकि हगन अस रागी। बार बार उ
र वंदन लागी। कसन होहिं अद भगतन तिन्हारी। कं
कण कर न जगत महनारी। आज य नार विदा सुह
हावा। जा सहे न जग जननि पठावा। इह प्रसाद भूष

७८
भ०
६८

68

निजकरना। भक्तसजसकलजाहिंनवरना। ता
नविवेक यदपिरनरानी। तदपिदेवत्रिय देखिल
भानी। सोचतहृदय मैनयरिलीन्यो। नवरविदा
सनासनतिचीन्यो। तेप्रसादकंकणजगमाई।
दीन्योभक्तसकलसुखदाई। उदयभागसंस्वाति नि
जजानी। लियोकरनसादिरडुनरानी। दोहा। क
रिप्रणामनिजभवननवगवनकीनरतिरानि। स्वपहिं
दिखावतवदनकहिं वारवारवउभानि। ९९। टीका। नवलोग ६८

इसअदभुत कौतकको देखकरके वडेअचरजकोप्रा
पत होयगये और ब्राह्मणजोहै सोनेत्रोंमे हरषज
लभरकर कहताहै किसंसारके संपूर्ण दुखदोखों
केनासकरनेवाला इहगंगामाईकासुंदर प्रसादजो
है सोमैंनायकरके सनमानपूर्वक भक्तप्रधान र
विदासजीकोदेऊंगा ऐसेमनमैविचारकरताहुआ
ब्राह्मणमारगकोनहनकरके रविदासके घरमै
आयकरवेमाईका मनोहरकंकणप्रसादजोथासो

देदेताभया नवभक्तप्रधानतिस तीनलोकके मनको
मोहनकरनेवाले भूषणकी सुंदरशोभाको देख
कर और वारवार प्रणामकरकर वडेसनमानसें
लेकरके सीसपरचढायलेताभया फिर प्रेमज
लसेनेत्र भरकर गदगदवाणीभयाहूआ किको
ई वचन मुखसेनिकलता कोईनहीं निकलता
है आनंदसे नृत्यकरनेलगपडा ऐसेपापीजनो
काउद्धारकरनेवाली गंगामाईके हाथकेकंक

69

णकीचरचा सुनकरके सबलोगनारीनर जवाह
रवाल ततकालदेखनेकोधावने चलेआये नवर
विदासजीके घरमैंबडाभारी उतसबमेलाआयजउ
ताभया सबकोई अपने अपनेमखमे भक्तउत्तम
रविदासजीकी भक्तीकी अनेक प्रकार शलाघाव
डाई करनेलगे तिससमयचंमौडगडकेराजाकी
रानीभी इसअसर्ववारताको सुनकरके अचरज
के वशभईहूई देखनेकोचलीआवतीभई नवरवि

दासजी सोगंगामाईकाकंकण तिसकोश्रीनीसन
मानसें दिखायदेतेभये रागीश्रैसेजगतमाताके
दिव्य कंकणकादरसनपायकर वारवारवंदनाक
रकरकहतीहै कोंनाश्रैसी अनूपशोभा श्रोरश्र
दभुत आभाहो इहजगतमाताके हाथका मनो
मनोहर कंकणहै आजसवसंतभक्तोंमे रविदा
सजीधन्यहैं किसकेलिये कृपाकरके जगजननी
नेइहश्रपनेहाथका दिव्यभूषण प्रसाद भेजाहै

७०

इनकास्तनस और महिमा आजकुछ कथननहींकी
जातीहै राणीयद्यपि ज्ञानविवेकमें भलीप्रकारप्रवी
नभीथी तथापिस्त्री स्वभावसे कंकणकी शोभाकोदे
खकरमोहितहोयगई हृदयमेंसोचकरनीकर
नी मानसीहैजानीभई तबपरमचतुरभगवानके
भक्त रविदासजी तिसकेहृदयकी जानकरसर्वस्व
खोंकेदेनेवाला गंगामाईकेहाथका कंकणजोथा
सो तिसकोदेदेतेभये राणीजगतमें अपनेभागों

६६
भ॰
८८

की बड़ाईजानकर आनंदपूर्वक सनमानसे लेले
तीभई फिरबारबार प्रणामकरके प्रेममेंमगणाभ
ईहुई अपनेघरकोचलीआई तहांआय करके व
डेहरष उतसाहसे अनेकप्रकारशलाघा करक
र राजाकोदिखावतीभई।१९। चौपाई। देविभूषकर
कंकणदेवी।किंनरनागमनुजसुरसेवी।बारबारक
रि दंडप्रणामा।बोलेवदनवचनअभिरामा।आजध
न्यवंसपतिप्यारी।जहिंगजननिजननहितकारी

८८

मातगंगकरपावनपावा। ललितकरनआभरनसुहा
वा। ताघरधन्यभक्तवरनेहू। तोपेंकीनजासअसनेहू।
जनहुकलपद्रुमसहशदीना। कृतकृत्यतोहिसंसृति
कीना। पतिसुखसुननवचनमृदुरानी। धारिलीन
कंकणनिजपानी। रुचिसंपतिसौभाग्यविराजी। जनु
सुरसुतारूपनिजलाजी। असप्रकारकछुकालविहा
वा। एकदिवसमहिखीजियआवा। नमनतवदनवच
नअनुरागी। नृपसनकथनकरनअसलागी। आ

७८
भ०
७२

णनाथकंकणमनलोभा। देननएककरनकलसोभा। कृपानाथनवग्राम सहावा। जोमोहिदेहुसुविरचिरावा। तेमेथारिकरन अभिरामा। लेहुंनाथमनवांछितकामा। सुननभूपअसगिरा उचारी। इहकाकीन कथननवप्यारी। मातगंगसहशग्राभरना। कवनगणीसमरथजगवरना। जोनिजकरनकोटिचनराई। नहिसमदेहिं नवलविरचाई। तेरविदासवचनमनकाया। संननिरननभक्तिपनिमा

नापरमई देवसरिमाना। अतिअनहूलजननभवजा

ना। दीनदिअवरकंकणपानी। नहिसमरचन असंभ

वहानी। जवनरेसअसवचनउचारा। नवमहिरवीह

ठकीनअपारा। खानपाननिजपरिहरबिसारी। भ

ईमलीनवदननपआरी। जयपिभूपविविथसम

झानी। जयअनियरुभावनहिंमानी। दोहा। नव

नरेसचिंताविवस सचिवसज्ञानउलाय। महि

रवीकरहठकठिनकल कंकणदीनरुनाय। २०।

टीका। नवकिंनरनाग मानुषदेवता ऊंकरके से
वनकीहूई गंगामाईकादिव्य कंकणदेखकर राजा
जोहै सो वारंवार दंडप्रणाम करके कोमलवाणी
सें कहनेलगाकिहेप्यारी आजतें संसारमेंधन्यहैं।
किजिसने जगतजननी और भक्तजनोंपरसनेह क
रनेवाली मातगंगेका ऐसा परमपवित्र और सुंद
र शोभावाला हाथ्यकामनोहर भूषण धारणकिया
है तिसपरवेभक्तसबभीधन्यहैं किजिन्होंनेतेंपर

ऐसासनेह और उपकारकियाहै मानोहेप्यारी क
लपवृक्षकेतुल्य देकर तेरेको जगतमे सफलक
रदियाहै ऐसेपतीके मुखसेवचनसुनकर राणी
नेसोकंकणलेकर अपनेहाथमैधारनकरलिया
तबतोसुभ संपती और सौभाग्यके सहितहोय
कर अपनीछबी और शोभासेमानो देवकन्याको
भीलजादेनेलगी इसप्रकार तबकुछ समय व
तीतहोयगाया तबएकदिनराणीके चित्तमे अभि

लाषाजोउपजी सोवडी नम्रवाणीसे हाथजोडकर
राजाकोकहने लगीकिहेप्राणनाथ इसमनको
भावतासुंदर कंकणजोहै सोआपकेलाहाथमैथा
रणकियाहूआ शोभानहीं देताहै जोकृपाकरके
कदाचित इसकीजोडीका दूसराभीवनवायदेवो
तो नाथमैदोनो हाथोंमै धारनकर्के अपनीमनवां
छितकामनाको सफलकरूं इसप्रकाररानीकी
प्रार्थनासुनकर राजाकहने लगा किहेप्यारी

रहनैनेकाकथन कियाहै विचारनोकर कि जग
न्माताके भूषणसमान दूसराभूषणबनानेको
संसारमें कौनगुणीसामर्थ्यहै सो ताकोलिचनरा
ई कियेतैंभी नकछुनहीं बनसकता वेरविदासभ
क्तजोहैं सो मनवचनकाया करके जड़नेदनभ
गवानके वडेहढ सेवक श्रोर परमप्यारे भक्तहैं
तिसतें तिनपर श्रीगंगामाई अनुकूंभई अर्थी
न प्रसन्नहुई श्रोर अपनेहाथका कंकणप्रसाद

ल

८८ भ० ७८

कृपाकरकेदिया अव तिसके समान हमगारव

ना हेरावणी असंभवहै अर्थात नहींहोयसकता

जव इसप्रकार राजाने कथनकिया तव रानीने

अनसेकर्के हठधारनकरलिया खानपान इत्या

दि सवसुख त्यागकर्के वडीमलीनमुखहोजा

तीभई राजाने यद्यपि वहुतही समुझाई तथापि

स्त्रीस्वभाववशहुरहे नहीमानतीभई तव विं

ताके वशहुखीभयाहुआ राजा अपने प्रवीनमं

७५

दीकोतुलायकर कंकणकेविषयमै रानीकाह
व जोध्या सोसवसनायदेनाभया।२०। चौपाई।
सखिवसहइदसाति कथनभुआला। लगेपाभन
नकरनोरिरसाला। मानगंगकंकण सम्मको
ई। मिलनजसाथभूपभवहोई। पैहककरहं
कथननोहिपासा। सगमउपाय न्दपतिगणरा
सा। जोवानिपरहिंल लिनसखदाई। सोआव
चलहुवेगाक्रिनराई। भवनप्रथानभक्तरवि

८८
भ:
७९

76

दासा। सोफुरकरहिं तोरन्पआसा। असकहिज
गलभक्तगृहआये। प्रथमनन्वचरननसिरनाये
पाछेकीनभननमरउवानी। सुनहुप्रवीनभक्तज
गमानी। तोरभक्तिरतनमहिषीजेहू। तासुदीनकं
कणतवनेहू। मातुगंगकरुपावनपानी। अवत
हिममवियजाविनशनी। जद्यपिहममहूंअगमल
खिटारी। नद्यपिनहिंन तजतहठभारी। खानपा
नसबदीनतयागी। वाहनचलन प्राणअबरागी

७६

मैकमलनिधवभक्तविनुशानी। असनवभनीभूपम
खवानी। लाग्येकरनसोव रविदासा। करहुंदेव
अवकवनअनासा। जहितेंभूतचराचरसेवी। मिल
हिंललित कंकणविषदेवी। हठवसननरभूपजन
रागी। देहिंअवशपशाणनिजत्यागी। मिलहिंविश्व
मोहि अपजसभारी। असप्रकारनिजहृदयविचारी
हमतिरामजन शासनिवरने। लाग्येभक्तयतनअ
सकरने। आयतपात्रविमलजलपाई। करतशउ

वषुध्यानलगाई । मातगंगागुणवदनसराहन । कवि
करिलागकरन आवाहन । दोहा । हेगंगेहेभगि
रथी हेभव पतितउधारि । हेजान्हविहे भोगवति
हेसुभगा सुभचारि । हेनंदनिनलनीक्षमा विस्टे
वनादेवि । हेविद्याधरिवैस्नवी हेशांता सुरसेवि ।
हेनंदाहंदासिवा हेसिवसीसनिवासि । हेश्रीशांति
प्रदायनी जगजननी अविनासी । हेसुप्रस
न्नामाधवीहेसर्वाणिसुभकांति । हेसरसतिहेसुजसभरिहरिपद
संभविशांति । २१ ।

टीका। नवमंत्री सुरुदनोहे सोराजाका कथन सुन
कर हाथजोड़कर कहनेलगा किहेराजनतेनेसत्य
कहाहै परंतु गंगामाईके कंकण समानहसरा
श्रेसाजगतमें प्रापतहोना बड़ाकठिनहै इसकदा
चित नहींहोयसकता अवइसमेमनापाल तेरे
को मै एकसुगम उपायकहताहूं जोइससुंदर
सुखदायक वनपडेतोतुमारा मनोरथसहजेही
सफलहोजाताहै सोक्याहै कि भक्तप्रधान रवि

५८
भ०
५८

दासजीकेहाथमेंचलोऔरतिसीसेकंकणकी प्रार्थना
करो ऐसेमलाकरकर मंत्रीऔर राजादोनोभक्तउत्तम
केघरमैंचलेआये और प्रथमनम्रभावसे चरनोपरप्र
णामकिया पीछेहाथजोडकरविनती करनेलगे कि
हेजगतमैं मानकेदेनेवाले भक्तप्रधान वैरागीजोत
मारे चरनोकी भक्तीप्रीतीवालीहै तिसकोआपनेक्र
पाकरके गंगामाईकेहाथका परमपवित्र औरदिव्य
कंकणदियाहै सोमोहितभईहुई राणीअवतिसकी

जोशीकाहमरा कंकणभीमांगतीहै यद्यपि हमनेति
सकोबहुतनहीं समझाया तद्यपि सो अपनाहठन
हीं त्यागतीहै खानपानसब छोडकर प्राणोंसेनि
रासहोयरहीहै जोकदाचित आजकालमे तिस
को कंकणनहीं मिलातो अवश्यप्राणोंको त्याग
देवेगी हेसंतउदार जोकदाचित इहवाणीमरणको
प्राप्तहोजावेगी तोकहिये कितिसकेविनामैके
सेजीऊंगा नाथतबतो मेरे मरनेमैभी कुछसंदे

रुनहींहै जबइसप्रकार राजानेकथनकिया तब
रविदासजी हृदयमैपरमचिंता और सोचकरने
लगजातेभये किदैवयोगवसै कोन ऐसाउपायक
हू किजिससैंसर्व चराचरजीवोंकरकेसेवतकीहुई
गंगेमाईका हस्तरादिव्य कंकणजोहै सो मेरेको
प्रापनहोवे नहींतोहठकेवशभयेहुये दोनोंराणी
और राजा अवश्यप्राणोंकोत्यागदेवेंगे और मेरेको
संसारमै अपजसकापात्र बनायदेवेंगे अर्थात

79

इसमैमेरी जगतनविखवरीभारीनिंदा अपकीर्तीहो
वेगी इसप्रकारहृदयमै विचारकर भक्तप्रवीन
रविदासजोहैं सो भक्तजनोंकेभयनिवारणेवा
ले भगवानकृपानिधानको स्मरणकर श्रेसाय
जनकरनेभये कि शरीरसे शुद्धहोयकरके प
कपवित्रखुले पात्रमै निरमल जल पायकर औरध्या
नलगायकर अनेकप्रकारकी स्तुतीसे जग
जननीगंगेमाईका आवाहनकरनेलगे किहे

गंगे हे भगीरथी हे संसार मे पापी जनो का उद्धारक
रने वाली हे जान्हू राजा की कन्या जान्हवी हे पाता
ल मे विचरने वाली भगवती हे शोभा की निधी
हे शुभ आचार वाली हे समुद्रियों करके पुजत हे
नेत्रा हे कमलवत शोभा वाली हे तमामनी हे
विस्तृइष्टवाली हे देवी हे विद्या के धारने वाली हे वि
ष्णु भगवान की शक्ती हे शांती हे देवता उं करके
सेवन की हुई हे स्वेत जल वाली शिवा हे हंदा हे म

हादेवके सीसमेंनिवास करनेवाली हेकल्यानम्
नी हेशांतीकेदेनेवाली हेजगतमाता हेप्रवनासी
हेप्रसन्नमुखवाली हेमाधवभगवानकीप्यारी मा
धवी हेसुंदरवरणवाली हेदेवनदी हेमनोहरप्र
भावाली हेसुजसकीखानी हेविस्नुनारायणके चर
नकमलोंसें उतपन्नभईहुई हेभवानीमेरेपरकोम
ल अर्थात प्रसन्नहो। १२। चौपाई। असजवकीनभ
रूपवनताहू। वदनदेवसरिअसनतिचाहू। तोजहं

७८
म०
८१

निश्चयह्वोतअभंगा। तहांसर्वथलव्यापकगंगा। ताम
पात्रमयऊरमिसोभा। लागीदेनललितमनलोभा।
कंकणकलितरतनकृतकारी। पसोवहिरनिकसत
इतवारी। लोकविलोकिचरितविसमाये। साधु
साधुसबवदनअलाये। रविजनदेखिहगनउति
तासा। करिप्रणामनिजहृदयहुलासा। मोरीभला
जननसवदेया। रावीपैजआजजगमैया। अहोमातसम
संसृति सारी। ऐसो कवन जनन हित कारी।

असअसंसिमनबिबिधप्रकारा। लेनभक्तवरकैंक
एचारू। नृपहिंदीनसंज्जनसनमाना। प्रीतिनिरंतरम
खिवचनवखाना। देहैं नृपनिजप्रियकहंजाई। ह्रोव
हिंतासमफलसिवकाई। भूपलेनवरननसिरनावा
मनहुंलोकसवसंपतिपावा। आनंदउदधिमगणाछि
तराई। प्रियकरदीनभवननिजआई। देखिहगाननि
जअदभ्रतरागी। आपनभागसराहनलागी। मोस
मकवनधन्यजगआजा। जहिअसकरनदेवसविरा

जा। कंकणादिमिजहितमणिबाहू। जनमनतिमरञ्ञा सध्रमहाहू। आजजानिजगअभिमनदाई। भगवन भक्तसंतसिवकाई। नवतें अधिकभ्रूपजनरानी। अ वरिलभक्तिदासरविजानी। नजनसकलनिजमान वडाई। लागेकरन हविरसिव काई। दोहा।
विप्रसंत सेवत सदन अखिलभोग सुखभोगि।
नजन अंत निज वपुष तिनली नपरम पद जोगि। असगावाइह चरित मे रामभक्त रविदास।

करनहुविरहद्भक्तिउर हरनसकलभ्रमज्ञाम। २२।
टीका। इसप्रकारनव भक्तवनधारी रविदासजीने गं
गामाईकी प्रसन्नगायनकरी सोजहांसन्यकरके
अभंगनिश्चयहोताहै तहांसर्वस्थलमे गंगाहीव्या
पिकहै तिसीपात्रमे किजिसविखेजल परिपूर्णकर
केभक्तप्रधान गंगामाईकाध्यानकररहेथे उरमीजो
जलकीलहिरें और कलोलतरंगहैं सोनानाप्रकार
से उमचउमचकर शोभादेनेलगे और तिनतरंगोंके

हीउछालेसे रतनमणियों करके जडतभयाहूआ गं
गेमाईका दिव्य कंकणजोहै सो उछलकर तुरतज
लसेबाहिर आयपडताभया इस अद्भुत कौतुक
कोदेखकर लोग अचरजको प्रापतहोयगये औ
र सबकोई मुखसे साधुसाधुउचारन करने ल
गपडे तब रविदासजीदेखकर और बारबारदं
डवणाम कर कर आनंदमै मगणभयेहूये क
हनेलगे किहेदीननहितकारनी हेपतितउधार

नीमानलगेगे तेने आजमेरीलजा राखलेई हेयंवेते
रे समान संसारमे कोनअसा दीनजनोपर सनेह
करनेवालाहे इसप्रकारशलाघावडाई करकरओ
र तिसमनोहर कंकणको लेकर भक्तप्रधानवडे
सनमानसे राजाकोदेदेतेभये और प्रीतीभावके
वचनोंसे कहनेलगे किहे राजन इहदिव्यकंक
णजोहे सो जायकरके अपनीप्यारी राणीकोद
देवो कोंकिउसकीसंतानसिवकाई सफलहोजावे

६८
भं:
८४

84

राजातिसकंकणाकोलेकर रविदासजीके चरनोपर
सीसनायकर मानोतीनलोककी संपतीकोपायकर
केआनंदमैमगणभयाहूआ घरकोचलाआया त
हांआयकरके भक्तप्रधानकोदियाहूआ गंगामाईका
कंकणजोथा सोराणीकोदेदेनाभया तवराणीजग
तजननीकेअद्भुत कंकणकोपायकर अपनेभागों
कोसराहनेलगी किआजमेरेसमान दूसराकोनज
गतमैधन्यहै कि जिसकेहाथोंमे इहदिव्यमणियों

८३

करके जोहिन वडेप्रकाशमान और भक्तजनोके म
नकाअंधकार और भ्रमत्रासके नासकरनेवालेश्री
गंगामाईके कंकणविराजेहुये शोभादेतेहैं आज
मेरेकोमनवांछित फलकेदेनेवाली जगतमें भ
गवानके संतभक्तोंकी सिवकाईजोहै सोजानप
डीहै तबतें राजा और रानी रविदासजीकी अविर
लभक्ती जानकरकि जिसमें कोई विरलनहीहै
अपनीमानवडाई सवत्यागकरके दिनदिन अधि

भ. ८५

कनें अधिकहीं सेवन सतकार करनेलगे ऐसे संत भक्तोंकी सेवा करते करते दोनो राजा और राणी यतनकेविना सहजेहीं शरीरको त्यागक र मुनीजोगीजनोंको दुरलभ परमपदजोहै ति सको प्रापतहोजातभये नाभादासजी कहते हैं किहेसंतो इसप्रकार इह संपूर्ण भ्रम। भयके हरनेवाली और रामभक्तोंको हृद यमैं दृढ करने वाली रविदास। ॥

86

८८
भ·
८६

भक्तकीमनोहर गाथाजोहै सो मैनेआपके आगे गायनकर देईहै।२२। इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथे भगवद्भक्तमहातमे भाषाटीकायां रविदासचरित वरणनं नाम सप्तमः ॥ ॥

मिहांसिंहकृत

लियेसंगनिज वाहननाना। करिग्रहफ्फसिवकादि
महाये। गुहकहंसदन धरन पतिल्याये। करिभू
जन भोजन वनवायो। प्रीतिभक्तिजुत भूपजिमा
यो। अमप्रकार सादिरकरिसेवा। राखेभवनभू
प गुरुदेवा। वीतेकछुकदिवसजवताहां। मांगी
नव विदाय मुनिनाहां। पीपासनन चरन सिरना
नाये। मणिभूषण धनवसन मंगाये। सनमुख
राखिभन्योकरजोरी। आवनदेतघाल महिखोरी।

७९
भ॰
१५

15

कृपानाथ नव लायक नाहीं। हमहु ग्याल अनुचित नज
न काहीं। गुरु वर सनन तभू पश्रम वानी। मधुर बनीत
पीन रस सानी। कृपा युक्त अस वचन उचारा। नव न
प श्राजयन्य संसारा। दीन्हो वित अनेन नहम काहीं।
पुनि अस कहत दीन कछु नाहीं। पहुवीन सज्जन जन
चाहु। निज कृत गुन न न नाहिं उपकाहु। अस प्रकार
गुरु आसिष रागे। देन सुभवँ गवन जव लागे। नव
नरेस जग जोरत पानी। बोल्यो वदन नम्र मृदु वानी

न

मैतोचलनचाहूं गुरुदेवा।प्रभुसनचरनकरनकछु
सेवा।इहृथनथरनिधामस्तनदारा।तजेपाजानिजि
यसकलविकारा।प्रभुसरोज चरननरतिमानी।
स्वानिश्रमसन्तपति बचनसवरानी।विकलश्रथी
रकहृतश्रमसरोई।हमरेनाथकवनगतिहोई।प्राण
श्राथारश्यामथनमागी।हमहुंचलव प्रभुपाछिल
लागी।तवप्रबोधिगुरु विविधप्रकारन।तनहिं
जननकरिकीननिवारन।सीतेनामएकनल्पतानी

५९
भ॰
१६

जाय

पतिरतिचरनजासुहृदमानी । सोनभई वारनव्रत
धरनी । लगतलाज प्रभ वदन उचरनी । दोहा । जो
नपभागनइंह जियजीवनसनकाय । तोइन प्राण
न प्यानकर परहिं नपलकवसाय । टीका । नव
राजागुरुजीका आगमन सुनकर वडेसनमानसे
आगे जायकर चरनोपर प्रणामकरताभया फि
रप्रीतीभक्तीसे सुंदर पालकी परविठाय करके
सर्वसिष्यसमाज के सहित आनंद पूर्वक घरमे

१६

16

लेआया तहांविधीवत सवसतन सेवनकरकरऔ
र ततकाल बडेसुंदरदिव्य भोजन बनवायकर भ
क्तीसनमानसे सवसंतोंको जिमायदेताभया इस
प्रकार राजा पीपाजोहै सो गुरुजीका चरनसेराव
कर दिन दिन नित्य नयांही सेवन सतकारकरने
लगा ऐसेजव कितनेकदिन वतीतहोयगये तव
एकदिन गुरुक्रिपाल प्रसन्न होयकर विदाय
मांगनेलगे पीपासुनकरचरनोपरसीसधरदेताभ

५९
भ
८

17

या और फिर कंचन मणी भूषण वस्त्र इत्यादि धन
मंगायकर और सनमानसे आगे राखकर हाथ
जोड़ करके दीनभावसे विनतीकरनेलगा कि हे
कृपानिधान मै कादेऊं देनेकोभी लज्जाआवती है
प्रभू इह कुछ आपकेलायक नहीं है मैने अनुचित
ही कियाहै कृपासिंधु आपदया करकेमेरे अपराध
कोक्षमा कीजिये ऐसेबड़ी मधुर औरवनीन प्रीती
रसकी भीगीहुई पीपाभक्तकी वानीसुन कर

गरुड़पालप्रसन्नभयेहूये। कहनेलगेकिहे राजन
ने आजजगतमे धन्यहैं और धन्यनेरी सीलता स
मर्तीहै कि देखो जिसने हमको इतना इमित ध
नदिया कि जिसकीकोई गिनतीनहींहोती और
फिर कहताहैं कि मैने कुछनहींदिया अहोसज्ज
न पुरषजोहोतेहैं तिनकी संसारमे पहीरीतीहो
तीहै जोअपने कियेहूये उपकारको कदाचित
नहीं कहतेहैं कि हमने कुछकियाहै इसप्रकार

७९
भं०
१८

गहजीप्रसन्नभयेहुये सुंदरआसीसादेकर जवद्व
रकोचलनेलगे तवपीछानरेस हाथजोडकर को
मलवाणीसे विनतीकरनेलगा किहेकृपानिधा
नमैंतो कुछकाल आपकेचरनोकीसेवा करनेको
प्रभुतमारेसाथही चलनेचहताहूं इहधनधाम राज
समाजस्त्रीपुत्रजोहैं सोमैंनेहृदयमेंविकार जानकरस
वत्यागदियेहैं केवलआपकेही चरनोकीप्रीतीमानलई
हैं ऐसेराजाका कथनसुनकर राणींसबव्याकुलहोयगईऔर

18

बहुरोदन कर कर कहनेलगी किहे प्राणनाथजो
आपचलेजावोगे तोपीछे हमारी कौन गतीहोवगी
और किसके आधारजीऊंगी इसतें हमभी धनधा
मकोत्यागकर प्रभूनमारेपीछेहीं लागचलती
हूं तबगुरुजीने अनेकप्रकार प्रबोधकरकर औ
रसिखाय समझाय तिनसबको साथ चलनेसे

क२

निवारणकिया तब तिनमें एकसीते नामकर्के
रानीजोथी सो पतीके चरनोमें बडेदृढप्रेमवाली

७९ भ° १९

थी गौरसबनोमानगई परंतुवेनहीं मानतीभईल जाको त्यागकर प्रकट कहनेलगी किजोइह प्रभागन मेरीकाया प्राणनीऊके जीवनसाथनहीं जायगी तोइन प्राणोंके चलेजानेका मेरेकोकुछ वसायनहीं पडताहै क्याजाने कवनिकसजावेंगे।५। चौपाई। गुरुवर देखिसत्य व्रतरानी। बोले प्रति प्रसन्न मुखवानी। इहिकहं चलहु संग निजलीने। साधुसील पतिव्रत रनचेने ॥

१९

सुतासमान रहव सुकुमारी। राखब हमकहं प्राणतें

प्यारी। असकहिचले हरष उरछाये। नृपसमेत

गुरदेव सहाये। आयेसहित द्वारिकामाहीं। विधि

संजुत नरनायँमाहीं। यात्राकीन ललित मनभा

वन। दीनेदान विविध विधिपावन। बहुरि परस

रहोन विहाये। गुरुसमेत निजनिजसब आये। पीपा

भक्तपत निजनतमाहीं। एकलरहोद्वारिकामाहीं

एकदिवसआकुछिननाऊ। चलोप्रमकार बार नि

क

७९
भ०
२०

20

धराऊ। हारावनीरुचिरदरसाये। नवभगवानभक्त
सुखदाये। धरिसरूपनावक ननकाला। नृपसमी
पश्रायेजगपाला। अतिरमणीकद्वारिकाजेहू। दीन
दिखायसकलप्रभुतेहू। दोहा। पुनिदीन्योमनहर
नहरि करन उगाधनिधसयन। संख चक्र मुद्रा
रुचिर गदापदम सुददयन।९। टीका। नवगुरू
कृपालनिस राणीका सबबत देखकरके परमप्र
सन्नभयेहूये सुखसेकहनेलगे कि इसदेवी को।

साधसील और पतिव्रताधर्ममै प्रवीनजानकर सा
थहीं लिये चलो इहकन्याके समानहमारे पासरहे
गी इसपुत्रीको प्राणोंसेभी प्यारी राखेंगे ऐसेक
थन कर कर गुरू रामानंदजी अपने सबशि
ष्यसमाज और राजाके सहित आनंदपूर्वक त
हांसे चलपडनेभये और मारगको नहत करके
सुखसे सुंदर द्वारिकामै आयप्रापत हूये तहां
पीपानरेसने विधीअनसार भलीप्रकार सबया

७९
भ॰
२१

चाकरी और अनर्थीसाध ब्रह्मणोंको अनेक प्र
कारके दानभीदिये फिर परस्पर विदायहोय
कर गुरुजीकेसहित सर्व अपनेचले आवनेभ
ये पीपाभक्तजोहैं सो स्त्रीके सहित तहां द्वारिका
मेंहीं निवास करताभया एकदिनदिव्य द्वारि
काके दरसन करनेको नाउकापर बैठकर स
मुद्रकेबीच चलाजाताथा तबतिसकानिश्चयदे
खकर भक्तसुखदायक भगवान नावक अर्थात मल्लाह

ग्रपने

(21)

२१

कारूपधारकर नहां समुद्रमै तिसके पासचले
आये औौर अतसेरमणीक वशीसुंदर अपनी हा
रिकाजोहै सो भलीप्रकार सबदिखायदेतेभये
तिसतेउपरांत भक्तजनोकेमनको मोहित करने
वाले क्षीरसमुद्रवासी भगवान प्रसन्नहोयकर
संखचक्रगदापद्म इहचिन्ह मुद्राजोहैं सो पीपाजी
कोदेदेतेभये।८। चौपाई। इनमुद्रनसनभूषित
काया। करितबगावहवेगनरराया। भक्तोभूपस

७९
भं०
२२

निवचनसनेहा। मैननतजहुंद्वाराव्रतिप्रहा। ईह्नोक
रतसहमरणभगवाना। हृदिनजलथितजहुंनिजभा
ना। नवकरुणाय सिंधुभवतारन। कीनविविध
विधितासहनिवारन। ईह्नामरणनवभूपसज्ञाना
करहिंलोगआपजनसमाविनाना। ह्ववपरिणामभू
पमलनाहीं। हृदिन अचितवार नियनाहीं।
यद्यपि करणधार भव सागर। प्रेसो वि
विध धरन पति नागर ॥ ॥

२२

22

नथपितमोतासहवनाहीं। भनेवचनतव त्रिभुवन
साईं। करहतनकछिनपतगुणअयना। इहनिज
जुगलनमीलननयना। सुनतनरेसनरतहगदोई
मूंदेवैववचनवसहोई। नवकौतुकसागरकेती
रा। भयोजायसापतनलपथीरा। देखिभूपअदभुत
विसमाना। दैवचरितकछुपरोनजाना। निर
खिप्राणपति मनअकुलानी। रोदनकरतचरन
लपटानी। गदगदहरष विवस गतशोका। चौं

४९
भ०
२२

23

दचकोर भोरजिमि कोकी। श्रमप्रकार नीर
घ्यदरसाघे। चलेभवन न्टप हरषअघाघे। मि
ल्योमलेछ विप्रन पथकाहू। न्टपमन देखिभा
मनकउताहू। खडगादिखाय प्रबल विप्रनाई। हरि
लैचल्यो पननिन्टपकाहीं। देखनरहोठाढछि
तपाला। कीननयतन हरन कछुवाला। नवसीते
शोकारननाना। रोदनकरत सुमरि भगवाना।
जानिभक्तनिय परमदुखारी। अस्वाहफखड

२२

गकरधारी। मनुजरूपधरि भक्तसहैया। हरिरव
वार धरनिउद्धरनगैया। वत्सलभक्तभक्तसुखदाये।
आयेजनकहुं तजिनवनधाये। अवकितजात मंद्रम
निवारे। रहहुगाढ़ श्रम वदनउचारे। देखोउहू
प्रवलरिपुआवा। सिषकहंछाडि जासवसधावा
दोहा। तवकरुणायनकेत प्रभुसिषकहं धीरजदे
त। त्रपपेहृदय उमंगजत आयसंगनिजलेत।७
टीका। फिरभगवान कहतेहैं किहेराजनतेउन

उ॰ भा॰ २४

महाँसे अपनेशरीरकोविन्हतकरके अर्थात संखच
क गदा पदमके सहित भूषितहोयकर आनंदसे
अपने आश्रमको चलाजा ऐसेभगवानकृपानिधा
नका वडाहितसनेहकाभराहुआ वचनसुनकरग
जाकहनेलगा किमैंअवरस द्वारावती अर्थातद्वारि
काको कदाचितत्यागकरनहींजाऊंगा भगवानकोस्
मरताहुआ ईहांसमुद्रमैंही डूबकर प्राणोंका त्या
ग करूंगा तव कृपाके समुद्र ॥

24

और संसारका भय हरकरनेवाले भगवान तिस
को अनेकप्रकार समझायकर निवारणकरने
भये किईहांजलमें डूबकर मरनेसे राजनलोग
तमाराजगतमें बडाअपजशकरेंगे तांतेइसहठ
कोछोडदेवो हेप्रजापाल हठकाफलजोहै सो
कुछ शुभनहीं होताहै इहसमुद्रमेंमरणा तमा
रा उचितनहींहै इसप्रकार संसारसमुद्रकेमल्ला
ह भगवानने यद्यपिबहुतनहीं निवारणकिया

७४ भ २५

25

तथापि राजाअपने हठको नहीं त्यागताभया तव
तीनलोककेनायक भगवान् तिसको कहनेल
गे किहे पृथ्वीनाथ जोतूंनहींमानता तो अवतन
कम मान अर्थात एकक्षणभरकेलिये अपनेहा
थो नेत्रोंकोमूंदले इसवार्ताको सुनकर राजाने
भगवानके वचन अनुसार तुरत अपनेदोनोंने
त्रमूंदलिये तवदीन वंधुके कौतुकसे राजा तु
रत अपने अस्थानपर समुद्रके किनारे ।

प्राणपतिहूआ इसअद्भुतको देखकर राजाबडे
अचरजके वशहोयगया भगवानका चरित्रकुछ
जानानहींजाताहै तबराणीअपने प्राणपतीको
मनमुख देखकर बडारोदन कर कर चरनोंको
लिपटजातीभई जैसे चकोरीचांदको और चकवी
सूरजको देखकर प्रसन्नहोजातीहै तैसेहींपती
कोदेखकरराणी शोकसे न्हमहोयकर आनं
दमे मगणहोयगई इसप्रकार तीर्थयात्राकरकर

भ॰ २८

आनंदमैमगणभयाहूआ राजाफिरअपनेघरकोच
लपड़ा तबमारगमे आवँहूये वणविखे कोईउष्ट
मलेछजोथा सोराजाकेसाथ वडीसुंदरसलक्षणरूपव
तीस्त्रीकोदेखकर मोहितहोयगया और अधम
खड़गकाभयदिखायकर शत्रूकेसमान प्रबल
होयकरके राजपतनीको तरतछीनकरलेचला
तबराजास्थित भयाहूआ देखतारहा तिसके नि
वारणका कछभी यतन नहीं किया ॥

२८

रागणीजोहै सो दुष्टकोदेखकर शोक और भयसे
व्याकुलभईहुई रोदन करकर भगवानका स्म
मरणकरनेलगी ऐसेभक्तकी स्त्रीकाकलेश
देखकर गरुडवाहण पृथ्वीके पालक भक्तहि
तकारी और भक्तसहायक भगवान मानुष्य
रूपधारकर वडे चपलघोडेके सवार हाथमे
तलवार लियेहुये मानोविजलीकेसे चमकते
औरधावते चलेआये तवकोपकेवचनोसे कहने

८९ लगे किअरे मूढ़मंदमती अवकहांजाताहैं उहरईहां
भ० हीं ठाढ़ारहो ऐसेप्रवलशत्रुको आवते देखकर
२८ वेप्रथम भयकेवशभयाहुआ राजपतनीकोछो
ड़कर मानोपवनहोगया अर्थात भागगया तवद
यग याके समुद्रभगवान तिससीते नामक राजपत
नीं भलीप्रकारधीरज देकर और अभय करकर
के फिरसाथलियेहुये आनंदपूर्वक राजाकेपासलेआ
ये॥ ९ ॥ दो॰ ॥ दीविभूपद्मसवदनउचारा॥ऐसोधनजगजन
मतमारा

२७

२८

परहितलागिकीनजहिभाई। इहउपकारकहिन
कछुजाई। इहिकहंदीनउचितनवजानी। कीन
विभुनरनाहितमानी। तवसमानमुहिसंसतिसा
री। जानिनपसो आनउपकारी। वंदहुं वारवार
अवतोही। जहिजनदीन नवल तिपमोही। अस
जवभन्यो वचननरराई। तवभगवान भक्त सुखे
दाई। नपहिंदिखाय ललितनिजमाया। भयेल
पनमभदीनसहाया। तवनरेसमीतेसनकाहा

नवकससहइवि९नउ।खदाइ। जाइसदननिजवे
गसिधारी। नवनरेसतिय वदनउचारी। करहैोइया
कथनकससोही। सैननजइ पतिप्राणनतेोही।
होहिंनाथउरव कव[illegible]नतमारे। मोरेप्राणदैवरख
वारे। दीनघालभक्तन सुखदाई। आपदकालप्र
भहोहिंसहाई। प्रसजवक्षन्यो वचन स्वउरानी।
नव नरेस गवनो सुखमानी। कछुक हरमार
ग जव आये। किहरकराल वदन नववाये।

भावनभवकिविघ्ननिकसाव्यो । सीनेदेविविध
नटरपाव्यो । यदपिदीनधीरजनराज । करिकरि
विविधकथनमवेताहू । नद्यपितियसभावस्रा
तिभीहू । छुयोनहृदयलासकछुधीहू । नवल्प
अभय वचन सवदायक । वोल्योवदन सुनहु
खगनायक । अवलोंनमहं जनमसंसासे । अ
गनिन करमविवस निजधासे । भयोनमोह्न
भमत अकुलावा । अंतहं व्याब्रजनमनवपावा ।

अवनीतनजहू अधम नखविंसा। करन कुकरम जी
वनगहिंसा। सचिउपदेस मोरउरथाहू। होहुनिर
त शाव अमरख अहाहू। इहवनमाल ललितउरथा
री। जियतजीवजनिवधहुमरगारी। तोरैकुसलस
पथमतभाई। अव नकरहु उरकरमकदाई। सार
हूलसुनि भूपतिवानी। विमलविवेक ज्ञानहितसा
नी। मनहुंकुमति निसि सोवतजागा। सोमिसहूप
धरत अनुरागा। दोहा। लेत प्रदक्षण नम्र गतिधरत

धरणिनिजमाथ। करिप्रणाम छिनपत चरनग
योविघ्न मगनाथ। अवलगत हिकाननललित
छिनपत वचनप्रभाऊ। करनआहार नजियतव
यि पम्हमानव मगराऊ। ८। टीका। नवराजा
पीपा देखकर प्रसन्न होयकरके कहनेलगा कि अ
हो भाई धन्य जगतमै तमभाजनमहे किजिसने
परहितमानकर ऐसा उपकारकियाहै किजोकुछ
कहानहींजाता इसभामनीको वणविरव दीन और

७९
भ०
३०

दुखीजानकर वडेहितचितसे रत्नाकरीहै तांनेआज
तेरेसमान संसारमे मेरेको और दुसरा कोई उपका
रीनही देखपडताहै हे हितकीमूरती तेरेको मेरी बा
रबार दंडप्रणाम होवे जोतुंने जगतमे मेरेकोमानो
इन्दनवल अर्थात नई ह्यीदानकरीहै इसप्रकार जब
राजाने कथनकिया तबभक्तसुखदायक भगवान
राजाको अपनी अदभुत मायाका चमतकार दिखाय
कर फिरदीनसहायक तुरततहांही लुपतहो जा

३०

30

तेभये तवराजा सीतेकोकहनेलगा किहेप्यारीमे
रेकोनानाश्रम औरखेद प्रवश्य करके भोगनाहीं
है परंतुतंरहवणका दुःख और कलेशजोहै सो
तुमकों सहारतीहैं जावो अपने घरमें जायकर
सुखसें निवासकरो ऐसेपतीका कथन सुनकर
राणी कहनेलगी किहे प्राणनाथ आप तुमकों
कथन करतेहो मैंतो प्रभुतुमारे चरनोका कदा
चितनहीं त्यागुंगी और नाथमेरातुमको कोनक

७९
भ०
३।

लेशहै भगवान कृपानिधान मेरे ऊपर खबारेहैं
आपदाकालकेविखें भक्तसहायक और भक्तहि
तकारी दीनबंधु रतकहेजातेहैं ऐसेजब राणी
ने कथनकिया तबराजाहृदयमैं सुखमानकर
तरतचलपउताभया जबमारग चलतेचलते कुछ
कहूरीपर आयगये तबएक महाभ्यानकसिंहमखेखा
लेहूये वणसेनिकलकर भवकताहूआ सनमुखच
लाआया तिसकालरूपभयंकर मृगराजकोदेखकर

३।

3।

सीनेजोहै सोभयके वशव्याकुलभईहुई थरथर
कांपने लगपड़ी राजाने यद्यपि वह्नतही धीरजदि
या तद्यपि स्त्री स्वभावजोमहांभीरू अर्थात डरनेवा
लीथी हृदयमें कुछधीरज नहीं धारतीभई तवरा
जा अभयहोयकर वडेसुखदायक वचनोंसे तिस
मृगराजको उपदेशकरकर कहनेलगा किहोमृ
गपती विचारकरके देखजो अवलग संसारमें
तेंने करमकेवशहोयकर अनेकही जनम धारन

८९
भ०
५५

किये हैं और भ्रमता भ्रमता व्याकुल होय गया है सो
तिनको प्रापतन नहीं भया अवश्रीन को तैने व्याघ्र जो सिं
ह है तिसका जनम धारन किया है हे वीमन खो बाल
हे मूर्ख प्रथम अव तो जगत मैं इस जीव हिंसा के कु
कर्म को त्यागकर और मेरे उत्तम उपदेश को पाय
कर अव तें आगे मरे हूये जीव को आहार किया क
र इस तुलसी की माला ले और हृदय मैं धारकर
वैस्नव भक्त वन जा जीते जीव को मन मारना और

३१

इहउरकरमजोहै सो अवकदाचित नहींकरनासि
ह तेरेको हमस प्रमातमाकी वारवार सोगंदहै इ
सप्रकार वडीज्ञानविवेक औरसंदरहितकीभी
गीं पीपाभक्त कीवाणी सुनकर सगपती सा
नो कुमतीकी निद्रामेसोया जोथा सो जागउठा औ
रवडा शांतीसरूपधारकर प्रेमभक्तीवालाभया
हूआ राजाकी चारोवोर प्रदक्षणालेकर औरदी
नभावसे वार वार प्रणाम करकर अपने वण

७९
भ
३३

केमारगकोचलाजाताभया तिसदेशविखें पीपा
जीकेवचनके प्रभावसे प्रवलगभी कोइमानुष्यप
शुसिंहजीने जीवको मारकरनहीं खाताहै।८। चौपा
ई। नवनरेस कानन तजितेहू। मारगदेखिवैसइक
गेहू। रविमध्यान कालगतिजानी। ग्रायेनहांविपुल
श्रममानी। रहाइसवैसभक्तभगवाना। नृपकहंदेखि प
रमहरषाना। साधुजानिचरणन सिरनाये। मांदिरसवि
ग्रासनवैठाये। जगकरजोरि विनय अनुरागा। करनव

३३

दन नवन असलागा। मैनिज उदयभागजगवीन्यो।
सेनसदनमहि दरसनदीन्यो। अनायास नवदीनस
नेह। कीनमोर पवन इहगेह। असप्रकार करिवि
नयवडाई। भक्तवेसनिज वियसनआई। भयोनसद
न अन्तकछुराहा। लष्यनसंत करहुं अवकाहा।
भिदातिन निजधरम सदाहीं। सोहुं ग्रानकोन्योहम
नाहीं। कवनअनाम करहुं अवधारी। सुनतवैस
चिय वदन उचारी। भवनविभूतिविदनपतितोही।

७९
भं ३५

जानिनपरत जतन कछुमोही। पैइहवसँमोरपरि न
धाना। तवलैजाहु नगरपतिथाना। काहुविलोकि
वनक नतचेही। तापैंयथालहुधविपही। ल्यावहु
अन्न सदन पतिजोहीं। तोपरितोष संत कछुहे
हीं। असँवैसभक्रवरनारी। हरषिवसन निजदीन कहि
उतारी। वैसहुजाय नगरपटराख्यो। लावाअन्नस
दन अभिलाख्यो। सियकहंदेतभयोम्रदुवानी। इह
तवरवहु पाकनिजपानी। दोहा। हमहुंदेहुकछुथे

६४
भ:
३६

अन्नभीनहींहै और संतअनसे करकेभूखे देखपडते हैं अब कौनउपायकरूं अपनानित्यकाधर्म भिक्षा टनजोथा आजसोभीनहींकिया किजिसतें घरमें कुछअन्नहोता अबसंतोंकोकहांते भोजनजिमाऊं इसप्रकार पतीकावचन सुनकर सोभामनीकहने लगी किहेनाथ घरकीविभूतीजोहै सो आपको भलीप्रकार सबविदितहै अबमेरेकोभीकोई यत न सूझनहीं पडताहै परंतु हेप्राणनाथ एकमेरा

षनिज नवसुरवजगपाय। नवसियसादिर सदनस

म वैसग्रसनविरचाय।९।टीका। नवपीपाजी तिस

वणको त्यागकर ग्रौर सूरजका मथ्यान समयजा

नकर श्रमतभयेहूये ग्रर्थातथकेहूये मारगमे ए

क वैसकाघर देखकर तहांचले ग्रावतेभये सोवे

सभीभगवानका दृढभक्तथा पीपाजीका दरस

नपायकर वडाप्रसन्नभया ग्रौर संतभक्त जान

कर दीनभावसें चरनोंपर प्रणाम कर कर फिर

ध
म.
२ ३५

यकर घरमें दरसनदिया और यतनके विना
हीं हेदीन सनेही चरनधारकर मेरेघरकोप
विज्ञकियाहै इस प्रकार विनतीवडाई करके
रफिर वैसभक्त अपनी स्त्रीके पास जाय क
र कहने लगा कि हे प्यारी आज घरमें

र भ
३५

35/2

ल्गाय करके प्रीती सनमानसे सुभ
ग्रासन पर विठाय देताभया ग्रौर
हाथ जोड कर दीन वाणीसें विनती
करने लगा कि प्रभू ग्राज मेरे वडे भ
ग्ग भाग्यहैं जो संत कृपाल तमनेग्रा

इस्से नित्यके पहिरने बालावस्त्र है सो तत्व मनगरमै
लेजावो और किसीउकानदार अथवा गृहस्थीके
पास वंधे छोड़कर तिसके अनुसार जो कछ मिल
ता है सो अन्नमात्र लेकरके घरमै चले आवो तिसतें
कछ संतोंका परितोष होयजावेगा ऐसे कथनक
रकर तिस पतीसेवत स्त्रीने हरषसे तुरत अपना व
स्त्रउतार दिया सो वै सनगरमै राखकर तिसकेव
दले मै अन्न जो मिला ततकाल लेकरके घरमै चला

स

५९
भं०
३६

आया नवराजाकीस्त्री सीतेजोथी तिसकेपास आय
कर कहनेलगा किहे सुशीले तुमइह अन्नलेवो
और प्रीतीपूर्वक अपने हाथसें भोजन वनावो और
रुचीसें वैठकरपावो जोशेष कुछपीछेवचेगा तो
हमकोभीदेदीजो तवसीतेने अन्नलेकर और चौ
कालगायकर तवतही प्रीतीरुचीस तहांवैसके
चरमैं भोजन वनायलिया।५९। चौपाई। प्रथमहि
तिहिं नैवेदसुहावा। पीपाभूपभक्तिजुनलावा।

३६

36

देतवैसकहं पुनि अनुरागे। दंपति आउ अवचनजव लागे। तव नरेस अँगिगाउ चारी। कहांवैसवरविये त्वमारी। सीतेस्हनन कथनअसराऊ। उठीतजनतभो जनवितवाऊ। इतउतकरतसदनअन्वेषण। लागी ललितवैसतियदेषण। कोष्ठीलपतअवसनअ केली। सीतेजायहष्टिहगमेली। सखिमसकाय व चनमऊकाहा। कवनमरमअहं नागरिताहा। हम कहंकेऊवार असरागी। पहोविपतिसंतनहितला

म

७९
भं.
२८

गी। सुनि प्रभ कथन वैमतिय केरा। सियकहाथ
न जनम जगतेरा। पतिहुं तमार थन संसारा। पर
हित जास रुचि रघुनाथारा। अस कहि सिय मानस हु
रषाई। अर्धब सन निज नास उपाई। तरत गहित क
र बहि रनि कासो। चतुर बाक निज हृदय बिचासो
इनकहं देखि सत्रु बत माहीं। भक्ति हमार लेस कछु नाहीं
रुप सन नाय कथन सब कीमो। इह हट निरत भक्ति हरि की
मो। जो हम सन रहन कीन भलाई। प्रति उपकार कवन नहि राई

37

२८

तबनरनाथभयोमृदुबानी। जाबहुनगर सकुच न
जिरानी। यथाअनीत नीत बनआई। त्याबहुप्रिया
वेगावितजाई। मैहूंपतनयुतनगरसिधारी। त्याब
हूं यथाल[illegible]यनप्यारी। दोहा। तोइहिकरवृनिप
रहिं कछु संदरि प्रतिउपकार। असकहि कांदत
गहिनँ दंपति नगर सिधार। ९। टीका। जबभोज
नबनगया तब पीपाजी भक्तीप्रीतीसें प्रथम भग
वानको नैवेदलगायकर और वैसभक्तकोभीदे

धन

७९
भ०
३८

38

करपीके स्त्रीके सहित जब आपनें लगे तब वैसभक्त
की और देखकर कहने भये कि भाई तुमारी वैसवी
न स्त्री कहांहै औसे राजाके मुखसे वचन सुनकर रा
नीजोहै सो तुरन भोजनको त्यागकर और उठकर व
डे हरष उतसाहसे वैसपतनीको घरमे इधर उधर
खोजने लग जाती भई तब क्या देखती है कि वे घरमे
एक कोठीके बीच अकेली शरीरसे नगन छिपकरके
बैठी हुई है राणी तिसके सांनेजाँ हर्षी सिल्लायश्कर ।

य की

स

मिलायकर और सखिसे मुकाय कोमलवाणीसें कर

कहनेलगी कि हे प्यारी तुमारा ऐसी दशासे छिप

कर बैठनेका कौनकारन है तब वे सुशीले कहने

लगी कि हे हितकारनी हमको संतों ने मिल कईबा के

र ऐसी विपती आपतहोय चुकी है तं हमारा कारन

कहांतक सहेंगी इसप्रकार तिसका वचन सुनकर

सीतकहनेलगी कि अहो वडभागन तूं धन्य औ

र धन्य जगतमै तेरा जनम है और तेरा पती भी धन्य है

किजिसने हृदयमे परहित और परउपकारकारी व्र
तधारनकियाहुआहै ऐसे कथन करकर हरषके
वशभईहुई सीनेतिसके शरीरपर अपना आधावस्त्र
उढायकर हाथसेपकड़कर तुरत बाहिर निकाल
लेतीभई और अपने हृदयमे विचार करनेलगी कि
अहो इनका इहसत्यव्रत देखकर हमारीभक्ती तोकु
छलेस भी नहींहै तबजाय करके राजाकेसाथ क
हनेलगी कि महाराज इहतो भक्तीमे प्रवीन भगवा

३५

नके बड़ेहृढ़भक्तहैं इन्होंनेजोहमारे साथभलाई
और उपकार कियाहै तिसका प्रतिउपकार अर्था
त बदला हमकैसेदेसकेंगे ऐसेराणीका कथन
सुनकर राजाप्रसन्नहोयकर कहनेलगा किहे
प्यारी तुंसंकोच और लज्जाकोत्यागकर नगर वि
षेजातहांसे नीती अनीती करके जैसे बनसकता
है तैसेधनला औरमैभीनगरमे जायकर जिस
प्रकारकुछ प्रापत होय सकताहै तैसेही यतन

७९
भ०
५०

करकरलेआवताहुं इसतेइसकाहे प्यारी कुछ प्रति
उपकार अर्थात बदलाजोहै सो सिरसेउतरसकेगा
ऐसेकथन करकर दोनोराजा औररानी अभिलाषा
वालेभयेहुये धनकेल्यावनेको नगरविषेंचले जा
तेभये।९०। चौपाई। नवसीतिउरकरतविचारा। ठा
ढीजायवनकइकद्वारा। नेत्रविलोकिलाजवतिभा
मा। निजछवि हरनमानधनकामा। कोतवकहत
वनकमत्वेगाथा। आईईहांकवनकरसाथा। विभ

४०

५०

चारीधोंराजकुमारी। मनहुसत्यनिजवदनउचारी।
पतिनपरतलवभामनिजाना। ह्लोहुनवारवधक्रकु
भाना। करहेहोवेगकथनअवमोही। ईहांआगमन
कमनहितनोही। तवसीतेअसवदनअलाई। मेत
मपेंजाचिनकछुआई। जोकछुसराहिंदेहुनववदाना
तनिअसवचनवनकहुलसांना। यथाउचितथन
देतविदाया। सियकहंहूंकीनवनककरिदाया। ते
हपीलपतिसनमखआई। यथालव्यथनदीन

७४
भ०
भा

दिखाई। दोहा। इनकठुनिज आनिन सहत रति रन नग करने रि। वैसहिं हीन प्रवीन नृप विनय कीन न हिं थोरि।११। टीका। नवसीतनेजोहै सो हृदयमेविचा र करतीहुई नायकरके एकधनीके द्वारेपरस्थित होयगई सो परमलाजवती और आपनीछवीसें का मदेवकी स्त्रीका मान हरनेवाली सुंदरीदेखकर क हनेलगा किहे भामनीतं कौनहैं और ईहांकिसकेसाथ कैसे आईहै क्या तूं कोई विभ चारनीहैं ॥

भा

कि अथवा कोई राज कन्या हैं मेरेको सत्य सत्य क
थनकर मेरेको तेरा पती जाननहीं पड़ता है और वे
स्याभी प्रतीत नहीं होतीहैं भामनी अबप्रकट कर
के कहो किईहां तेरा आवना किस प्रकार भया है
तब धनीका कथन सुनकर सीने कहने लगी कि
हे दाता मैं ते द्वारपर मांगने के लिये आई हूं अब तेरे
से श्रद्धा पूर्वक जो कुछ बन पड़ता है सो दानकर
ऐसे सीने का वचन सुनकर धनी प्रसन्न होय गया

२९
म.
४२

42

दयासे यथाशक्त धन देकरके ब्रह्मन विदायकर
देताभया तव सीते वेगधायकर औरपतीके स
नमुखे आयकर धन जो प्राप्तभयाथा सो स
ब दिखाय देतीभई इहां राजाभी जो कछुल्या
याथा सो मिलायकर बडी प्रीती रीतीसें हाथ
जोडकर विनती सनमानसें जाय करके वैस
भक्तके आगे नैवेदन करदेता भया अर्थात्दे
देताभया ॥ चौपाई बहुरि कछुक दिन दंप॰
तिन्हहां। कीन निवास सदन तहि मांहां ।

४२

एकदिवस पीयाहरषाये। मज्जनकरन सरित तटधाये।
नव मारग उरकीन विचारा। हस [illegible] सन वैसज
वनउपकारा। कीन्योप्रीतिरीति जननोई। अतिउपका
र तासकिमिहोई। असकहि अथोहरषि जवकीन्यो।
मृदितपरनि तासचरचीन्यो। भलहिंदेविजवलियो
उचारी। हेममुद्र परिसुरणसारी। महिमनकरत
अक्षादिनताहृं। करिसनान आयोनरनाहृं। निसि
करं समरि भूपविततेहृ। निजभामनि सन भन्यो

५९
भं
धु

A3

सनेहू । मैं ल्यावहूं कवहूं किथनहूता । प्रति उपकार वै
स तव हूता । होहिं प्रिया संदेह विहाई । जव प्रसकीन
कथन नवराई । रहेल्रपन तसकर है चारी । चलेसहून
न सठ तहांसिधारी । घरणिखनन घट तांम्र निका
सो । खोलि तास जव हगन निहारो । भुजग भीम
फुंकरत नवपावा । मूर्छित्रास वस मरम डरावा ।
परत सीस घट चँलिवाई । सोवत रहे सद
न जहिवाई ॥ दीन तरंत नहां घट डारी ॥

ले

५२

सुनतनरेस होखतहिं भारी। उठि सामीप जायजब देखा
हरित भरत नाम बटलेखा। सोकुजानि कियति यहिं
जगावन। भन्यो वदन मृडवचन सुहावन। मोरहिं
वैस भक्त सुनजाई। मोर कथन प्रिय देहु सुनाई। ३
हवित तोरभागपकर नेहू। आवाविनु प्रयास तवगे
हू। लेहोभक्त मवर तवआई ॥ दोहा। सुनिसीते निज
प्राणपति हविर सुखद मृडवानि। वैसभक्त ढिग
आयउत हृदय हरष सरसानि। किहिमृडवचन व

राखहु सदन यत
न जत जाई ॥

नीत श्रुति पति कर कथन सुनाय। त्रिय संजुत वरवै
स कहु प्रभुदित चलीलिवाय। १२। टीका। फिरदो
नो राजा और रानी कुछ्छक दिन तहां वैस भक्तकेघ
रमैहीं निवास करते भये एकदिन आनंदसे पी
पाजी सनान करनेकेलिये नदीके किनारेको च
लेजातेथे तव मारगमें विचार करनेलगे किहुँ रमा
घ वडेहित चितसे इस वैसभक्तने उपकार जोकि
याहै तिसका प्रतिउपकार अर्थात वदला हमारेसे

कैसे उत्तरसकै ऐसे विचारकर नीचे दृष्टी करके
जो देखा तब पृथ्वीके बीच मुंदाहुआ तांबेका
घट देखपड़ा जब पृथ्वीसे निकालकर और
तिसका मुख खोल कर भली प्रकारदेखा तबवे
साराही सोवर्णमुद्रासे परिपूर्ण पाया अर्थात् सो
नेकी मुहरोंका भराहुआ पाया फिर तिसको वै
सेही तहां पृथ्वीमें दबाय कर और स्नान कर
कर राजा घरको चलाआया तब रात्रीके समय

७९
भ.
७५

तिस धनको चिंतन करके पीपाजीने अपनी स्त्रीकेसाथ सबभेद प्रकट करदिया और कहा किहे प्यारी जोकदा चितमैं तिस सुंदर धनको लआऊं तोवैसभक्तका वट लाजो हमारे सिरपरहै सोसब उतर जाताहै इसमैं कुछ संशय नहींहै इसप्रकार जब राजाने कथनकिया तब तहां कुछ दोचार चोर छिप कर बैठे हुयेथे सो प्रथम सुनतेही ततकाल तिस अस्थान पर धायकर चले गये और जह्नोंने ॥ ॥

45

जातेही तिसघडे को पृथ्वीसे खोदकर निकाललिया

तोजब मुंद तिसका मुख खोलकर देखने लगे तो

क्या देखतेहैं कितिसकेबीच एककालरूप बडा

भयंकर भुयंग अर्थात सरप फुंकारे मार रहाहै

तब भयके भयेहूये चौर तिसको तैसेही मुंदकर

और सीसपर उठायकर जहांपीपा तेरस सोये हू

येथे तहांल्यायकरके डालदेतेभये तिसके डाल

नेका शब्दजोभया तोपीपाजी स्रवणकरके जागउठे

वस

५९
भ.
५६

और तिस घडेके पास चले आये क्या देखतेहैं किवे कं
चन मद्धाका भराहूआहै तब सोई वृथा जानकर
अपनी स्त्रीको जगाय करके बडी कोमल वाणीसें
कहनेलगे कि हे प्यारी प्रातःकाल होनेही तूं वैस
भक्तके पास जायकर मेरा कथन जोहै सो इसप्रकारति
सकोस्पष्ट करके सुनायदे कि हे भक्त इहधन जोहै सो ते
रेही भागोंकाहै और य[illegible] के विना सहजेही तेरेघरमें
आयगयाहै अब तूं कृपाकर और ग्राय करके इस अपने

46

५६

धनकोलेना तहांअपने घरमें धनके सहित भली
प्रकार संभालकर राखेल इसप्रकार प्राणपतीका
वउसुंदर सुखदायक कथन सुन करके हरषके
वशभई हूई तुरत वैसभक्तके पास चलीआई
तिसके आगे विनतीकेभरे हूये वडेकोमल व
चनोंसे पतीकाकथन जोथा सो सब सुनायकर
फिर प्रीतीसनमानसे स्त्रीकेसहित वैसभक्तको
साथलेकर आनंद पूर्वक पीपाजीकेपास चलीआ

७९
भं:
४०

वनीभई ।।१२। चौपाई। तब सादिर नरनाथ प्रबीना। सो
चित कुंभ हरषित हिदीना। भन्यो संत तुज अनथिन भा
ई। इहि सन करहु रुचिर सिवकाई। तुमपें जइवर दी
नसनेहु। करुणा कीन दीन धन एहु। असकहि च
लेभूप जनसीते। भन्यो वैस तव वचन वनीते। कृत्य
कृत्य मोहि कीन कृपाला। अवकस चले तजतज
न आला। कछुदिनवस हमीत सुखदाई। मैकरिलेहुं चरन
सिव काई। तवनरनाथ परमसुखमानी। बोलेवदन मधुर मृदुवानी

४८

47

मीन नमहूं जसकीन हमारी। सविसिवकाई नजा
हिं उचारी। पेहमनें वनिपक्षो नकाहू। असकहि
चले पतनिजनतराऊ। यद्यपि वैस यतन वहुकी
ना। यद्यपि वैस यतन वहुकीना। तद्यपि रहे न
भूप प्रवीना। गावन करत दंपति जगधाये। सूर
सयन न्रप नगर सुहाये। तहांनिवास कछुक
दिनकीना। तेस्रुपत्य नरनाथ प्रवीना। श्रावास
नत भक्ति सरसाये। देखतदरस चरन सिरनाये

श्री
भ०
५८

जगाकर जोरिनम्र मृडवानी। बोल्यो सूरसयन सुखमानी। सोमि सरूप देखिप्रभतोरे। उपज्योप्रेम भक्तिउर मोरे। कृपानाथमुहि सेवककीजे। सचिउपदेश मंत्र वरदीजे। दोहा। पीपासुनत वनीत ग्रम सूर सयनमृडवानि। लोगेभनन प्रमोद जन गिरा रुचिर हितसानि नोकरहुं सिषतोहि मे सुनहु धरम निधराई। जोकर हो सुईकार तव ममनेदेश सुखदाई। ॥१३॥ टीका तव पीपाजीने वडे हरषमन मानसे सोधनका भरा

हुआ वस्त्र तिस वैसभक्तको देदिया और कहाकि हे
भक्तप्रवीन तुमइस द्रव्यकेसाथ घरमें बैठकर अ
तिथीसंत ब्राह्मणोंकी भलीप्रकार सेवाभक्तीकरो
तेरेको भक्तसनेही नंदनंदन भगवानने कृपाकर
के इह अनंत दियाहै ऐसेकथन कर कर सीताके
सहित श्रीरामचंद्र जोहैं सो तहांसे चलपड़तेभये
तब तिनको देखकर वैसभक्त हाथ जोड़कर बड़ी
दीन वाणीसें विनती करनेलगा किहे कृपानिधा

धन

४९
भ॰
४९

आपनेदया करके दासको संसारमें कृतार्थरूप कर
दिया अर्थात दीनको जनम मरणकाभय जोथा सो
सबमिटायदियाहै परंतु अब कहिये कि जनकोकौ
न अपराधहै जिससें प्रभु आपमेरे घरकोत्याग करके
चलपरेहो हेदीनसुखदायक हेमीनहितकारी कृ
पाकरिये और कुछदिनलग मेरेही घरमैंवसिये जो
मैं अघायकर भलीप्रकार आपके चरणकी सेवाभक्ती
करलेऊं नवपीपाजी प्रसन्नहोयकर बडी मधुरऔर

नो
४९

कोमलवाणीसें कहनेलगे किहेमीत जैसी तुमने ह
मारी सिवकाईकरीहै सोतो कुछकथननहीं कीजातीहै
परंतु हमारेसेंही कुछवननहींपडा जोतुमारीसिवाई
का वदला उतारते तुमधन्यहो ओर तुमारी सिवका
ईभीधन्यहै ऐसेकथन कर कर हस हस रटने पी
पानीचलपडे वे सभक्तने राखनेकेलिये यद्यपि वहु
तही यतन ओरहठकिया तद्यपि सो नहीं मानतेभ
ये चलते चलते दोनोराजा ओर रानी सुरसमयनभए

जो प्रसिद्ध था तिसके नगरविषें आय प्राप्त हुये न

हां कुछेक दिन निवासजो किया तौ वे राजा स्वरूप

न संतान से हीन था अर्थात तिसके घर पुत्र पुत्री को

ई नहीं था सो पीपाजी को सुनकर बड़ा प्रीती भक्ती

वाला भया हूआ तुरत चला आया और तिनका दर्श

न करतेही चरनो पर सीस धर देता भया फिर हाथ जो

ड़कर दीनवाणीसे विनती करने लगा कि हे कृपानिधान आप

का शांतरूप देखकर मेरे हृदयमें प्रेम भक्ती जो है सो उत्पन्न

५०

५९
स०
५०

50

होयगईहै अवप्रभु आपदया करिये और मेरेको दीनजा
नकर अपने चरनोका सेवक वनाइये और पवित्र मं
त्र उपदेशजोहै सो दीजिये इसप्रकार सूरसयनकी वडी
विनती प्रेमवाली कोमल वाणीसुनकर पीपाजीप्र
सन्न होयकर वडीहितकीभरीहुई वाणीसे कहने
लगे किहेसूरसयन जो कदाचित तूं मेरी सुखदा
यक शिक्षाको हितचितसें गृहणकरलेवें तोधर्म
की निधी मेतेरेको अवश्य अपनासिषसेवक वनाय

७९ भ० ५१

लेहंगा ।१२॥ चौपाई । तब कर जोरि नरेस उचारा । प्रभु
नदेस मोरे सुइकारा । करहु कथन तब दीनदयाला
तबबोले पीपा महिपाला । भूप सदन निजसंप
तिजोई । मोरे देहु सकल तबसोई । सुरसपयन बोल्यो
करजोरे । प्रभुविन सदन सरपण तोरे । तबपीपाउ
निगिराउचारी । देहोभूपभाम निजप्यारी । सुरतनरेस
गहतकररानी । दीनप्रवीन हरषउरमानी । पीपादेखि
मोदमनछाये । भनेवदन सउ वचन सुहाये ॥

५१

51

सता समान भूप इहमोही। अवनिय लाज सकुचस
वखोही। संतन सभावैढि मनभाघन। करहिंन्तयक
ल कीर्तनगायन। करिस्हईकार सीलनिधिमोई। प्रे
मपयोधि मगाण मनहोई। नवभ्रत सचिव भूप स
मदाये। अहननयन दाहण विसकाये। कहिनिंदादि
वचन मखनाना। इहविलपत भूप हमजाना। नवपी
पावपदोष निवारक। मनसंसार आरण वनारक।
नपकहं भनो पुनिताना। जोनव सदनवस्त वितनाना
भूप

७९
भ०
५२

कवि नरेस हरि शरणमारी। होहु विरक्त सुभक्त
सुखारी। तजहु नवंस मर्याद सुहाई। पालहु प्रजा
सो विविधविधि राई। दोहा। कुसुभक्ति रत दिवस
निसि सेवहु संत समाज। धरम पतनि जन कर
हु न्रप निस कंटिक निजराज। ४। टीका। नवरा
जा सुर सुथन हाथजोड कर विनती करने लगा
किहे दीनद्याल आपकी सुखदायक शिक्षा जो है
सो मेरेको सुईकार है मै परमाहित मानकर गृह

52

५२

ण करलेइंगा आपकृपाकरके कथनकरिये ऐसे
तिसकावचन सुनकर पीपाजी कहनेलगे किहे
राजन प्रथमतो अपने घरकी सब संपती मेरेको
देदे तब सूरयन प्रसन्न होयकहनेलगे किहे कृ
पानिधान लीजिये मेराराज समाज धन संपती
जोहै सो प्रभू सब तुमारेही अरपणहै तिसपरपी
पाजी फिर कहनेभये किहे प्रजापाल अब अपनी
प्यारी स्त्री भी मेरेको देदे ऐसे सुनतेही नरत आनं

५४
भ.
५३

53

इसेल्यायकर रानीकाहाथ पीपाजीके हाथमै पकड़ाय
दिया और कहाकिप्रभू इहभी आपके शरणम भई फि
रहाथजोड़ करकहाकि दीनबंधू और भी आज्ञाकिये
नवपीपाजी राजाका सत्य ब्रतजानकर बड़े आनंदको
प्राप्त होयगये और बड़ेमधुरवचनोंसे कहनेलगे
किहेनरेस इहतेरीरानीजोहै सोमेरेको पुत्रीकेसमा
नहै अबइह अपने हृदयकीलज्जा संकोच सबत्या
गकर संतसमाजमै बैठकर आनंद पूर्वक सुंदरनृ

त्य और गायनजो है सो कर कर भगवान कृपानिधान
को रिझावती रहे इस प्रकार सीलताकी निधी रानी
पीपाजीका उपदेश स्वीकार करके मानो प्रेमके स
मुद्र मे मग्न होजाती भई औसे रानी और राजाकी द
शा देखकर तिनके मंत्री सेवकजो थे सो परम कोप
से अनेक प्रकार उरवाद करकर कहने लगे कि ह
मने जानलिया इह राजा तो विक्षप्त अर्थात वाउला
होयगयाहे तब पीपाजीने सूरसयन राजाको श

त

७५
भ०
५८

54

गीरके सबदोष निवारणेवाला और संसार समुद्रके
तारनेवाला मंत्र उपदेश जोहै सो देदिया और कहा
किहे राजन जहांलगतेरे घरमै धन संपती और विभू
तीहै सो सब कृस्न अरपण करके जगतमै विरक्त
वनसखी होयकर विचर और बंसकी मर्यादाके स
हित अपनी प्रजाकोपाल अपनाकुलीन सनातन
धरम जोहै सोनातयाग और रातीदिन कृस्नभक्ती
मै लीनहोयकर संत समाजको सेवता हुआ।

अपनी धरम पतनी अर्थात धरमवाली स्त्रीके सहितसु
खपूर्वक निसकंटक राजकर।४। चौपाई। असउपदेश
पायनरराई। वितजनतकीन गुरनसिवकाई। निसप्रेहता
पीपामनमाहीं। सोसर्हईकार कीनवितनाहीं। सूरस
यन तव जगकरजोरी। करतवदनकछुविनयनथो
री। वार वार चरनन सिरनाये। होतविदाय भवननि
जआये। उतपीपा अति हृदयहुलासु। लगेकरन त
हिनगर निवासु। एकदिवस तहिनगरसुहावा।का

५९
भ०
५५

55

न

हुधनञ्य वनक वरश्रावा । भ्रमत भ्रमत पुर ग्रामन
केत । लेनमोलकल वृषँनहेत । काह्नउष्ट जन न
गर निवासी । तासँकीन कपट जनहासी । पीपानाम
भक्त इकभाई । तोकेसदन वृषव अधिकाई । जसभा
वहिंत मलेह्र सज्ञाना । मरमपकतें पकमहाना ।
सुनतवैस भरत असवानी । आवाभक्त सदन सुख
मानी । करि प्रणाम अस वदन अलायो ।
तमरे भक्त वृषव सनिपायो । ॥

व

५५

मोतेंजथामोल नवलेहैा। गौरववरद नवलकलदेहैा
पीपासनन वनक असवानी। बोल्योहृदय असंभव
मानी। मोरेसदन सनन नवआई। आवतहखव सांऊ
समदाई। देखिलेहु जससभावनतोही। देहुजथुवित
मोल कछुमोही। असकहि समरिभक्त उखमोचन
मोचनलागमृंदि जगलोचन। मिथ्यावचन वनक स
नकीना। परहिं नयतन दैव कछुचीना। दोहा। नव
देखो सधासमय मरमद वरद सहाय। आवतवैस

७९
म
५५

56

पीपा

वकाहू इक नगर विप्रन विचराय ।।५।। टीका ।। इसप्र ९
कार उपदेशपायकर राजा सूरसयन आनंद पूर्वक
धनवस्त्र इत्यादिसे गुरूजीकी वहुतसिवकाई करता
भया तवजी महांविरक्त ओर निसकामजोथे सोतिस
की धनकीसिवकाई सुईकार अर्थात गृहणनहीं कर
तेभये यद्यपि सूरसयनने हाथजोड चरनोपर सीस
धरकर वारवार वहुतही विनतीकरी तद्यपि पीपा
जीने सोधन ग्रहणनहीं किया अंतको विदायहोकर

५६

प्रणाम करके स्वसयघन अपने घरको चला आया औ
र पीपाजी आनंद पूर्वक तहां तिस नगरमेंही निवा
स करनेलगे एकदिन एककोई धनी वैस जोथा सो
नगर और ग्रामों मे भ्रमता भ्रमता बैलोंके मोलले
नेकी इच्छावाला तिसनगरविखें आय प्रापत भ
या तब तिसको एककोई दुष्टजन कपटसे हासी
कर कर कहनेलगा कि भाई इसनगरमे एकपी
पाभक्त वा सकरताहै तिसके घरमे अधिकतें

५१
भं०
५८

अधिकवडे सुंदर दरसनी वैलहैं तहांजायकर जैसेत
मको भावतेहैं तैसेदेखकर मोललेलेवो सो तुमारे
साथ भेदकीवातनहीं करेगा इसप्रकार सो वैसयनी
तिसधूरत कपटीकी वानी सुनकर हरखसें पीपा
जीके घरमें चला आया तिनकोदेखकर प्रणामकि
या और कहनेलगा किहे भक्त तुमारे पास वैलसुए
पायेहैं सोकृपा करके तुम तिनकामोललेवो और
वडे सुंदर दरसनी वैलजोहैं सोहमकोदेवो ऐसेति

५७

५८

सका कथन सुनकर पीपाजी साधू और सरलचित
जो थे सो इसकपटको कुछ नहीं जानते भये हृदयमें
असंभव अर्थात अनहोनी बात जानकर रामश्यामसे
तिसको कहि देते भये कि हे सज्जन सांझको घरमें
मेरे बैल आवेंगे तिससमय तूं आयकर और देख
भालकर जोजो तेरेको भावताहोगा सो प्यारे तूं ले
लेना और यथा उचित मोलमोहोगा सो मेरेको
देदेना ऐसे तिसके साथ कथन कर कर भक्तप

७५
भ०
५८

58

ध्यान पीपाजी भक्तोंके दुखहरनेवाले भगवानको
स्मरकर फिर दोनो नेत्र मूंदकरके हृदयमें सोच
नेलग जातेभये कि वैस्नके साथ मिथ्या वचनकर
दियाहै दैव अबकोई यतन सूझनहीं पडताहै इन
नेमें जब संध्याजोपडी तोभगवतकीमाया क्यादे
खतेहैं कि वडे मदकरके भरेहूये सुंदर दरसनी
वैल एक कोई वैस्नव वणसें चराय विचराय कर
के आनंद पूर्वक नगरको चला आवताहै ।५। चौपाई

तासुदेखि पीपाजियजाना। मोर पैजराखी भगवा
ना। प्रमुदित सीस मनहिं मननाई। हरषिली
न नव वैस बुलाई। दीने वृषव यथारुचिनासा
लेत वैस निज हृदय हुलासा। हरि अनुसा
र मोलजस दीना। भूपभक्त सादिरतसलीना
वृषवन स्वामी वैस्नव जोई। तांके प्रीतिभक्ति
उतहोई। हरिसरूप जियजानि अभेवा। करि
सादिर भजन सचिसेवा। कीन विदाय चरनसि

रनाई। सोवित मोल हृषव समदाई। कीनविभक्त

संत इजदेखी। असउपकार लोक सवलेखी।

इह्रकस इव्य कहत सवकाहू। नववोलेपीपा

नरनाहू। मोरेरहे हृषव कलगेहा। विकय

कीनलीनधनएहा। सुनतलोग मानसविसमा

न्यो। इह्रिकर भक्ति सत्य ह्रमजान्यो। यद्यपिहम

कीन्यो परिहासा। तद्यपिसत्य प्रतक्ष प्रकासा। अ

सप्रकार निजनिज सवनाना। लागेअसततिकरन

५५

महाना। एकदिवस नव भक्त मथीरा। चलेसनान
करन सरितीरा। असाहदृढ धरन पनदीने। आयेस
रन हुलकलबीने। वोथिविटप मन वाजि सुहावन
लगेविमल वरवारि अनावन। नव अविलोकि लो
क ग्रा मीना। हृष्टिवचाय नरग हरिलीना। अथम
लेत जव नगर सिधाये। तकतरभक्त स्त्र नवआये
सोनिज वाजि जर्थ वतपाये। है अदृढ आश्रमनिज
आये। डरजन देखि नरग विसमाये। सभ्रम गव

निसदन निजआये। दोहा। तहां विलोकत वाजिवर
द्रुतगति पीपापाहिं। आयसोई देखो तिन्है वंध्यो
तरग तहिंठाहिं। ५९। टीका। तवतिसको देख
कर पीपाजीने हृदयमै जानलिया कि आज मे
रीपैज भगवान कृपानिधानने राखलईहै ऐसे
विचारकर मनमैही दीनवंधुके चरनोका वार
वार वंदना करके फिर आनंद पूर्वक तिस वैस
धनीको अपने घरमै बुलायलिया और जैसेवेल

तिसके मनको भावनेथे तैसे देदिये सो तिनको लेक
र वडेहरषको प्रापतभया अपनी रुचीके अनुसारजो
मोलदिया सो प्रीति सनमानसे पीपाजीने प्रसन्नहो
यकरलेलिया तिसतें उपरांत वेवैलोंके ल्यावनेवाला
तिनका स्वामी वैस्नव जोथा तिसको भगवानकारू
प जानकर ओर भक्तीसनमानसे भली प्रकार सव
भ्रजन सेवन कर कर फिर हरष पूर्वक वार वार
चरनोपर सीस नाय करके विदायकर देतेभये

७९ भ० ६।

ग्रैार वे बैलोंके मोलकाधन जो आया सो ग्रतिथिसंत

ब्रीह्मण देखकर यथा उचित सबको बांटदिया इस

उपकारको देखकर लोगसब कहनेलगे किभाई

इहकैसाधनरहा ग्रैार कहांसे ग्रायाथा नवपीपाजी

कहनेलगे किभाई मेरे घरमे बड़े बड़े भारीं बेहे सोमै

ने तिनको वेचकर इहधन लियाथा ग्रैसे सनकरके

लोग सब अचरजके वशहोयगये ग्रैार कहनेलगे

किभाई इसकी भक्ती हमने सत्य जानीहै देखोहम

बैल

६१

यद्यपि इसके साथ हासीहीकरीथी तद्यपि इसने स

त्यकरके प्रकट दिखायदियाहै इसप्रकार सबको

ई अपने अपने भावसे पीपाजीकी प्रसन्नताजोहै सो

गायन करनेलगे तब एकदिन भक्तप्रधान सनान

करनेकी अभिलाषासे राजा सूरसयनके दियेहुये

घोडेपर सवार होकर नदीके सुंदर किनारेपरचले

आये तहां एक वृक्षके साथ घोडेकोबांधकर आप

नदीके निरमल जलबिखे सनानकरनेलगे तब

उष्टजनोने हस्ती बचायकर घोडेको तहांसे खोललि
या और लेकरके नगरको चलेगये इतनेमें पीपाजी
हतके पास आयकर जोटेखनेलगे तोतहां तिन
का घोडा तैसेही बंधा हूआहै तुरत सवारहोय
कर अपने आश्रममें चलेआये तिनउष्टोंने आयक
र जब पीपाजीके घरमें वे घोडादेखा तब भ्रमकेस
हित अचरजको प्राप्त भयेहूये धायकर अपनेघ
रमें चलेआये तहां घोडेको बंधाहूआ देखकर फि

६२

र उत्तायलसे पीपानीके हरपरसै आयकर देखने
लगे तो तहांभी तिनको वेही छोउा बांधाहूआदेख
पडा ।४। चौपाई । असप्रकार इनउनबहुवारा। सो
ऊ नरयातिन हगन निहारा । अंत प्रभाव भक्तजि
यजानी। धूरत नम्र जक्त जगपानी । वारवार म
खविनयउचारी। करहुदनमा प्रभु चूक हमारी।
अपहूत नरग त्याय पुनिदीना। निज अपराध
कथन सबकीना। अति उदार कोमलचितसाधू।

७९
मं.
६३

63

तमाकीन तिनकर अपराधू। मोतवंग जग भूपति

पासा। दीनपठाय भक्त गुणरासा। तदपश्चात दिव

स इकपाई। कीनगवनकानन शिषिराई। नवसिय

कहूं अस वदन उचारा। होहिं अगमन मोरनिसिहा

रा। तुव मध्यानकाल कलपाई। यथाअनीत नीत व

नआई। आवत अतथि संत हरषाई। विरचिपाक सवदे

हजिमाई। जव पीपा अस भाखिसिधाये। पीछेमदन सं

त वरआये। लघ्यत त्रिषत विघन सिय चीने ॥

६३

करिप्रणाम आसन सचिदीने। चाहत चरन प्रछाल
न कीन्यो। तेजलचरन सीसधरिलीन्यो। गई नगर
पुनि हरष अघाई। रानन ह्ह वनक इकपाई। ला
गीलास्य भजन सडवानी। मोरे सदन संत सुखदा
नी। आये अतिथि भ्रमत हैचारी। मैदर्शन तिन
के बलिहारी। दोहा। तमरेप आई भक्तमै तिनहि
तलेन अमान। जोदेहो तव देहिं तोहि मोलमो
रपतिमान। ९। टीका। इस प्रकार तिन उपघ्रतें

64

ने बहुत बार इधर उधर भ्रमकर जबएकहीं घोडादो
नोबार देखा तब हारकर कहनेलगे किभाई इहतो
भक्तके प्रभावका बडाअद्भुत चमत्कारहै इह वि
चार कर और हाथजोडकर दीनबाणीसे चरनोप
र सीस धर करके बिनती करनेलगे किहे संतकृपा
ल हमारा अपराधक्षमाकरिये नाथहम अजान मूढमती
तुमारे प्रभावकोकुछ जाननेनहींथे तातेआपनी जडताकेब
श प्रभु हमारेतें अनुचित होयगयाहै ऐसे ।।

अपना अपराध कथन कर कर धरन जिस घोड़ेको
हर करके लेगयेथे सो ततकाल लायदेतेभये संत
सदैव उदार कोमल चित और दयाकीमूर्ती होतेहैं
देखकरके तिनके अपराधको नरनहीं क्षमाकर
दिया तब वेदोनोहीं घोड़े पीपाजीने राजासूरसय
नके पास भेजदिये तिसतें उपरांत एकदिन भक्त
प्रधान विचरने केलिये कहीं वणविखे जोचले
तब सीते को कहते भये कि हेप्यारी मेराआवना

जं

अब राणीके समयहोगा नृत्तरेंके मध्यान कालमें जे
से नीती अनीती करके वनसके घरमें आये हुये अ
तिथी संतोंको वनाय करके भोजन जिमायदेना इस
प्रकार जब पीपाजी राणीको समझायकर वणकोब
लेगये तब दैवयोगसें पीछे संत जनभी घरमें आय
प्राप्तहुये तिनंकलधान और विवेन अर्थात भूखेप्या
से जानकर सीतेने प्रणाम कर कर पवित्र आसनो
पर विठाया और प्रीती भक्तीसे तिनके चरन ।

धोयकर सो चरनोकाजल सनमान पूर्वक आपने

सीसपर चढ़ायलिया और घरमै सिंचन करदिया

फिर नगरनहीं नगरमैचलीगई और एक वैसयनी

कोमूहपर बैठेहूये देखकर बड़ी मधुर औरको

मल वाणीसे कहनेलगी कि हे धनी प्रधान आज

मेरे घरमै दीनसुखदायक दोचार संत महातमा

जोहैं सो भ्रमते भ्रमते आय प्रापतभयेहैं और मै

तिनको भूखे विचार कर हे भक्तजन तेरेपासकु

५५ भं. ८८

66

कु अन्न लेनेको आई हूं जो तू दया करके मेरेको सं
तोंके लिये अन्न देदेवेगा तो मेरेको संतोंके लिये खु
श्के हो देवेगा तो मेरा पती आय करके इस अन्नका
मोल जो होगा सो तेरेको सब देदेवेगा ।१७। चौपाई ।
देख विलोकि रूपसरइ अंगी । मनहुं मदन तिय मा
नविभंगी । बोल्यो विकल विवस पचबाना । सुंदरि
कथन तोर सब माना । पै कुरकरहु मोर नव आसा
बसहु आज जाम निसि मम पासा । सियसई कार सुन

त असकीना। वनक असमान्न उचित जसदीना। ले
त तुरंत सदन निजआई। सादिर सरस पाक वि
रचाई। प्रथम चरन प्रछालन कीने। वहुरि जिमा
य संत वरदीने। आपुकीन कछु शेषअहारा। पुनि
प्रणाम करि वारहिंवारा। कीनविदाय संत सम
दाये। तव पीपा आश्रम निजआये। सीतेदेखि चरन
सिरनावा। यथाअसमान्न वनकपेंपावा। सो संके
तनिसी निजजाना। संत जनन जसभोजन पाना।

दीन पृथक निजपतिहिं सुनाई। सुनिबोले पीपा हरषा

ई। अबबिलंब परि हरि तबप्यारी। धरम [illegible] बच

न निज हृदय संभारी। नहिपैंजाहु परम सत्वमानी

होवसिननर धरम कर हानी। पतिमुख सुनत ब

चनहितकारी। लगीकरन सिय चलन तयारी। दो

हा। तबछायो मगगगन घन गरजि गरजि घटघो

र। झूम झूम लागयो झरन धरन बार चहुंवोर।८८

टीका। नव वैस धनी जोहे । ।

सोबड़े सुन्दर अंगोंवाली सीतेके रूपको देखकर
कि मानो कामदेवकी स्त्रीका भी मान हर करती है
मोहित होगया और कामके वश भया हूआ कहने
लगा कि हे सुंदरी मैने तेरा कथन सब मान लि
या परंतु दयाकरके तू भी मेरे हृदयकी अभिला
षाको पूरण कर सो क्या है कि आजकी रात मेरेही
पास वासकर ऐसे तिसका वचन सुनकर सीतेजी
ने स्वई कार कर लिया तब वैसने जैसाकि योगपजा

९९ ना तैसा अन्न देदिया सो लेकरके सीते तुरत घरमें
चलीआई और चौका लगायकर प्रीती पूर्वक सुंद
र भोजन बनायलिया तब संतोंके हाथ और चरनप्र
क्षालनकर वायफिर भक्ति सनमानसे सुंदर आसनो
परबिठाय भोजन जिमायदिया तिनते पीछे जोकुछ
बचा सो संतोषसें आप पाय लिया तिसतें उप
रांत बार बार बिनती प्रणाम कर संत भग कर
वान जोथे सो बिदाय कर दिये इतने मे । ६८

68

पीपाजीभी द्वारसे आय प्रापतभये तब सीतेने च
रनोपर प्रणाम करके जिसप्रकार वैसथनी से
अन्नलेना और राडीको जिसकेपास जानेका वो
ल करना फिर संतोको भक्ती भावसे भोजनजि
माना इत्यादि वृतांत जोथा सो भली प्रकार सब
सुनायदिया तब पीपाजी सुन करके प्रसन्नहो
यगाये और हरषसे कहने लगे किहेप्यारी अ
वविलंबको त्यागकर अपने वचनको सफलक

र तिसहितकारी वैसके पास श्रीघर चलीजा नहीं
तो ह्मशीले धरम कीहानी होतीहै संसारमे वचन
का पालना वडा कठिनहै वचनके खंडिएा होनेसे
परलोक विगड जाताहै इस प्रकार पतीके मखसे
वडे हितके वचन सुनकर सीते लरन तहां जानेको
तयार होगई तव तिससमय दैव योगसे आका
श मारगविखें महाघोर घटेंाके वादलजोहैं सो
छायतभये हूये वडे गरज गरज कर औ़र झकझ

६५
भं
६५

69

कर मानो मूसलधारसे पृथ्वीतलपर चारोंवोर वर
सने लगजातेभये ।२९। चौपाई । नवइरपत सिय व
चन बखाना । अवकसहोहिं प्राणपनिजाना । पीपा
सनत वसन निजलीने । सियनन करन आछादिन
कीने । गवनोलेत वनँकरगोहा । भयोहार आपन
जवतेहा । नवसीने मनगिराउचारी । जाहुभवन
आगलनवपारी । मैइतरहूं ठाढधिरहारा । जो
लोहोहिं आगमन तमारा । असतीने आयस पति

क

५९
भं॰
७॰

पाई। सकुचित वैस भवन चलिआई। तेभाविउलव
कित हगदेखी। आज गगन घन हृष्टि वसेखी। तोर
अगामन कमन विथभेघो। तवसिय वदन वचन
असकेहेहो। पनि पट करन अछादन मोरे। लावा
ईहां सदन सभतोरे। आउ सरह्यो ह्वारथिरहोई।
सतिसिय कथन वनक वर सोई। देखो भवन
वहिर जब आये। पित समान पीपा दर साये
वहुरिहोन संदिगथपराई। देखोसियहिं वैसजवआई

७०

सहस जननि दरस विलाना। परयोहगन हर्षित ख
विदाना। भयो नमगाएा उदधि संदेहा। कहत कौ
नकस कारणपहा। जननि जनक वहु काल वती
ने। स्तवस विदत आज मे चीने। अस नहि भम
न गतागत मांही। कछु विचार वन आवत नाहीं
दोहा। मा विरूप नव सिय चरन जात जुगल कर
जोर्। करि प्रणाम नम्रत भनत भई इक इकमोर
नमहो जानि अजान मोहि निज करुणा करिमान

७४ जानिनसको प्रभाव तव प्रथम निरत प्रतात ।१९।

भ० टीका। तव सीते देखकर भयके वशहोयगई ग्रोर कहनेलगी किहे प्राणपती ग्रव इसघोर वरषामे

७१ मेरा जानाकैसेहोगा ग्रैसेसीते का वचन सुनकर पीपाजी एकवस्त्रतानकर ग्रोरतिंके नीचे सीतेको

स रखकर ग्रापले करके चलपडतेभये जववैसके द्वारपर ग्रायप्रापतभये तवसीतेकोकहनेलगे किहेप्यारी तंग्रव

प्रागेद्वरमै चलीजा ग्रोर जवलग तूं नहीं ग्राती ।

७८

नवलगा मै ईहां द्वारमैहीं स्थिर रहूंगा इसप्रकार पती
की आज्ञा पायकर हृदय मै कुछ संकोच मानती
हूई सीते भीतर घरमै चलीगई नव वैस तिसको
देखकर अवरनके वशहोयगया और कहने
लगा कि आज ऐसी महांघोर वरषा मै हे भाम
नी तूं किस प्रकार और कौन धीरजसे आईहैं सी
ने कहती भई कि पती जोहै सो मेरेपर वस्त्र देक
र यतनसे वरषा की रक्षा करता हूआ अपने सा

तर

७९ भं. ७२

घलिये चला आया है अब मेरे को भी भेजकर आपद्वा
रे पर स्थित भया हुआ है ऐसे सीतेका कथन सुन
कर वैस तरत बाहर चल आया तब क्या देखता है
कि साक्षात पिताके समान पीपाजी द्वारेपर स्थित
भये हुये हैं तिनको देखकर संदिग्ध चित भया
हुआ फिर आय करके सीतेको देखनेलगा तब सो
आगे प्रतक्ष माताका रूप देखपड़ी तब तो वैस मानो
संदेहके समुद्रमे डूबगया अर्थात अतसे करके आ

७२

मिक चिंतहोयगया और हृदयमें कहनेलगा कि
अहो कौन कारणभया कुछज्ञाननहीं पड़ताहै दे
खो बहुतकालके मृतभयेहुये मातापिता आज
क्योंकर प्रत्यक्ष देखपड़ेहैं ऐसे तिसको इधरउध
र भ्रमते भ्रमते को कोई विचारभी बननहीं आव
ताहै तवअंतकाँ माताहूप जोसीतेथी तिसके च

ले

रनोंपर दीनवत प्रणामकरके हाथजोड़कर विन
ती करनेलगा कि जननी मैं अज्ञान मूढमती और

७४ भ० ७३

प्रथम अज्ञानी तेरे अनंत प्रभाव का कछुज्ञान नहीं
सका तातेंतूं कृपाकरके मेरे अपराधको क्षमाकर
और अपना बालकजान ।४९। चौपाई । विनय वच
न सुनि वनक सुहाये । पीपाइन भीतर चलिआये
भेंनप्रसन्न वदन सुभवानी । विमलअमार वचन सि
यमानी । ईहांभवन तोरे चलिआई । इहिकर तोहि
दोषनहिंभाई । यह अदोष सियरोषन मोही । ता
नतोभ उपज्यो कमलतोही । पीपाकथन सुनत सु

७३

खदाया। वैसकदन करिवचनअलाघा। बार् बारवं
दहुं पदतोरे। तमहुं सत्यमात पितमोरे। भयोअत्
चित जवन अपराधू। बालकजानि तमहु तंसाधू। व
मनवच करम दास पदवीने। जाहु भवन प्रभ आ
सिषदीने। तमवचन सुनि वनक सुहाये। पतनिस
हित पीपा हरषाये। कीन हविर आश्रम निजथाना
उतगृहगायो वैस सुखमाना। दोहा। हमर वासर
प्रात उठि वैस राज रूप द्वार। जायकीन जोरत कर

न दंपतिवरनज्जहार॥२०॥ टीका। नववैवसके वडे
विनतीवाले वचन सुनकर पीपाजी भी नहीं भीत
र चलेआये और प्रसन्नहोयकर कहनेलगे कि वैस
भाई सीतेनेरा वचन मानकर ईहांतेरे घरमै चलीआ
ईहै इसकाप्यारे तेरेकोकुछ दोषनहींहै और इहसीने
भी अदोषहै मेरेकोभी कोईरोष क्रोध नहींहै तूंने व्
थाअपनेचित्तमें क्योंलोभमानाहै ऐसेपीपाजीका सुषदायककथ
नसुनकर वैसजोहै सोरोदनकरकर कहनेलगा किहेधर्मात्मामे

७४

आपके चरनो को वार वार वंदना करता हूं और तम
मेरे सत्यकरके माता पिता हो मेरेसे जो अनुचित अ
पराध भया है सो तम वालक जानकर क्रपाकरके
क्षमा करो। क्योंकि तम संत उदार और उपकार
की मूरती हो मेरे को मन वचन कायासें अपने
चरनो का दास जानकर और आसीसादेकर आनं
द पूर्वक अपने आश्रमको सिधारो इसप्रकार
वैसके वडे नम्र विनती वाले वचन सुनकरय

मपतनी सीतेकेसहित पीपाजी हरषसे अपने ग्रामको
चलेआये और जहां वे सभी स्नावपूर्वक अपने घरमै
विराजनाभया जब गतवनीत होयगई नवहसरेदिन
प्रातःकाल उठकर और पीपाजीके द्वारपरआयकर
हाथजोड करके दीनभावसे चरनोंपर प्रणाम कर
नाभया।२०। चौपाई। असप्रकार निसिदिवस अभेवा।
बीत्योकाल करत सुविसेवा। पीपादेखि तासुसिव
काई। मनवचकरम भक्ति अधिकाई। मनउपदेशपायौ

त्रिन्हनदीना। चारुचरन निजसेवककीना। नवतेंनाह
वैस वडभागी। हरिपदनलन प्रीतिहदलागी। भक्तश
थान जगत विखाता। भैया सगरु प्रसाद सुखदाता।
इहहतांत अद्भुत मनभावा। जबतप सरसयन सुनि
पावा। सकल नगर सासन निजदीनो। पीपाविदतमोर
गुरवीनो। जोइन कहुंपितुमात समाना। भक्तिभावजन
करहिं नगाना। सोमम प्रकट देउ करयोगू। सुनतभू
पसासन सबलोगू। जननिजनक सम जानि अभेवा।

७९ म॰ ७८

लागे करन भक्ति जतसेवा। नवपीपामान सहरषाये। करि निजरावन भवन न्रपआये। सुर सयन चरनन सिरनावा। गुरु क्रपाल तव वचन अलावा। सुत वहीन तिय जवन नमारी। तासलेहु न्रपवेग हंकारी। गुरुनदेस छित पत असमानी। वोलि लीन सुत गत निजरानी। होत तास सनमख ततकाला। धरि गुरु सिंह रूप विकराला। वदनवाय वहु गर जनलागे। लोक विलोकि विकल भय भागे।

७८

78

दोहा। नृप अदभुत नकि चकित चित कंपि रहो थिर
होय। महिषी मनमुख त्रासगत गई सकुच भ्रम खोय २१
टीका। इस प्रकार वैसको गुरुजीके चरमैं निस्प्राव
ने और रात्रीदिन सेवा करने को कुछ काल वतीत
होयगया तब पीपाजी मनवचन कायासें तिसकी से
वाभक्ती देखकर प्रसन्न भयेहूये विधीके अनुसार
तिसको सर्व सुखदायक मंत्र उपदेश जोहै सो देदे
नेभये और अपने चरनोका सेवक कर लेतेभये

तबते तिस बडभागी वैसको भगवानके चरन कमलों की दिन दिन अधिकही प्रीती वधती जानेलगी सो गुरू पीपाजीके प्रसादतें थोडेहीदि नोंमें ज ग्यानविखे बडाभक्त प्रधान प्रसिद्धहोजा ताभया इह अद्भुत ब्रतांत जब सूरसधन राजा ने सुणपाया तब अपने संपूर्ण नगरमे आज्ञाप्र चलत करदेई और सबको सुनायदिया कि इह पीपाजी महात्मा मेरे गुरदेव स्वामीहैं जोकोई इनको

मातापिताके समान नहीं जानेगा और तैसेही आ
दिरसनमान नहीं करेगा सो भलीप्रकार मेरेदंड
का कलेश पावेगा ऐसे राजाकी आज्ञापायकर स
व लोग पीपाजीको गुरू मातापिताके समानजा
नकर बडे प्रीतीभावसे सेवाभक्ती करनेलगे
तब पीपाजी प्रसन्न भयेहूये राजा हरसमयन केघ
रमे चले आये प्रजापाल आयकर चरनोलागा
गुरूजी दयाके वशभयेहूये कहनेलगे किहेरा

जन पुत्रके विना जो तमारी स्त्री है कि जिसके घरमै
कोई संतान नहीं है सो तिसको तुम शीघ्र बुलाय
लेवो तव गुरुजी आज्ञा पाय कर राजा अपनी संतान
रहित स्त्री कि जिसके घरमै पुत्र नहीं तुरत वलाय
लेताभया सो जव मनमरव आई तव गुरु कौतकी
तुरत महा भयंकर सिंह रूप धार और मरव खोल
कर बडे घोर शब्दसें गरजने लगपडे तिनका ऐ
सा कराल भेष देखकर भयके मारे लोग सव भाग

७८ भ॰ ७८ की को या ७८

78

गये राजा इस अद्भुत चरित्रको देखकर अचरजको
प्राप्त होयगया परंतु कंपायमान भयाहुआ तहांहीं
स्थित रहा और रानीजोथी सो भयसंकोचको त्यागेहु
ये अभय होयकर नरसिंह भगवानके सनमुख
चलीआई ।२१। चौपाई । सिंह रूप कौतुक धृतजोई ।
तोलाभयो अंत्रगतसोई । अकस्मात नवक्रोडमहीपा
भाउतपन्न वालकुलदीपा । पीपादेखिभने मृदुवानी
विन संतान भूप नवरानी । मोरेदेखि शोकउपजाना

७५
भ:
७५

नृपतोहि दीन स्त्रवन भगवाना। सुंदरसील सकल गुणनागर। लेहु करन नव वंस उजागर। नवनरेस हरषत जन रानी। करिप्रणाम जगजोरत पानी। मांदिर लाय बाल उरलीना। बोलि सचिव सासन सुभदीना। महमंगलकल विविधप्रकारा। लागेहोन भूपदरबारा। पीपासमरि हृस भगवाना' कीन प्र दित आश्रमनिजप्याना। भक्तिभाव जन पूजन देवा। अतिथि संत वैस्नव द्विज सेवा ॥ ।

७५

79

करि करि उग्रकरम कलकारी। भयेप्रसिद्ध सकलज

गमाहीं। एक समय नहि नगरमझारा। कपटिसंत

भूरन हैचारा। प्रीलाकरन भक्तवरआये। तिनमधए

क कपट मरमाये। सांयकाल द्वार नहिआवा। हुन

हूभक्त सव वचन अलावा। मैअतिथी आवा तुव

गेहू। जाचिन करहूं भक्त मखपहू। तवनिजपत

नि हविर सखदाई। मोरेदेहू आज निसिभाई। दे

हा। काडिजाऊं मे सदन तुव नहि कर मानप्रवीन।

सुनि पीपा अस्तकथन तहि हरषि सीस धरि लीन
टीका। तब कौतकसें जो सिंह रूप बने हुयेथे सो
तत्कालही लुपत होयगये इतनेमे अकस्मातही रा
नीकी गोदमे एक मानो कुलका दीपक बालजोहै
सो उतपन्न होयगया। पीपाजी देखकर बडी मधुर
वाणीसें कहनेलगे कि हेराजन संतानके विना ते
री रानीको देखकर मेरे हृदयमे बडा शोक उतपन्न
होयरहाथा सोभगवान कृपानिधानने तेरेको।

पुत्रदेदियाहै ग्रोर इहकैसाबी पुत्रहै कि बडा सुंदर
सील सरबगुणोंका समुद्र ग्रोर तेरे वंसको उजाग
र करने वालाहै भूपते इसकोले ग्रोर प्रीती पूर्वक
पाल ऐसे गुरुजीका वचन सुनकर परमहरष
से राजा ग्रोर राणी वार वार स्वामीजीके चरनोप
र सीसधरनेलगे फिर प्रीती सनमानसे वालकको
लेकर ग्रोर हृदयसे लगायकर मंत्रीसेवकोंको बु
लाय करके ग्राज्ञादेतेभये तब ततकाल राजाकेभ

वन द्वारैमै अनेक प्रकारके मंगल और उतसवआ
नंद जोहैं सोहोने लगपडे ईहां पीपाजी भी हृमप
रमात्माको स्मरतेहुये आनंद पूर्वक अपने आश्र
मको चले आये दिन दिन भक्ती भावके सहित भ
गवान का भजन करते और अतिथि संत ब्राह्मणोंको
सेवतेहुये अनेक प्रकारके बडे उग्रकर्म कर कर
संपूर्ण जगतमै प्रसिद्ध हो जातेभये एकदिन तिस
नगरमै दोचारदुष्ट धूरत और कपटी संत मिलकर

भक्तप्रधान पीपाजीकी प्रीक्षा लेनेके लिये चले
आये तिनमैसे एकधूरत संध्याके समय पीपाजी
के पास आय कर कहने लगा किहेभक्त मै अति
थी संत तेरे द्वारपर चलाआयाहूं और तेरेसें इहमो
गताहूं कि तूं अपनी सुख दायक स्त्री जोहै सो आ
जकी एक रातकेलिये मेरेको देदे प्रातःकालहो
ते मै तिसको ईहां तेरे घरमे हीं छोड्जाऊंगा ऐ
से तिस कपटीका वचन सुनकर साध सरलचि

त पीपाजी सूई कार कर लेते भये कि सत्यवचन
लेजाइये ।२२। चौपाई। सियकहं भन्यो जाहु तव
भामा। करहु अतिथि मानस फुर कामा। पतिसा
सन सीते असपाई। तहिसन बहिर भवन जवआई
तव आश्रम निज भूरत काहीं। भूलिगयो आवत सु
धि नांही। इतउत भ्रमत विकल चहुंवोरा। जहंतहं
करत मनुजगणसोरा। अस प्रकार निसि सक
ल बिहायो। भ्रमत नास कुछ ठौर नपायो। पीपा
द्वार भोरभईआवा। तवसीतेअसवचन अलावा। भयोआजहसरदिनसाध्‌। मेनिजजाऊं
तमहु अपराध्‌ ॥

नासल निन कछुक कह्यो न वानी । सिय निज आई भवन सुख मानी । निसि हनुमंत सब पतिहिं सुनायो । पी

पा सुनत न निकट नहिं आयो । भयो संत कस सोच हमारे

का सिय कछु कटु वचन उचारे । यों हमार कछु कथ

न न कीना । जहितें हमहं सोच मन लीना । धूरत सु

नत भक्त असवानी । भयो नमगण लाज नियपानी

करि प्रणाम अस वचन बहोरी । बोल्यो नम्र जुगल

करजोरी । जनतें भयो विपुल अपराधू । तुम हो दीन

घाल नव साधू । अस कहि बार बार सिर नाई । निज

आश्रम धूरत जन आई । आन कपटि संतन सारा

सन

७४
भ०
८३

83

सोहतोत करि प्रकट उचारा। तेसंदिगाय सकल उ
ठियाये। सीताकरन भक्त गृहस्राये। पीपानकि ति
न विविध हुलासन। हृष्कि कुसलदीने सुभग्रासन।
दोहा। तव वोले भरन सकल हम जाविन तवनाति
आयभक्त तव भवन चलि पूर्वो हु आस हमारि।८४
टीका। तव सीतेको कहनेलगे किहे प्यारी अवत्तं इ
सके साधजा और अतिथी संतके हृदयकी अभिला
षानेहै सोपूर्णकर इसप्रकार सीने पतीकी आज्ञापायकर ८३

तिस धूरतके साथ चलपड़ी ग्रौर जव घरसे वाहर
निकलग्राये तव तिसकपटी को जाते जाते ग्रपने
ग्राश्रमका मारग ग्रर्थात रसता जोथा सो भूलग
या ग्रौर भ्रमता भ्रमता ग्राजंल होयगया जहां जोता
तहांहीं मानुष्य वोलते सुण पडतेहैं इसप्रकार ग्रंतको
सारी रात वतीत होयगई भ्रमतेहुये तिस साधुधू
रतको कहीं भी ठौर नहीं मिला तव प्रातःकाल
होते फिर कर पीपाजीके द्वारपरही ग्रायग्रापत

भया इतने मै सीते कहनेलगी किलो साधुजी आज
दूसरादिन होयगया मेरा अपराधक्षमा करिये मै
अपने घरको जातीहूं वेलजाका मारा कुछ वोलनहीं
सका सीते अपने घरको चली आई और रात्रीका
वृतांत पतिको सब सुनायदेती भई तव पीपाजीस
नकर तिस साधुके पासचले आये और कहनेलगे
कि महात्मा तुमसोचके वशक्यों होयरहेहो क्या
कोई सीतेने मन क्रूर वचन कहाहै कि अथवा त

मारा कुछकहा नहीं माना जिसतें तुम ऐसे चिंता
सोचमै लीन होयरहेहो इसप्रकार पीपाजीकाक
थन सुनकर साधू मानो लाजके समुद्रमै डूबगया
फिर प्रणाम करके बडीदीन वाणीसे हाथजोडक
र विनती करने लगा किहे दीनदयाल हेसंत कृपा
ल नाथ मेरेतें बडाभारी अपराध होयगयाहै आ
पशांती सरूपहो दयाकरके क्षमाकरिये ऐसे
विनती प्रणाम कर कर धरतजोहै सो अपनेआ

भ०
८५

आश्रमपर चला आया तहां और साधु वैस्नव जोथे
तिनके साथ सवब्रतांत प्रकट करके सुनायदेताभ
या सोसुनकर वडे अचरजके वशभये हूये पीलाक
रनेकेलिये तुरत भक्तप्रधानके घरमै चले आये तव
पीपाजी तिनको देखकर वडे आनंदसे कुसल पूछ
कर पवित्र आसनोपर विठाय लेतेभये ऐसे तिन
का सतकार देखकर धूरत साधु कहनेलगे कि
हे भक्त उत्तम हमतेरे घरमै मांगनेकेलिये आयेहैं

अवतं उपकार करके इहअपनी स्त्रीजोहै सो हमकोदे और हमारे मनकी अभिलाषाको पूर्णकर ।२३। चौ पाई । सुनिपीया संतन असवानी । परम हरष निज मानस मानी । सियकहं भयो वेग नवप्यारी । लेहु वसन सुभ भूषणधारी । नखसिखललित अलं कृतहोई । सकुचलाज संतन हितखोई । जोतोहि करहिं कथन सिवकाई । प्रिय सव करहुचरनसि रनाई । सियपाय सासन पतिआना । सजिहंगारअ

भर्न नाना। मानहुं मदन नार छवलाजी। सजसजाय
निज भवन विराजी। सोधृदिन नव बालिपठाये। प्र
मुदित द्वार दहिर जब आये। हष्टिजोरि जब कीन
नजारा। आप्तरूप नव सियहिं निहारा। त्रासित वि
कल सकल धृतित्यागे। त्राहि त्राहि करि पाछिल
भागे। पीपाकुलधावन तिनकीना। कनपरान धीर
ज असदीना। सुनितिन कथन साधुसमदाये। धीरज
धरत बहुरि फिरिआये। सियपद कंज नमतसिरनाये।

जोरि जुगल कर विनय अलायो । हम अजान जा
नो कछु नाहीं । आपमान तव प्रीतन काहीं । सोय
भाव तव देखि वसेखा । जायनचरितचारु अकुले
खा । जानिदास निज चरन असाधू । दमहु हमा
र जननि अपराधू । नम्र वचन तिनकर सुनिकाना
भन्यो वचन पीपा सुखदार्न । हम नाहिन प्रीताक
रजोगू । संत जनन जन जानत लोगू । अतिभाग
तव संत हमारे । कहु एणकीन चरन निजधारे ।

ज्ञानविवेक रुचिर हितसानी। २

भयो आज इह पावन गेहू। हमकहं कौन सफलत व नेहू। साधु सुनत पीपा अस वानी। करि प्रणा ममानस हरषाये। चले भवन निज होन विदाये। अस प्रकार पीपा नरराई। भक्ति भजन भगवान व लपाई। वैस्नव प्रवर भागवत नागर। भयो लोक परलोक उजागर। दोहा। तोते भगवन भक्तिसम आन परम नहिं कोय। सेवत सुखप्रद सुजस प्र दस काम प्रदसोय। २४। टीका। नव पीपाजी संतों

कल

की ऐसी वाणी सुनकर परम प्रसन्न होयकर प्र
पती स्त्रीको कहनेलगे किहे प्यारी अवतं सुंदर
वस्त्र और भूषणोंसें अपना भली प्रकार सुभस्‍
गारकर संतोंकी प्रसन्नताके लिये लज्जा और सं
कोचको त्याग और इनके पास चलीजा इहसंत
महात्मा तेरेको जोसेवकाई कहें सोतं चरनोप
र सीसनायकर इनको भली प्रकार संतुष्ट औ
र प्रसन्नकर ऐसे प्राणपतीकी आज्ञा पायकर

88

सीतेने ततकाल सुंदर भूषण और वस्त्रोंसें अपनाश्र
भ श्रंगार जो है सो सब करलिया ऐसी नीकीवनी
कि रूपकी छबीको देखकर कामदेवकी स्त्री भी
लज्जाको प्रापत होतीथी भलीप्रकार सजसजायक
र और रथमें न्यारी विराजमान होयकर तिन धूरत
साधुओंको बुलायभेजा सो प्रथम सुनतेही आनंदसे
ततकाल चलेआये और द्वार दलीजपर स्थितहो की
यकर जबहष्टीजोड़कर सीतेकी वोर देखनेलगे

तबवेमाई तिनको महाभयंकर सिंह रूपनोहै सो
देखपड़ी इसप्रकार देखतेही भयके वसव्याकुल
भयेहूये धीरजको त्यागकर त्राहि त्राहि पुकारते
हूये पीछेको भागचले तबतिनको भागेजाते
देखकर पीपाजी वेगसे आगे आयकर और धी
रजदेकर कहनेलगे कि संतो तब कों भागेजाते
हो सावधानरहो कुछभय त्रास नहीं है ऐसेपी
पाजीका कथन सुनकर वेसाधहृदय मे धीर

नथार् फिरन हांहीं फिर करके चले आये और
आवतेही सीतेजीके चरनोपर प्रणाम करके।
हाथ जोड़कर दीनवाणीसे विनती करनेलगे
किहे मैया हम अज्ञान महामूढ तेरी मीलाक
रनेको आयेथे सो देवी तेरा अनंतही प्रभाव दे
खाहै इह तेरे अद्भुत चरित्रका कुछ पारनहीं।
पायाजाता अब कृपा करके हमको अपनेचरनोकेसे
वक और अमाधजानकर हमारे अपराधकोक्षमाकर ऐसेसतिनके
विनती

वाले वडेदीन वचन सुनकर पीपाजी कहनेलगे
किहे संतो हमारी क्या प्रीक्षाहै क्योंकि हम किसी
लायक भी नहींहैं केवल संत जनोके दास सेवक
हैं आजहमारे वडे धन्यभागहैं जो अपने दयाक
रके ईहां हमारे घरमे चरन धारन कियेहैं आज
इह घरजोहै सो भी पवित्र होयगयाहै और तुमा
रे प्रसादसे हे संतो जगतमे हमभी सफल हो
यगयेहैं तव साधु ज्ञानविवेक और प्रीती सनेह

कीभरीहुई पीपाजीकी वाणी सुनकर वार वार प्रणा
म करके वडेहरष प्रेमसे विदाय होयकर अपने आ
श्रम को चलेगये नाभादासजी कहतेहैं किहे संतो
इस प्रकार सर्व जीवोंके हितकारी पीपानरेस ह
स्त भगवानकी भक्ती और भजनका वल पायकर
परम वैस्नव भक्त होय कर लोक परलोकमै उ
जागर हो जाते भये तातेहे संतो भगवान की भ
क्ती के समान संसारमै और कोई भी धरम नहीं

७९ भ० ५१

है इसकैसी भी भक्तीहै कि सेवन करनेतें
मानुष्यों को सर्वसंपती श्रोर सुजस कल्या
न के सहित संपूर्ण कामनाके देने वालीहै
२४ ॥ इतिश्रीभक्त विनोदग्रंथे भगवदभक्ति
महातमे भाषाटीकायां पीपा चरित्र वर्ण
नं नाम सरगः ॥

मीहांसिंहकृत

९

मसाधू। रहतमार कसवन्यो अराधू। त्रिगुणमसमान तिनकर नियज्ञानी। भयो एक वैसव सुखवानी तमहेषी हरिभक्त प्रवीना। हम तमार नहिं वाह तकीना। भयो डरत दरसन डखदाई। असकहि संतभक्त जडवाई। गयेमुदिन वैकुंठसिधारी। तव ग्रामीन वैसव मारी। जामातनाकर आश्रमदीना। आयप्रणाम दंडवत कीना। भोजन हेत वहुरिक रजोरी। विनय वदन कछु कीननथोरी। असप्र

कार जब जाविनकीना। लजित पाक कर जोरनदी
ना। सोरठा। नव भाखो जामात। अब उच्छिष्ट उन
कर रहो। कछु भोजन गृहतात। इह चाहो नवले
हलम। ४। टीका। नव तिनको आवते देखकर न
गरके वैस्नव सब अचरजके वश होयगये सो भ
गवानके भेजेहूये संत आनंदपूर्वक जामाताके
चरनमे आयकर बड़ी सुखदायक बानीसे कहनेल
गे किहे भक्त अब विलंबको त्यागकर जो भोजन

तैने वनवायाहुआहै सो हमको वेगार कर जिमाय
दे क्योंकि दीन वंधु भगवानकी आज्ञासे तेरे घरमें
भोजन पावनेके लिये आयेहैं तव वैस्नव संतोंने
ऐसे कहा तव जामाताने तुरत तिनके चरन प्र
क्षालन कर वायकर अर्थात जलसे धुलायकर
वड़े आदर सतकारसे भोजन जिमायदिया तिसस
मयका प्रेम और प्रीतीजोहै सो कुछ कही नहींजा
ती तव नगरके वैस्नवजोथे सो तिन वैस्नवोंको

५४
भ०
१३

पूछनेलगे किसाधु तुम कहांसें आये और कौनहो
इसने तुमारी कैसे आराधनाकरी और तुमको के
से बुलायाहै ऐसे सुनकरके तिनमेंसे एक वैस्नव
तिनग्रामीन वैस्नवोंको एकतिणके समान जान
कर कहनेलगा कि अहोमंद तुमइस भगवानके
भक्तकेद्वेषी अर्थात विरोधीहो मूढ तुमारातो द
रसन करना भी धर्मनहींहै और नातुमारे साथ
कोई वारता अलाप करना योगपहै ऐसे कथन

13

१३

करके वेहरी भक्तवैस्नव जोथे सो जामातासे विदा

होयकर अपने वैकुंठ लोकको चलेजातेभये ति

नकेपीछे सव नगरवासी वैस्नव आयकरके वडे

दीन भावसे जामाताके चरनोपर दंडप्रणाम क

रतेभये श्रोर हाथजोडेहूये भावसे अनेक विन

ती वडाई कर कर भोजनजोहै सो मांगनेलगे इ

सप्रकार जवतिनोंने दीन होय करके भोजनमा

न

गा तव जामाता आनंदमै मगनभयाहूआ कह

५४
भ.
१४

14

ने लगा किभाई अब तो उन वैस्नवोंका उछिष्ट अर्थी
न जन्म भोजन घरमेंहैं जो कदाचित इह चाहिये तो
लेलेवो। ४। चौपाई। सुनि अस वचन वैस्न नव सारी
देहु देहु सब उठे उचारी। तब जामात मन दीन मन हो
ई। रहा शेष भोजन न कछु जोई। सादर तिन कहं हेदी
न जिमाई। भन्यो वचन अस उर हरषाई। आज कृपा
य सिंधु भगवाना। सब विधि राखा मोर मन माना
आगम निगम सत्य प्रभु गाये। सदा दीन हित करन

१५

सुहाये। नवग्रामीन वैस्नव सारे। करि भोजन जवस
दन सिधारे। पाछे परिसरण पकवाना। देखि स
वन अचरज मनमाना। भाखत धन्य धन्य जामाता
जांकर जगत भक्त सुखदाता। सोरठा। राखेोमा
नमहान। दीनबडाई दीनलखी। कृपासिंधु भगवा
न। भयेगुनत असनासुपिष।५। टीका। नव अेस
तिसका कथन सुनकर सोहेषी वैस्नव कहनेल
गे किहे भक्त प्रधान अब जैसा भोजनहै कृपाकर

के तैसाहीं देवो और हमारे अपराधको क्षमाकरो
तव जामातानें बडे आनंद सनमानसे जोपीके भो
जन बचाहुआथा तिनको जिमायदिया फिर हरष
से प्रसन्न होय कर कहनेलगा किदेखो आज कृ
पासिंधु और दीनबंधु भगवानने मेरा सर्वप्रकार
करके मानराखाहै वेद और पुराणोंने भगवान
कृपानिधान सदैवदीनोंपर हितकरनेवाले सत्य
करके गायनकियेहैं तव नगर और ग्रामोंके वे

सब लोगजोथे सो सब भोजन पायकरके जब अ
पने अपने घरोंको चलेगये तब पीछे फिर भोजन
पकवान सब परिपूरण देखकर लोगबड़े अचर
ज के वश होयगये और मनसे अनेक प्रकार
शलाघा बड़ाई करकर कहतेहैं कियह भक्त प
धान नामाजोहै सोधन्यहै किजिसका भगवा
न कृपानिधानने अपनादीनमानकर ऐसा मा
नराखा और जगतमें सुजसका पात्रबनाय दियाहै

५४
भ.
१८

16

ऐसेविचार करके सब लोगनोहैं सो तिस जामाता
के शिष्यबन जातेभये नाभादासजी कहते हैं किहेसं
तो इसप्रकार इह जामाताकीगाथा कि जिसके श्र
वण करनेसे भगवानकी भक्तीहृदयमै दृढहो
जातीहै मैने आपके आगे गायकर दईहै।५। इ
तिश्रीभक्तविनोदग्रंथे भगवद्भक्ती महातमेभा
षाटीकायां जामाताचरित वरणनं नामसरगः

मीहांसिंहकृत

१८

वा। भागनेय मवे चकित अलावा। जानिनपर
हिं असंभवमोरे। कारन कवनजियन असनो
रे। नवमातल मवे वचन अलाया। इहश्रीरंग
स्वामि सवदाया। असकहिप्रात जयन सिवकाई
लागे करन जगल जननाई। तासजयन जव
नायनिहारा। खेलैदैव मटमंजकवारा। सोठा
कर प्रतिमानहिंपायो। परमसोच चिंता उर
छायो। भयोदैव इहकारणकाहा। करन जय

१८
भ॰
५

नरोदनमखेहाहा। तेनिजवोलि जगालमनली
ने। वोल्योवचनकोपरसभीने। जाहुमोर जछम
वन नयागे। अवनहोहु मम आंखिनआगे। त
वसंसर्ग डरनरतचोरी। लागीआजसदन ममवो
री। दोहा। तासकोपजुत वचन अससरनकार
ह्मनिकान। चलिआये निजभवन हुत ह्रदय ह
विरहितमान।२। टीका। ऐसेमानल मोमामाथा
सो रात्रीके समय गवाक्ष अर्थात एक झरोखेके

रस्ते मटकेवीच उतरगया और दैवप्रतिमा जो
रतन मणियें करके जडनभईहूईथी उठायकर
तिसीरस्तेसे ऊपर चढायदेताभया तवभागने
य अर्थात तिसकेभानजेने हाथपसार कर तिस
मूरतीको ऊपरवैंचलिया तवमातल कहनेल
गा किहेभानजे अवतें तलवारकाप्रहारदेकर
मेरेसीसको काटडाल फिर इसधनको लेकर
अपने घरको चलाजा मेरेकोसफलहो इसप्रका

रमातलकावचन मानकर तरततलवारका प्र
हारदेकर तिसकासीसकाटडाला श्रोर देवपति
माकोलेकरके अपने घरमेचलाआया तहांति
सकोयतनसे राखकर फिर आपनिरसंदेह आ
यकर जयनीके घरमे सोयरहा श्रोर ऊहांश्रीरं
गस्वामीकी कृपासे तिससमानका कटाहूआसी
स फिरनया उतपन्न होजाताभया श्रोर भवन
के कवाड़जोवंदथे सोभीखुलगये तववेतरत

हीं बाहर निकल आया और आयकर आनंद से आ
पने बिस्तर पर सोय रहा जब आना काल होने
मा नल चला आया नवमानजादेखकर भ्रमसे
बडे अचरजके वश भया हुआ कहने लगा कि इ
ह अगम बारता मेरेको कुछ जानी नहीं जाती
तेरे जीवनेका कौन कारण है नवमानल कह
नेलगा कि भाई इह सब श्रीरंगस्वामीजी की दा
या है ऐसे कथन करकर और फिर आयकर

५८ भ० ८

दोनो जयनकी सिवकाईमे सावधान होयगये ३ तनैमे जयनभी अपनेदेवके भवनकोआया तो क्यादेखताहै कि मटके कवाड़खुलेहुयेहैं और ठाकुरकीमूरती नहींहै आचर्जहोय करके कहताहै कि हेदेव रहकोन कारणभया ऐसेपर सचिंतामानकर रोदनकरनेलगा और अपने वेदोनो नौकर बुलायकर तिनकोबड़े कोपसे कहनेलगा कि अरे अधम मेरेघरसे चलेजावो

७

८

अबमेरीआंखोंके सनमुखमतरहो औरेकापीत
मारीसंदूगतीसे मेरेघरमे चोरीलगीहै इसप्र
कारकोपकेभरेहुये तिसके वचनसुनकर ।
स्वरनकारजोहैं सोहरषसे हृदयमे हितमान
कर अपनेघरको चलेआये ।२। चौपाई । कछु
ककालजवतिनहिंसराना । मूरति रतनआभ
रननाना । लेतसकल श्रीरंगसुहावा । सतव
चिव तिनदीन बनावा । असइहभक्ति महातम

१८
भ०
८

गायो। कढ़ोसीसनतन उपजायो। खुलेकवाड़
आगमटनाहिं। अवलोचरित विदतजगमाहिं
दोहा। इहप्रभाव श्रीरंगसवजास कृपावलपाय
स्वरनकार मानलभयो सन सजीवजगआय २
टीका। जवतिनको कछुकाल वतीतहोयगयो
तव तिसस्वर्णीके रतनभूषण सव उतारकर
श्रीरंगजीका वड़ा सुंदर शोभावाला मटजोहै
सोवनाय देतेभये इसप्रकार इहभक्तोका महा

१८ भ. र

तम मैने गायन कियाहै देखिये कि तिसकाक
टाह आसीस नवतनया उतपन्न होयगया और
मटकेककवाड भी आपहीं खुलगाये अवलगइह
चरित्र सव जगतमै विदतहै परन्तु इहसव
प्रभाव श्रीरंगस्वामीजीकाहै कि जिनकीक्र
पातें स्वरनकारजोमरनारहै सो मराहूआजीवता
होयगया ।।२।। इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथेभगवद्भक्ति
महात्मे भाषाटीकायांश्रीरंगचरितवर्णनंनामसर्गः

मीहांसिंह कृत